पंडित श्री हेमचंद्राचार्य सूरि विरचित

श्री राम लक्ष्मण चरित्र

जैन धर्मी श्रावक लोकांने भणवा

वांचवाने अर्थे योग्य जाणीने

नाना दादाजी गुंड इणानें

" सौजन्यमित्र " छापायन्त्रमांहे छापायोछे

संवत् १९४६ अने सन १८९०

आ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठे

भाई भगवानदासजी केशरचंदजी नाहारकी

दुकान उपर मिलशी.

किंमत एक रुपया चार आणे.

प्रस्तावना

आ पांचमा कालने विषे स[illegible], पूर्वधरना वियोगे करी भव्य जीवोने आत्मार्थ साधवाने मुख्य त्वे करी जीन प्रतिमा तथा जैनागमनो खरो आधार छे. जैनागम वांचवा भणवाने घणुं कठण छे, तथापि तेज आगमने अनुसारे रचेला सुविहित आचार्यो तथा महान पंडितो रचेला ग्रंथो घणा छे, तेज ग्रंथोनुं अवलंबन करी वांचवानो अभ्यास करवो तेथी धर्मनो जाणपणुं प्राप्त थाय छे. जाणपणुं थवानुं-मुख्य कारण ज्ञान छे. ज्ञान वांचवा भणवाथी घणा भव्यजीवोने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थई छे, अने थाय छे. सम्यक्त्व पामवानुं कारण ज्ञान अने ज्ञानी छे तथापि इणकालें ज्ञानी पुरुषोनी घणी कमतरता छे माटे ज्ञाननी मुख्यता विशेषे गणवी एटले खरो आधार ज्ञाननो हाल छे. ज्ञानीपण ज्ञाननाज आधारथी आत्महित साधे छे.

माटे आ पांचमा आरामां भव्यजीवोना उपकारना अर्थे स्वल्प रीते समज पडे तेवा ग्रंथोनो प्रसार करवो जोईए ते माटे ग्रंथो छपाव्याथी घणा छुटा प्रयासमां घणा जीवो तेनो लाभ लेई शकशे. माटे हरएक रीतें ज्ञाननी वृद्धीना अर्थे पुस्तकोनुं संग्रह आवश्य करवो जोईए.

माटे जैनागम सारना अनुसार आगल महान आचार्यों रचेला मोटा मोटा ग्रंथो तेमा मुख्य आ राम लक्ष्मण चरित्रछे एमा जैनतत्वनुं विस्तार पूर्वक ज्ञाननो खुलाशो देखाड्यो छे. ते जैनधर्माभिलाषीत भव्यजीवोये जाणपणु लेवो जोईये.

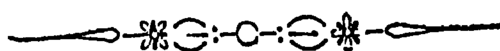
आ ग्रंथमा महारा मंद बुद्धिथी तथा कंपाजीटर लोकोना नजर चूकथी अक्षर काना मात्रा वत्ति अगर कमती थायतो सुज्ञ जनोए क्षमाकरी सुधारी वांचवु.

ढाळ सागर ग्रंथ

आ ग्रंथने आश्रय मिल्याथी बीजो "ढाळसागर" नामनो प्रसिद्ध ग्रंथ जेमा श्रीकृष्णादिकोनु तथा नेमीश्वर भगवान, साब, प्रद्युम्न तथा पांडवोनु चरित्र छे एवो ग्रंथ छपावशु अने किंमत घणीज ओछी राखशु माटे जैन भाईयो तुमे धर्मना काममां आश्रय आपो जे रामायण ग्रंथ हमारा पाशथी मगावशे एटले लेशे तेने ढाळसागर ग्रंथनी किंमत अगाउ १। रुपया लेवामा आवशे ढाळसागर ग्रंथने अगाऊ सहीदेवणारने किंमत १॥ रुपया तयार थया पछीलेवणारने २ रुपया पडशे.

नाना दादाजी गुंड ग्रंथ कर्ता

श्री सुगुरुज्योनमः



॥ अथ श्री राम चरित्र कथा प्रारंभः ॥



मंगला चरण.



जेओए वज्रनां सामर्थ्यने जीती लीधुं छे, अने मोहरुपी जे माहामल्लने जीत्या छे तथा जगतमां जे आठ कर्मरुपी तिमर एटले अंधकार छे तेनुं हरण करवाने खग एटले सूर्यरूप छे. जेना चरणने विषे सिंहनुं चीन्हछे, जे मोक्षना मार्गने देखाडनारा छे, जेने नेत्रे करी नीरखतां कल्याण रूप जल वरसे छे, ते थकी भव्य लोकरूपी सरोवर माहा हर्षने पामे छे, जे माटे काम क्रोधना क्षय करनार छे, जेनु उतकृष्ट सहज सुखरूप धर्म अर्थ भक्तजन स्मरण करी रह्या छे, तेथी तेनु सात भयरूप सीत ते नासी जाय छे, जेना दरशन थकी भव्य लोकोना कर्मनो क्षय थायछे, दुष्ट कर्मने दलवावाला तथा मेरू पर्वतनी पेठे अचल जगतना जीवोने सुसारथी तथा (नीरजामक) एटले नावमां बेसारी समुद्रपार उतारनार जेम समुद्रपार उतारे छे तेम भव्य जीवोने संसाररूपी समुद्रमाथी तारीने मोक्षरूपी नगरे पोचाडनार थोडामां

हीए तो जगतना जीवोने बधु समान जगतना रक्षक एहवा चोवीसमा तीर्थंकर श्री वर्धमान स्वामीना तीर्थमां आ ग्रंथना करता श्री हेमचंद्रसूरी माहाराज थया तेवो श्री माहावीर स्वामी प्रते नमस्कार करीने कहे छे,

आ जंबुद्वीपना भरत क्षेत्रने विषे जेना माहात्मनो अंत नथी सर्व राजाउमां आद्य सर्व तीर्थंकरोमां प्रथम तीर्थंकर, एहवा जे श्री रिषभदेव भगवान ते इक्ष्वाकु वंसने विषे श्री नाभीराजाना पुत्र थया तेवार पछी पाटनुपाट अनेक राजा चक्रवरती प्रमुख तेमना ज वंसमां थया, केटलाएक चारित्र धर्म आराधी परमपद जे (मोक्ष) तेने विषे गमन करी गया, तेमज केटलाक पाट सुधी तो विगर चारित्र लीधे पण अरीसा भुवनमां संसारनी असारता स्पष्ट देखी भावनी सुद्धताए केवलज्ञान पामी मोक्ष पहोता, तथा केटलाएक देवतानी गती पाम्या तेवार पछी हरी वंसने विषे विसमा तीर्थंकर श्री मुनीसुव्रत स्वामी थया तेमना तीर्थने विषे जन्मेला आठमा बलदेव श्री रामचंद्र तथा आठमा वासुदेव लक्ष्मण उपना तेवोना अने प्रति वासुदेव रावणादिक महत पुरूषोना चरित्रनु वर्णन करू छु

॥ अथ श्री राम चरित्र कथा प्रथम खंड प्रारंभ ॥

आहिज जंबुद्वीपनी भरतक्षेत्रने विषे सर्व प्रथ्वी-

थी श्रेष्ट सर्व नगरीथी उत्तम एहवी विनीता ना
मनी एक नगरी हती, तेमा इक्ष्वांकु वंसने दीपा
वनार तथा सर्वना कलेशनो हरण करनार सगर
नामनो चक्रवरती राजा थयो, सर्व कलामा नीपुण
तथा माहा पराक्रमी अने सत्यवंत न्याइ सूरवीर ए
हवो ते राजा एकदा समे साथे सुभटोना परिवार स
हित अश्व (घोमा) ऊपर बेशीने रयवाडी नीक-
ल्यो, त्यांह चारे दीशाए घोडो फेरवीने तेवतीवारफिर
तां पांचेगती कराव्या. तेवार पछी पांचमी पलुत ना
मनी गतीवडे ते घोमो लगामना ताबामां न रहीने
आकाश मार्गे ऊड्यो, ते जाणे कोइ पीशाच कोइने
हरण करीने लइ जतो होय, तेम ते सगर राजा-
ने लइने एक मोटा वनमां गयो. तेवारे राजाए क्रोध
करीने पोतानी बे जागो तेना पेट साथे दाबी राखी
लगाम खेंची कुदको मारीने जमीन ऊपर पड्यो अ
ने ते घोमानी गती पण त्यांहांज पुरी थइ. राजाने
नीचे पमतो जोईने घोडो पण पृथ्वी ऊपर पड्यो, त
थापि घोडा ऊपर न बेसतां राजा पोताना पगे चाल
वा लाग्यो, केटल्युंएक चाल्या पछी चंद्रनी कांति जे-
वो शोभायमान एक सुंदर तलाव दीठो त्यांहां वी-
सामो खावा सारूं सगर राजा तलावमां स्नान करीने
तेमांना पाणीनुं पान करीने तेमांथी बाहार नीक
लीने तेनी पाज ऊपर आवीने ऊभो रह्यो, आम

तेम जूए छे तेटलामां त्यां एक तरुणी स्त्रीदीठी, जे-
नु नवीन कमलना जेवु मोह्होडु छे, नीला कमलादल
जेवी जेनी आंख्यो छे,जलना तरग जेवु जेनु लावण्य छे
फूलेला राता कमलना जेवा जेना हाथ तथा पग छे
एह्वी अद्भुत रुपवाली स्त्री जोइने राजा पोताना म
न साथे विचार करवा लाग्यो, के आतो अप्सरा छे?
किंवा कोइ व्यतरी छे? किंवा कोइ नाग कन्या छे? अ
थवा कोइ विद्याधरी छे? एना जेवी सामान्य स्त्री तो
ना होय, केमके आ स्त्रीनु मुख जोवाथी अती आणद
उत्पन्न थाय छे, एवो विचार करे छे तेटलामा ते स्त्री-
ए पण सगर राजाने पोतानी चक्षु वडे दीठो वेहुनी
नजर एक थयाथी ते स्त्री कामे पीडाती थकी पोता
नी सुध भूली गइ अने अग उपरथी वस्त्र खसी ग-
यां तेवारे तेणी सखीउए तेना अग उपर वस्त्र ना
खी तेना एक कोरे वेसाडी, अहीया सगर राजाने प
ण ते स्त्री जोइने अगोअग काम विकार व्यापी ग
यो, तेथी तलावनी पाज उपर हलवे हलवे हाल चा
ल करे छे एटलामां ते स्त्रीनी एक दासी राजा
पासे आवीने बोलवा लागी

हेस्वामी? भरतक्षेत्रमा वैताढय नामना पर्वत उ
पर लक्ष्मीने प्रियएवा गगनवल्लभ नामना नगरमां
एक अलक नगरी कुबेरनी पेठे विख्यात, त्याहाना
विद्याधरोनो सुलोचन नामनो राजा हतो. तेने सहस्र

नयन नामनो एक नीतीनिपुण पुत्र छे. तथा जगतनी सर्व स्त्रीयोमां मुकुट मणिरुप एक सुकेशा नामनी पुत्री छे, तेनुं जन्म थती वखत एक नीमित्तीयाए तेना चिन्हों परथी भविष्य कह्युं के आ चक्रवरती राजानी स्त्री थशे एनी सुंदरता वगेरेनी कीर्ती सांभलीने, रथनपुर नगरनो राजा पुर्णमेघ ते कन्या उपर आशक थयो थको तेनुं पोतानी साथे लग्न करवा सारुं सुलोचन राजा पासे तेणी मागणा करी. ते केहेणो तेणे मान्य न कर्याथी. तथा सुकेशाने [illegible]त्कारे हरण करवानी इछाथी पुर्णमेघ मेघ जेवी गर्जना करीने युद्ध करवा वास्ते आव्यो; ने ते राजानी साथे लढाइ [illegible]रीने तेणे तेने मारयो. त्यांरे सहस्त्रनयन नामनो सुलोचन राजानो पुत्र परिवार सहीत द्रव्य तथा पोतानी [illegible]नने लइने अहीं नाशी आव्यो [illegible].

ते सुकेशाए आ तलावमां तुमने क्रीडा [illegible]रतां जोतां वेतज कामविकारे पिडाणी थकी, ग्रीष्म रुतु [illegible] [illegible]हेनत करेला माणसना अंग उपर जेम पशीनो आवे, ते ज एनुं शरीर पशीनाथी भीजाई रह्युं छे धातनी तापे [illegible]त लीनी परे ए पगथी के माथा सुधी तापेली जणाय छे, शीयालाना दाहाडामां थंडा वायुथी जेम रो[illegible]उभां थाय, तेम ए स्त्रीना कोमल शरीर उपर अति बारीक केश सीधा थया छे. कफ [illegible]मे कंठ भराइ जाय तेवी एना कंठनी व्यवरु [illegible] थइ छे. न [illegible]म्या

थी जेम अग थरथरे, तेम ए कमलनयनीनुं शरीरकं पेठे रोगीना शरीरनी पेठे एनो पीलो वर्ण थइ गयो छे शोकातुरना नेत्रोमां जेम पाणी भराइ आवे, तेम तेनी आखो आसुथी भरायेली देखाय छे अने जेम योगी पुरुषोना मननी वृती एकाग्रपणे ध्येय पदार्थमा लागी रहे, तेवीज एना अत करणनी वृत्तिनी स्थिति थइ छे एवी दशानुं कारण पुछशो तो हे राजा, उपर कह्या प्रमाणे प्रफुलित कमल जेवा तारा मुखनु दरशन करता वेतज एनी नाना प्रकारनी विचीत्र अवस्था थइ गइ छे. ते वास्ते हिवे ए कन्या ज्या सुधी जीवे तावत्काल तु एनु रक्षण कर

एवी रीते ते सखी सगर राजानी साथे बोले छे, एटलामा आकाश मार्गथी सहस्त्रनयन आवीने, ते चक्रवर्तीने, नमस्कार करी, तथा तेनु यथायोग्य आदर सत्कार करीने, तेने पोताना स्थानक उपर तेडी गयो पछीत्याहा सुकेशारुप स्त्री रत्न आपीने तेने (परणावी) ने प्रसन्न कर्यो त्याथी ते बेउ विमान उपर बेशीने वैताढ्य पर्वत उपर गगनवलभ नामना नगरमा आव्या त्या ते इन्द्र जेवा पराक्रमवाला चक्रवर्ती सगर राजाए सहस्त्रनयनने तेना बापना राज्य उपर बेसाडीने, तथा सर्व विद्याधरोना अधीपती करीने पोतानी साथे ते स्त्रीरत्न लइ अयोध्या नगरीमा गयो. त्यां अति आनद सहित कला, कौशल्य, गायन विनो

दादिक नाटारंभ करतो हतो ते पोतानी राज्य ल-
क्ष्मी सहित सुखरुप रहेवा लाग्यो. कोइ एक समय
ना योगे, सुरासुरने पूजा करवा योग्य एवा श्री अ-
जितनाथ भगवान अयोध्या नगरीना उपवनमां स-
मोसरया. त्यां इंद्रादिक देवता तथा सगर चक्रवर
त्यादिक राजा, वगेरे पर्षदामां आव्या. श्री भगवानने
वंदनादिक करीने यथा योग्य स्थानके बेठा पछी श्री
अजित जिनेंद्र देशना देवा लाग्या. ते वखत एहवो
बनाव बन्यो के, वैताढ्य पर्वत पर पोताना बापना
मरणनो स्मरण करी क्रोधमां आवेला सहस्रनयने
गरुड जेम सर्पने मारे ते प्रमाणे तेणे पूर्णमेघना प्रा
णनुं घाण काढ्युं. तेना भयथी अतीशय कांपतां थको
पूर्णमेघनो पुत्र घनवाहन त्यांथी नाशीने सरण रहेवाना
हेतुथी समवसरणमां आव्यो. त्यांहा श्री अजितनाथ
जिनेंद्रने प्रदक्षिणा तथा नमस्कार करयो जेम कोइते अ
ग्नी ज्वालमां बलतो होय तेवो पुरुष कल्प वृक्षनी छाया तणे
शांतिने पामे तेम जिनचरणी सरण मिल्याथी ते शांत थ
यो. पण पोताना वेरीने याद करी गुस्सा मां आवीने
कहेवा लाग्यो के, तेने हुं पातालमाथी खेंची लावीश,
अगर स्वर्गमां जशे तो त्यांथी पण हेंटलपाडिश; पोता-
थी नहीं बने तो कोइ मोटा पुरुषनो आश्रय लइने पण
सहस्रनयन ने मारया विना रहीश नही. एम बोले छे एट
लामां हाथमां हथीयार लइने सहस्रनयन पण त्यां आ

ज्यो तेणे घनवाहनने सनामा बेठेलो दीठो पण श्री नग वानना सामर्थ्य वडे तेणु मन पिलगल्यांने आंस्योमां आ सु आव्यां, तथा कोपनी शांती थइ गइ; ने श्री तीर्थं कर नगवानने प्रदक्षणा तथा नमस्कार करीने य- थायोग्य स्थानक ऊपर बेठो, एवा प्रसगे सगर रा- जा श्री नगवंतने पूछवा लाग्यो के, पुर्णमेघ अने सु लोचन विच्ये वैर थयानु कारण शुं छे ते कृपा करीने दरशावो तेवारे नगवत कहे छे--

हे राजा पुर्वे आदित्यान नामना नगरमां एक नाव न नामनो साहुकार हतो ते पोताना हरिदास नाम- ना पुत्रने सर्व दोलत सोपीने व्यापार सारु देशातरे गयो त्या जई घणु नाणु मेलवीने केटलाएक काल पछी पोताना नगरमां रातना समये आवी पहोतो ते थी पोतानी साथे जे द्रव्य लायो हतो ते एक ठेका- णे राखीने स्त्री पुत्रादिक ऊपर प्रीतीना आवेशथी त था त्याने जलदी मिलवानी आशाथी कुवखते तथा कुवाटे पोताना घरमा पेठो तेने न ओलखीने आ- कोइ चोर हशे एवी बुद्धिथी तेना पुत्र हरिदासे हाथ मां तरवार लईने काइ पण विचार न करतां तेने मा र्यो. कह्यु छे के " मंद बुद्धिने विचार होतो नथी " तेवखते नावने जाण्युं के मारो पुत्र शत्रु थयो ते- नो द्वेश वता ते मरण पाम्यो पछी तेनी हरिदासे चोकशी करी मुख जोतां पोतानो बाप जाण्याथी ते

नो घणो पश्चाताप करवा लाग्यो, पण करे शुं ! भा
वी कोइथी मिटती नथी, हजार उपाए करे तोपण
अन्यथा न थतां जेम थवानुं होय तेम थाय. एम म
नमां रही गयुं. केटलाएक दाहाडा पछी हरिदास प
ण काल करी गयो. ते बेहुना जीव दुःखरूप योनि-
योमां जन्म धरतां थका कोइक पुन्यना योगे भाव-
ननो जीव पुर्णमेघ थयो, अने हरिदासनो जीव सु-
लोचन थयो. एवी रीते ए बेऊने बिचे प्राणांतिक वै
र थवानुं कारण पूर्व जन्मनुं घोर कृत्य छे, ते आ
भवमां संबंधरूप थयुं.

फिरी सगर चक्रवर्ती हाथ जोडी पुछवा लाग्यो
छे के, हेजगदोद्धारक देवाधिदेव. पुर्णमेघ तथा सह
स्रनयननो संयोग, ने एमना वैरनुं कारण शुं छे? ते-
मज सहस्रनयन विषे मारी प्रीती शा कारणथी
थई? ते कृपा करीने कहो. त्यांरे श्री अजितनाथ
स्वामी कहे छे.—हे राजाधिराज, पूर्वे तुं दानशील,
रंभक नामनो परिव्राजक हतो. ते समये शशि त-
थाआवली नामना बे तारा शिष्यो हता. आवली गु-
रु भक्त होवाथी ते तने शशि करतां वधारे प्रिय
हतो. तेणे कोइएक वखते पोतानी गाय पैसा लइने
वेची. अने शशि अति कठोर मननो होवाथी तेणे चो
रीथी आवलीनी गायने वेची. ए वात आवलीये जा
णयाथी ते बेउ विचे महा भयंकर लढाइ थइ. एक

बीजाना बाल तथा नूजादंम पकमीने मुठी मारवा लाग्या युद्ध करता शशिने आवलीए जीवथी मा र्यो तेणो जीव घणाकाल संसारमा फिरीने पुर्णमेघ थयो, आवली कालकरी गया पछी तेनो जीवघणे काले सहस्त्रनयन थयो, अने रत्नक परिव्राजकनो जीव दानना योगे करी आ तुं सगर राजा थयो. ए प्रमाणे एमनो सबध तथा वैर थवानु कारण, तेमज सहस्त्रनयन साथे ताहारी प्रिती पुर्व जन्मनी छे एवी रीते परखदामा नापण चाले छे, एटलामा त्या वेठेला नीम नामे राक्षसोनो राजा जटदते ऊठी अति प्रेम सहित घनवाहनने आलिंगन करीने तेणे कहेवा लाग्यो, के पूर्व जन्ममां पुष्कर द्वीपना नरतक्षेत्रमाना वैताढ्य पर्वत उपर कांचन नामना नगरमा हु विधयुध्र नामे राजा हतो. ते नवमा तु मारो अत्यत प्रिय पुत्र हतो ते माटे हे पुत्र, हु तने आज जोताज अति आनदवान थयो छु हिवेथी आ नवमा पण हू तने पुत्र नावे जाणु छु, माटे माहरु सर्व सैन्य, तथा द्रव्यादिक लइने, सम चोरस सातसो योजन विस्तीर्ण, सर्व द्वीपोमा मुकुटमणीरूप राक्षस नामना द्वीपनी वच्चा विच्चे सुमेरूनी परे शोनायमान नव योजन ऊचो, तथा पाचसे योजन परिघनो गोलाकारे एक त्रिकुट नामनो पर्वत छे, ते उपर मे एक सुवर्णमय लका नामनी नगरी हमणाज करी

छे. जे देवथी पण न जिताय अने तेणे सोनानो कील्लो छे, तेमां घरो पण हेमनाज छे, तेमज तेणे तोरण पण कनकना बांधेलां छे. तथा तेथी छ योजन दुर पेली तरफ सवासो योजन सम चोरस अति दुर्गम, तथा मनने परम प्रिय एवी पाताल नामनी नगरी पण मेज करी छे तेने निर्मल स्फटिक रत्ननो किल्लो छे. अने जे रमणीय घरोवडे शोभी रही छे. ते बेहु नगरी आजथी में तने आपी. हिवे माहारूं आपेलुं लष्कर लवाजम लइने तेनुं तुं राज्य कर. अने त्यांनो अधिपती था. आ सुरासुरने पुज्य तीर्थनाथना दरशन कर्यानुं फल तने तत्काल प्राप्त थयुं एम समज. एम कहीने तेने पोतानो नवरत्ननो हार, तथा राक्षसी विद्या आपी. ते लेइने घनवाहन श्री तीर्थंकरने नमस्कार करी, पोते घणो खुशी थइने राक्षसद्वीपमां जइ बेउ लंकानुं राज्य करवा लाग्यो. ते दिवसथी राक्षसद्विपना राज्य वडे, तथा राक्षसी विद्याना योगे तेनो वंश राक्षस कहेवराववा लाग्यो. पछी घनवाहन राजा इंद्र जेवो पराक्रमी थइ, पोताना शत्रुउना बलने जीतीने निःशंकपणे बेउ लंकानुं राज्य करवा लाग्यो.

एवी रीते भरतक्षेत्रना राक्षसद्वीपमां लंका नगरीमां राक्षसवंशनुं मूल श्री अजितनाथ भगवंतना तिर्थने विषे घनवाहन नामनो महा बुद्धिमान राजा थ

यो तेणे केटलाएक काल सुधी राज्य कर्या पछी स र्व संपत्तीनो मालीक पोताना महाराक्षस नामना पुत्रने करी, श्री अजितनाथ भगवानना चरणनी शरणे जइ दीक्षा लइने मोक्ष सुखने पाम्यो महाराक्षसे पण घणा काल राज्य कर्या पछी, पोताना देव राक्षस नाम ना पुत्रने सर्व सोंपी, दीक्षा लइने सिद्धावस्था पाम्यो.

ए प्रमाणे राक्षसद्वीपना असंख्य अधिपती थया. केरू श्री श्रेयांस भगवानना तीर्थमां कीर्तिधवल ना- मनो राक्षसोनो राजा थयो ते समयमा वैताढ्य पर्व त उपर मेघपुर नामना नगरमा, एक अतिंद्र नामे विख्यात, त्याहाना विद्याधरोनो राजा हतो तेणी श्री मती नामनी स्त्रीना उदरथी एक श्रीकंठ नामनो पु त्र, तथा एक देवी नामनी पुत्री थइ, तेनी सुंदरता- ने सांभलीने पुष्पोत्तर नामना रत्नपुरना राजाए पो ताना पद्मोत्तर नामना पुत्र सारुं ते कमलनयनी क न्याने तेना बाप पासे मागी जो पण पद्मोत्तर गु- णी तथा शीलवान हतो तोपण तेने अतिंद्रे छोक- री दीधी नहीं ते पछी दैवना योगे कीर्तिधवलने प- रणावी ए वात पुष्पोत्तर राजा सांभलीने अतिंद्र त था तेना पुत्र श्रीकंठ साथे द्वेष करवा लाग्यो

एक वखते श्रीकंठ मेरूपर्वतथी पाछो आवतां, लक्ष्मी जेवी रुपवाली, तथा पुनिमनां चंद्र जेवा मुख वाली, पद्मा नामनी पुष्पोत्तर राजानी कन्याने तेणे

दीठी. ते जोतांज तेणे कामविकार उपन्यो ने बेऊनी नजरा नजर थतांज त्योनी प्रीति बंधाइ. विकशित कमलना जेवा मुखवाली ते पद्मा श्री कंठनी सांमे ऊभी रही ने विवाहमां जेम वरना गलामां कन्या व रमाला घाले छे तेम दृष्टिना कटाक्षरूप मणिका प्रो हेली मदनबाण रूप मालाज जाणे तेना गलामां घालती होय ? एवा त्योना रसझरित चिन्होने जो इने तेणी एक दाशी मोटाथी पुकारवा लागी के, "प द्माने कोइ नवो पुरुष हरण करी जाय छे." ते सां भलीने तथा पोतानी कन्या उपर करुणा बुद्धिए करी ने, पोतानां सैन्य सहित पुष्पोत्तर राजा पुत्री वाल-वा दोड्यो. आंई श्रीकंठ पद्माने लइने घणो उत वलो नाशीने कीर्तिधवल राजानी सरणे आव्यो. ने पद्माना हरण करवानी सर्व वात तेणे सांभलवावी पाछलथी पुष्पोत्तर राजा पण जे कल्पांतनो समुद्र पाणीथी दशे दिशा भरी मूके छे. तेम त्यां आवीने पोतानी सैन्यवडे तेणे त्यानी दशे दिशा घेरी लीधी. ए वात कीर्तिधवले सांभलीने पोताना जाशुदद्वारा तेणे कहेवराव्युं के, हे पुष्पोत्तर राजा कांइ पण विचा र कर्या विना तुं लढाइ करवाने तत्पर थयो, तेथी ताहरीए मेहेनत निष्फल छे, केमके छोकरीने कोइ पु रुषने आप्या विना छुटकोज नहीं, तेथी तने पण ए म करवुं पड्युं हतोज; त्यारे .ारी न्या पोता ी रा

जी खुशीथी श्रीकंठने परणी तेमा अपराध शानो ? एमा काइ अपराध नथी माटे एटला सारु परस्पर द्वेशथी लढी मरवु ए वेहने लायक नथी तारे तो पोतानी कन्यानु मन जाणीने तेने परणावी देवी ए सवौंथी सारु छे पद्माए पण दासीद्वारा पोताना बापने कही मूक्यु के, हु मारी राजी खुशीथी श्रीकठने वरी छु, मने एणे हरण करी नथी. एम सांभलीने पुष्पोत्तरनो गुस्सो उतरी गयो कह्यु छे के " विचारवालामाणसणो क्रोध जलदी जतो रहे छे" पछी मोटा आनदे श्रीकठ साथे पद्मानो विवाह करीने पुष्पोत्तर पोताना नगरमा गयो

ए वधु जोइने कीर्तिधवले श्रीकठने कह्यु के वैताढ्य पर्वत उपर तारा घणा वेरी छे. तेथी तु अहिआज रहे, अथवा आ राक्षस द्वीपनी पासे आथमणी दिशामा त्रणसे योजनना प्रमाणनो वान्नर नामनो मारो द्वीप छे तेमज बर्बरकुल, तथा सिंहलद्वीप प्रमुख बीजा पण मारा द्वीपो छे, ते जाणे स्वर्गमाथीज कटका पड्या होय! एवा रलीयामणा छे तेमाना गमे ते द्वीपमा राजधानी करीने मारा नजिक तु रहे जो पण मारी सहायता छता वैरीना भेय तने जरा पण नथी, तोपण तु दूर गयाथी आपणो वियोग थशे, माटे तने अहिज रहेवु ते मने सारू लागे छे एम साभलीने मारा उपर कीर्तिधवलनी घणी प्रीति छे.

एवो विचार करीने श्रीकंठे वानरद्वीपमां रहेवानी मर जी करी. ते कीर्तिधवले मान्य करीने त्यां किस्किंधा नामनी नगरी वसावी राज्यनी स्थापना करी, ते उपर श्रीकंठने बेसारीने तेने आखा वानरद्वीपनो अधिपति करयो. किस्किंध पर्वत उपर विचरतां मोटा शरीरो वाला मनोहर फलोने खानारा, एवा घणां वांदरा तेने दीठामां आव्यां, ते जोइने पोताना राज्यमां तेणे था ली पीटावी के, वांदराने कोइए मारवुं नही. उलटुं त्योने अन्न तथा पाणी वगेरे; आपतां रहेवुं तेथी त्यां ना रहेनारा लोकोए पण त्योनी उपर घणी प्रीति क रीने त्योने सुखी करवा लाग्या. कह्युं छे के, " यथा राजा तथा प्रजा, " पछी ते दीवशथी त्याहाना लोको कौतुक वशे चित्रपट उपर छत्र उपर, ध्वजा उपर त-था पाटी वगरेनी जिणश उपर वांदरानाज सर्व चित्रो करवा लाग्या ते चिन्ह वशे तथा वानर द्वीपना राज्य वडे, तथा वांदर विद्या थकी त्याना रहेवाशी विद्याध-रो वानर नामे विख्यात थया. पछी श्रीकंठने वज्रकं ठ नामनो एक पुत्र थयो, जेनो पराक्रम कोइ पण क ही शके नही. ने लढाइ करवानी घणी इछा छे जेने अर्थात युद्धमां निपुण एवा पुत्र सहित श्रीकंठ सुख रुप राज्य करवा लाग्यो.

एक समय नंदीश्वर द्वीपमांना शाश्वत जिनेंद्रनी यात्रा करवा सारुं जवावाला गिरुथ देवताउनी पाछल

केटलाएक नविक लोको अति नक्ति वडे घाल्या ज ता श्रीकठे दीठा तेथी एणे एवो नाव उपनो के हुं प ण एमनी साथे यात्रा करवा जाऊ. पछी ते विमानमा बेशीने यात्राए जतां रस्तामा जेम, पहाड आडो आ-व्याथी नदीनो वेग अटकी जाय तेम मानुषोत्तर पर्व त उपर तेनो विमान अटकी गयो त्यारे विचार कर-वा लाग्यो के मारो मनोरथ पूर्ण करवामां विघन पड वानु कारण शु हशे? के मे पूर्व जन्ममा थोडु तप कर्युं छे? ए प्रमाणे पश्चात्ताप करतो छता तेज वखते दी-क्षा लइ महा तप करीने सिद्ध अवस्थाने पाम्यो, ए वी रीते श्रीकठादिक थकी वज्रकठादिक केटलाएक रा जा थइ गया पछी श्री मुनीसुव्रत स्वामीना तीर्थमां ए क धनोदधि नामनो राजा थयो, तेमज राक्षस द्वीपमां नी लका नगरीमा केटलाएक राजा थइ गया पछी त ल्तिकेश नामनो राजा थयो, ए बेहु विषे अती घणी मित्राचारी थइ

एक दहाडे तडितकेश पोतानी प्रिय श्रीचंद्रा नामनी स्त्री सहित नदन वनमां क्रीडा करवा गयो. त्याहा जइ सुखरुप विचरे छे, एटलामा कोइ वादरो एक झाड उपरथी ऊतरीने तेणे तडितकेशनी स्त्रीना स्तनो उपर पोताना नखे करी विखडा कर्या ते जोइने राजा अति गुस्सा मा आवी गयो कह्यु छे के, " स्त्रीनो पराभव कोइथी सहन थाय नही " पछी राजाए तेवादराने ए

क बाण मारयो. ते तेना शरीरमां लाग्याथी महा दुःखीत थतो बे त्रण कुदका मारी त्यांथी केटलेएक दुर एक मुनी तप करता हता तेनी सामे जइ पड्यो. मुनीने तेनी दया आव्याथी जेम कोइ वाटमारगोने भातुं आपे तेम तेवोए ते वांदराने परलोक जवाना अर्थे भातारूप नवकार मंत्र आप्यो, तेना योगे ते वांदरनो जीव उदधिकुमार नामना देवताओमां, एक भुवनपति थयो, एक वखते ते पोताना पूर्व जन्मनुं स्मरण करीनें ते मुनी पासे आवी तेमने वंदना करवा लाग्यो, कह्युं छे के, " सत्य पुरुषोने अवश्य साध वंदना करवा योग्य छे" तेमां पण जे साधु उपागरी होय तेणी वंदना तो विशेष करवी जोइए" आंइ ताडितकेश क्रोधमां आवीने पोताना योद्धाओ सहित ते वनमांना वांदराओने मारवा लाग्यो, तेणे जोइने ते भुवनपति देवता कोप करतो थको बहु वांदरारुपे थइने राक्षसो उपर झाड तथा पथ्थरोना वरसाद करवा लाग्यो. ए उपद्रवथी ते व्याकुल थइने दिव्य प्रयोग छे एवु तडितकेशे जाणी लइने उदधिकुमार देवता पासे आवी नमस्कार करी तेणी पूजा करवा लाग्यो. अने मोटे स्वरे तेने पूछे छे के, तुं कोण छे? ने शा सारू मने दुःख दे छे? एवो ते में तारो केवो अपराध कर्यो छे? ते सांभलीने उदधिकुमार शांत थयो, ने पोतानुं मरण तथा मुनिना मंत्रनुं

सामर्थ्य तेने कह्युं, पछी तडितकेश तथा ते देवता पेला मुनिना पासे आवीने पुछवा लाग्या के, हे प्रभु, एम बेउ विच्चे वैर थवानु कारण शु ? त्यारे मुनि कहे छे के, हे तडितकेश राजा पूर्व भवमां सावथी नामनी नगरीना राजाना प्रधाननो तु दत्त नामनो पुत्र हतो ने ते वादरो काशी नामनी नगरीमां एक पारधी हतो, कोइ एक वखते तु दीक्षा लइने काशी नगरीमा जतां पारधीने पोताना काम उपर जती वखत सामे मिल्यो, ते जोइ अपशुकन जाणीने तेणे पोताना वाणवती तने मारयो तेज वखते काल करीने महेंद्र नामना देवतानो भव तने मिल्यो, त्या केटलाएक काल रही त्याथी चवीने आ तु तडितकेश नामे लंकाधिश थयो, ने ते पारधी पण तेज दाहाडे वीजलीना पडवाथी काल करीने नरकमा गयो, पछी घणा काल सुधी संसारमा भटकतो थको वादराना भवने पाम्यो ते हमणा आ उदधिकुमार नामना देवताना भवमा छे एवी रिते तुमारू वैर पूर्व जन्मनु छे ते सांभलीने उदधि कुमार शांत थइ ते मुनिने नमस्कार करीने पोताना लोकमां गयो. अने तडितकेश राजा पण मुनिने वांदीने घरे जइ पोताना सुकेश नामना पुत्रने राज्यासन उपर वेसामीदिक्षा लेइने मोक्ष गयो तेमज किस्किधानो राजा धनोदधि पण पोताना किस्किंध नामना पुत्रने राज्य सोपीने दिक्षा लेइ काल करी मोक्ष गयो.

वैताढ्य पर्वत उपर रथनपुर नामना नगरमां अश
निवेग नामनो विद्याधरोनो राजा थयो. तेना बेपुत्र
थया.एकनु नाम विजयसिंह तथा बीजानुं नाम वि
द्युतवेग ते बेउ जाणे तेणि बे भुजाज होय ! ए
वा थया,तेज पर्वत उपर आदित्य नामना नगरमां
एक माल्यवान नामनो विद्याधरोनो राजा थयो. ते
ने श्रीमाला नामनी कन्या हती, तेनो तेणे स्वयं
वर कर्यो तेमां बोलावेला देश देशना अनेक रा
जा आव्या. ते जेम आकाशमां नक्षत्र शोभे छे.
तेम ते सर्व पोताना आसन उपर बेसता थ-
का शोभवा लाग्या. पछी श्रीमालाए आपणी दासी
पोतानी साथे लइने एक एकना गुण वर्णन करती
थकी घणा राजा देखाड्या परंतु ते सर्वने मूकीने
किस्किंधाना राजाघनोदधिना पुत्र किस्किंधना सामेअ
वी उभी रही.ते जाणे समुद्रनी पासे भागीरथी आवीने
उभी रही होय ! तेवी देखावा लागी. पछी तेना गलामां
वरमालाघाली,ते जाणे हिवेपछी थवानां तेणी भुजाना
ना आलिंगनने वास्तेकबुलातज देती होय. एवी रीते
श्री माला किस्किंधने परणी एम जाणीने सिंहना जेवो
जेनो पराक्रम छे,एवो विजयसिंह नामनो राजा त्यां बेठो
हतो,ते क्रोध वडे भ्रकुटी चडावीने मोटा अवाजे बोलवा
लाग्यो के, आ चोरनी परे दुरनय करवावाला विद्या
धरोने प्रथमज वैताढ्य पर्वत उपरथी हांकी काढ्या

वतां हमणा आंइ कोण वोलावी लाव्यो, माटे ए दु ष्ट, कुदुष्क, तथा दुराचारी विद्याधरोने प्रथमज प शुनी परे आज हुं मारिश. एम कहीने अशनिवेग- नो पुत्र विजयसिंह उठ्यो. तेणे जोइने बीजावादरा, राक्षसो, तथा वैताढ्य पर्वत उपर रहेवावाला विद्या धरो पण गर्जना करीने उठी उना थया, पछी बेउनु परस्पर युद्ध थवा लाग्यु ते आ प्रमाणे—हाथीनी सामे हाथी, घोमानी सामे घोमो, रथनी सामे रथ, पालानी सामे पाला, तथा पोतेपोतानी योग्यता जो इने परस्पर युद्ध करवा मडी गया ते वखते कल्पात नी परें जमीन उपर लोही तथा चीकल विना वीजुं कांइ नहोतु देखातु एम युद्ध थाय छे एटलामा कि- ष्किंध राजानो नानो जाइ अधक नामनो सूरवीर घणी जडपथी दोमीने जेम कोइ काम्नी डालथी फ लने तोडे तेम तेणे एकज बाणे करीने विजयसिंह- नु माथु कापी नाख्यु ते मूवो एम जाणीने तेनु स र्व सैन्य विखरी गयु कह्यु छे के, " जेणे नायक नही तेणे शौर्य क्याथी? सैन्याधीश विना सैन्य मुडदा जे वु जाणवु" पछी ते जयलक्ष्मी जेवी श्रीमालाने सा थे लइने पोताना परिवार सहित किष्किंध राजा पोतानी नगरीमा गयो.

अशनिवेग राजा पोताना पुत्र विजयसिंहनु मरण सा भलीने, अकाले वज्रपातनी परे त्योनी नगरीमां कि

स्किंध राजानी साथे लडवा सारुं आव्यो. तेणे जोइ ने तेणी सामे थवा सारु किस्किंधी राजा, लंकानो रा जा सुकेशी, तथा अंधक वगेरे परिवार सहित नगरी थी बाहार निकल्यो. पछी बेउ लश्कर विचे लडाइ थ वा लागी. तेमां अशनिवेग राजाए अंधकनुं माथु का पी नाख्युं. ते जोइने राक्षसोनुं तथा वांदरानुं लश्कर दसे दिशा तरफ नाठुं. वैरीनुं बल वधारे जाणीने कि स्किंध राजा तथा लंकानो राजा वगेरे पोताना स्त्री आदिक परिवारने लइने पाताल लंकामां नाशी गया. पुत्रने मारवावाला अंधक राजाना मरवाथी तथा पोताना वेरी नाशी जवाथी अशनिवेग राजानो गुस्सो शांत थयो. तथा मनमां आनंदवान थयो थको निर्घात नामना विद्या धरने लंका तथा किस्किंधाना राज्य उपर बेसाडी पोते पो ताना नगरमां गयो. त्यां केटलाएक काल राज्य कर्या पछी तथा तेणे कोइएक साधुनो समागम थयाथी पोताना सह स्रारनामना पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने पोते दिक्षा लीधी.

आंइ पाताल लंकाना सुकेशी राजाने तेणी इंद्रा णी नामनी स्त्रीना पेटें माली, सुमाली, अने माल्यवा न नामना त्रण पुत्र थया. अने किस्किंध राजानी स्त्री श्रीमालाना पेटे आदित्य रज, कुक्षरज ए नाम- ना बे पुत्र थया, एक दिवशे किस्किंध सुमेरुनी या त्रा करी पाछो फिरतां मधु पर्वत पर एक मनोरम वन जोइने त्यां विसामो वा उतरयो. ते ठेकाणे ए

क नवी किस्किंध नामनी नगरी वसावीने तेमा पोताना परिवार सहीत रहीने जेम कैलाश परवत उपर कुबेर शोभे छे. तेम दीपवा लाग्यो

सुकेशी राजाना त्रणे पुत्रोए पोतानु राज्य शतरुए हरण करी लीधु एम साभलीने प्रज्वलित अग्नि-नी परे क्रोधमां आव्या थका, लका नगरीमा आवीने महा पराक्रम वडे, निर्घात नामना खेचरने मारीने सुकेशीनो मोटो पुत्र माली त्याहनो राजा थयो ते वखते किस्किंध नगरीनो राजा आदित्यरज थयो

वैताढ्य पर्वत उपर रथनपुर नगरमा सहस्रार राजानी स्त्री चित्तसुदरीना गर्भमा देवलोकथी भ्रष्ट थएला कोइ देवताना जीवे प्रवेप करयो, तेना सामर्थ्य वडे चित्तसुदरीने इंद्रनी साथे भोग करवानो मनोरथ थयो. तेणी इच्छा पूरी न पडवाथीतेनु शरीर दाहाडे सुकवा लाग्यु. पोतानी स्त्रीनी खराब दशा जोइने सहस्त्रार मोटा आग्रहे तेणे पुछवा लाग्यो जो पण ते मनोरथ कहेवा लायक नहोतो तोपण ना इलाजथी सर्व हकीगत तेणे कही समजावी ते साभली राजाए विद्याना योगे इद्रनु रूप धारण करीने पोतानी स्त्री-नो मनोरथ पूरो करयो. तेणे पूरा मास थयाथी जेम, पूर्व दिशाथी सूर्य नीकले तेम तेना उदरथी महा पराक्रमी पुत्र उत्पन्न थयो ते पेटमा हता तेणी माताने इद्रनी साथे सभोग करवानो मनोरथ थयो हतो तेथी

तेनुं नाम इंद्र राख्युं, पछी ते यौवन अवस्थामां आ-
व्याथी तेना पिताए घणा विद्याधरोनी कन्याओ सा
थे तेनुं लग्न कराव्युं, केटलाएक दिवस पछी पोताना पुत्र
ने राज्य उपर बेसाडीने सहस्रार राजाए दिक्षा लीधी.

पछी ते इंद्र राजा राज्य करतां सर्व देश तथा वि
द्याधरोने पोताना स्वाधीन करी लेईने पोतानी सर्व
संपत्ति इंद्रना जेवी करी. ते आ प्रमाणे.—चार दिग-
पाल, सात सैन्य, सात सेना आधिपति, त्रण सभा,
वज्र नामनुं अस्त्र, ऐरावत हाथी, रंभादिक वेश्या, बृ
हस्पति मंत्री, तथा नगमेषी नामनो सेनापती. ए प्र
माणे पोतानी सर्व संपती इंद्रना जेवी करीने त्यांना
विद्याधरो सहित राज्य करतो थको पोताने इंद्र केहे-
वराववा लाग्यो. एणा चारदिगपालना नाम आ प्र-
माणे. ज्योतीपपुरनो स्वामी मकरध्वज राजा, तेनी स्त्री
आदित्यकीर्तिना उदरथी जन्मेलो सोम नामनो वि-
द्याधर तेने पूर्व दिशानो दिग्पाल करयो. मेघपुरना रा
जा मेघरथनी स्त्री वरुणाना पेटे जन्मेलो वरुण नामना वि
द्याधर पश्चिम दिशानो दिग्पाल करयो. कांचनपुरना सुर
नामना राजानी स्त्री कनकावतीए जन्मलो कुबेर नामना
पुत्रने उत्तर दिशानो दिग्पाल करयो, अने किस्किंधानग
रीना राजा कालाग्नीनी स्त्रीश्रीप्रभाथी जन्मेला यमना
मना विद्याधरने दक्षिण दिशानो दिग्पाल करयो. इत्या
दिक पोतानी संपति सहित इंद्र राजा राज्य करवा लागो.

ए वधु जोईने लंकाना माली राजाने सहन न थ यु,तेथी ते पोताना नाइउ, प्रधानो, महा पराक्रमी मीत्र, तथा बादराद्विपना माणसो सहित, ते इद्रनी सा थे युद्ध करवा सारु तेनी नगरी तरफ जवा लागो.ते वखते रस्तामा तेणे अपशुकन थया, ते जोइने तेना सुमाली नामना नाइए, जवानी मना करी तेनु न सां नलीने पोताना बाहुबल वफे गर्वित थयो थको माली राजा, इद्र राजाने जीतवा सारु वैताढ्य परवत उपर गयो, आइ इद्र राजा पण पोताना ऐरावत नामना हाथी उपर वेशीने हाथमां वज्र धारण करीने पोता ना चार लोकपाल सहीत माली साथे लफवा सारु न गरीथी बाहार निकल्यो. पढी बेउ लश्करो विच्ये मोटु युद्ध थवा लागु,तेमा रथनी सामे रथ घेडानी सामे घोडा हाथी नी सामे हाथी,तथा पालानी सामे पाला,थइने एक बी जाने मारवा मफी गया ए प्रमाणे लढाइ थतां,पर्वत उपरथी जेम शिखरो पडे तेम रथो पफवा लागा. जे म वायराथी वादल वीखराइ जाय तेवी हाथीयोनी दशा थइ जमीन उपर सूरवीरना माथा पडवा लागा कोइनाप गतुट्या कोइना हाथ कपाया एप्रमाणे बेउ राजाना लश्क रो परस्पर एक बीजानो नाश करवा लागा ते जोइने यु द्ध करतो थको घणो क्रोध आव्याथी पोताना शस्त्र तथा अस्त्रेथी घेरी लई मोटी झडप करीने पोताना व ज्र यढे इंद्र राजाए मालीनु माथु कापी नाख्यु, माली

ने मूवो जाणीने सर्व लश्कर पाताल लंकामां नाशी गयुं, पछी इंद्रराजाए राक्षसोनी लंका तथा तेमनी राक्षसी विद्यानुं हरण करीने एक विश्वा नामना विद्याधरनी स्त्री कौशीकाना उदरथीजन्मलो वैश्रवण नामना राजाने लंकानुं राज्य आपीने ते पोतानी नगरीमां आव्यो.

सुमाली राजानी स्त्री प्रीतिमतीना उदरथी रत्नश्रवा नामनो पुत्र उत्पन्न थतो. तेणे यौवन अवस्था प्राप्त थई छतां, कांइ विद्या साधन करवाना हेतुथी कुसुम नामना उद्यानमां जइने, एकांत स्थानमां बेशी, नासाग्र दृष्टीकरी तथा परवतनीपरें स्थिर थइ, जपमाला धारण करीने जप करवा लाग्यो. एक समये कोइ एक विद्याधरनी कन्या पोताना पितानी आज्ञाथी तेणी सामे आवी उभी रही ने कहेवा लागी के, हुं मानव सुंदरी नामनी महा विद्या तने प्रसन्न छुं. ते सांभलीने तथा जपमाला जमीन उपर राखीने नेत्र उघाडी रत्नश्रवा जूए छे तो एक नवयौवन विद्याधरी पोतानी सामे उभेली देखाइ. तेणे पूछवा लागो के, हे कन्यका, तुं कोण? कोणनी पुत्री छे? ने आंइ शा सारू आवी छे? त्यारे ते कहेवा लागी के, कौतक मंगल नामना नगरमां व्योमबिंदू नामनो एक विद्याधर छे, तेणी कौशीका, तथा कैकशी नामनी बे कन्या छे. तेमांनी कौशिकाने यक्षपुरना स्वामी विश्वा राजाने परणावी छे, तेनो पुत्र वैश्रवण ना

मनों विद्याधर हमणां लंकानुं राज्य करे छे ने कैक
शी हुं पोते छु, कोइ निमित्तथी मारा बापे वचने क-
रीने आपने सोपी दीधी छे, तेथी हु आइ आवी छु
हिवे मने अगीकार करो, तेनु एवु बोलवु साम्भलीने
ते मनमां विचार करवा लागो के हु ध्यानमा छता जेणे
मने कह्यु के, हु मानवसुदरी नामनी महाविद्यातने
प्रसन्न छु ते आ नही पण ते साक्षांत मानवसुंदरी
नामनी विद्याज हती, हिवे हु कृतकृत्य थयो एम जा
णीने पछी पोताना भाइउ वगेरेने त्यां बोलावी छा-
वीने रत्नाश्रवाए तेनी साथे लग्न कर्यो पछी त्या
ज पुष्पपुर नामनुं नगर वसावीने ते स्त्री सहित उ-
पभोग भोगववा लागो

एक वखत कैकशीए स्वप्नमा हाथीनु गडस्थल
तोडनारो सिंह जोइने राजाने कह्यु ते साम्भलीने रा
जाए तेने कह्यु के तने एक महापराक्रमी पुत्र थशे
पछी ते रत्नश्रवा चैत्यनी पूजा करवा लागो. केटला
एक दिवस पछी कैकशीने गर्भ रह्यो. तेना प्रभावथी
राणीनी वाणी निष्ठुर थवा लागी एक समये कैकशी
आरसामा पोतानु मुख जोता महा भयकर दीठामां
आव्यु, ने ते इन्द्र राजाने पण आज्ञा करवानी इच्छा
करवा लागी पोताना गुरु वगैरेने नमस्कार करवु मू-
की दीधु तथा शत्रुना माथा उपर पग देवानी मर
जी थवा लागी. एवा दारूण भाव थवानु कारण ते-

नो गर्भ हतो. एम करता पूरा मास थएथी शुभ ल ग्नें, शुभ महुर्ते तथा पूर्ण मासीना शुभ दिवसे ते साडाबार हजार वर्षनी आयुष्यवालो पुत्रने जन्मी, माताना उदर थकी बाहार आवतांज प्रथम पोताना वडीलोने मिलेलो नवरत्ननो हार जे करंडीआमां राखे लो हतो ते घणी चलाखीथी हातथी उपाडीने तेणे पोताना गलमां घाल्यो. ते जोइने कैकशी आश्चर्य पा मीने कहेवा लागी के, बीजाने उचकवाने अशक्य ए वो नवरत्ननो हार आज सुधिं अमरा वडीलोए पू- ज्यो, ने तेनुं हजार नागे करी रक्षण करेला निध्यान परे रक्षण कर्युं, तेने आ बालके रमत मात्रमां उपा डीने पोताना गलामां घाल्यो. तेमां तेना मुखनुं प्रति बिंब पड्याथी तेनुं दश मुख एवुंनाम राख्युं.

एक समये रावणनो बाप रत्नश्रवा पोताना मन मां विचार करवा लागो के, माहरो पिता सुमाली मेरू पर्वतनी जात्रा करवाने गयो हतो. तेवारे चार ज्ञान सहित मुनी माहाराजने तेणे पूछ्युं, तेवारे मुनी कह्युं हतुं के, आ हार जे पोताना हाथे उपाडीने पो ताना गलामां नाखशे ते प्रति वासुदेव थशे, माटे आ माहरो पुत्र दशमुख खसुस करीने प्रतिवासुदे व थशे. एवो निरणय कीधो. पछी केटलाएक वरस वी त्या केडे केकशीए स्वप्नामां सूर्य दीठो ते दिवसथी गर्भ धारण करी नव मास पूरा थएथी, भानुकर्ण आ

थवा कुंभकर्ण नामना पुत्रनो जन्म आप्यो. तेवार प-
छी स्वप्नमां चद्रमा देखी करीने त्रीजा पुत्र वीभि
षणने जन्म आपती हवी, छेवट चद्रनी कातीनी पेरें
नखनी कातीवाली चद्रनखा अथवा सुरुपनखा नाम
नी कन्याने जन्म आपती हवी, उपर कहेला त्रण पु
त्रना शरीरो सोल सोल धनुष्य प्रमाणें उचा हता, ए
त्रणे भाइउ माहा सूरवीर पराक्रमवत थका पोतानी इ
च्छा प्रमाणे क्रिडा करता पृथ्वि उपर फरवा लाग्या.
इति श्रीहेमचद्रआचार्य विरचिते श्रीराम ल-
क्ष्मण चरित्रे राक्षसवस तथा वानरवस उत्पत्ति
रावण जन्म वर्णनो नामा प्रथम खंड समाप्त ॥

॥ अथ श्रीराम चरित्र कथा द्वितीय खंड प्रारभ ॥

एकदा समे रावण वीभिषण अने कुंभकर्ण त्रणे
भाइउ एक स्थले बेठा हता तेवामां आकश मार्गें
जतो एक विमान तेउए दीठो, तेवारे रावण पोतानी
माताने पूछवा लाग्यो के, आ विमानमा बेशी कोण
जाय छे एवु पोताना पुत्रनु बोलवु साभली कैकशी
कहेवा लागी, के हे पुत्र ए माहरी मोटी बेननो पुत्र
छे. एनु नाम वैश्रवणछे, ने सर्व विद्याधरोनो राजाजे
इद्र तेनो ए एक मोहोटो योद्धो छे. अने माली नाम

ना तारा वडाउना जाइने युद्धमां मारीने इंद्र राजा ए तेनी लंका नगरीमां एने बेसार्यो छे, एवुं सांभली ने रावणने लंका नगरी लेवानुं मन थयुं. एम जाणी ने तेनी माता तेने कहेवा लागी के, ते लंका माहरा वाहाला पुत्र पूर्वे भीमेंद्र नामना राजाए श्री अजितनाथजीनी परखदामां बेठेला एक घनवाहन नामना वीद्याधरने " ए माहरो पूर्व जन्ममां पुत्र हतो. " एवुं स्मरण करीने दुशमनोने निराश करवा सारू पोतानी वसावेली लंका नगरीना राज्य उपर बेसार्यो. अने ते दिवसथी तेने पोतानो पुत्र मानीने तेणे दिक्षा लीधी, पोतानी राक्षसी विद्या तथा आ नवरत्ननो हार, पण तेणेज आप्यो छे, ते घनवाहन राजा आपणा कुलनुं मूल छे. तेनी सर्व संपती तारा पितामह सुमाली राजा सुधी चाली, पछी इंद्र राजाए तेनुं सर्व राज्य खूंची लीधुं. ते दिवसथी सुमाली राजा पाताल लंकामां नाशी गयो. ते हजिसुधि तिहांज राज्य करे छे, अने ए लंकामां सुखे करी ताहारा दुशमनो राज्य करे छे. तेनुं दुःख हजि सुधि ताहरा पिताना मनमां छे, पण एवो दहाडो क्यारे आवशे के ए लंकाना राज्य उपर हुं तने बेठेलो जोइश! लंकाने लूटनाराउने ताहरा हाथ वति बंधीखाने नाखेला हुं जोइश! त्यारेज हुं पुत्रवती स्त्रीउमां शिरोमणी थइश, हमणां तो ए सर्व म्हारा मनमां मनना म-

नोथं आकाशना फूल जेवा छे. एवु पोतानी मातानु बोलवु सांभलीने त्यां बेठेलो बीभिपण नामनो न्हा नो भाइ कहेवा लाग्यो, हे मात तु खेद नकर, आ दसकद (रावण) नी तने खबर नथी एनी आग ल इंद्र तथा वैश्रवण, बीजा विद्याधरो, राजाउ, देव ताउ अने मनुष्यो ए सर्व पशु जेवा छे, ते तो र ह्यो पण एकलो आ कुंभकर्णज सर्व पृथ्विने वश करवाने समर्थ छे, अने हु पण आपणा सर्व दुश-मनोने मारवाने हिमत राखु छु, एवा माहा सूरवीर ताहरा पुत्रो छता तु शा सारू चिंता करे छे. एवु बी-भिषणनु बोलवु सांभलीने मनमां राजी थइ, एटला मा रावण दाते करी ओठ चावतो थको पोतानी मा ताने कहेवा लाग्यो के, हे जननी, तें जे ताहरा हृद यमा शल्य धारण कर्यु छे ते मूकी दे अने वज्रना जेवी कठण था हु माहरा एकज हाथे करी इंद्रादिक शत्रुउनो मारवाने समर्थ छु तथापी क्रमे करी आ वेली जे विद्या, तेनी साधना कराय पेहेला ते माहरा शत्रुउने जीतवाने इछतो नथी, त्यारे हिवे मने आ ज्ञा आप हु विद्या साधीने सर्व ताहरा मनना मनो रथ पूर्ण करीश. पोताना पुत्रना एवा सूरवीर पणाना वचनो सांभलीने तेना माता पिताना नेत्रोमा हर्षना आसु आव्या थका. तेना माथा उपर चुंबन करीने तेमणे तेने रजा आपी. रावण पण गदगद कंठ

थयो थको त्यांथी निकलीने एक महाभयंकर वनमां ग
यो. त्यां जइ आम तेम जूए छे तो मोटा फाडोनी नि
चे केटलाएक मदोन्मत्त सिंह मोटा श्वासोश्वास सहि
त गर्जना करी रह्या छे. केटलाएक पोताना पूछडा व
डे जमीनने झपाटा मारेछे. उलुक वगेरे पक्षीओ म-
हा भयंकर किररर किररर शब्द बोले छे.

एवा भयंकर वनमां दशकंठ पोताना भाइउ सहित
जइने, तपस्वीनी परें पोतानी जटा वधारीने, हाथमां जप
माला लइने, पोतानी नजरने नाकनी आग्रउपर राखी
नेअंग उपरना बधां धोला कपडा करीने, तथा दृढ आस
न वालीने दश कोटी हजार जपे करीने सिद्ध थवा वा
ला षोडाक्षरी जप करवा सारु एक प्रहरमां त्रणे
भाइउ ए सर्व कामने देवावाली एवी अष्टाक्षरी
विद्यानी साधना करी.

एक समयें जंबुद्वीपनो सूर नामनो राजा, पोता
नी स्त्रीउ सहित वननी क्रीडा करतो थको ज्यहां रा
वणादिक त्रण भाइउ तप करता हता त्याहां आव्यो.
तेउने ध्यानमां बेठेला जोइने तेउंना तपमां विघ्न
करवा सारु पोतानी स्त्रीउने तेमनी पासे मोकली,
ते बधी त्यां जतांज तेउनुं रूप जोइने पोतानुं का
भूली जइ तेउनी उपर मोहित थइ कामे करी पिडानी
थकी तेउने निर्विकार, निश्चल, तथा मौनी जाणीने
अति मधुरवाणी वडे बोलवा लागी. भो भो जटा-

धरो, अमारी सामे तो जूवो अमारु रूप जोइ-
ने देवता पण मोहाइ जाय, ते प्रत्यक्ष तुमारी उपर
प्रसन्न थइ छता बीजी ते कोइ मोटी सिद्धिपणे क्रिया
करवाथी सर्व विद्या, मत्र, तथा बधी सिद्धि मिल्या
थी विशेप आनद थशे

एवीरीते ते स्त्रीउए तेउने मोहीत करवा सा-
रु घणा उपाय कर्या तोपण तेओ पोताना आसन
उपरथी डग्या नहीं त्यारे ते यक्ष तेवोनेकहेवा ला
गो के, हे मूर्खों, तुमे आ ध्यानरूप महाकष्ट करी सा
ध्य वस्तुनो आडबर केम करी रह्या छो' आ क्रिया क
रवाने कोइ धूतारा दूराजाए तुमने फसाव्याछे, माटे
आ ध्यानरूप दुराग्रह मूकीने आइथी जावो तुमने
काइ इछा होयतो ते मारी पासे माग्याथी मिला श
कशे इत्यादिक एणेपण घणा उपाय कर्या तथापि
ते पोताना आसन उपरथी चलायमान नथया ते जो
इने क्रोधमा आव्या थको कहे छे के, हु प्रत्यक्ष देव
तुमारी सामेऊभो छता तेने मूकीने कोनु ध्यान धरोछो
हिवआ ढोगने मूकी द्यो नेजे जोइए ते मारी पासे-
थी मागी ल्यो, नहीं तो पछी हु तुमने बलात्कारे मु
कावीशु, एवु भय बताव्याथी पण काइ न वल्यु त्या
रे मोटा भयकर किलकिलाट शब्द करवा लाग्यो मो
टा पर्वतोना शिखरो उपाडीने तेमनी सामे फेकवा ला
ग्यो सिंह रीछ, तथा वाघ वगेरे जीहामणा जानव

शेनां स्वरूप धारण करीने घणो भय बतावबा ला-
गो. तथापि ते चंचल न थया, पछी मायावी कैकशी,
रत्नश्रवा, तथा चंद्रनखानां रूप धारण करीने ते
त्रने बांधीने तेमनी सामे लावी नाख्यां. ते माया
मय त्रणे जणानी आंखोमां आंसु भराइ आव्या
, ने रडतां थकां कहे छे.—हे पुत्रो जेम पारधी
पशुने मारे छे, तेम तुमारी सामें आ निर्दय अम
ने बांधीने मारे छे. माटे हे रावण हिवे तुं जलदीथी उ
ठीने अमारूं रक्षण कर. शा माटे अमारी संभाल
लेतो नथी एटलो बधो तारो अहंकार क्यां गयो?
हे कुंभकर्ण तुं पण सांभलतो नथी के? अमारी ए
वी अवस्था छतां तुमे निश्चिंत थइ केम बेठा छो? हे
बिभिषण तुं तो कांइक दया कर. अमारा विशेनी
तारी एटली बधि भक्ति क्यां गई? पण ए तुमा
रो वांक नथी. अमारा कर्मज करचुं जणाय छे. ते
विना पुत्र ते शत्रु केम थाय! इत्यादिक घणा वि
लाप करयां तोपण ते समाधिथी खश्या नहीं. पछी
ते त्रणेनां तेणे माथां कापी नाख्यां. एवा दारुण
कर्मथी पण ते चंचल थया नहीं, त्यारे ते यक्षे बी
जा मायावी कुंभकर्ण तथा बिभिषण करीने रावण
नी सामें तेमनां माथां काप्यां. तेमज तेउनी सामें
रावणनुं माथुं कापतांज ते बेउ कांइक ध्यानथी ख
शी गया. जो पण ते कांइ पण डरयां नहीं. तोपण

केवल भक्तिनां प्रभावथी यत्किंचित चंचल थया. पण परमार्थ जाणवा वालो रावण लिगारे ध्यानथी न खसतां पर्वतनी परें अचल स्थित रह्यो. ते वखते आकाशमां "साधु साधु" एवो वाणी थई सर्व व्यंतर, तथा किंनर, वगेरे देवताउ आकाशमांथी पुष्पोनो वरसात करवा लागा एवा प्रसंगे एक हजार विद्या सर्व एकठी मिलीने रावणनी सन्मुख आवीने ऊभी रही तेउमांनी केटलीएक विद्यानां नाम ए प्रमाणे छे—प्रज्ञप्ति, रोहिणी, गौरी, गाधारी, नभ. सचारिणी, कामगामिनी, अणिमा, अक्षोभ्या, मनस्तंभन कारिणी, सुविधाना, तपोरूपा, दहनी, विपुलोदरी, शुभप्रदा, रजोरूपा, दिशनत्रिविधायिनी, वज्रदरी, समादृष्टि, अदर्शनी, अमरा, अनल स्तंभिनी, तोयस्तंभिनी. गिरिदारुणी, अवलोकिनी, वन्ही, धारा, धीरा, भुजगिनी, तारिणी, भुवना, अवध्या, दारुणी, मदनाशिनी, भास्करी, रुपसपत्ति, रोशानी, विजया, जया, वर्धनी, मोचनी, वराही, कुथिलाकृती चित्तोद्भवकरी, शाति, कौवेरी, वस्यकारिणी, योगेश्वरी, वलोत्साहा, चडा, अभीति, प्रघर्षिणी, दुर्निवास, जगत्कप कारिणी, तथा भानु मालिनी, इत्यादिक महा विद्याउ रावणने पूर्व जन्मना कर्म वडे थोडाज दहाडामा साध्य थइ, कुंभकर्णने पाच विद्यामिली तेना नाम— सर्वृद्धि जभिणी, सर्वापहारिणी, व्योम गामिनी त

था इंद्राणी, ए पांच विद्या. अने विभिषणने एचा र विद्या मिली.—सिद्धार्थी, शत्रु दमनी, निर्व्याघाता खगामिनी. एवी रीतें ते त्रणे जाइउने विद्याउ मिली ते जंबुद्वीपना अधिपति यक्ष जोइ मनमां भय पामीने रावण पासे पोताना अपराधनी क्षमा मांगी. ने कहेवा लाग्यो के माहरो अपराध माफ करो. कह्युं छे के, " मोटा पुरुषनो अपराध कर्यां छतां तेनी आगल नम्रता करवी एज तेनो प्रतिकार छे. " पछी ते यक्ष तेज वनमां एक स्वयंप्रभ नामनुं नगर वसावी तेमां रावणनुं राज्य स्थापीने ते पोताना स्थानकें गयो.

रावणने विद्या मिली ते रत्नश्रवा तथा कैकशीए सांभलीने पोताना परिवार सहित त्यां आवी मोटा आनंद वडे रहेवा लागा. पछी रावणे सोल उपवास करीने चंद्रहास्य नामनो एक खड्ग धारण कर्यो. वैताढ्य पर्वत पर सुरसंगीत नामना नगरमां एक मय नामना विद्याधरोना राजानी स्त्री हेमवतीना उदरथी जन्मेली मंदोदरी नामनी कन्या उपवर थइ छतां तेनोबाप तेने योग्य र मिलवानो विचार करतां केटलाएक विद्याधरोना पुत्रोना गुण जोयाथी तेउमां नो कोइ तेने योग्य न जणायाथी मोटी चिंतामां बेठो छतां ते वात तेणे पोताना प्रधानने कहेवाथी तेणे कह्युं के, चिंता करवानुं कांइ काम नथी. सहस्त्र विद्या संपन्न तथा देवताउने पण भय तावनार, ए

वो एक दशानन नामनो रत्नश्रवानो पुत्र छे, तेणी ब रावरी करनार एके विद्याधर मिलनार नथी. तेज तु मारी पुत्रीने योग्य वर छे माटे तेनी साथे ए मदोदरी नुं लग्न करवु जोइए एवु ते प्रधाननुं बोलवु सांभ- लीने अति आनदवडे ते मय राजा पोताना परिवा- र तथा सैन्य सहित पोतानी पुत्री रावणने देवा सारू आगल जासुद मोकलीने ते स्वयप्रभ नगरीमा आ- व्यो तेकबुल करीने सुमाली प्रमुख रावणना गोत्रो मंदोदरीने घरे लाववा वास्ते सामैयो कहाड्यो पछी शुभ दिवस, तथा शुभ लग्न वगेरे जोइने बेउनो विवाह करयो सर्व कार्य थइ गया पछी मय राजा पोताना परिवार सहित पोताना नगरमा आव्यो आइ राव- ण पण मदोदरी समेत घणा दहाडा अति आनद वडे सुख भोगववा लागो

कोइ एक दिवशे रावण क्रिडा करवा सारू मेघ- रथ नामना पर्वत उपर गयो त्या सरोवरमां स्नान करती विद्याधरोनी एक हजार कन्याने तेणेदीठी, तेकन्याउए पण रावणनेजोयो तेवोनी नजरानजर थएथी ते हजार कन्याउकामेकरी पिडती थकी राव- ण पासे आवीने कहेवा लागी के हे स्वामि ? तुं अमारो पति था, रावणे ते मान्य कर्याथी ते सर्वे गाधर्व विवाहे परणी, ए सर्व वृतात तेउनी दा- सीउए तेमना पिता पासे जई कह्यो रावण ते ह

जारे स्त्रीयोने पोताना रथमां बेसाडीने चालतो थयो. पाछलथी मोटा क्रोधमां आवीने रावणने मारवाना हेतुथी ते विद्याधरो दोड्या, तेणे जोईने हजारस्त्रीयो रावणने कहेवालागीकेहे स्वामि, आ विमान जलदी तुं हांकीजा कदाचित अमरसुंदर नामे एकज विद्याधर आवी पहोचशे तो ते बिलकुल नीताशे नहीं तो पछी कनकबुद्धादिक सर्व पोताना परिवार सहित आवशे तो ते केम जिताशे, रावण सांभलीनें तथा हसीनें कहेवा लागोके, हे स्त्रीओ तुमे हजी मारू बाहु बल जोयुं नथी, ते आजतुमने बतावीश एटलामां ते सर्व विद्याधरो आवीने जेम पर्वत उपर मेघ वरसात करे, तेम पोताना शस्त्र तथा अस्त्र वडे तेउए रावणने ढांकी लीधो. रावणे पोताना पराक्रम वडे तेमना सर्व हथियारोने पोताना हथियारो वडे तोडीने परस्वापन नामना अस्त्रथी तेउने मोह पाडीने पशुनी पेरें नागपाथकी बांधी लीधा.तेजोईने आश्चर्य पामी थकी ते सर्व स्त्रीओए रावण पासे पितभिक्षा मांगी.ते मान्य करीने रावणे तेउने छोडी मूक्या.पछी ते रावणनो उपकार मानी पोताना नगरमां गया. रावण विद्याधरोनी कन्याउ सहित पोताना स्वयंप्रभ नामना नगरमां आव्यो. ते वखते लोको मोठा आनंदे करी तेणे कत्नार देवा लागा. कुंभपुर नामना नगरना स्वामी, महोदर ना-

मना राजानी रूपनयना नामनी स्त्रीना पेटे जन्मेली विद्युलता जेवी कांतिवाली, तथा कुंभना जेवा बे स्तने करी शोभीत, एवी तडितमाला नामनी एक कन्यानी साथे कुंभकर्णनु लग्न करयु अने वैताढ्य पर्वतनी कुणमां एक ज्योतिषपुर नामना नगरना स्वामी, वीर नामना राजानी स्त्री नदवंतीए जन्मेली पंकजसी कन्यानी साथे बिभीषणे लग्न करयु केटलाएक काल पछी रावणनी स्त्री मंदोदरीना पेटे इंद्र जेवा पराक्रमवाल इंद्रजित तथा मेघवाहन एवा बे पुत्रोनु अनुक्रमे जन्म थयु

कोईएक समये पोताना वडाउनुं वैर सांभलीने कुंभकर्ण तथा बिभीषण लंका नगरीमा जइने वैश्रवण राजाने उपद्रव करवा लागा तेथी अकलाइने वैश्रवणे पोताना दूतना मुखे सुमालीने कहेवरावी मूक्यूं के, पोतानी शक्ति न जाणता रावणना नाना भाइउ मनमां सूरवीरपणानो अभिमान धरता थका कुवाना देडकानी पेरें माहरी लंका नगरीमा तोफान करे छे, तेणी आज दिसव सुधी में क्षमा करी, पण हिवे शोशातु नथी माटे तु एमने समजावीने बोलावी ले, नहीतो पूर्वे जेवा मालीना हाल थया हता, तेवा एमना पण थायशी माहरा बलनी शु तने खबर नथी? ते जासुदना एवा बोल सांभलीने क्रोधमा आव्यो थको त्या बेठेलो रावण तेने कहेवा लागो के, ए वैश्रवण कोण

छे! तथा कोणनो शेवक छे! बीजाने करनार देता छतां एटलो बधो गर्व केम राखे छे! बीजानी आपेली न गरीनुं पालन करतो तां एटली बधी मगरुरी कर तां लाज नथी थती! तुं दूत होवाथी तने हुं मारतो नथी. माटे तने जीवनी खप होय तो ज दी आंह्-थी नाशी जा. ए सर्व वृतांत दूते जइने वैश्रवणने ह्यो. पछवाडेथी रावण पण पोता ं सैन्य जीने लं- ां आवी पोहतो. ते जोइने वैश्रवण पोताना परि र ि त नगरीथी बाहेर निकल्यो. पछी परस्पर ल डीने रा णे वैश्रवणने जीत्यो.

वैश्रवण युद्धमां हारीने विचार करवा लागो के, ए होडुं हुं इंद्र राजाने केम देखाडुं? जे पुरुष वै रीना हाथे जितायो तेने पृथ्वी उपर जीवतो रहेवुं धिक्कार भरेलुं छे. माटे अनेक अनर्थो. देवा वालुं ए राज्य करवामां शो फायदो छे! तेथी बेहत्तर छे के, मोक्षनुं द्वार जे दिक्षा, तेणे ग्रहण करीने सदा सुखी रहेवुं. आ कुंभकर्ण तथा बिभीषण जो पण मने अ पकार करनारा खरा, तोपण आ वखते मारा पकारी थ या. ते विनामने एवी बुद्धि क्यांथी थात! रावणने पण प मित्र जाण ो जोइए, जेथी आ वैराग्यनी उत्पत्ति थइ, एम विचार करीने, तथा पो ं शस्त्र अस्त्रा दिक जमीन उपर नाखीने, वैश्रवण तत्वनिष्ठ थयो तां पोतेज पोताना मने करी साधु दिक्षा लीधी. ते

सर्व जाणीने तथा हाथ जोमी नमस्कारकरीने, राव-
ए तेने कहेवा लागो –हे वैश्रवण, तु माहरो मोटो
भाइछे, माटे माहराथी तारो जे काई अपराध थयो
होय ते माफ करीने निर्भय थयो थकोआ लंकानु रा
ज्य कर बीजी घणी पृथ्वी पमी छे, त्या जई हु रा-
ज्य करीश. एवा रावणना वाक्यो साभलीने काई प
ण न बोलता वैश्रवण मौन धारण करीने तप कर-
वा बेशी गयो पछी ते तेज भवमां मोक्ष पामी गयो.
वैश्रवणनी एवी अवस्था जोईने रावणे जाण्यु के,
ओ हिवे ससारने अगीकार करनार नथी, तेथी ते-
नी आगल हाथ जोमी, नमस्कार करी, पोताना अ
पराधनी क्षमा करावीने तेनी लंका नगरी, तथा तेनु
पुष्पक विमान तेणे लइने त्याहनुं पोते राज्य करवा
लागो एक समये ते विमानमा बेशी रावण सामत
पर्वत उपर अरिहतना प्रतिमानी वदना करी, त्याथी
उतरता सैन्यना कलकलाट शब्दनी परें एक वन
ना हाथीनो शब्द तेणे साभल्यो, तेणे जोइने, तथा
मोठाथी हंसीने एक दूत रावणने कहेवा लागो के,
ए हस्ती रत्न आपणी सपत्ति योग्य छे, ते हाथी
केवो छे ? जेना मोटा दातो छे, पीला छे जेहना नेत्र,
गडस्थल उचु, छता लेमाथी मदनो झरणो वही रह्यो
छे,तथा ए सात हाथ उचो, तथा नव हाथ लाबो छे.
एवा मदोन्मत्त हाथीने वश करीने रावण तेनी उपर

ठो. तेनुं नाम भुवनालंकार राख्युं, पछी तेने बंधन-स्तंभनी साथे बांधीने तथा ते रातना त्यांज रहीने जे दहाडे सवारना ऊठीने त्यांज राजसभा करी, एटलामां एक चोपदारनी साथे पवनवेग नामनो द्याधर मारें करी जरजर थएलो ते सभामां आ नि रा णने नमस्कार करीने कहेवा लागो.

हे दशकंध, किस्किंधी राजाना आदित्यरज, था कुक्करज नामना बे पुत्र यम राजानी साथे युद्ध ां हारयांथी यमे तेमने बांधीने पोताना बंदीखाना ां नाख्यां. ते परंपराना ताह्ररा शेवक छे. तेउने नर क रुप बंदीखानाथी छूटा कर. सेवकने वांकु थयाथी तेना धणीने तेनी चिंता करवी योग्य छे. एम सांभ लीने रावण अति क्रोधमां आव्यो थको बोलवा ागो के, हे पवनवेग, माह्ररा शेवकोने दुःख देवानुं फल ते यम हमणांज पामशे. एम कही पुष्पक वि ानमां बेशीने पोताना सैन्य सहित रावण किस्किं धा नगरीमां आव्यो. त्यां जीवने पीडा देवावाला त था महा भयंकर एवा सात नरकनें जोइने अति क्रो धायमान थयो थको, परम धारमिक जे रावण, ते त्याहनां केटलाएक नरकोनी रक्षा करवावाला यमना किंकरोने मारीने पोताना जन तथा बीजा सर्वने छो मी मूक्या. ए वातनी यमने खबर पडतांज क्रोध व-डे नेत्र राता करतो थको रावणनी साथें युद्ध करवा

सारूं पोतानुं सैन्य लइने नगरीथी बाहेर निकल्यो. पछी बेहुनी परस्पर लढाइ थवा लागी. ते एवी रीते—हाथी हाथीनी सामे, घोडो घोडानी सामे रथ रथनी सामे, तथा प्यादो प्यादानी सामे, अने पोतपोताना योग्यतानी सामे युद्धथता यम राजा क्रोधमा आवीने तथा मोहटो ऊडपथी सुंडादरू जेवो एक मोहटो दरू हाथमा लइने रावण उपर नाख्यो दशकठे पोताना बाण वडे तेना कटकाकटका कर्या. त्यारे यमे बाणनो वरसाद करीने रावणने ढाकी लीधो तेनां सामे तेणे पण तेमज कर्यु, पछी यमे बीजा घणा उपायो कर्यां. तोपण ते फाव्यो नहीं. अने रावणना बाणे करी पीडाणो थको त्याथी नाशीने रथनपुर नगरमा इंद्र राजा पासे आयो तेणे यथायोग्य नमस्कार करीने हाथ जोडी कहेवा लागो हे स्वामी, तुमारो दीधेलो यमपणानो अधिकार मने नथी जोइए, केम कहो तो, हमणा एक रावण नामनो राजानो यम पण यम पेदा थयो छे, तेणी सामे कोइनु चालतुं नथी माहरी नगरीमां आवी, नरकना रक्षण करनारा लोकोने मारीने, तेमाना सर्व प्राणीउंने कहाडी मूक्यां तेणी साथे युद्ध करतां जेम तेम जीव लईने हु नाठो छु तेणे वैश्रवनने जीतीने तेनी लंका नगरी तथा पुष्पक विमान लइने त्याह्वानु राज्य स्वाधिन कर्यु छे ते साभलीने मोटा क्रोधमा आव्यो थको रा-

वणनी साथे युद्ध करवा सारू पोतानुं सैन्य सजिने इंद्र राजा नगरीथी बाहेर निकल्यो. त्यारे तेना सर्व प्रधानो तेने कहेवा लागा के, रावण महा बलवान छे, तेनी साथे युद्ध करयाथी आपणे बिलकुल जीती शकवानो नथी, एवुं तेमनुं बोलवुं सांजलीने इंद्र राजाए जवानुं रहित करयुं. पछी यम राजाने सुरसंगीतक नामनुं नगर आप्युं. पोतें पाछो नगर ां आवीने राज्य करवा लागो. आंइ रावणे किस्किधा नुं राज्य आदित्यरजने आप्युं. तथा कुक्षरजने कुक्ष पुर नामना नगरमां राज्य गादीए बेसाड्यो. त्यांर पछी पोताना जाइत साहित रावण लंकामां जईने पोताना वडीलोनुं संपादेलुं राज्य कर ा लागो.

आदित्यरजनी स्त्री इंदुमालिनीना उदरथी एक वाली नामनो महा बलवान पुत्र पेदा थयो. ते दररोज चार समुद्रनी प्रदक्षिणा करीने चैत्योनी वंदना करवा लागो. केटलाएक काल वीत्यां पछी तेने बीजो सुग्रीव नामनो पुत्र थयो. तथा श्रीप्रज्ञा नामनी ए कन्या थइ. कुक्षरजनी स्त्री हरिकांताना पेटे नल तथा नील ए बे पुत्र थया. केटलाएक काल पछी आदित्यरज राजाए पोताना वाली नामना पुत्रने महा पराक्रमी तथा बलवान जोइने तेने राज्य सोंपी पोतें दिक्षा लइ तप करीने मोक्षे गयो. पछी वालीए पोताना सुग्रीव नामना न्हाना जाइने न्यायवंत, तथा म

हा पराक्रमी जाणीने तेने युवराज्य उपर राख्यो. ने पोते सुखवडे राज्य करवा लागो

लंकानो राजा रावण चैत्यवदन करवा सारू मंदोदरी सहित हाथी उपर बेशीने मेरूपर्वत उपर गयो. तिवारे दुषण नामना विद्याधरनी स्त्रीमेघप्रभानो पुत्र खर नामे विद्याधर रावणनी बेन चद्रनखा (सुर्पनखा) ने हरण करीने पाताल लंकामां गयो. त्यां आदित्यरजनो पुत्र चद्रोदर नामनो राजा राज्य करतो हतो, तेने कहाडीने त्याहनु राज्य पोते करवा लागो ते वृतात रावण साभलीने अति कोपायमान थयो थको ते खरविद्याधरने मारवा सारू जवानी तयारी करी ते वेलाए तेणेमंदोदरी कहेवा लागी के, हे पति, आ चलता वखते क्रोध केहवो? ए कन्या कोइने आपवानी तो हती. त्यारे ते पोते राजी खुशीथी परणी ते शुं अयोग्य छे? दुषणनो पुत्र खरविद्याधर महा पराक्रमी छे, माटे ते चद्रनखाने वर योग्य छे. तेथी हिवे प्रधानोने मोकलीने तेने राजी खुशीथी परणावी देवाथी कीरति थशे अने तेने ते पाताल लंकानुं राज्य करवा दे एवा मंदोदरीना नीतिनां वाक्यो साभलीने रावण विचार करे छे, एटलामां कुंभकर्ण तथा बिभीषणे पण कह्यु के, ए कामने वास्ते द्वेष न करवो ते भलुं छे, पछी रावणे मय तथा मरिच ए बे विद्याधरोने खरविद्याधर पासे मोकलीने तेनी सा

थे चंद्रनखानुं लग्न कराव्युं. ने तेने पाताल लंकानुं रा-
ज्य कपडामां आप्युं ते सर्व खरविद्याधरें मान्य करीने
पोतानी स्त्री सहित निर्विघ्नपणे सुख जोगववा लागो.

पाताल लंकामांथी आदित्यरजनो पुत्र चंद्रोदरने
खर राजाए कहाडी मुक्या पछी, ते चंद्रोदर वनमां ज
इ तप करीने कालांतरें मरणने पाम्यो. तेनी अनुरा-
धा नामनी स्त्री गर्जिणी छतां, तेनी साथे वनमां ग
हती. ते केटलाएक दिवस पछी जेम सिंहणी सिंहने
जन्मे तेम नयादि गुण सहित विराध नामना पुत्रने
जन्मी. ते यौवन अवस्थामां आव्यो छतां कलाकौश
ल्य शिखीने पृथ्वि उपर निर्जयपणे फिरवा लागो.

लंका नगरीने विशे रावण सुखें राज्य करे छे, ए-
टलामां कोइएक दीवशे रावणनी सजामां वालीराजाना
पराक्रमनी वात नीकली ते सांजलीने अती अजि ानी
जे रावण तेनाथी सहन न थ ,तेथी करी तेणे ए
दूत वाली राजा पासे मोकलीने कहेवराव्युं. ते रे
त वाली राजा पा जइने नमस्कार करीने कहेवा
लागो. हुं रावणनो दूत . अने ते ने ोकल्यो छे;
माटे इहां आव्यो छुं. तेणे जे माहरी पासे त ने
कहे राव्युं छे ते सांजलो.

अमारा वडिलो किर्तिध राजाए शत्रु ां जय-
थी रक्षण करीने तुमारा डील श्रीकांतने एता प्री
ति वडे वानरद्वीप ां राज्य उपर साड्यो. ते दिव

शथी बेहू पक्ष विशे परम स्नेह थयो छे, अने तेज दिवशथी तुमारो तथा अमारा शेव्य शेवक नाव छे, माटे तुं अमारी जेम बने तेम शेवा कर, अर्थात आज्ञा मान, एम करवु आपणे बेहूने योग्य छे. एवु ते दूतनु बोलवुं सानलीने वाली राजाने घनोज क्रोध आव्यो, तथापि ते मन मांहीज राखीने दूत प्रते कहेवा लागो, हे दूत राक्षस कुल तथा वान्नर कुलनो परंपरानो सबध छे ते वात खरी छे ने ते सबध हजि चालतो छे दुख तथा सुखनी वखते एक बीजाने साह्य करवु, ते स्नेहनुं कारण छे, पण तेथी शेव्य सेवक नाव नथी शेव्य सेवक नावरूप संबंध तो, शुद्द देव गुरु तथा अरिहंत नगवंत माहे होय छे, अने बीजा ठेकाणे कहेवु ते फोगटनुं छे, तथापि ताहरो स्वामी रावण कोण जाणे केवाए नमंथी बक्या करे छे, माटे हे दूत. तुं जा अनेरावणने कहेजे के, वान्नर कुल शेवक अने राक्षस कुल सेव्य एवु स्वप्नमां पण न जाणीश, अने एम खोटो विचार करीने आपणो परंपरानो स्नेह तोडवाने तयार न था, छेवट एमा तु फायदो पामनार नथी ए रीतेकहेजे. अने ते माने तो ठीकछेनहीतर तेनुं कर्तव्य ते नोगवशे पण पोतानी शक्ति विचार्या विना बध्याने बलहीण जाणीने सहसा काम करवु नहीं. ते विशे पाको विचार करीने कोइना उपर इर्षा करिए,

हे दूत माहरा उपर अपवाद आवे तेथी हुं तेना उ पर कांइ करवानो नथी, तथापि ए जो तें माहरू कां इ खोटुं करशे तो हुं पण तेनो बदलो आपीश, पण घणा कालनो स्नेहछे ते तोडवा माटे हुं पेहेलो कहा ववानो नथी, अने ताहरा स्वामीने पोतानी शक्ति विचारीने जे करवुं होय ते सुखेथी कर. हिवे तुं पाछो जा, एहवां वालीराजानां वचनो सांभलीने ते दूत लंका नगरीमां गयो. त्याहां जइने वालीनी कहेली सं घली वात रावणने कही संभलावी, सांभलतां तुरतज रावण क्रोधातुर थइने सर्व सैन्य तयार करीने पुष्प क विमानमां बेशीने युद्ध करवा माटे कीस्किधा नगरी ए आव्यो, तेने जोइने वालीराजा पण महा बलवान पोताना सैन्य सहित पोतानी नगरीथी बाहेर निक ली रावणना सामें युद्ध करवाने आव्यो, तेवारे बेहू सैन्य विचे तुंबल युद्ध थवा लाग्युं. महा भयंकर यु द्ध थवाथी तेमां घणाज प्राणीउनो घात थयो. ते जो इने महा दयानो सागर वालीराजा रावण प्रतें कहे वा लागो, हे रावण तुं मोहोटो बाहू पराक्रमी छे ते हुं जाणुं छुं, पण जैनी छतां दया रहित थयुं ते योग्य न थी, कारण के युद्धमां घणा जिवोनो प्राण निकली जा य छे, तेथी नरकनी प्राप्ती थशे, माटे सैन्यनी लडाइ बंद करीने आपण बेहूजण आमासामी लडीए, ते यो ग्य छे, एवुं वालीराजानुं कहेवुं सांभलीने दया धर्म

ने जाणनार' तथा सर्व युद्ध करवाने समर्थ एवा जे रावण तेणे वालीनु कहेवु मान्य करीने वालीनाजा सार्थे युद्ध करवा लागो, तेवारे अस्त्र तथा शस्त्र वाली उपर जे रावण नाखें ते वाली रमत मात्रमां तोडी नाखे. तेमज वाली नाखे ते रावण तोडी पाडे, एवी रीते घणिवार युद्ध चाल्युं, तेमा रावणनां सर्व हथीयारो निष्फली गया, तेथी करी रावण अति क्रोधातूर थइने पोतानो चद्रहास्य नामनो खड्ग महा भयकर हाथमा लइने वाली उपर दोड्यो, तेने आवतो जोइने मूल सहित झाडनी पेरे रमत मात्र वडे ऊपाडीने रावणने पोतानी बगलमा भिडावीने एक क्षणमां चार समुद्र फिरी आवी रावणने जमीन उपर नाख्यो. तेथी रावण घणी लज्या पाम्यो. एवु देखीने वाली राजा तेणे कहेवा लागो

हे रावण, चौदं राज्य लोकना भावने जाणनार तथा त्रिलोकने पुज्य एवा श्री वीतराग देव छे ते शिवाय आ जगतमा मने कोइ पण नमस्कार करवा योग्य नथी तेमज वली मने कोई करावनार पण नथी. तुजने अति अभिमान थयो, अने माहरी उपर इर्षा थइ तो ताहरी एवी दशा थइ, हे रावण मे ताहरा पूर्वना उपकार याद करीने तने मूकी दीधो छ तो, नहीतो पृथ्वि उपरना सर्व राजाउने हुं जीतनारो अने सर्वने आण मनाववाने समर्थ एवो छतां प

ए एकज तरफ रहिने बधुं तने सोंपी दीधुं छे, नहीं तो तने एटली राज्य लक्ष्मी क्यांथी मिलती. जे वन मांहे सिंह रहे छे ते वनमां हाथी रही शकतो नथी तेम तुं पण एटलो बलवान माहरा छतां न था त, परंतु हुं घणा राज्यनी इच्छा राखतो नथी अति वे नवथी अति पाप छे अने अती राज्य लक्ष्मी अंते नरकनी दातार छे. माटे हुं तेनी इच्छा राखतो नथी, माटे तुं ताहरूं राज्य सुखेथी भोगव्य अने माहरे तो राज्य करवुं नथी हिवे हुं मोक्ष साधवाने माटे प्र वरज्या (दीक्षा) अंगीकार करूं छुं. अने आ किस्कीं धा नगरीमां मारो न्हानो भाई सुग्रीव राज्य करशे तें ताहरी आज्ञा मानशे अने तेनी साथे तुं प्रीति रा खीने तेनी साह्य करजे. एवी रीतें रावणनी साथें भा षण करीने पोताना न्हाना भाइ सुग्रीवने राज्यगादी उपर बेसाडीने पोतें श्रीगगनचंद्र नामना मुनिराज पासें दीक्षा लीधी, तेवार पछी वाली मुनि घणी आकरी तपश्चार्ड करवा लागा. पोतानुं स्वरूप यथा र्थ जाणीने परम ब्रम्ह ज्ञानवंत थका वाली मुनि पृथ्वि उपर एकला विचरवा लागा. अनुक्रमें संजम योग- ने साधतां थका अणमा नामनी वगेरे लब्धीयो पा म्या. एकदा श्रीअष्टापद पर्वत उपर जइने काउसग्ग ध्यान करवा लागा. वली एक एक मासना उपवास करीने पारणुं करवुं. एवि रीतें महा आकरी तपश्या

उ करी पोतानी देहिने गालवा लाग्या.

आंइ किस्किंधा नगरीमां सुग्रीवे पोतानी श्रीप्रन्ना नामनी बेनने रावण साथे परणावी दीधी अने वालीनो पुत्र चंद्रहास्य नामनो महा पराक्रमी योद्धो तेने युवराज्य उपर बेसाड्यो. रावण श्रीप्रन्नाने लइने लंकामा गयो तेवार पछी रावणे बीजा केटलाएक विद्याधरोनी कन्याउ साथे लग्न कर्युं. कोइएक समये रावण नित्यालोक नामना नगरना राजा नित्यालोकनी कन्या रत्नावली साथे पोतानो विवाह करवा सारू गयो त्याहा जता रस्तामां अष्टापद पर्वत उपर तेनो विमान अटक्यो तेथी क्रोधमा आव्यो थको रावण निचे उतर्यो, त्याहा वाली मुनिने काउसग्ग ध्यान वडे उभेलो तेणे दीठो ने तेने कहेवा लागो के, हे मुनि हजीसुधी ते कपट मूक्यो नथी के? आ तप करतां कपट ते केवो? पण काइ चिंता नहीं हिवे तु माहरी भूजानुं बल जोजे तें जे कर्यु तेनो आज बदलो आपु पूर्वे मने ते माहरा खड्ग सहित काखमां घाली, एक क्षणमा आखो समुद्र फिरी पाछो आवी नाखी दीधो हतो तेमज तने आ पर्वत सहित उपाडीने क्षीर समुद्रमां नाखी देऊ तोज हु रावण! एम कही ते पर्वतना तले जमीन खोदीने तेमां पेठो त्याहां हजार विद्यानु स्मरण करीने पोताना बाहु बल वडे ते पर्वतने उपाडवा लागो. ते वखते मो

टो दारुण शब्द थवा लाग्यो. ते सांभलीने तथा राव णे आ पर्वत उपाड्यो, एम जाणीने वाली मुनि कहेवा लागा. हे दुर्मति रावण, हजीसुधी अक्कल नथी आवी के? आ दुष्ट करम करीने शुं फायदो थवानो हतो! नाहक अनेक प्राणीउनो नाश शासारू करवो?

वली आ पर्वत उपाडवाथी भरतेश्वर चैत्यनो विध्वंस थशे, ए महाउत्कृष्ट तीर्थनो नाश थवा विशे कांइ पण ए विचार करतो नथी? में तो सर्व संग मूकी दीधोछे. आ शरीरमां माहरी निस्पृहता छे, राग द्वेषनो त्याग कर्यो छे, तोपण चैत्यनी तथा बीजा प्राणीउनी रक्षा करवा सारू, राग द्वेषादिक धारण कर्या विना एने थोडीक शिक्षा करवी जोइए, ए विचार करी, पोताना पगना अंगुठा वडे ते पर्वतने किंचित दाब्यो. तेना प्रभावथी, जेम कोइ काचबो पोतानां अंगने संकोचे, तेम रावण पोतानुं अंग बचाववा लाग्यो. ते भारना योगे तेना मुखमांथी लोही निकलवा लाग्युं तथा मोटेथी बूब मारवा लाग्यो. ते दिवसथी ते रावण कहेवायो. पछी वालीए तेनी दीनतानां वचनो सांभलीने तथा तेनी उपर दया करीने थोडीक शिक्षा करीने छूटो कर्यो. रावण निस्तेज थइने पोताना मनमां पश्चाताप करतो थको त्यांथी निकली, मुनि पासे आवी; तेने नमस्कार करी हाथजोडीने कहेवा लाग्यो. हे साधो, में जे वारंवार अपराध

करया, तेणी तुमे मने क्षमा करी. तेथी तुमारो मोटो उपकारी थयो छु हिवे क्यारे पण तुमारो अपराध करनार नथी. आज माहरा प्राणनी रक्षा करी. तेथी तुमे मारा पिता रूप छो, हिवे हु कोइ समये पण एवु निष्ठुर कर्म करनार नथी एम कही, त्रण प्रदक्षिणा करीने वाली मुनिने रावणे नमस्कार करयु एवुं वाली मुनिनु माहात्म्य जोइने देवताउ साधु साधु शब्दो कहेता थका तेणी उपर फूलोनो वरसात करवा लागा

तेवारे पछी रावण वाली मुनिने वदना तथा नमस्कार करीने त्याथी चाल्यो अष्टापद पर्वत उपर भरते स्थापेला चैत्यनी वदना करवा सारू आव्यो. त्याहा पोताना खड्गादिक सर्व हथियारो मूकीने, पोतानी स्त्रीउ सहित, ऋषभादिक चैत्योनी आठ प्रकारे पूजा करीने तेमनी सामें अति आनद वडे विणा वगाडवा लागो, खूब रगमा आवती वखत तेनी तारा त्रुटीपडी, ते जोइने रावणे पोतानी भुजामांथी एक जाडी नाडी, कहाडी, तेमां जोडीने प्रथमनी परे वगाडवा लागो मूर्च्छना सहित, शुद्ध ग्राममां आणीने एवी मधुरताथी राग गावा लागो के, सहज त्याहाना सर्व लोकोने आनद थयो, तेमज तेनी स्त्रीउ पण नृत्य करती थकी अति मनोहर स्वर सहित गायन करवालागी

ते वखतें एक धरणेंद्र नामनो नागोनो राजा चै

त्यवंदन करवा सारुं त्याहां आव्यो हतो ते रावणनी भक्ति जोइने तेने कहेवा लागो; हे दशकंधरतुं एवुं मधुर गायन कर्युं के तेने उपमाज न देवाय. वली तेह्मां श्री भगवानना गुणोनुं वर्णन छे, तेथी विशेष शोभा थइ एथी जणाय छे केताहरी श्रीअरिहंत विशे घणी भक्ति छे, तेथी हुं तने प्रसन्न थयो छुं. अद्य पि आ जे तें भगवंतना गुणनुं स्तवन कर्युं, तेनुं मु ख्य फल तो मोक्षज छे, तथापि हजी ताहरी वासना गइ नथी, माटे तुं काइ पण माहरी पासें मांग, हुं ता रा उपर अति प्रसन्न थयोछुं. एम सांभलीने तेने रा वण कहे छे– हे नागेंद्र आ देवाधि देवना गुणोनुं वर्णन कर्यांथी तुं राजी थयो माटे तु धन्य छे. ने श्री अरिहंत विशे एवो भाव राखवो ते योग्यज छे. हे ना गेंद्र, मने देनारो जे तुं, तेनी स्वामीने विशे पूर्ण भ- क्ति छे, तेमज लेनारानी पण तेवीज भक्ति होवाथी विशेष आनंद थयो छे तेज घणो छे. एहवां रावणना यु क्तिनां वचन सांभलीने तेने नागेंद्र कहे छे, हे राव- ण घणु सारूं कह्युं, तुं इछा रहित होवाथी हुं राजी थयो छुं. तोपण माहरू वचन व्यर्थ न थाय. एम कही ने अमोघविजया नामनी विद्या शक्ति तेणे रावणने दीधी, पछी धरणेंद्र पोताना स्थानकें गयो. रावण प- ण चैत्यवंदना करीने त्याहांथी जतां नित्यालोक नामना नगरमां जइने त्याहां रत्नावली नामनी कन्यानी थें

लग्न करीने लंकामां गयो. वाळी मुनि पण काळे करी सुरासुरने अप्राप्य एवा केवलज्ञानने पाम्यो थको जन्म मरणने देवावाला कर्मोनो नाश करीने सिद्धान त चतुष्पद रूप मोक्षे गयो

वैताढ्य पर्वत उपर ज्योतिपपुर नामना नगरमां ज्वलनसिंह नामना विद्याधर राजानी स्त्री श्रीमतिना उदरथी एक तारा नामनी कन्या थइ. कोइएक समये विद्याधरनो पुत्र साहसगति नामनो विद्याधर, तेणे ताराने जोइने कामे करी पिडायमान थयो थको पोताना दूतद्वारा तेहने तेना पिता पासें मागी. तेमज वाळी राजाना नाइ सुग्रीवे पण तारा बाबत तेना बापने कहेवराव्यु ताराना बापे ज्योतिषीने पूछ्यु के, साहसगति विद्याधर तथा सुग्रीव ए बेहु महा पराक्रमी छे तेमज रुपवान पण बेहु जणाछे, तेमाना क्यांने माहरी कन्या आपु? ज्योतिषीये कह्यु के साहसगतिनी आयु मरयादा थोडी छे, ने सुग्रीव घणो आयुष्य वाळो छे, हिवे गमे तेंनें आपो. ते सांनलीने तेणे पोतानी कन्या सुग्रीवने आपी. ए वात साहसगतिने स , दहाडे दहाडे झूरतो चाल्यो; अने जेम कोइ पुरुष नूतना आवेशथी गमें तेम वके, तेम तें बकवा लागो. "हे तारा हुं तारू मुख क्यांरे चुंबन करीश? ताहरा कुंभ जेवा स्तनोने हु मारा आ हाथ वडे क्यांरे ग्रहण करीश? आ मारी नुजा वडे तने हु क्या

रयुं छे? हुं जिननाथनी पूजा करतां तेनो क्यां दुष्ट ना श करयो? कोइ देवता छे?के माणस छे?के राक्षस छे? के कोइ वानरछे? (पोताना योद्धाउ सामे जोइने) जे होय तेने आइ बांधीने लइ आवो ते वखते कोइ विद्याधर त्याहां आवीने कहे छे हे स्वामी, माहिष्मति नामनी नगरीनो स्वामी, महा पराक्रमी, ने जेहने हजा रो राजा शेवेछे, एहवो सहस्त्रांशु नामनो राजाछे. तेणे आ रेवा नदीने सेतु बांधीने तेमा पोतानी स्त्रीउ सहित जलक्रिडा करे छे. तेणे पोतानु रक्षण करवा सारू नदीना बेहु तट उपर महोटा महोटा हथियारो स हित केटलाएक योद्धाउने ऊभा राख्या छे ते सेतुबंध ना योगे नदीनु पाणी वध्यु छे. अने आ पूजामा वि घ्न थवानु कारण पण तेज छे तेनी स्त्रीउना वाप रेला फूलो आ पाणीमा तरता देखाय छे. तथा ते रा जपत्निउए पोताना अंग उपर लगावेला कस्तुरी-आदिकनी विलेपनो धोवाइ गयाथी नदीनुं पाणी डोलाइ गयु छे. एहवु सांभलीने रावणने क्रोध चड्यो तेणें आवेशे पोताना शुरवीरोने बोलावीने कह्यु के, हे सुभटो, जेम काजलना योगे सफेद कपडाने दुप ए लागे छे, तेम आ मरणनी सरण जनारा राजाना अंग वडे दुषित थएलां पाणीथी आमारी देवपूजा रद्द थइ माटे तुमे त्याहा जइने, पोताने शुरवीर जा-णनारा जे त्यो सुभट, तेउने टाट बांधीने मारी पा-

सें लइ आवो. एवी रीतें रावणे पोताना योद्धाउने आज्ञा करतां वेतज, केटलाएक राक्षस योद्धाउ घणी झडपथी जइने रेवा नदीना किनारा उपर रहेलां सह स्रांशुना सैन्यनी साथें युद्ध करवा मंडी गया. ते जा णें एक वननां हाथीउ बीजा वनना हाथी उपर प ड्या होय! तेम रावणना योद्धाउ आकाशमां रह्या थ कां पृथ्वि उपर ऊभेला सहस्रांशु राजाना योद्धाउने महा दुःख देवा लाग्या. पोताना जनो पीडाए छे एम जाणीने, क्रोधें करी जेना हाथ धूजी रह्यां छे, तेमां ध्वजा झालीने सहस्रांशु राजा पोताना सैन्यनें धैर्य दे वा लागो. पछी जेम सुर नदीमांथी इंद्रनो ऐरावत नामनो हाथी निकले, तेम रेवा नदीमांथी सहस्रांशु राजा बाहार निकल्यो. किनारें आवीने पोतानुं धनुष्य तैयार करी, जेम वायु पत्तानें उडावे तेम ते बाणे करी आ काशमांना राक्षसोने उडावा लागो, तेथी त्रास पामीने राक्षसो सर्व नाशी गया. ए वातनी रावणने खबर थतांज महा क्रोध करतो थको त्यां जइ सहस्रांशु उपर बाणो नो वरसाद करवा लागो. एक बीजाना सह न करवावाला रावण तथा सहस्रांशु महा बलवान था अति गंभीर ते बेहुं जणा परस्पर केटली एक वेला पर्यंत युद्ध करवा लागा. पछी रावणे जाण्युं के आ सहस्रांशु राजा केवल बाहूबले करी जीतावा नो नथी. त्यारे तेणे विद्या फेरवीने सहस्रां-

शुने मोहित करयो, ने जेम कोइ हाथीने बांधे ते-
म तेंने बांधी लीधो तो पण तेनु शुरवीरपणु जोई
ने रावण पोताना मनमे केहेवा लागो के, जो पण मे
एने वांध्यो तो खरो तो पण ए विजय छे, एमा संश
य नथी. पछी तेंने पोतानां सैन्यमा लइगयो. ने मन
मां राजि थयो थको सभामां सिंहासन उपर वेसे
छे. एटलामां त्याहां एक सत्यबाहू नामनो चारण मुनि
आव्यो, तेंनें जोतांज सिंहासन उपरथी ऊठीने रा-
वणे तेंनें चरणोने मार्थु नमाव्यु अरिहत गणोमां
उत्तम पुरुष छे, एम जाणीने तेंने योग्य आसन
ऊपर बेसाड्यो फिरी तेणें नमस्कार करीने पोतें
जमीन उपर वेठो. तिवारे साक्षात मूर्तिमान विश्वास
रूप थतां जगतने आश्वासन देवावाला ते मुनिए
रावणने धर्मलाभ कह्यु त्यारे रावण पोताना वे हा
थ जोडीने तेणें पूछवा लागो के, महाराज आपनुं अ
हि आववानु कारण शु ! त्यांरे मुनि कहेछे—हे राव
ण माहिष्मति नगरीमा सत्यबाहू नामें हु राजा थयो,
केटलाएक काळ पर्यंत राज्य करयां पछी आ भवभा-
वनाने मूकीने तथा माहरा सहस्रांशु नामना पुत्रने रा
ज्य सोंपीने मोक्षना मार्गे जनारा भ्रातानी परें आ
मुनिव्रत मे धारण करयु एटलामा रावण पोतानु माथु
हलावीने बोल्यो—हे पुज्यपाद, ए तुमारो पुत्र छे के त्यांरे
मुनिंद्रे कह्यु हा फिरी रावण केहेवा लागो हे मुनिश्वर

हुं दिग्विजय करतो थको आ नदीना किनारा उपर आ
वी ऊतरयो. ने पछी हुं अरिहंत जिननी पूजा करवा
बेठो.एटलामां आ ताहरा पुत्रें स्नाने करी डोहलेलां पा
णीथी ते पूजा सा थी बिगडी, तथा नदीना वेगथी त
णाइ गइ. तेथी मने क्रोध चड्यो ने तेज आवेशमां
तुमारा पुत्र साथें युद्ध करीने तेनें बांधी लाव्यो छुं.
ए हि जणाय छे के, तुमारो महात्मा पुत्र जे सह-
ांशु तेणें ए के ल अज्ञाने रच्युं . रो पुत्र
ली अरि तनी पूजानुं ं रे के? ए कहीने रावणे
ह ांशुने तिहां बो ावी लीधो. सहस्रांशु सभा ं
आवी घणी लज्जा वडे माथुं नीचो घालीने पोताना पि
ता मुनिंद्रने नमस्कार करवा लाग्यो. ते जोइने राव
तेनें कहे छे—हे सहस्रांशु तुं शा वास्तें लजवाय छे ?
आजथी तुं मारो भाइ छे. आ सत्यबाहू मुनिश्वर जे-
वो ताहरो पिता छे. तेवोज हुं मारो समजुं छुं. हिवे या
हांथी जलदी जइने पोतानुं राज्य निर्भयपणे कर. ी
जी पण केटलीएक पृथ्वि तने आपुंछुं, ते लइने अमे
त्रणजणाने तुं पोताना भाइनी पेरें स ज. एम कही-
ने तेने मूकी दीधो. त्यारे सहस्रांशु तेनें कहेवा लाग्यो
के, आ राज्य मने शा सारूं जोइए? मने आ शरीर-
नुं पण खप नथी. जे व्रत माहरा पिताए ग्रहण करयुं
छे; ते आ संसारने नाश करनारूं छे,तेनो आश्रय ले
वो एज काम आवशे. माटें आजथी में पण एज

नरकरूप क्रिया केम करे छे। हिवे एथी तु दुर था वि
चारा निरपराधी प्राणीउने मारवाथी जो स्वर्ग मिल-
तो होय, तो थोडाज दिवसमा आ जीवलोक शून्य
थइ जाय. हे रावण मे ज्यारे एम कह्यु त्यारे त्याहा वेठे
ला सर्व ब्राह्मणो कोप करीने तथा हाथमा लाकडां
लेइने ते वखते मनेमारयो त्याहाथी नाशीने हुं ताहरी पा
से आव्यो छुं हे रावण, विचारा निरपराधी पशुउ-
ने दुष्ट ब्राम्हणो मारे छे, तेनु तु रक्षण कर. ने हु प
ण ताहराथी रक्षित थयो छुं.

एहवा नारदना वचन सांभलीने दया धरमनो जा
णनारा एहवो रावण ते मरुतराजाना नगरनी पासें
आवीने रथमांथी नीचे ऊतरयो तेवारें मरुतराजा रा
वणने जोइने तेनो आदरमान करीने सिंहासन उ
पर वेसाड्यो पछी रावण क्रोधातूर थइने केहेवा ला
गो के हे मरुतराजा, आ नरकमां लेइ जनारी क्रिया शा
सारू करे छे, जगतना जीवोने अर्थें ज्ञानी पुरुपोए
दया धर्म कह्यो छे ते दया त्यागीने आ दुष्ट क्रिया
दया रहित थइने आ लोकमा तथा-पर लोकमां दु-
खनो देनार यज्ञ तु शा सारूं करे छे ! हिवेथी आ
हिं आ कर्म करवानो त्याग कर, अने जो करीश तो
माहरी पृथ्वीमा, रहीशकीश नहीं ने माहरो तकशी
रवान थइश. एटलुंज नही पण मूवा पछी नर्कमा ज
इश एवु रावणनु केहेवु सांभलीने मरुतराजाए यज्ञ क

रवुं मूकी दीधूं. केमके त्रण खंडने विषे नयने पमाड नारी रावणनी आज्ञा दुर्लंघ्य होवाथी तेणें मान्य करी, ते दिवसथी सर्व राजाउ दया धरम पालवा लागा तेवार पछी रावण नारदने पूछवा लागो के आ पशुनो जेहमां वध थाय छे एहवो यज्ञ करवाने कोण दुष्ट बताव्युं छे. तेवारे नारद रावण प्रतें कहेवा लागो.

हे राजन्. शुक्तिमती नामनी एक नगरीछे तेमां अभिचंद्र नामनो राजा राज्य करतो हतो तेणें एक वसु नामनो पुत्र थयो, तेज नगरीमा एक क्षीरकदंबक नामनो ब्राम्हण रेहतो हतो तेनें पर्वत नामनो एक पुत्र हतो, ते क्षीरकदंबक नामना उपाध्याय पासें हुं तथा तेनो पुत्र पर्वत अने अभिचंद्र राजानो पुत्र वसु ए त्रणेजणा भणतां हता, कोइ एक समें रातना आकाश मार्गे बे चार मुनिए जतां थकां, बोलवा लागा जे आ उपाध्यायना त्रण शिष्य छे तेमां बे नर्कें जशे ने एक सर्गे जशे, ए शब्द अमारा गुरुए सांभल्युं तेथी पोतें विचार करवा लागो जे माहरा भणा वेला शिष्यो नर्कें जाय ते सारू नहीं. पण जे भावी भाव छे ते मिटवानुं नथी तोपण पारखुं तो जोऊं के कोण नर्कें जशे ने कोण सर्गे जशे. एम चिंतवीने उपाध्यायें लोटना त्रण कूकडा बनावीने अमने त्रणे जणाने बोलावी कहेवा लागा, जे कोइ ना देखे तेहवी गाए जइने आ एकेक जणे एकेको कूकडो मारी आवो.

गैने ग्रहण करथो जेनें मोक्षनी इछा छे तेनें ए शि-
वाय बीजो कोइ उपाय नथी एम कहीने पोतानां पि
ता पासे तेणे दीक्षा लीधी अनें पोतानां अजरेंद्र
(अनरण्य) नामना मित्रने पोतें दीक्षा लीधा विषे
एक चाकरना मुखे कहाव्यु तेणे एवात सांभलीने पो
ताना मनमे कहेवा लागो के, में तथा माहरा मित्र सह
स्त्राशुए प्रथम सल्लाह करी हती के, आपण बे साथें
दीक्षा लेइशुं, ते प्रतिज्ञा आज पूरी करवी जोइए प
छी तेणें पोताना दशरथ नामना पुत्रने राज्य आपीने
मुनि व्रत ग्रहण करयु तेवार पछी रावण सत्यबाहू तथा
सहस्त्राशुने नमस्कार करीने तथा सहस्त्राशुना पुत्रने
तेना राज्य उपर बेसाडीने पोते विमानमा बेशी आ
काश मार्गे चालतो थयो

एहवे समे नारद मुनि दोम्तो दोमतो रावण पासें
आवीने कहेवा लागो के, हे राजा अन्यायछे ! अन्या
य छे ! एवी रीते पुकार करतो थको रावण पासे आ
वीने कहेवा लागो

' हे राजन् राजपुर नामना नगरनो एक मरुत नामनो
मिथ्यादृष्टी राजा छे तेणें ब्राम्हणोना कहेवा उपर वि
श्वास राखीने यज्ञ करवा माड्योछे, अने तेमा हो
मवा सारू लावेला पशुउने त्याहा बाध्या छे ते मो-
होटाथी बूवो करवा लागा, ते सांभलीने मने दया आवी,
तेथी आकाशथी नीचे उतरी ते ठेकाणे जइने ते ...

जा तथा ब्राम्हणोने हुं पूछवा लागो के, आ तुमे शुं करो छो! तेवारें मरुत राजाए क ं के, आ ब्राह्मणो ए बतावेलायज्ञनो हुं आरंभ करयो छे, तेमां देवतो-उनी तृप्ति करवा सारू पशुउने होमवा ए योग्य छे. स्वर्ग जवा वास्तें ए मोटो धर्म कह्यो छे. ते माटे हुं पशुनो यज्ञ करू छुं. एहवुं मरुत राजानुं कहेवुं सांभ लीने में तेने कह्युं के, हे राजा, ए यज्ञथी कांइ फल थ तुं नथी, ने देवताउ पण प्रसन्न थतां नथी, उलटा द्वेशी थाय छे. शास्त्र मांहे यज्ञ कह्यो छे, ते तुं सांभल. आ शरीर रूप वेदी छे, तेमां यज्ञ करनारो आत्मा छे, तप रूप अग्नि छे तेम घृत रूप ज्ञान छे. ने क रूप इंधन छे, तेमां होमवा सारू क्रोधादिक पशु , ने सत्य रूप यज्ञस्तंभछे, ने सर्व प्राणीउनी रक्षा रवी ते दक्षिणा छे, ज्ञान, दर्शन, तथा चारित्र; ए त्रीवेदी , एवो महा उत्कृष्ट यज्ञ छतां आ नष्ट क र्मने श्रेष्ट ानीने इष्ट संपादवा सारूं नरमेष्ट थया थकां शा वास्तें कष्ट सहन करो छो. वेदमां पण एज ज्ञने मान्य करयोछे. तुमे तो केवल ोंग करयो ज णायछे, ए पशु वध यज्ञरूप युक्ति ते शुं मुक्तिनुं साधन थशे एथी तो नरक मिले. चंमालनी परें दयाहीन थ इने आ दीन बकराओने जे य ं मारे , ते मवा प ि घोर र मां पके .ते मा हे मरु राजा तुं वंशमां उत्पन्न थयो तां, तथा बुद्धि ।

नरकरूप क्रिया केम करे छे। हिवे एथी तु दूर था बि चारा निरपराधी प्राणीउने मारवांथी जो स्वर्ग मिल- तो होय, तो थोडाज दिवसमां आ जीवलोक शून्य थइ जाय हे रावण मे ज्यारे एम कह्यु त्यारे त्याहां बेठे ला सर्व ब्राह्मणो कोप करीने तथा हाथमां लाकडां लेइने ते वखते मनेमारयो त्याहांथी नाशीने हु ताहरी पा से आव्यो छुं हे रावण, विचारा निरपराधी पशुउ- ने दुष्ट ब्राम्हणो मारे छे, तेनुं तु रक्षण कर. ने हुं प ण ताहराथी रक्षित थयो छुं

एहवा नारदनां वचन सांभलीने दया धरमनो जा णनारा एहवो रावण ते मरुतराजाना नगरनी पासें आवीने रथमाथी नीचे ऊतरयो तेवारें मरुतराजा रा वणने जोइने तेनो आदरमान करीने सिंहासन उ पर वेसाड्यो पछी रावण क्रोधातुर थइने केहेवा ला गो के हे मरुतराजा, आ नरकमा लेइ जनारी क्रिया शा सारू करे छे, जगतना जीवोने अर्थें ज्ञानी पुरुषोए दया धर्म कह्यो छे ते दया त्यागीने आ दुष्ट क्रिया दया रहित थइने आ लोकमा तथा-पर लोकमां दुः खनो देनार यज्ञ तु शा सारूं करे छे ? हिवेथी आ हिं आ कर्म करवानो त्याग कर, अने जो करीश तो माहरी पृथ्वीमा,रहीशकीश नहीं ने माहरो तकशी रवान थइश. एटलुंज नही पण मूवा पछी नर्कमां ज इश एवु रावणनु केहेवु सांभलीने मरुतराजाए यज्ञ क

रवुं मूकी दीधूं. केमके त्रण खंडने विषे नयने प ाड नारी रावणनी आज्ञा दुर्लंघ्य होवाथी तेणें मान्य करी, ते दिवसथी सर्व राजाउ दया धरम पालवा लागा तेवार पछी रावण नारदने पूछवा लागो के आ पशुनो जेहमां वध थाय छे एहवो यज्ञ करवाने कोण दुष्ट बताव्युं छे, तेवारे नारद रावण प्रतें कहेवा लागो.

हे राजन्. शुक्तिमती नामनी एक नगरीछे तेमां अग्निचंद्र नामनो राजा राज्य करतो हतो तेणें एक वसु नामनो पुत्र थयो, तेज नगरीमा एक क्षीरकदंनक नामनो ब्राम्हण रेहतो हतो तेनें पर्वत नामनो एक पुत्र हतो, ते क्षीरकदंनक नामना उपाध्याय पासें हुं तथा तेनो पुत्र पर्वत अने अग्निचंद्र राजानो पुत्र वसु ए त्रणेजणा नणतां हता, कोइ एक समें रातना आकाश मार्गें बे चार मुनिए जतां थकां, बोलवा लागा जे आ उपाध्यायना त्रण शिष्य छे ते ां े नर्कें जशे ने एक सर्गें जशे, ए शब्द आ ारा गुरुए सांनल्युं तेथी पोतें विचार र ा ागो जे माहरा नणा वेला शिष्यो नर्कें जाय ते सारू नहीं. पण जे नाशी नाव छे ते मिटवानुं नथी तोपण पारखुं तो जोऊं े को ण नर्कें जशे ने कोण सर्गें जशे. एम चिंतवीने उपाध्यायें लोटना त्रण कूकमा बनावीने अमनें त्रणे णाने बोलावी कहेवा लागा, जे कोइ ना देखे तेहवी गा ए जइने आ एकेक जणे एकेको कूकमो मारी आवो.

पछी वसु अने पर्वत तो कोइ उजड जगामा जइने अहिया कोइ देखतु नथी एम धारी मारी आव्या; अने हु पण नगरनी बाहेर लाबे छेटे जइने एक शुन्य प्रदेशमा उभो रह्यो, पछी विचार करवा लागो जे आइ तो आ कूकडो पोते देखे छे, हु देखु बु, सपूर्ण खेचर देखे छे, लोकपाल देखे छे, तेमज ज्ञानी देखे छे एवु कोइ ठेकाणु नथी के ज्याहां कोइ कोइने देखे नहीं. गुरुना बोलवानु तात्पर्य एटलुज के, कूकडाने मारवो नहीं. ते दयालु तथा परोपकारी होवाथी अमारी बुद्धिनी परिक्षा लेवा सारू आ काम कह्यु जणाय छे. एवो विचार करीने तथा ते कूकडाने पाछो जेमनो तेम लावीने पाछो गुरुनी पासे आवीने तेने न मारवानु सर्व कारण कही संभालाव्यु, ते उपरथी गुरुए जाण्यु के आ स्वर्गमां जशे, पछी मोटी प्रीतिवडे मने आलिंगन कर्यो, ने राजाना पुत्र वसुए तथा पोताना पुत्र पर्वते कूकडाने मारीने आवी कह्यु के ज्याहां कोइए दीठु नहीं तिहा अमे मार्यो, त्यांरे गुरु तेमने कहेवा लागो के, रे मुर्खो तुमे पोते देखता हता, तथा बीजा पण खेचरादिक घणा देखता छतां तुमे केम मार्यो ? माटे तुमे पापी छो एवो गुरुए तेमने श्राप आप्यो अने उपाध्यायने खेद थयो के एमने अमरता जणाव्या ए वेहूने विद्यानुं फल कलेश मात्रछे, स्वछ पात्रमा गुरुना उपदेशनो सारो उपयोग थाय छे,

ने मलीन पात्रमां व्यर्थ जाय छे. जेम वर्षादना पाणी वडे शुक्तिमां मोती थाय छे, ने बीजा ठेकाणे खारूं पाणी थाय छे, तेम आ माहरो पुत्र पर्वत, तथा राजा नो पुत्र वसु, मने वाला छतां ते नरक गामी थया. त्यारे हिवे मने आ घरमां रहीने शुं करवुं छे! एवा वैराग्यवडे उपाध्याए दीक्षा लीधी.

तेनो ते पर्वत नामनो पुत्र सर्व शास्त्रमां निपूण हतो, तेथी ते पोताना बापनुं काम चलाववा लागो. ने हुं पोताना स्थानकें गयो; अने अभिचंद्र राजाए पोताना पुत्र वसुने राज्य उपर बेसाडीने पोतें दीक्षा लीधी. ते वसु राजानी पृथ्वि उपर एहवी कीर्ती थइ के, सत्य भाषण करता वसु राजा छे. तेथी वसु पण हमेश साच बोलवा लागो; केमके जो तेम नकरे तो किर्तिनुं रक्षण केम थाय! कोइ एक वखते एक पारधी मृगया करवा साह्रू एक वनमां गयो. त्यां एक हरणने पोतानी हरिणी सहित जोइने तेनी उपर बाण नाख्यो. ते बाण तेना विचमां आग उपर लाग्या थी व्यर्थ गयो. बाण शाथी व्यर्थ गयो ते जोवा साह्रू पारधी तेनी पासे गयो. त्यां जइ जूवे छे तो तेने पृथ्विथी अधर एक स्फटिक शिला देखाइ, तेने हाथ वती स्पर्श करीने जोवा लागो, पछी तेणे जाण्युं के जेम पृथ्विनी उपर चंद्रमानी छाया पडे छे. तेम बीजा ठेकाणे फिरनारा हरणनुं प्रति बिंब आ शिलामां पड्युं, तेने

माहरो बाण लागीने ते व्यर्थ गयो हिवे आ स्फटि
क शिला वसु राजाने योग्य छे, एम जाणीने पारधी
ए ते सर्व वृतांत राजा पासें कह्यो ते सांभलीने व
सु राजाए ते शिला मगावी लीधी. ने ते पारधीने
घणु द्रव्य आप्यु पछी ते शिलामांथी कारागिरो पा
सेथी एक सिंहासन कराव्यु ने ते कोरनाराने राजा
ए मारी न खाव्या कह्यु छे के, " राजा लोको क-
दी कोईना थता नथी " ते सिंहासनने जोनाराने
ते पृथ्विथी ऊंचु देखातु हतु. तेथी लोकोमां एवी वि
ख्याती थई के वसु राजाना सत्यनी सामर्थ्य वडे ते
नुं सिंहासन आकाशमां रहेलु छे. तेना सत्य वडे दे-
वताओ संतुष्ट थईने तेने साह्य करे छे. एवी रीते वसु
राजानी प्रख्याती थताज बीजा सर्व लोको भय पाम-
वा लाग्या कह्यु छे के " लोकोमां सत्य अथवा मि
थ्यानी प्रसिद्धि जयने कारण छे " पछी ते शुक्तिम
ति नामनी नगरीमा एक दिवस हु गयो. उपाध्याय
ना घर जई जोउ‌‌छु तो तेनो पर्वत नामनो पुत्र केट-
लाएक छोकराओने भणावी रह्यो छे ने तेमने यज्ञ क
रवानो उपदेश करे छे बकरा वगेरेनु यज्ञ करवु एवु तेनुं बो
लवुं सांभलीने में तेने कह्यु हे भाइ आ भ्रांतिवडे तुं
शु बके छे अज शब्दनो अर्थ एम थतो नथी अज
शब्दनो अर्थ त्रण वर्षनु धान्य जेथी बीजा धान्यनी
उत्पति न थाय ते समजवो. अने ते आपणा गुरु

ए पाकी रीतें आपणने समजाव्यो हता तुं केम भु-
ली गयो? त्यारे पर्वत केहेवा लाग्यो के हे नारद, मारा
पिताए मने अज शब्दनो अर्थ बकरो कह्यो छे. ने
निघंटमां पण एमज कह्युं छे. त्यारे में कह्यु के, हरे
क शब्दनी अर्थ कल्पना मुख्य अने गौण होय छे.
तेमांनी गौण अर्थ कल्पना गुरुए आपणने कही छे?
केमके गुरू धर्मना उपदेश करनारा छे, अने श्रांति-
धर्म स्वरूप छे, तेनो विस्वास न करतां तेथी विरुद्ध
काम तुं शा सारु करे छे, एथी पुन्यने बदले पाप थ
नार छे, एवुं सांभलीने तेणे गुरुए अर्थ कह्यो नथी.
बकरो तो मेप शब्दनो अर्थ छे. गुरुए कहेला शब्दा
र्थने उलंघने करीने तथा पोतानो धर्म मूकीने अहं-
कार वडे मिथ्या भाषण करतां तने रुंक भय थतुं न
थी? माटे हिवे तुं ताहारूं मत स्थापन कर, ने हुं मा
हारूं चलावुं छुं. जेनुं साचुं हशे ते चालशे. एमां जे
हारे तेनी जीभ कापी नाखवी, आपण बेउ विचे सा-
क्षी आपणा स्वाध्यायी वसु राजाने करवो. एवुं तेनुं
बोलवुं सांभलीने में कह्युं के मारे ते मान्य छे, केमके
साचुं बोलनारामां अभिमान न राखवो.

पछी अमें बेउ जण त्यांथी उठ्या. ते वखते पर्वत
पोताना घरमां गयो, त्यारे तेनी माता तेने केहेवा ला
गी के हे पुत्र, ताहरा बापे तो अज शब्दनो अर्थ त्र
ण वर्षनुं धान्य कह्यो छे, ते केहेती वखत घरना का

मर्मा वतां मे सान्नल्य हतुं ते फेरववाने ते अहंका र वरू जीम्न कपाववानो पण कर्यो छे ते योग्य नथी कह्यु छे के, " विचार न करता कार्य करनारो पुरुष विपत्तिने पामे छे" त्यारे पर्वत केहेवा लागो के, माह रूं ए बोलवु केवल अविरचांलु छे, ते वात खरी, पण हिवे ए वचन सत्य थाय तेवो उपाय कर, नहितर म ने महा दु ख थशे पछी तेनी माताए जाण्यु के पुत्र ने घणी पीम्रा थशे तेनो निवारण कर्या विना छु- टकोज नहीं कह्यु छे के, ' पुत्र सारू माता शु न करे ? पछी तेनी माता वसु राजा पासे गई तेने ते राजा आदर सत्कार करीने कहेवा लागो —हे माताजी, आज मे साक्षात क्षीरकदम्नक गुरूना दरशन कर्यां एवो जाव तुमने जोताज मारा मनमां आवी गयो छे. हिवे हुं तुमने शु आपु ? ने तुमने शानी इछा छे ? त्यारे गुरुपत्नी कहेवा लागी हे राजा मने पुत्र जिक्षा आप, पुत्र विना वधु शुन्य छे धन, धान्य तथा पुस्तको वगेरेने पुत्र विना शु कराय ? ते साम्न ळीने वसु कहेवा लागो के, हे माताजी, ए पर्वत मने पालन तथा पूजा करवा योग्य छे केमके गुरुपुत्रनी पासें गुरुनी परें वरतवु एवी श्रुती छे तेने कोणे पीम्रा दीधी छे ? कोनो मृत्यु आव्यो छे ? हे जननी, 'माहरा जाईने कोण मारनार छे ? ने तेने शु दु ख छे ? ते कहे त्यारे तेणे नारदनु आववु, प्रसगे तेनु जापण

थयुं, अज शब्दना अर्थ विशे वाद, ते विशे बेहूए पणनुं करवुं, तथा ते बाबत राजानुं साक्षी रहेवुं. इत्यादिक सर्व वृतांत कही संभलाव्यो. पछी दीनता थी कहेवा लागी के हे राजा, अज शब्दनो अर्थ तने बकरो कहेवो जोइए, ते विना माहरा पुत्रने महा दुःख थनार छे. कह्युं छे के "जे मोटा पुरुष छे ते परोपकार अर्थे पोताना प्राण पण देछे, तो वाणी ते शा हिसाबमां छे!" त्यारे वसु राजा कहेवा लाग्यो, हे माताजी, हुं खोटुं केम बोलुं! कह्युं छे के "प्राण जाय तो पण सत्यवक्ता पुरुषोना मुखमांथी असत्य बोलातुं नथी" वली कह्युं छे के "हरेक पुरुषे कदी पण जूठु बोलवुं नही" इत्यादिक वाक्योने तथा धर्मने बाधित एवा ए काम शिवाय बीजुं जे कहेशो ते हुं कबूल करीश. हे मातुश्री गुरुनी वाणी अन्यथा करवाथी महा पाप लागे छे, तो पछी खोटी साक्षी पुरवाथी जे थाय तेनुं शु पूछवुं. तथापि गुरुपुत्रनुं वाक्य साचुं कर. एवुं तेनुं क्रोधे भरेलुं बोलवुं सांभलीने तेणे कबूल कर्युं, पछी ते क्षीरकदंबकनी स्त्री मनमां राजी थइने पोताना घरे गइ.

बीजे दिवसें हुं तथा पर्वत बेहू मलीने वसु राजानी सभामां गया. त्याहां मोटा गुणशाली, हंस जेम पोतानी चांच वडे खीर तथा नीरने जूदां करे छे, तेम पोतानी बुद्धि वडे सार ने असारनु विवेचन क

रवा वाला महा सभ्य पुरुषो बेठेला हता. अने जेम नक्षत्र गणोमा चद्रमा शोभे, तेम अधर रहेली स्फ टिक शिला उपर बेठेलो राजा वसु शोभतो हतो. ते वा प्रसगे अति उमंगे बेहू सगे जइने ते सभामां. अमारी सर्व वात सभलावीने कह्यु के, अमारा गु रुए कहेला अज शब्दनो अर्थ विशे अमरो वाद थयो छे, तेनो न्याय करावना सारू अमे अहिं आ व्या छैए हे राजा, तु सत्यवादी छे, माटे बराबर इ नसाफ करीश, एम अमें पाकु समजीएछैए. पृथ्वि त था आकाशनी विचें जेम सूर्यनी साक्षी छे, तेम अ मे बेहू विचे तु साक्षी छे ब्रह्मामानी घटपटादिक सर्व वस्तु केवल सत्यना योगे वरते छे सत्य वरूे व रसात पडे छे, तेमज देवता पण सत्यें करी प्रसन्न थाय छे. हे राजा, ते एटला बधा मूलक मेलव्यानु कारण पण सत्यज छे, माटे आ अमारा विवादमां ताहरा सत्यने जे उचित होय ते कहे आपण त्रणे जण गुरु पासें भणतां अज शब्दनो अर्थ शु शी- स्या छैए ! ने ते शब्दनो अर्थ शु छे ! ते अपक्षपा तथी कहे त्यांरे वसु राजा मृत्युना वश थयो थको पोताना सत्यने एक कोरे राखीने गुरुए अज शब्द नो अर्थ बकरो कह्यो छे एम कह्यु.

एवी माहा क्रुर साक्षी वसु राजाए आपवाथी अंतरिक्ष रहेला देवताउथी सहन न थयु तेथी पे-

ली स्फटिक शिलाना सिंहासनने चूर्ण करीने ते स
भामां बेठेला संपूर्ण पुरुषोना देखतां पृथ्विना पति
वसुने जमीन उपर पटक्यो. खोटुं बोल्याथी कोपेला
जे देव, तेउए मारयांथी ते वसु राजा नरकमां गयो.
तेना पुत्रो पृथुवसु, चित्रवसु, वासव, शक्र, विभावसु,
विस्वावसु, सूर, तथा माहासूर पोताना बापना राज्य
मां तां तेउने पण देवताउए मारी नाख्या. ते आ
ठ मरीने नरकमां गया ने बीजा बे नाशी गया, अने
पर्वतने पण नगरना लोकोए पापी जाणीने शेहेर
मांथी काहाडी मूक्यो. तेणे कोइ दुष्ट देवतानी द
तथी भोला लोकोने आ हींसारुप यज्ञ घोर न-
रकमां लइ जनारी क्रीया शीखवी.

ते दिवशथी ए अघोर हींसा ब्राम्हणोना कहेवाथीं
अज्ञान जीवो करे छे. माटे हे रावण, तुं तेनुं निवारण
कर, एह्वां नारदनां वाक्यो सांभलीने रावणे ते मा-
न्य कीधुं, अने मरुत राजाए रावणनी अज्ञाथी ना
रद पासें माफी मागी तथा तेनो घणुं आदरसत्कार
करीने विदाय कर्यो. ते वार पछे मरुत राजा रावण
ने पूछवा लागो, जे पुरुष कोण हतो के जेणे तुमारी
हीमत वडे मने आ घोर कर्म करतो निवारयो ते वा
रें मरुत राजाने रावण नारदनी उत्पति कहेवा लागो.

पुर्वे एक ब्रम्हरूचि नामनो ब्राम्हण हतो, ते कोइ
प्रसंगे तापस थयो. ते वारें तेनी कूरमी नामनी स्त्री गर्भव

ती हती अने ते पोताना पतीनाज आश्रममां रहेती हती.

एक दिवश ते आश्रममा केटलाएक साधुउ आव्या. तेमांनो एक साधु ते तापस ब्राम्हणने कहेवा लागो. हे साधु ते आ ससारना भय थकी गृहवास मूक्यो ते घणु सारू करयुं; पण विरक्त थयो छतां आ दुःख रुप स्त्रीमां आशक्ति करयाथी गृहवास करतां आ वनवासमा शुं अधिक मिलवानुं छे! एवु सांभलीने ते ब्रम्हरुचि तापसे तेज वखते तेनी पासेंथी दीक्षा लइने श्री जिनशासनने अंगीकार करयुं अने तेनी स्त्री पण मिथ्यात्वने मूकीने तथा शुद्द श्राविका थइने त्याहाज रहेवा लागी पछी तेने मास पूरा थएथी एक पुत्रने प्रसवी. ते बालक जन्मती वखत रड्यो नहीं, तेथी तेनु नाम नारद राख्यु कोइ एक समयें काइ कारणने लीधे ते बालकने आश्रममा मूकीने पोते बाहेर गइ ते वखते जृंभक नामना देवताए ते बालकनु हरण करयुं पछी ते श्राविका आश्रममां आवी जुवे छे तो पोतानो पुत्र देखायो नहीं तेथी महा शोक करती थकी वैरागने पामीने एक इदुमाला नामनी साध्वी पासें जइ तेणे दीक्षा लीधी.

जृंभक नामना देवताए नारदनु सारी रीते पालण करयु केटलाएक शास्त्रो भणाव्या क्रमे करी आकाश गामिनी विद्या आपी पछी त्या नारद अणुव्रत धारण करवा लागो. एम करतां नारदनी

यौवन अवस्था थइ. तेणे प्रथमथीज शिखा राखी हती तेथी ते यति अर्थात् बहूथी जूदो देखावा लागो. कजीया जोवाने शोकी, गायन तथा नृत्य जोइने जेने कौतुक थाय; बोलवामां महा प्रवीण, काम विकार थकी रहित, अत्यंत दयालु. तेमज वीर तथा कामी लोकोनी संधि तथा विग्रह करवामां अति कुशल थयो. पगमां चाखडी, माथामां टोपी, तथा हाथमां कमंडलु लेइने गमे त्यांहां फिरे. एने कोइ अमी ठडी करे नहीं, देवताए प्रतिपालन कर्युं तेथी पृथ्वि उपर ए देवऋषि नामे विख्यात छे. बाल ब्रह्मचारी छतां पोतानी इछा वडे पृथ्वि उपर विचरे छे. एवी रीतें रावणे मरुत्त राजाने नारदनो वृतांत कह्यो. ते सांभलीने हरषित थयो थको मरुत्त राजा ए रावण पासें पोताना अपराधनी क्षमाकरावी. पोतानी प्रभा नामनी कन्या उपवर थइ छतां मरुत्त राजाए तें रावणने दीधी. रावणे अति आनंद सहित तेने साथें विवाह कर्यो.

तेवार पछी ते वायु जेवा पराक्रम वालो, तथा मरुत्त राजाना यज्ञने तोडनारो रावण त्यांहांथी चाल्यो मथुरा नगरीमां गयो. ए वात त्यांहांना हरिवाहन राजाए जाणतांज हाथमां त्रिशुल लीधेला पोताना मधु नामना पुत्रसहित रावणनी सामें आव्यो. ते जोइने तथा मारा दिसे एनी घणी भक्ति छे एम जाणीने रा

चण राजी थयो. अने तेने पूछवा लागो. हे हरिवा हन राजा, आ तारा पुत्रने त्रिशुलरूप अयुद्ध क्यां थी मिल्यो? एटलामा हरिवाहने तेने उत्तर देवा वि शे पोताना पुत्रने शान करी ते जाणीने तेनोमधु नामनो पुत्र रावणने कहेवा लागो. हे दशकधर, ए- माहरा पूर्व जन्मना अमरेंद्र नामना मित्रे मने आप्यो छे तेणे ए आपती वखत मने कह्यु के, धातकी खंड नामना द्वीपमांना ऐरावत नामना क्षेत्रमां एक शवद्वा र नामनुं नगर छे, त्याहाना सुमित्र नामना राजाना पुत्र नो एक प्रभव नामनो शेवक हतो तेमनी बेहुनी वि द्ये वसत अने कामदेवनी परे मित्राचारी हती, ते बे हुनी बाल्यावस्था छतां एक गुरु पासें जइने कला शि ख्या. पछी अश्विनीकुमारनी परे नित्य साथे क्रीडा करवा लागा. सुमित्रनी यौवन अवस्थाथइ त्यारे ते नगरनो राजा थयो ते वखते तेणे पोताना प्रभव ना मना मित्रने घणी सपत्ति आपी एक वखते ते सुमि त्र राजा अश्वक्रीडा करवा सारू घोडा उपर बेशीने बाहेर नीकल्यो ते घोडा तेने एक मोटा वनमां लइ गयो त्याहा कोइ एक पल्लिपति राजानी वनमाली नाम नी कन्या साथें लग्न करीने तेने साथें लइ पोताना नगरमा आव्यो ते वखतें ते रूप यौवन शालिनी क न्याने प्रभवे दिठी तेने जोइने ते कामातुर थयो थ को कृष्णपक्षना चद्रमानी परें दिवशे दिवस क्षीण थ

वा लागो. पोताना मित्रने मंत्र तथा तंत्रथी असा-
ध्य जोइने सुमित्र राजा तेने पूछवा लागो हे प्रभव,
तने शी पीडा छे! ते मने कहे त्यारें प्रभव केहेवा ला
गो के हे सुमित्र, मने जे पीडा छे ते तने कहेवा योग्य
नथी. जो कहीश तो तेथी तने कलंक लागशे. त्यारें
राजा मोटा आग्रहथी पूछवा लागो. त्यारें तेणे ना
इलाजथी तेने कह्यु के, हे माहरा प्यारा मित्र तारी स्त्री
वनमालाने जोइने ते विशे मारी इछा थएथी आवी
दशा थइ छे. एम सांभलीने तथा हशीने राजा तेने
केहेवा लाग्यो के, हे मित्र, तारा सारू हुं माहरुं राज्य
पण कुरबान करी देउं, तोपछी आ स्त्रीनी शी बिशाद
छे! आजथी ए स्त्री में तने आपी. एम कहीने त्याहां
थी उठीने पोतानी स्त्रीने एक दूतिनी साथें दासीनी
परें मोकलावी दीधी. त्यां जइने ते वनमाला तेने के
हवा लागी. हे प्रभवा राजाए मने तुमने सोंपी छे, ते
माटे हुं अहिं आवीछुं. केमके पतिनी आज्ञा स्त्रीए
मान्य करवा योग्य छे. माहरा भरथारनी तुमारी उपर
एटली प्रीति छे के तुमारा अर्थें ते पोताना प्राण दे-
वाने पण पाछल हठनार नथी; तो पछी माहरा जेवी
दासीनी त शी बिशाद! तेम छतां तुमे एटला उदा
सी केम जणाओछो! माहरी सामें न जोवानुं कारण शुं
त्यारे प्रभव बोल्यो, हे वनमाला माहरा जेहवो बीजो
कोइ पण लज्जा हीन नथी. मने धिक्कार छे. सुमि-

वण राजी थयो. अने तेने पूछवा लागो. हे हरिवा हन राजा, आ तारा पुत्रने त्रिशुल रूप अपूर्व क्याथी मिल्यो? एटलामा हरिवाहने तेने उत्तर देवा विशे पोताना पुत्रने शान करी ते जाणीने तेनोमधु नामनो पुत्र रावणने कहेवा लागो. हे दशकंधर, ए माहरां पूर्व जन्मना अमरेंद्र नामना मित्रे मने आप्यो छे तेणे ए आपती वखत मने कह्यु के, धातकी खंड नामना द्वीपमांना ऐरावत नामना क्षेत्रमा एक शतद्वार नामनु नगर छे, त्याहाना सुमित्र नामना राजाना पुत्रनो एक प्रभव नामनो शेवक हतो तेमनी बेहुनी वित्रे वसत अने कामदेवनी परे मित्राचारी हती, ते बेहुनी बाल्यावस्था छतां एक गुरु पासें जइने कला शिख्या पछी अश्विनीकुमारनी परे नित्य साथे क्रीडा करवा लागा सुमित्रनी यौवन अवस्याथइ त्यारे ते नगरनो राजा थयो ते वखतें तेणे पोताना प्रभव नामना मित्रने घणी संपत्ति आपी एक वखते ते सुमित्र राजा अश्वक्रीडा करवा सारू घोडा उपर बेशीने बाहेर नीकल्यो ते घोडा तेने एक मोटा वनमा लइ गयो त्याहाकोइ एकपल्लिपति राजानी वनमाली नामनी कन्या साथें लग्न करीने तेने साथें लइ पोताना नगरमा आव्यो. ते वखतें ते रूप यौवन शालिनी कन्याने प्रभवे दिठी तेने जोइने ते कामातुर थयो थको कृष्णपक्षना चंद्रमानी परे दिवशे दिवस क्षीण थ

वा लागो. पोताना मित्रने मंत्र तथा तंत्रथी असाध्य जोइने सुमित्र राजा तेने पूछवा लागो हे प्रभव, तने शी पीडा छे! ते मने कहे त्यारें प्रभव केहेवा लागो के हे सुमित्र, मने जे पीडा छे ते तने कहेवा योग्य नथी. जो कहीश तो तेथी तने कलंक लागशे. त्यारें राजा मोटा आग्रहथी पूछवा लागो. त्यारें तेणे ला इलाजथी तेने कह्युं के, हे माहरा प्यारा मित्र तारी स्त्री वनमालाने जोइने ते विशे मारी इछा थएथी आवी दशा थइ छे. एम सांभलीने तथा हशीने राजा तेने केहेवा लाग्यो के, हे मित्र, तारा सारू हुं माहरुं राज्य पण कुरबान करी देऊं, तो पछी आ स्त्रीनी शी बिशाद छे! आजथी ए स्त्री में तने आपी. एम कहीने त्याहांथी उठीने पोतानी स्त्रीने एक दूतिनी साथें दासीनी परें मोकलावी दीधी. त्यां जइने ते वनमाला तेने केहवा लागी. हे प्रभवा राजाए मने तुमने सोंपी छे, ते माटे हुं अहिं आवीछुं. केमके पतिनी आज्ञा स्त्रीए मान्य करवा योग्य छे. माहरा भरथारनी तुमारी उपर एटली प्रीति छे के तुमारा अर्थे ते पोताना प्राण देवाने पण पाछल हठनार नथी; तो पछी माहरा जेवी दासीनी त शी बिशाद? तेम छतां तुमे एटला उदासी केम जणाओछो! माहरी सामें न जोवानुं कारण शुं त्यांरे प्रभव बोल्यो, हे वनमाला माहरा जेहवो बीजो कोइ पण लज्जा हीन नथी. मने धि र छे. सुमि-

त्र तो सत्यनी मूर्तिज छे अरेरे!!! जेनो माहराविशे एटलो सज्जन भाव! जे माहरा सारू प्राण देवाने प ण तत्पर छे! मे केहेता वेतज जेणे पोतानी स्त्रीने माह री पासे मोकलावी दीधी? ए असह्य कर्म करवाने ए विना बीजो कोइ पण तत्पर थाय नहीं माहरा जेवो निठुर बीजो कोइ मागनारो नथी, अने एना जेवो क ल्पवृक्ष बीजो कोइ दानी नथी हे वनमाला, तु माहरी माता छे, ने हुं तारो पुत्र छु माटे पाछी राजापासे जा, आदुनियामां माहरा जेवो पाप करनारो बीजो कोइ मने जणातो नथी.

इत्यादिक प्रभवनु बोलवु पश्चाताप भरेलु सांभली ने ते राणी पाछी आवीने ते सर्व वात राजाने कही संभलावी राजाए मित्रनु सत्यपणु जोइने अत्यत राजी थयो अहिं प्रभव पोताना मनमा पश्चाताप करतो थको एक भयंकर खड्गने हाथमा लेईने म रवा तैयार थयो एटलामां सुमित्र राजा तेनी पा- से आवीने तेने केहेवा लागो हे मित्र साहसकर्म क दी पण करवु नहीं. आ खड्ग तुं हाथमाथी निचे नाखी दे. तो पण तेणे न मूक्याथी राजाए पोताना हाते करी लइ लीधुं ते वखते ते प्रभव महा लज्जाय मान थईने पोतानु माथु निचु घाल्यु ते जाणे पृथ्वि मा पेसवानो विचारज करतो होय! एवो जणायो. ते जोईने सुमित्र राजाए घणी प्रकारे तेने समजावी

ने कांइक सारी दशा उपर आव्यो. तेवार पछी पू
र्वेनी परें मित्र भाव राखीने केटलाएक काल सुधि
राज्य करीने अंते दीक्षा लई मूवा पछी ते राजा ई
शान देव थयो. त्यांथी चवीने मथुराना स्वामी ह
रिवाहन राजानी स्त्री माधवीना पेटें हुं मधु नामनो
पुत्र थयो. अने भ्रमव पण घणा काल सुधि भवमां
भटकीने विश्वावसु राजानी स्त्री ज्योतिर्मतिना पेटें कु
मार नामनो पुत्र थयो. ते भवमां आकरो तप क-
र्यांथी काल करी गया पछी आ हुं अमरेंद्र नामनो
देवता थयो छुं. एम कहीने तेणे मने आ त्रिशुल आ
प्युं, हे राजा, आ त्रिशुल बे हजार योजन दूर जई
ने पोतानुं काम करी पाछुं आवे छे. एवुं मधुकुमारनुं
भाषण सांभलीने तथा तेनी भक्ति अने शक्ति जा-
णीने तेने पोतानी मनोरमा नामनी कन्या परणावी
दीधी. तेवार पछी अढार वर्ष सुधि दिग्विजय करीने
मेरु पर्वत उपर आव्यो. त्यांहां पांडुक नामना वनमां
चैत्यवंदन करवा सारू उत्कंठा सहित पोतानी सर्व
संपत्ति वडे आव्यो. पछी चैत्यनी पूजादिक करवा लागो.

पोताना कुंभकर्णादिक भाई तथा सैन्य वगेरेने
इंद्र राजाना एक नलकुबर नामना दिग्पालने पक
डवा सारू तेना दुर्लंघ्य नामना नगरमां मोकल्या. ते
नगर एकसो योजन विस्तीर्ण छे, आशाली विद्या व
डे जेने अग्निमय किल्लो छे, नगरमां सर्व अग्निमय यं

छो छ, तेमा नलकुबर राजा पोताना परिवार सहित रह्यो थको अग्निनी परे शोजतो हतो एहवा अपूर्व नगरने कुजकर्णादिक रावणना योद्धा जोवा लाग्या थी जेम ग्रीष्मरुतुमा मध्याननना सूर्यनी सामे सुई ऊ ठेलो पुरुष जोइ शके नही, तेम ते नगरनी सामे ते वुथी जोवायु नही पछी तेमणे विचार्यु के आ दुर्लंघ्य नगर आपणाथी जीताए एवु जणातु नथी एम जाणीने मनमा खिन्न थया थका ते कुजकर्णादिक त्याहाथी पाछा फिरीने रावण पासे आव्या, ने त्याहां नो सर्व वृतांत कही सजलाव्यो ते साजलीने राव- ण पोते त्याहा गयो तेछए कह्या प्रमाणेज ते नगर जोइने पोताना जाइउ सहित रावण विचार करवा लागो के आ किल्लो केम लेवाय? एटलामा ते नल कुबर राजानी स्त्री उपरजा रावण उपर आशक्त थ ई थकी तेनी पासें पोतानी एक दासीने मोकली ते आवी केहवा लागी के हे रावण मूर्तिमान जयश्री जे वी नलकुबर राजानी स्त्री उपरजा तारा उपर मोहे त थइने तने चाहे छे तारा गुणो वडे जेनु अंत क रण हराई गयु छे एवी ते उपरजा केवल शरीरे क री त्याहा रही छे पण तेनु मन तारी पासे छे तेने ग्र हण करयाथी आ किल्लाने रक्षण करनारी आशाली नामनी विद्याने पोताना आत्मानी परे तु वश करी श. ने तेना योगे नलकुबर सहित आ नगर तने मि

लशे. एमां देवें राखेलुं सुदर्शन नामनुं चक्र पण त
ने मिलशे.एवुं ते दासीनुं वचन सांनली रावण कांइक ह
शीने तेणे बिन्निषण सामें जोयुं; त्यारें बिन्निषण ते
दासीने कहेवा लागो के, हे दूति तें जे कह्युं ते ठीक
बे, ने अमारे मान्य करवा योग्य बे,एहवुं मोघम कहीने
ते दासीने तेणे रजा दीधी. ते वखतें रावण क्रोध
करीने कहेवा लागो के, हे नाई, आपणा कुलमां ज
न्मेला लोकोए परस्त्री तरफ मन पण दीधुं नथी, ते
म बतां ते कर्म तें कबुल कर्यांथी युद्धमां शत्रुने
पीठ बतावबा जेवुं थयुं. जे शब्द आपणा कानने प
ण कलंक चमावे, ते तें वाणीथी कह्यायुं! हे बिन्नि
षण ताहरी एवी बुद्धि केम थइ बे? जेथी आ खोटुं नि
श्चय करेबे. ते सांनलीने बिनीषण रावणने कहे बे!
के हे रावण, क्रोध करवानुं कारण नथी. जे विशुद्ध
अंतःकरणवाला पुरुषो तेमने वाणीथी कलंक ला
गतुं नथी. आ आशाली नामनी विद्या तने मिलवा
थी ताहरो शत्रु नलकुबर वश थाय एटला सारूं हुं
एम बोल्यो बुं;पण तेना अंगीकार करवा विशे माहरुं बो
लवुं नथी. पोतानुं काम थया पबी तेने हरेक युक्ति
थी समजावजे, एवी रीतें बिन्निषण बोले बे एटला
मां आलिंगन करवाने अति लंपट एवी उपरंना त्यांइं
आवी. ने नगरनुं रक्षण करनारी आशाली नामनी
विद्या तेणे रावणने आपी, तेथी यंत्र वमे रहेला श

स्त्र तथा अस्त्र सर्व निष्फल थया. ते विद्याना योगें ते अग्निमय किल्लानु हरण करीने पोताना सैन्य सहित ते दुर्लंघ्य नामना नगरमा पेठो, त्यारें ते नलकुवर रावणनी साथे युद्ध करवा सारू तैयार थयो; तेणे आवतो जोईने जेम चामफानी धमणने हाथमां झालीए, तेम विभिपणे पोताना हाथे तेने पकडी लीधु तेमज देव तथा असुरने विजय एवु इंद्र सबंधि जे दुर्धर सुदर्शन चक्र, ते पण लई लीधु, त्यारें लाचार थयो थको नलकुवर रावणने नम्यो ते जोईने तेनु नगर राजी खुशीथी तेने पाछु आप्यु पछी तेनी स्त्री उपरंभाने बोलावीने रावण तेने उचित वाक्य केहेवा लागो, के हे उपरंभा, मने नम्यो एहेवा जे आ ताहरो पति तेनु तु सेवन कर आ वखते तें मने आशाली विद्या आपी तेथी तु मारी गुरुरूपे थई. मने तो सर्व परस्त्री माता तथा बेन जेवी छे तु काईक पाछल फिरीने ताहरा कुल तरफ नजर कर काशध्वज राजानी स्त्री सुदर्शना पेटे ताहरूं जन्म थयु छे. तें तारा माता पिता तथा कुलने तु कलंक नही लगाड हिवे एवी विपरीत बुद्धि मूकी दे एम कहीने तेने नलकुवर राजाने स्वाधीन करी. पछी ते नलकुवर राजाने साथें लईने पोताना सैन्य सहित रावण रथनुपुर नगरमा गयो.

रावण आव्यो एम जाणीने महा बुद्धिमान जे स

हस्त्रार राजा ते पोताना पुत्र इंद्रने कहेवा लागो के हे पुत्र, अमरा वंशमां तुं महा पराक्रमी थयो, ने पोताना बले करी बीजा राजाने जीतीने स्वकुलने श्रेष्ठ कर्युं ते केवल ते तारा पराक्रमथीज कर्युं छे, पण आ वखतें कांइक माहरुं बोलवुं सांभलवुं जोइए. केवल पराक्रम क्यांक दुःखनुं कारण थाय छे. मात्र पराक्रम वडे सिंहादिक पशुउनो नाश थाय छे. आ पृथ्वि उपर एकथी एक बलवान उत्पन्न थाय छे. हुं सर्व थकी बलवान छु, एवो अहंकार कोइथी पण न थाय. तेमज आ वखतें सर्व वीरोमां श्रेष्ठ एक रावण नामे माहा शुरवीर उत्पन्न थयो छे, जेणे पोताना प्रताप वडे सूर्य जेवो पराक्रमी जे सहस्त्रांशु तेने बांध्यो, लीला मात्रे करी जेणे कैलास पर्वत उपाड्यो मरुत राजाना यज्ञने तोड्यो, जंबुद्विपना स्वामी यक्षेंद्र जेना अंतःकरणने फेरव्यो नही, श्री अरिहंतजिन सामें पोताना हाथनी नाडी काहाडी वीणामां तार करीने जेणे मधुर गायन कर्युं; तेणे करी प्रसन्न थएला धरणेंद्रे त्रिभुवनने जितवावाली एक अमोघ शक्ति नामनी विद्या तेने आपीछे, पोतानी बे भुजानी परें जेहनां बे भाइउ छे, ने जे सुकेशी नामना राक्षस कुलमां सूर्यनी परें छे दीपे छे; जेणे लीला मात्रें यम राजाने नसाड्यो. वैश्रवण लोकपाल तथा वालीना भाइ सुग्रीवने जेणे पोताना सेवक कर्या. अग्नि जेवा किल्लावाली दुर्लंघ्य न

गरमां पेसीने जेना विजीपण नामना भाइए नलकुब्र र राजाने बाधी लीधो. एवो प्रलय कालना अग्नि जेवो रावण तारा उपर चढी आव्यो छे, ते नम्रतारूप अमृत वृष्टि वडे शांत थशे, ए शिवाय बीजा कोइ उपायथी शांत थनार नथी. तेने तारी रूपिणी नामनी माहा स्वरूवान कन्याने आप तेथी तेनी साथे तारी प्रीति बधाशे एवु पोताना बापनु बोलवु साभलीने इंद्र राजा क्रोधमा आव्यो थको कहेवा लागो क हे तात, जे आपणने मारवा योग्य तेने आपणी कन्या केम आपोए ! एनी साथें आपणु आजनु वैर नथी, पण आपणा वशपरपरागतनु छे पूर्वे मारा पितामह विजयसिंहे पकडीने मारयो हतो, ते तने केम याद आवतु नथी ! माटे एना माळी नामना पितामहनी जेवी पूर्वे मे अवस्था करी हती तेवी एनी पण करीश हे तात, तु डर नही, मनने धैर्य आप, तु पोताना पुत्रनो पराक्रम शु जाणतो नथी ? एवी रीते पीता पुत्रनु जापण चाले छे,एटलामा रथनुपुर नगरने रावणे आवी घेरो घाल्यो प्रथम रावणे पोताना एक दूतने साम करवा सारू,इंद्र राजा पासे मोकल्यो.ते इंद्र राजा पासें आवीने युक्ति वडे तेने समजाववा लागो. हे इंद्र आ पृथ्वि उपर जे राजाउ विद्या अने बाहु बले करी महा गर्वित छे, ते पण रावणने कर भार आपे छे आज दिवस सुधि ताहरू स्मरण नहोतु, तथा ताहरी नवता

मे जे तेम एटलो वखत गयो. हमणां आ तारो-
ज्ञक्तिनो व , त्यारे हिवें ज्ञक्ति अथवा शक्ति
ता . ज्ञक्ति तथा शक्ति थकी हीन थईने युद्ध क-
रीश–तो प ी दीनताने पामीश. एहवां ते दूतनां वा
क्यो सांजलीने इंद्र राजा तेने कहेवा लागो के हे जा
सुद, जे हलका राजाउ हता तेमणे आज दिवस
सुधि रावणनी पूजा करी; तेथी ए एटलो बधो उ
न्मत थईने मारी पासेंथी पोताने पूजाववानी इछा
करे छे, ते न करवी जोईए. आज दिवस सुधी तो
जेम तेम रावणनो वखत सुखे गयो, पण आ वखत
एनो कालरूप थयो छे एम समज. त्यारें तुं आहिंथी
जइने ताहरा स्वामीने पोतानी ज्ञक्ति अथवा शक्ति ब
तावबानुं कहे. पोतानी ज्ञक्ति अथवा शक्ति बतावशे
नही, तो ते नाशने पामशे. ते सर्व वृत्तांत दूतें रा-
वणने आवी कह्युं. एम सांजलीने महा उत्साह
जेहने, एवो रावण महा कोपायमान थइने युद्ध करवा
सारूं पोताना सैन्य सहित तत्पर थयो. आहिं इंद्र रा
जा पण रथनुपुर नगरमांथी बाहेर निकल्यो. कह्युं छे
के " जेवीर पुरुष छे ते बीजा शुरवीरनो अहंकार स
हन करता नथी." पछी युद्धनो आरंज्ञ थयो. तेमां
सामंतनी सामें सामंत, सैनिकनी सामें सैनिक, तथा
सेन्यानी सामें सेन्या थ ने परस्पर लरूवा मंडी ग-
या. ते वखतें संवर्तकमेघ, तथा पुष्करावर्तमेघनी परें

बेहूं सैन्य तथा राजाउनु युद्ध थवा लाग्युं. ते वखते इन्द्र राजाना शुरवीरोए एटलां बाण छोड्यां के जाणे बरसात थतो होय? ते जोई रावण भुवनालंकार नामना पोताना हाथी उपर आरुढ थयो थको हाथ मा धनुष्य बाण लई पोते लडवा मडी गयो. सामे इंद्र पण तेवी रीतेंज लडवा लागो लोइ कोइथी ह ठे नहीं बेहु राजा विषे एवी हणमार थयाथी तेउना हाथीउ एक एकने आवी विलग्या, ने पोताना दांतो वडे एक बीजाने मारवा लाग्या. ते एहवा जोरथी लडवा लाग्या के, तेमना दांतो मारती वखत तेमां थी अग्निनी तणखी निकलवा लागी पछी जेम वि- रहणी स्त्रीना हाथमांथी काकण निकली जाय, तेम तेमना दांतोमाना काकणो पृथ्वि ऊपर पड्या दां- तो चांग्याथी क्षीण थएला तेउनां शरीरमांथी तथा तेउना गंडस्थलमांथी मदनी धारानी परे लो हीनी धारा निकलवा लागी तेमनी उपर बेठेला रा वण, तथा इन्द्र राजा क्षणमा नालाथी तो क्षणमां बाणे करी, तथा घणिकमा पुदगल वडे एक बीजाने मारवा लागा एवी रीते ते बेहु पराक्रमी परस्प रना अस्त्रो तोडवा लागा एके अग्नि अस्त्र नाख्या थी बीजाये वर्सात अस्त्र नाख्यु एवी रीतें उत्सर्ग तथा आपवादनी परें एक बीजाने करवा लागा एम करतां करता बेहु पासें आवी गया, ते वखतें

रावणे पोताना हाथी उपरथी कुदको मारी तेना हा थी उपर जईने इंद्रना हाथीना मावतने मारीने इंद्र ने पकडयो. ते जोइने राक्षसोना वीर सहस्त्रारे इंद्रना सैन्यने घेरो घाल्यो. एम जाणीने इंद्रनुं सर्व सैन्य चारू दिशा तरफ नाशी गयुं. कह्युं छे के "सैन्यनो स्वामी जीतायाथी सर्व पदाति जीताया" एम सम जवुं. पछी रावण इंद्रने पोताना लस्करमां लई गयो, पछवाडे नायक विनानुं रहेलुं सर्व विद्याधरोनुं सैन्य रावणना स्वाधीन थयुं. पछी रावण त्यांथी निकलीने पोतानी लंका नगरीमां आव्यो, त्याहां जेम पोपटने पिं जरामां पूरीए, तेम रावणे इंद्रने बंधीखानामां नाख्यो.

पछी इंद्र राजानो पिता सहस्त्रार पोताना दिगपाल सहित लंकामां आवी रावणने नमस्कार करी तथा हाथ जोडीने कहेवा लागो. जेणे लीला मात्रे करी पथरनी परें कैलास पर्वतने उपाड्यो, तेणे अ मने जीत्यानी अमने कांइपण लाज नथी. तेमज ताह री प्रार्थना करवामां पण अमे लाजतानथी. ाटे हे रावण, हुं मागी लेउं छुं के माहरा पुत्र इंद्रने तुं छुटो कर ने ए पुत्रभिक्षा मने आप. ते सांभलीने रावण कहेवा लाग्यो के जे ं कहुं ते ए पोताना परिवार सहित करे तो एने छोडी मूकुं. ते काम ए के, लं ा नगरीमां गल्ली गल्लीए झाडुं काहाडे. जे कांइ गा मां कचरो पड्यो होय ते बाहार काहाडीने साफ

री मूके ने रस्ता रस्ते पाणी छंटे, ते पाणी सुगधी वालु होवु जोइए, झाडु पण जेम पोताना घरमांनो काहाडीए तेम कहाडवु जोइए एम करयांथीहु राजी थइश तथा सारा सारा फूलो गुफीने मारी नगरीमाना सर्व देवस्थानोने तेनी मालाए पूरी करवी. एटलु मारू कह्यु माने तो तेनु राज्य तेने पाछु आपु त्यारें ते सर्व सहस्त्रारे कबुल करयु त्यारे रावणे इंद्रने मूकी दीधो. ने तेने भाइनी परे सत्कार करयो, पछी सहस्त्रार तथा इद्र बेहु त्याहाथी चाल्या पोताने घरे आव्या पण इद्र राजा मनमां खिन्न थयो थको कहेवा लाग्यो कह्यु छे के "तेजस्वी पुरुष निस्तेज थएथी तेने मरवा करता बतु दु ख थाय छे "

कोइएक समयें रथनुपुर नगरमा निर्वाण संगम नामना एक ज्ञानवान मुनि आव्या तेमने वदना करवा सारू इद्र राजा तेनी पासें गयो. त्याहाजइ नमस्कार वगेरे करीने बेठा पछी ते साधुने पुछवा लाग्यो के हे भगवन, क्या कर्मे वडे रावणे मारो पराभवकरयो तेमज पछी तेणे सत्कार करवानु कारणभुत क्यु कर्मछे? त्यारें मुनि कहेछे, हे इद्र, एक अरिंजय नामना नगरमा ज्वलनसिंह नामनो विद्याधर राजा राज्य करतो हतो तेनीस्त्री वेगवतीनापेटे एक अहिल्या नामनी महा रूपवानकन्या जन्मी तेयौवन अवस्थामा आव्याथी तेना बापे तेनो स्वयंवर रच्यो तेमा सर्व देशो देशना विद्याधर राजाओ आव्या तेओमां एक चं

द्रावर्तपुरनो स्वामी आनंदमाली नामनो विद्याधर राजा हतो, तथा सूर्यावर्तपुरनो स्वामी तडितप्रभ नामनो विद्या धर राजा आव्यो हतो. ए बेहु स्वयंवरमां साथें आव्या हता. तेमांना आनंदमाली ने अहिल्या परणी. त्यारें तडितप्र भे जाण्युं के मारो पराभव थयो. पछी ते दिवसथी ते आनं दमालीना साथे द्वेष करवा लाग्यो. आनंदमाली केटलाएक काल सुधि राज्य सुख तथा ते अहिल्या स्त्रीनी साथें नाना प्रकारना उपभोग भोगवीने अंते वैराग्य उत्पन्न थयो तेथी दीक्षा लइने तथा आत्मध्यान करतो थको मोटा मोटा मुनि उनी साथें विचरवा लाग्यो. विहार करतां एक दिवसें आनं दमाली रथावर्त नामना पर्वत उपर गयो. त्याहां कोइ प्रसं गे तेने तडितप्रभ राजाए दीठो, ते वखतें तेने अहिल्याना विवाहनी याद आवी. ते द्वेष वडे ते मुनिने ध्यानमां बेठेलो जोइने तडितप्रभे तेनेबांधीने मारयो, तथापि ते पोताना ध्यानथी न रूग्यो. एहवुं अघोर कृत्य जोइने सर्व साधुउमां श्रेष्ठ एवा एक तेना कल्याण गुणधर नामना भाइए तडित प्रभे अयोग्य करयुं एम जाणीने तेनी उपरे तेजोलेस्या नाखी; तेथी ते पीडाणो त्यारें तेनी सत्यश्री नामनी स्त्री ए ते साधु पासें प्रार्थना करी, तेथी तेना क्रोधनी शां त्ति थई. ने तेजोलेस्याने पाछी समेटी लीधी, ते थी ते बल्या विना जेमनो तेम जीवतो रह्यो. एवी रीतें ते ध्यानमां बेठेला निरपराधी साधुने दुःख दी धाथी ते काल करी गया पछी ते पापना योगे केट-

लाएक भव भटकीने आ भवमां सहस्त्रार राजानो पुत्र तुं इन्द्र थयो. ताहरो रावणना हाथे पराभव थवानु कारण पूर्व जन्ममा ते निर्दोषी महा पुरुषनो तिरस्कार छे. कह्यु छे के, " जे कर्म करयु होय तेनु फल कोईक दिवसे पण मिले. " एहवी सर्व प्राणीउनी स्थीति छे, इन्द्रथी ते कीमी सुधि सर्व कर्माधीन छे एम ते साधुना मुखे साभलीने पोताना दत्तवीर्य नामना पुत्रने राज्य ऊपर वेसाडीने दीक्षा लइने तथा उग्र तप करीने मोक्षे गयो.

कोईएक समये रावण मेरु पर्वत उपर अनतवीर्य नामना मुनिने वदना करवा सारू गयो. त्याहां जईने मुनिने वदना वगेरे करीने योग्य आसन उपर बेठो मुनि धर्म देशना देवा लाग्या, ते अमृत जेवां मुनिना वचनो साभलीने रावण मनमां राजी थयो. व्याख्याननी समाप्ति थया पछी रावण पूछवा लागो, हे महामुनि, हुं कोनना हाथथी मरीश ? ते मने कहो. त्यारे मुनिए कह्यु के, हे रावण, परस्त्रीना दोषें करीने वासुदेवना हाथे ताहरो मृत्यु थशे. ताहरा देहांतनी वखतें तुं महा विपत्तिमां पडीश एम साभलीने ते मुनिना सामेज प्रतिज्ञा करी के, आजथी मारा विशेनी इछा रहित स्त्रीनी साथें हु क्यारे पण रममाण थवानो नथी एम कही ने तथा ते मुनिने नमस्कार करीने रावण लंकामा आवीने सुखे राज्य करवा लागो

॥इति राम लक्ष्मण चरित्रे द्वितीय खंड समाप्त ॥

॥ अथ श्री राम लक्ष्मण चरित्रे त्रीजो खंड प्रारंभः ॥

आहिंयां श्री राम लक्ष्मण चरित्र वगैरे जे चरित्रो कहे वानां छे ते मांहे कथानां प्रसंगे बीजा पण उत्तम पुरुषो नां चरित्र हण जेलां कहेवानां छे केमके आ चारि त्रमां तेउनां नाम पण आवेला छे, माटे आहिंयां जो तेमनी उत्पत्ति कहेवामां आवे तोज कथा वांच वानो रस आवे; माटे आहिंयां त्रीजाखंडमां पवनजय तथा अंजनानो संबंध कहे छे.

वैताढ्य पर्वतनी उपर आदित्यपुर नामना नगर- मां एक प्रल्हाद नामें राजा राज्य करतो हतो, तेने केतुमती नामे पटराणी हती. एकदा उत्तम स्वप्न देख वे करीने राणीए गर्भ धारण कीधो. नवमास पूरण थ एथी शुभ योगे मांहा तेजस्वी एक बालकने ते ज न्मती हुई. राजाए मोहोत्सव करी पवनजय एवुं नाम दीधुं. ते बालक अनुक्रमे वृद्धिने पामतो थको महा बलवान अने विद्याउमां पण निपुण होतो हवो. अ नुक्रमे यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारे एहवो तो बलवा न थयो के जाणे आखी पृथ्विना राजाउने पोते एक लोज जीती सकशे एवो महा पराक्रमी थयो.

भरतक्षेत्रमां समुद्रनी पासे दंती नामना पर्वत पर महेंद्र नामना नगरमां एक महेंद्र नामनो विद्या धर राजा थयो. तेनी हृदय सुंदरी नामनी स्त्रीना उद रथी अरिंदमादिक एकसो पुत्र पेदा थया, छेवट एक

अंजनासुंदरी नामनी कन्यानो जन्म थयो ते यौवन अवस्थामा आव्याथी तेने योग्य पति मिलवा सारू बापविचार करवा लागो पछी पोताना प्रधानोने कह्यु के आ मारी कन्याने लायक वरनो शोध करो ते मान्य करीने ते देशोदेश गया. सर्व विद्याधर राजाउना पुत्रोना चेहेरा काहाडी लावीने राजाने बताव्या तेम ज एक हिरण्याक्ष नामना विद्याधर राजानी स्त्री सुम तीने पेटे जन्मेला विद्युत्प्रभनी, तथा प्रल्हाद राजाना पुत्र पवनजयनी, तसबीरो लइने प्रधाने राजाने बतावी तेबेहू रूपवंत, कुलीन, विद्यावंत, धनवंत, तथा बीजा सर्व गुण संपन्न जणाया, त्यारे राजाए प्रधानोने पूछयुं के ए बेमाथी आपणी कन्याने योग्य कोण छे? प्रधाने कह्युं के राजा विद्युत्प्रभनु आयुष्य अढार वर्षनु छे, ते भोगवीने मोक्षे जशे एम मोटा शास्त्र जाणनारा ज्योतिषिउए कह्युं छे, अने प्रल्हाद राजाना पुत्र पवनजयनु घणु आयुष्य छे, माटे ए आपणी कन्याने योग्य वर छे तेने अंजनासुंदरीने आपवी जोइए एवा प्रसगे श्री नदीश्वर द्विपमा श्री नंदीश्वरनी यात्रा करवा सारू सर्वे विद्याधरो पोताना परिवार तथा रिद्धि सहित गया हता, त्याहा प्रल्हादराजा पण गयो हतो, तेमज महेंद्र राजा पण गयो तेनी पासे प्रल्हादे पोताना पुत्र पवनजय सारू तेनी कन्या अंजनासुंदरीनी माग

णी करी. प्रथमज ते महेंद्र राजाना मनमां आव्या-
थी ते कहेणो तेणे मान्य कर्युं. प्रल्हादनुं केहेवुं तो
निमित्त मात्र थयुं. पछी ते दिवसथी त्रीजे दहाडे
लग्न करवानो ठराव कर्यो. यात्राकरी सर्व पोतें पो
ताना ठेकाणे गया. तेमज महेंद्र राजा मनमां राजी
थइने बेहुंए मानस सरोवर उपर जइने डेरो कर्यो.

एवातनी पवनजयने खबर पडतांज पोताना प्रहसि
त नामना मित्रने कहेवा लाग्यो के, अंजनासुंदरीनी
साथें माहरुं लग्न थवानुं छे, ते पोतें केहवीछे ? तेने तें
जोइ छे के? ते सांभलीने तथा ते प्रहसित कांइक हशी
ने तेने केहेवा लागो के, हे पवनजय में अंजनासुंद-
रीने दीठी छे, ते रंभादिक अप्सराउथी पण सुंदर
छे, कोइनी उपमा जेने देवाय नही, ने एनुं रूप जेवुं
देखाय छे तेवुं वर्णन करवाने महा पंडित पण समर्थ
न थाय. बीजुं ते हुं शुं कहुं? एम सांभलीने ते कहेवा ला
ग्यो के हे मित्र, विवाहनो दिवस घणो दूर छे, ने
मने तो तेने जोवानी इछा घणी छे, ते पूर्ण केम था
य? कह्युं छे के "स्त्रीनी अभिलाषा वाला पुरुषोने ए-
क घडी दिवस जेवी जाय छे, दिवस मासनी परें जा
य छे" आहिं तो त्रण दिवस जवाना छे, ते केम पू-
रा थशे! त्यारें प्रहसित केहेवा लाग्यो के हे पवनज
य धैर्यने मूकनही, आज रात्रें कोइने न कलतां आ
पण तेना घरे जइशुं. एम कहीने तेने शांत कर्यो. ए

टलामां रात्र थइ त्यारें सकेत प्रमाणे वेहु जणा अंज नासुदरीना घरना सातमा माहाल उपर ज्याहा ते रहेती हती त्याहा जइने तेनी बाहेर एकबाजु उनारहिने. अज ना सुदरीना गीत्र जोवा सारु राजाए एक काणु जो इ कहाड्यु, तेमांथी जोवा लागो

ते वखते अजनासुदरीनी दासी वसतातिलका तेने कहेवा लागी के हे स्वामिण, तने पवनजय पतिनी प्राप्ति थइ माटे तु धन्य छे ने तारा जेवी भाग्य शाळी आजे बीजी कोइ नथी, एटलामा तेनी पासे उभेली बीजी मिश्रकेशी नामनी तेनी सखी वसततिलकाने कहेवा लागी के हे सखी, चर्म शरीरी जे विद्युत्प्रभ राजा, तेनेमूकीने बीजा क्या वरनी स्तुति करेछे? वसंततिलका तुतो भोली छे, तने काइ पण खबर नथी विद्युत्प्रभ राजा यद्यपि थोडा आयुष्यवालो छे तथापि ते आपणी स्वामिणीने योग्य छे तेने मूकीने बीजा राजानी तारीफ करे छे माटे तु मूर्ख छे. कह्यु छे के, " अमृत थोडु पीधु ते सुखकारक छे, ने जहेर घणु पीवाथी घणु दु ख थाय छे" एवी रीतें ते बेउ सखीनु बोल्वु सानळीने पवनजये जाण्यु के, आ मिश्रकेशीए बोलवानो अजनाए काइ पण तिरस्कार कर्यो नही, तेथी ते एने प्रिय हशे जो प्रिय न होत तो ए दासीनो निशेध कर्या विना रहेति नही पछी क्रोधायमान थइने तथा हाथमा खड्ग लइने जेम कोइ

राक्षस अंधारामांथी निकले तेम ते त्यांथी उठ्यो अ ने केहेवा लागो के जेना मनमां आ विद्युत्प्रभ वर वरवानुं सारूं लाग्युं छे, तेउनां धडथी माथां अलगा करीश. एम कहीने तें तरफ जवानी तयारी करी, ते वखतें तेनो मित्र प्रहासित तेने कहेवा लागो के, हे मि त्र विचार कर्यां विना कांइ पण काम करवुं नही. ए कही झालीने तेने रोक्यो, ने तेने बोध करवा ला- गो के हे मित्र, स्त्री अपराधी छतां गायनी परें मार वा योग्य नथी ते शुं तुं जाणतो नथी ! आतो बिचा री निरपराधी छे, तेने विना कारण मारवी ए तेने यो ग्य नथी. इत्यादिक वाक्यो वडे तेने समजावीने त्याहां थी ते बेहु पाछा फिरया, ने पोताना थानकें आव्या. ए वातनुं पवनजयना मनमां शुल रह्युं तेथी तेने रात्र- मां निंद आवी नही. सवार थतांज पोताना मित्र प्र हसितने बोलावीने तेने कहेवा लागो के एनी सा थें विवाह करीने शुं करवानुं छे? कह्युं छे के "पोताना भाइ छतां जूदाइ राखतो होय तो ते दुःखदाइ थाय " तो प णे जूदा मनवाली स्त्रीनी साथें विवाह करया थी शुं ते दुःखनुं कारण न थाय के ! अवश्य थायज माटे हे मित्र, एनी इच्छा मूकी ने हिवे जलदी आप णा नगरमां जइए तो सारूं. कोइ भोजन घणुं सारूं छतां जो ते पोताने गमतुं न होय तो ते शा कामनुं! एवी रीतें घणा प्रकारे भाषण करीने ते चालवा ला

टलामां रात्र थइ त्यारें सकेत प्रमाणे बेहुं जणा अज नासुदरीना घरना सातमा माहाल उपर ज्याहां ते रहेती हती त्याहा जइने तेनी बाहेर एकबाजु उभारहिने अज ना सुदरीना छीद्र जोवा सारु राजाए एक काणुं जो इ कहाड्यु, तेमाथी जोवा लागो

ते वखते अजनासुदरीनी दासी वसंततिलका तेनें कहेवा लागी के हे स्वामिण, तने पवनजय पतिनी प्राप्ति थइ माटे तु धन्य छे ने तारा जेवी भाग्य शाळी आजे बीजी कोइ नथी, एटलामा तेनी पासे उभेली बीजी मिश्रकेशी नामनी तेनी सखी वसंततिल काने कहेवा लागी के हे सखी, चर्म शरीरी जे विद्युत् प्रभ राजा, तेने मूकीने बीजा क्या वरनी स्तुति करेछे? वसततिलका तुतो भोळी छे, तने काइ पण खबर न थी विद्युत्प्रभ राजा यद्यपि थोडा आयुष्यवाळो छे तथापि ते आपणी स्वामिणीने योग्य छे तेने मूकीने बीजा राजानी तारीफ करे छे माटे तु मूर्ख छे. कह्यु छे के, " अमृत थोडु पीधु ते सुखकारक छे, ने जहेर घणु पीवाथी घणु दु ख थाय छे" एवी रीते ते बेउं सखीनु बोलवु साभळीने पवनजये जाण्यु के, आ मिश्रकेशीए बोलवानो अजनाए काइ पण तिरस्कार कर्यो नहीं, तेथी ते एने प्रिय हशे जो प्रिय न होत तो ए दासीनो निशेध कर्या विना रहेति नही एवी क्रोधायमान थइने तथा हाथमां खड्ग लइने जेम कोइ

राक्षस अंधारामांथी निकले तेम ते त्यांथी उठ्यो अ
ने केहेवा लागो के जेना मनमां आ विद्युत्प्रभ वर
वरवानुं सारूं लाग्युं छे, तेहुनां धडथी माथां अलगा
करीश. एम कहीने ते तरफ जवानी तयारी करी, ते
वखतें तेनो मित्र प्रहासित तेने कहेवा लागो के, हे मि
त्र विचार कर्यां विना कांइ पण काम करवुं नही. ए
कही झालीने तेने रोक्यो, ने तेने बोध करवा ला-
गो के हे मित्र, स्त्री अपराधी छतां गायनी परें मार
वा योग्य नथी ते शुं तुं जाणतो नथी ! आतो बिचा
री निरपराधी छे, तेने विना कारण मारवी ए तेने यो
ग्य नथी. इत्यादिक वाक्यो वडे तेने समजावीने त्यांहां
थी ते बेहुं पाछा फिर्या, ने पोताना थानकें आव्या. ए
वातनुं पवनजयना मनमां शुल रह्युं तेथी तेने रात्र-
मां निंद आवी नही. सवार थतांज पोताना मित्र प्र
हसितने बोलावीने तेने कहेवा लागो के एनी सा
थें विवाह करीने शुं करवानुं छे? कह्युं छे के "पोताना
भाइ छतां जूदाइ राखतो होय तो ते दुःखदाइ थाय
" तो पछी जूदा मनवाली स्त्रीनी साथें विवाह कर्या
थी शुं ते दुःखनुं कारण न थाय के ! अवश्य थायज
माटे हे मित्र, एनी इछा मूकी ने हिवे जलदी आप
णा नगरमां जइए तो सारूं. कोइ भोजन घणुं सारूं
छतां जो ते पोताने गमतुं न होय तो ते शा कामनुं!
एवी रीतें घणा प्रकारे भाषण करीने ते चालवा ला

ग्या, ते जोइ तेनो प्रहसित मित्र तेने केहेवा ला-
गो. के मोटा पुरुष जे वस्तुनु ग्रहण करयु ते फिरी
मूकी देवी योग्य नथी त्यारे पोताना वडाउए ग्रह
ण करेली वस्तुने शु मूकी देवी एतो मोठुं लाछन छे.
आ तारा मनमा जे दु ख थाय छे ते केवळ तारा प्रा
रब्धवशे थाय छे, बिचारी अजना सुदरीमा अपराधनो
लेश नथी ताहरा तथा ए अजनाना मावीत्रो जगत
मां प्रख्यात छे, माटे जो तु तेनी साथें विवाह करया
विना पाछो जइश, तो ताहरा तथा ए कन्याना माता
पिताने अति लज्जा थशे एहवा पोताना मित्रना शि-
खामणना वचनो साम्भलीने तथा किंचित विचार क
रीने पवनजय मनमा दु खीत थयो थको मोटा सता
पथी त्याहा रह्यो पछी निश्चय करेला दिवसें सकेत प्र
माणे बेहुनु लग्न थयु महेद्र राजाए प्रल्हाद राजानो
घणो सत्कार करयो, सर्व कार्य थइ रह्या पछी वर त
था वहुने लेइने पोताना परिवार सहित पोतानी न-
गरीमा आव्यो त्याहा अजना सुदरीने रहेवा सारू
राजाए सात मजलानु अति रमणीय महेल काहाढी
आप्यु ने नगरीमा एक अजना सुदरी विना ज्याहा
त्याहा आनद थइ रह्यो विवाह थएला दिवसथी प
वनजये अजनाने कोइ वखतें बोलावीज नही कह्यु
छे के ' जे मानी पुरुष छे तेनो थोडोक अपमान था
य तोपण ते कदी भूले नही. "

पवनजये तें द्वेष राखीने अंजना साथें बोलवानुं बंध कर्युं, ते जोइने अंजना महा शोकमां पडी गइ, जेनी आंखोमांथी पाणी तो सुकायज नही. चंद्रविना-नी रात्रनी परें जेना मुखनी कांती थवा लागी. पलंग उपर सूती छतां रातना निंद न आवे. मनमां संताप थएथी पलंग उपर आम तेम पडीने जेम तेम रात्र कहाडवा लागी. ते एक रात्र जाणे वरषरूप थइनेज आवी होय ! एवी जणाइ. दिवसें मनमां विचार करती थकी बे ढींचणमां माथुं घालीने, पोताना पतिना चेहेरानुं चित्र कहाडीने, तेनो सामें जोइने, पोताना अंतःकर्णने धैर्य दइने केटला एक दिवस कहाड्या. एवी पोतानी स्वामिनीनी अवस्था जोइने तेनी दाशीओए अति मीठुं बोलीने तेने समजाववा लागी पण तेणे तेओने कांइपण जबाब वाल्यो नही; जेम हेमंत ऋतुमां कोकीला भूलें चूकें पण बोले नही तेम. तेणे मौन धारण कर्युं. एहवी महा दुःखनी दशामां तेनो विकराल काल जवा लागो.

एक दिवसें रावणनो एक दूत प्रल्हाद राजा पासें आवीने तेने कहेवा लागो, हे राजा, राक्षसनाथ जे रावण, तेनी साथें दुर्मतिवालो वरुण निरंतर द्वेष करतो रहे छे. ने ते रावणनी आज्ञा मानतो नथी. ते तो रह्युं पण उलटो कहे छे के, रावणनी आज्ञा मानवी. हूं ज्यारें तेनी पासें गयो त्यारें

कहेवा लागो के, अरे ! रावण ते कोण छे ! तेनाथी शु थवानु छे ! ते इंद्र हु नथी ? कुबेर पण हु नथी? तेमज सहस्रांशु हु नहीं ? वळी मरुत राजा पण म नमा न समजतो ! रखे यम जाणतो होय ? ते पण हु नही तथा कैलास पर्वतथी पण मने जूदोज सम जजे ? माहरु नाम वरुण छे देवताउए आपेलां रत्नो ना योगे ए दुर्मति रावण घणो गर्व करी रह्यो छे, ते जो अगमा न मातो होय तो मारी पासें आवे. तो तेनो घणा दहाडानो मातेलो गर्व हु घडीकमां खेची लेऊ इत्यादिक तेनु बोलवु साम्भलीने ते सर्व वृत्तात में रावणने कह्यो ते साम्भलीने रावण क्रो धायमान थयो थको वरुणनी साथे युद्ध करवा सारूं तयार थईने तथा तेना नगर पासें आवीने जेम द्वी पने समुद्रनो घेरो छे, तेम तेणे पोताना सैन्यनो घेरो घाल्यो वरुणने खबर पडताज क्रोधें करी आ खो राती करीने पोताना राजिव तथा पुण्डरिक नाम ना बे पुत्रो सहित नगरथी बाहेर निकळीने रावणनी सामे युद्ध करवानो आरम्भ कर्यो पछी महाभयंकर लडाइ थवा लागी तेमा महा पराक्रमी तेना बे पु त्रोए रावणना बनेवी खरदुषणने बांधी लई गया. त्यारे राक्षसोनु सर्व सैन्य दशो दिशा तरफ नासवा लाग्यु ते जोईने वरुण पोताने कृतार्थ मानीने ते पाछो पोताना नगरमा गयो रावणे पोताना सैन्यने

विखराई गएलुं जोईने तेनी सहायता करवा सा-
रू मने आंहिं मोकल्यो छे; माटे तेनी मदत क-
रवाने तुमारे चालवुं जोइए.

एवां ते दूतना वाक्यो सांभलीने पोतानुं सैन्य सज्जीने रावणने मदत करवा सारूं प्रल्हाद राजा तयार थयो. त्यारें तेनो पुत्र पवनजय तेने कहेवा लागो के हे पिताजी. तुमाने जवानुं कांई काम नथी; तुमारी घती हुं जईने रावणनो मनोरथ पूर्ण करी आवीश. हुं पण तुमारो पुत्र छुं! एवी रीतें जेम तेम करी पोताना पिताने समजावीने पवनजय रावणने मदत करवा सारूं त्याहांथी निकल्यो. त्यारें पति बाहेर जाय छे, एम सांभलीने जेम कोइ देवी झडपथी आकाश थकी नीचे उतरे, तेम तेनी स्त्री अंजनासुंदरी मालथी निचे उतरी. पोताना पतिने जोवा सारूं जेनी आंखोनां पांपण मीचातां नथी; ने मनमां म्हारो पति आज दिवस सुधि मारी साथें न बोल्यो पण आज तो जरूर बोलशे; एवी इछाथी थांभलमांनी पुतलीनी परें बारणाना थांभलाने टेकीने उभी रही. ते वखतें प्रतिपदाना चंद्रमां जेवी तेज रहित देखावा लागी. तेनो उपर माथाना केश पड्यांथो एक नवीन वेश जेवी जणावा लागी, जेना कपाल उपर कुंकु आदिक कांइ पण दीठामां आवतुं नहोतुं, केड उपर हाथ राखीने उभेथी जाणे पोतानी सिथिलताने सूचन करती हो

य? जेना होठ तंबोलनी लाली थकी रहित देखा वा लाग्या आखोमानु पाणी जेना मुख उपर वही रह्यु छे एवी महा खराब दशाथी उन्नेली अजनाने पवनजय राजाए जोई, ने मनमा कहेवा लागो के आ स्त्री केवी निर्लज्ज छे! एने बुद्धि तो नथीज ? प णी भय ते क्यांथीज होय? अरे! ए विशे मेप्रथ मजाणी लीधुं हतु, पण मारा पितानी आज्ञा मा न्य करवा सारू मे एनी साथे विवाह कर्यो एम प वनजय मनमां नष्ट विचार करी रह्यो छे, एटलामां पासें आवीने पतिना पगमा माथु घालीने, तथा हात जो डीने विनंती करवा लागी के हे प्राणनाथ, तुमे सर्व लोकनी साथे बोल्या तथा मिल्या, परतु माहरी साथे लगारे न बोलवानु कारण शु छे? तेतो रह्यु, पण हि वे एक विनती करुछु ते आपे मान्य करवी जोईए हे प्राणनाथ, हु एटलुज तुमारी पासेंथी मागी लेउ-छु के मने कोई वखते भुली जवी नहीं तेमज पोता नु कार्य करीने जलदी पाछा पधारजो, तुमारू कल्या ण थाओ! एवो आशिर्वाद देउछु, एहवा महा दीनता ना वचनो बोलनारी बिचारी निष्पाप अजनाने काई पण उत्तर न वालता तेनो अनादर करीने पवनजय चालतो थयो ते वखतें पतिनो वियोग थयो ते दु ख थी शोकातुर थइने अजना पोताना मेहेलमां आवी ने धब सरखी जमीन उपर पडी.

पवनजय त्याहांथी निकलीने संध्या समयें मानस सरोवर उपर जइ पोहोतो; त्याहां विश्राम करीने पोताना आसन उपर बेठो छे, एटलामां ते सरोवरना किनारा उपर पोताना धणीना वीयोगथी पीडित थयेली एक चकवीने तेणे जोइ. जे पोताना आणेला कमल तंतु खाती नथी, थंडीमां जेने गरमी थइ रही छे, ने चंद्रमा जेने अग्नि जेवो दीठामां आवे छे; तेमज करुणारूप उंच स्वरे करीने रडवा लागे छे. एवी ते चकवीनी दुःखीत अवस्था जोइने पवनजय मनमां विचार करवा लागो के, आ चकवाडी आखो दिवस पोताना पतिनी साथें क्रीडा करे छे, फक्त एक रात्रनो वियोग थयो ते एनाथी सहन थतो नथी, ने में तो मारी स्त्रीने परणवाना दिवसथी बिलकुलज मूकी दीधी छे, कोइ दिवस तेनी साथें बोल्यो पण नथी, निकलती वखत ते मारी पासें आवी तो पण तेने में पर स्त्रीनी परें अनादर कर्यो. बिचारी अंजना ारा दुःखरूप डुंगरथी दबाइ छे, तेनी उपर वियोग रूपी आ बीजो पर्वत राख्यो, तेथी जे तेने दुःख थतुं हशे ते तेनाथी केम सोसाइ शकशे! मारी सोबतनुं सुख आज दिवस सुधि तेने खबरज नथी, हिवे कोण जाणे तेनुं शुं थशे. मारा अविवेकने धिक्कार छे, हिवे ते तपस्विनी खचित मरण पामशे. (आंखोमां आंसु आव्यां छे) अरेरे ! ! बिचारी ए

निर्दोषी पतिव्रतानो आज दिवस सुधि जे मे अना
दर करयो, ए पाप वडे कोण जाणे मारी केवी ग-
ति थशे ? इत्यादिक शोक करीने ते सर्व वृत्तात ते
णे पोताना प्रहसित नामना मित्रने कह्यो। कह्यु छे
के " पोतानु दु ख कहेवाने पात्र सुमित्र विना बीजो
कोई नथी " ते साभलीने प्रहसित कहेवा लागो के
हे पवनजय, तारा वियोगथी तथा त करेला तिर-
स्कारथी ते कमलनयनी जरूर आजे मरणने पामशे
हे मित्र, हवी तेनु अश्वासन करवाने तु योग्य छे.
त्याहा जइने तेना साथे मधुर भाषण करीने पछी पो
ताना काम सारू जवु जोईए. त्यारे जे पोताना मन
मां हतु तेज मित्रे कह्यु, एम जाणीने तथा ते मित्र
ने पोतानी साथे लईने त्याहाथी पोताना घरे आव्यो
त्याहां जइ अजनासुदरीना बारणा पासें पाते उभो र
ह्यो ने प्रहसितने आगलथी तेनी पासें मोकल्यो ते
जइ जूवेछे तो थोडा पाणीमा जेम माछलु तरफडे
तेम पलग ऊपर लोटी रही छे, हेम पड्याथी जेम क
मलने पीडा थाय तेम तेने चद्रनी काती वडे पीडा
थइ रही छे, अत करणमां थयेला सताप थकी तेना
गलाना हारना मोती फूटी रह्या छे, मोटा मोटा श्वा
सोश्वास लेवाथी तेना माथाना वाल उडी रह्या छे,
विरहथी थएला त्राशने लीधे हाथमाना काकणोने
फोडी रही छे, वसत तिलका जे सखी ते तेने वारं

वार धैर्य देई रही छे, नेत्रो तथा हृदय जेनां शुन्य थई रह्यां छे, तथा लाकडानी परे पलंग ऊपर पडे-ली अंजना सुंदरीनी एहवी खराव दशा प्रहसिते जोइ. तेमज अंजनासुंदरीए पण प्रहसितने जोयो, तेवारे अकस्मात व्यंतरनी परें आ कोण आव्यो ! एम कहीने कांइक भयने पामी तथापि धैर्य धारण करीने बोलवा लागी. अरे तुं कोण छे ? अहिं आ-ववानुं कारण शुं ? तुं कोई परपुरूप छे, ते आ अ-वस्थामां पडेली मने जोवा सारू परस्त्रीने घरे आ-व्यो छे ? एवुं तेनी साथें बोलीने पोतानी सखीने क हे छे. हे वसंततिलका, एनुं हाथ झालीने एने बाहा र कहाडी मूक, हुं चंद्र जेवी निर्मल छतां एने जोवाने योग्य नथी. मारा पति पवनजय विना बीजा कोइ पु रुपने आ घरमां पेसवानो अधिकार नथी. माटे तुं कोण छे ते कहे, त्यारें प्रहासित नमस्कार करीने तेने कहे छे, आजे हुं माहरूं मोटुं भाग्य समजु छुं के, में तने जेमनी तेम जोई. घणा दिवसथी थएलो जे पवन जयनो वियोग, ते घडीकमां मिटीने मोटा आनंद सहित वेहुनो समागम थशे. जेम कामदेव तथा वसंतऋतुनो पोतामां मित्रभाव छे, तेमज पवनजय साथें माहरी मित्रता छे, तेणे मने आगल मोकल्यो छे, ने पोतें पाछलथी अहिं आव्यो एम समज. त्या रें अंजना कहेवा लागी के, हे पर पुरुष तुं आमा

री मश्करी करीने मने शा सारू हेरान करे छे? आ वखत मश्करी करवा योग्य नथी पण ए ता रो दोष नथी, मारा पूर्व कर्मनो दोष छे. जो तेम न होत तो मारो कुलीन पति मने मूकतो नही? विवाहना दिवसथी आज बार वर्ष थया पतिए मने मूकी दीधी छे, तोपण हु पापिणी हजी सुधि जीवुछु, एवा तेना दु खदायक वचनो साम्भलीने पवनजयथी धीर न धराई तेथी मोटी ऊडप करीने माहेली कोरें आव्यो आखोमां आंसु आव्या छे, ने गद्गद कठ थयो थको मोटा आवेगथी वोलवा लाग्यो हे स्त्री, तु परम निर्दोष छता दोषनो आरोप करीने परणेला दिसथी आज दिवस सुधि मे मूर्खें ताहरी उपेक्षा करी तेनु कारण केवल माहरू अज्ञान छे जो पण माहरा दोषथी ताहरी एटली बधी दुर्दशा थई, तथापि आज में तने जीवती जोई ते माहरू मोटु भाग्य समजु छु एहवा महापश्चातापना पोताना पतिना वाक्यो साम्भलीने पलग ऊपर हाथ झालीने ऊट उठी ते जेम हाथी पोताना शुण्डादड वडे लतानु ग्रहण करे छे, तेम पवनजये पोतानी स्त्रीने पोतानी भुजाथी झाली लीधी पछी पोताना हाथे करी तेने साथें लईने पलग उपर वठो ने तेनी साथें मधुर वाणीथी वोलवा लागो, हे माहरी प्यारी स्त्री, क्षुद्रबुद्धि जे हु, तणे तं निरप्रा

धी ब्रतां तने घणुं दुःख आप्युं, तेनी मने क्षमा कर. एहवां प्यारनां वचनो सांभलीने अंजना कहेवा लागी, हे प्राण प्रिय पति, एम कहेवुं तुमनें योग्य नथी. एटलुं बोलतां अति आनंदमां आवी थकी गमे तेम वर्तवानी इछा करवा लाग्याथी प्रहसित तथा वसंततिलका ए बेहुं जण त्यांथी जतां रह्यां. पछी ते एकांत स्थलमां पवनजय तथा अंजना यथेच्छ क्रीडा करतां ब्रतां रात्रना चार प्रहर एक प्रहरनी परे वीत्या. सवार थई एम जाणीने पोतानी स्त्रीने पवनजय कहेवा लागो के, हे कांता, हिवे हुं जय करवा सारूं जाऊं बुं. आंई हुं घणी वेला रह्यांथी मारा माता पिताने खबर पडशे, हुं पाछो जलदी आवीश. आजथी तुं ताहरा मनमां कांइपण खेद करजे नहीं. पोतानी सखी सहित सुखे करीने रहेजे. रावणनुं काम करीने हुं जलदीज पाछो आवीश. त्यारें अंजना सुंदरी बोली, हे नाथ, ए काम माहरा बाहुबल वडे सिद्धज छे, पण जो माहरा जीववानी तमोने गरज होय तो पोतानुं काम करीने जलदी पाछा आवजो, अने में आजे रतिनुं स्नान कर्युंछे, तेथी जो मनें गर्भ रह्यो, तो दुष्ट लोको मारी उपर दोष आरोपशे. तो पछी मारी शी दशा थशे ? त्यारें पवनजय कहेवा लाग्यो के, हे प्रीया, हुं पोतानुं काम करीने जलदीज पाछो आवीश. पछी दुष्ट लोकोने दुषण देवाने

जगाय नथी अथवा आजे माहरा आववानी सूचकता आ माहरा नामनी वींटी छे, ते तु ताहरी पासे राखजे ज्या रेकाम पडे त्यारें बतावजे एवी रीते पोतानी स्त्रीने समजावीने पोताना मित्र सहित पवनजय मानस सरोवर उपर गयो पछी पोताना सैन्य सहित आकाश मार्गे लका नगरीमा जइने रावणने नमस्कार करयो. त्यारे तरुण सूर्य जेवी काती सहित रावण पोताना सैन्य सहित पवनजयने साथे लइने पाताल लकामा वरुणनी नगरी पासे आव्यो

अहिं तेज दिवसे पवनजयनी स्त्री अजनाए गर्भ धारण करयो तेना प्रतापथी तेना सर्व अवयव शोभायमान देखवा लाग्या मुख तथा गाल लाल थवा लाग्या स्तनोना मुखनो रग कालो थतो चाल्यो गति अत्यत मद थई, नेत्र स्वछ निर्मल थया अने बीजा पण तेना शरीर ऊपर केटलाएक गर्भना चिन्ह दीठामा आव्या ते जोईने तेनी सासु केतुमाति धिक्कार करीने तेने कहेवा लागी के, हे अजना, वेहुं कुलने कलक करनारू ते आ एवुं आचरण करयु छे ! हे पापिणी ताहरो पति देशातरे गयो छता तु केम गर्भवती थई ? माहरा पुत्रे तने आज दिवस सुधि मूकी छे, ते ताहरो दोष जोईनेज मूकी छे, तेनो दोप काइपण नथी तु आवी दुराचरणी छे ते अमे आज दिवस सुधि जाण्यु नहतं. एवी

रीतें सासुना वाक्योवडे निरादर पामेली अंजनासुं दरीए विचार करीने पतिना आववानी निशानी जे वींटी, ते कहाडीने बतावी. ते जोतांज लज्जायमान थइ थकी तेना जननी खात्री तो थइ, तथापि ते समजवा न देतां तेने कहेवा लागी के, हे पापिणी, जेणे आज दिवस सुधि ताहरुं नाम पण लीधुं नहीं तेनो साथें ताहरो संयोग केम होय? आ निशानी बतावीने अमने फसावे छे शुं! जे ताहरा जेवी व्यभिचारणी स्त्री होय छे तेओ एवी फसाववानी युक्तिओ घणी याद राखे छे. हिवे तुं मारा घरमांहीथी हमणाज निकल. ने ज्याहां गमे त्याहां जा, तुं पोताना बापना घरे जइ रहे, अमारुं घर तने रहेवा योग्य नथी एवी रीतें तेनो धिक्कार करीने ते राक्षसी जेवी निर्दय सासूए तेना पिताना घरे पोहोंचाडवा सारूं पोताना सेवको ने हुकम करयो. पछी ते सेवको वसंततिलका सखी सहित अंजनाने रथ उपर बेसाडी चाल्या ते महेंद्र राजाना नगर पासें अवताज तेने उतारी मेली. ते वखतें ते बिचारी निरदोश स्त्रीउने जे दुःख थयुं, ते पेहला सेवकोथी देखायुं नहीं, आंखो पाणीथी भराइ गइ. तोपण बिचारा ते शुं करे. चाकरने धणीना हुकम प्रमाणे चालवुं जोइए. पछी ते अंजनासुंदरीने नमस्कार करीने, तथा तेनी पासें क्षमा मागीने पाछा फिरया.

एवा प्रसंगें संध्याकाल थइगयो आव्यो, ते जाणे

त्यारे ते द्वारपालोए राजाना कह्या प्रमाणे अंजना ने त्याहांथी कहाडी मूकी ए प्रसगे ते विचारी निर प्राधी अबलाने जे दुःख थयु, ते जोइने ते नगरना लोकोने एवी करुणा आवी के, ते पोकेपोक रम्वा लाग्या. ए उपरथी अजना सुदरीना सतापना माप नो अनुभव बुद्धिमाने करी लेवो ते जे वखते रस्ते थी चालवा लागी ते वखतनी स्थितिनी रीति जो ईने लोको कर्मनी नीतिने याद करवा लाग्या. चित्त जेनु डोलाई गयु, भूख अने प्यासथीए जे लेवाइ गई छे, थाकी गयाथी जे पाकी दीन जणाय छे, ना शामाथी मोटा मोटा श्वासो श्वास नाखे छे, आं- खोमाथी आसु निकली रह्या छे, पगमा काटा चु भ्याथी लोहीनी धार वहे छे, चालती वखत पगले पगले अटकी जाय छे तथा दरेक झाडनी निचे विसामो खाय छे, एवी दशाथी सखी सहित अं- जनाने पगे चालती जोईने जाणे दशोदिशा रम्ती होय ! जे जे गाममा जाय ते ते गाममाथी राजा ना शिपाइओ तेने कहाडी मूके ते वखतें तेने एवुं लाग्यु के आ पृथ्वि ऊपर मने रहेवाने ठेकाणुं को ई पण नथी पछी एक महा भयकर वनमा ते ग ई त्याहा एक पर्वत ऊपर झाडनी निचे बेशीने मो टा विलाप करवा लागी हे मारा कर्म, तारी मे आ टली वधी शु तकशीर करी हती ? के जेथी तुं आज

शत्रु थई ऊभो छे? ओ मारा माता पिता! तुमे प
ण मने विचार करया विना कहाडी मूकी के? ने म
हा दुःख रूप दंड करयो! शास्त्रमां तो पहेलां अ
पराध जोईने पछी दंड करवानुं कह्युं छे! हे केतुम
ति सासू! मने घरमांथी कहाडीने तें तारा कुलने
कलंकथी राख्युं. एम करया विना जरूर कलंक ला
गत के! मारा बापे पण मारो तिरस्कार करयो. ते
एवा विचारथी के. जो हुं ए कन्याने मारी पासें
राखी लेइश तो एना सुसरा साथें मारो द्वेष थशे;
स्नेह रहेवानो नही. एवा कुतर्को करनारा तेए नहीं,
पण मारो प्रारब्ध छे. जे स्त्रीने सासुथी दुःख पामे
छे, तेने माता विना बीजुं कोइ पण धीर देनारूं न
थी. अने छोकरी ऊपर मातानी घणी प्रीति होय छे,
एवी रीति छे, तोपण मारी माता तो सर्वथी दुस्म
न थइ? अरे! मने चार मीठां वचनोथी तो सम
जाववी हती! माटे पिताथी पण माता घणी निर्दय
थइ! हे भाइ, तारा उपर हुं शुं दोष राखुं? बाप
जीवतो छतां पुत्र ऊपर वात राखवी योग्य नथी, हे
ाहरा प्राणप्रिय पति, तुंतो केवल निर्दोषी छे. केमके
तने ए वातनी कांइ पण खबर नथी, अने दूर छे.
ाटे ताहरा उपर तो कांइ पण बोल रखाय नहीं. त
थापि एटलुं तो खरूं के, मारा पूर्व जन्मनां नष्ट
कर्मों वडे तारा सहित सर्व परिवार आ वखतें मारा

शत्रु रूपे थयो छे, (आखमांथी अखंड पाणीनी धारा पमती छतां दैवने याद करीने कहे छे) हे कर्म! पति विना स्त्री एक घमी पण जीवती रहेती नथी, एम छता मुझ अनागणीने ते केम एटला दहाडा जीवती राखी? हजी सुधि मारो मृत्यु थतो नथी, माटे मारा जेवी बीजी कोइ पण आवी नाग्यहीन हशे नहीं पूर्व जन्ममा नष्ट कर्मना जेटला जगतमा प्राणिउ छे, ते बधामा मने मुकुटमणि रूप कहिये तो चाले इत्यादिक विलापो एवा करवा लागी के, जाणे घमीकमा प्राण मूकी देशे त्यारे तेनी सखी वसततिलका धैर्य देवा लागी के, हे मारी प्यारी स्वामिणी, घणो शोक करवाथी कांइ दुःखनी निवृत्ति थनार नथी, माटे सारा अथवा नष्ट कर्म जे उदय थया होय ते नोगवे छुटको छे, एवी रीते समजावीने तेने लइने आगल चालती थइ. केटलेक दूर गई त्यारें एक गुफा तेउने दीठामा आवी तेमा निरखी जूवे छे तो एक अमितगति नामना मुनि ध्यानमा बेठेला तेमणे दीठा तेने नमस्कार करीने अजना तथा वसततिलका बेउ विलखा करती ते मुनिनी सामे आवीने बेठी. केटलीएक वेला गया पछी साधुए समाधि उतारी, त्यारें सामे बेठेली बे दुःखनी मारी स्त्रीउ देखाइ, पछी पोताना बे हाथ उचा करीने तेने धर्मलाभ रुप आशिश दीधु त्यारें वसततिलका

ए भक्ति सहित नमस्कार करीने प्रथमथी ते छेवट सुधिनो अंजनासुंदरीनो वृतांत तेने कही संभलाव्यो, ने पूछ्युं के, एना गर्भमां कोण आव्युं छे? आ सुंदरीनी एवी अवस्था थवानुं कारण शुं? ए क्यां भेथी एवी दुःखी थइ छे! त्यारें मुनि तेने कहेवा लागा.

आ जंबुद्वीपमां भरतक्षेत्रमां एक मंदर नामना नगरमां प्रीयनंदी नामनो एक वाणीयो हतो. तेनी जया नामनी स्त्रीने पेटें एक प्रियदंत्न नामनो पुत्र थयो सर्व इंद्रीयो जेणे जीता हता, एवो ते प्रियदंत्न एक दिवश क्रीडा करवा सारू एक वनमां गयो. त्याहां स्वाध्याय ध्यानमां बेठेला निर्मल बुद्धिना केटलाएक साधुउ तेणे दिठा. तेमनी पासें जईने धर्म देशना सांभली भाव उत्पन्न थएथी सम्यकत्वादिक गुणोने धारण करीने प्रियदंत्नें तेउने यथोचित दान आप्युं. पछे ते संयमी थयो थको कालें करी काल करीने ईशान देवलोकमां परम संपत्तिवान एक देव थयो. सयमना योगे त्याहांथी चवीने आ जंबुद्वीपमां मृगांक नामना नगरना हरिचंद्र राजानी स्त्री प्रियंगुलक्ष्मिने पेटें सिंहचंद्र नामनो पुत्र थयो. ते भवमां जैन धर्म पामीने क्रमें करी मरीने एक महर्द्धिक देव थयो. त्याहांथी चवीने वैताढ्य पर्वत उपर अरुण नामना नगरमां सुकंठ राजानी स्त्री कनकोदरीने सिंहवाहन नामनो पुत्र थयो. तेणे केटलाएक का

ल राज्य करीने श्री विमलनाथ तिर्थंकरना तिर्थमां एक लक्ष्मीधर नामना मुनिनी पासें दिक्षा लीधी. ते नवमा दुक्कर तप करी मूवा पछी लातक नाम ना एक देव थयो त्याहांथी चवीने आ ताहरी स ख्री अंजनाना उदरमा आव्यो छे ए बालक गुणनो भंडार छे, सर्व विद्याधरोनो स्वामी, मोक्षगामी, तथा सर्व पाप रहित छे

तथा कनकपुर नगरनो स्वामी कनकरथ नामनो राजा महारथीउमा शिरोमणि एवो थयो तेनी बे स्त्री हती. एकनु नाम कनकोदरी, तथा बीजीनु नाम लक्ष्मिवती, ते लक्ष्मिवती महा श्राविका थइ. ते पोताना घरमा रत्नना जिनबिंबने स्थापीने तेनु सवारना तथा साजना पूजन करीने नमस्कार तथा वंदना करती हती तेनी कनकोदरी शोक्ये द्वेष बुद्धिए करी कोइने न कलता एक आरिहंत प्रतिमाने अपवित्र कचरामां जई दाटी मूकी एटलामा एक जयश्री नामनी साधवी फिरता फिरता त्याहा आवी पहोती, तेणे ए कर्म जोइने कनकोदरीनो धिक्कार कर्यो. ने ते कहेवा लागी के, आ ते शु कर्यु ? साक्षात आरिहंत भगवाननी प्रतिमाने आ कचरामा नाखता तुजने काई भय न लागो ? आ कर्में करी ताहरो आत्मा अनेक भव भटकवानु पात्र थयो एवा ते साधवीना वाक्यो सांभलीने तेने पश्चाताप थयो पछी त्याहांथी

तेणे ते प्रतिमाने कहाडीने निर्मल जलथी धोई स्वछ करीने घणी प्रकारे तेनी प्रार्थना करती थकी तेने प्रथमनी जगामां पधरावी. ते दिवशथी तेणे सम्यक्त्व. पणानो आश्रय करीने जैन धर्मने आंगकार करयो. केटलाएक काल पछी मरण पामीने ते सौधर्म नामना देवलोकमां देवीथई. कालेकरी त्याहांथी चवीने महेंद्र राजानी कन्या आ ताहरी सखी थई. एणे कह्या प्रमाणे पूर्व जन्ममां जिन प्रतिमानी आशातना करी ते कार्मनुं फल आ वखतें उदय थयुं छे. ते घोर कर्म करती वखत तुं एने मदलकरी हती. तेथी तुं पण एनी साथें दुःख देखे छे. हिवे ते कर्मने भोगवे छुटको छे. तेमांथी घणुं भोगवाई गयुंछे. ने थोडुं भोगववानुं छे. आजथी तुमे जैन धर्मने ग्रहण करो. तेथी दरेक भवमां शुभ कर्मनी प्राप्ती थशे. अने आ भवमां पण हिवे तुमे चिंता करवी नही. ए बाइनो मामो अहि आवीने एने पोताने घरे लइ जशे. तेवार पछि थोडाक दिवश एना पती एने मिलशे. एवुं भाषण करीने तथा तेवोने अरिहंत धर्ममां स्थापीने मुनि आकाश मार्गें जता रह्या.

हिवे बनाव एवो बन्यो के, जे ठेकाणे ते बिचारी अबला बेठी हती तेनी सामें एक मोटो सिंह आवतो तेमणे जोयो. पृथ्वि उपर पूछडुं मारयांथी जाणे जमीनने फाडतो होय ! मुखमांथी एवा अवाजो कहाडे छे के

तेथी जाणे दशे दिशा नराने कर्ता होय कोइ हाथीने मारी ने तेनु लोही पी आन्धार्या होय एवा उपरना लालवा टा हजी गया नथी जेना एवा नखो नो जाणे दीपक ना तेजने जीती आव्या होय ? दाढोने तो वज्र ... उपमा ... पर्वतनी उपमा केम ... गळाना ... केस तो जाणे अ ... करता होय नहीं नो आकळा लोढाना ग ... कहीए तो चाले. हृदय तो पथ्थरने पण लज्जा यमान करे एवा भयंकर रूपवाळा हिंसक प्राणीने जोईने गर्भिणी कापती थकी एवी डरी के जाणे जमीनमां पेसती होय ! ते वखतने हरणिए सिंह ने दीठाना वखतनी उपमा बस छे. एवा प्रसगे त्या हा गुफानो स्वामी मणिचूल नामनो गंधर्व त्याहा आ वीने, एक ... नामना पशुनु रूप धारण करीने तेणे ते सिंहने मार्यो पछी पोताना रूपने समदीने ते बेहु ... जिनारा ... सारू प्रथ ... करे धर्मने श्री अरिहनना गुणोनी स्तुति कर वा लागो पछी ते गुफाना मालकना धीरथी बेहु श्री मुनिसुव्रत स्वामीनी प्रतिमानी स्थापना करीने तेनी पूजा करवा लागी एम करता केटलाएक का ल पछी. अंजनाने मास पूरा थएथी सिंहणी जेम सिंहने जन्मे तेम वज्र, अंकुश तथा चक्र इत्या दिक चिन्होवाळा पगवाळा एक पुत्रने जन्मी.

तिसूर्यनी आंखोमा आसु वहता गया, ते छेवट सु-
धि आव्याथी मन पोताथी अवरायु नहीं तेथी ए
कदम तेमनी परे रडवा लागो केटलाएक वखत प
छे काइक विचार करीने कहेवा लागो के, हे दुःख
समुद्रमा बुडेली बाइओ, हुं कोण छु ते तुमे जाणतां
नथी हनुपुरना चित्रभानु नामना राजानी स्त्री सुं-
दरीमालाने पेटे हु प्रतिसूर्य नामनो विद्याधर जन्म्यो
छु (वसततिलकानी सामे जोइने) ताहरी आ अ
जना सखीनी मातानो हु मानसवेग नामनो भाइ
छु आ वखते दैवयोगे हु जो अहि आवत नही तो
विचारी आ बापडीनी शु अवस्था थात ? पछी ते
णे घणो दिलासो आप्यो अंजनासुदरी शुद्धिमा आ
वी, तथा ते वात साम्भलीने आ माहरो मामो छे एम जा
णयु तेथी प्रथम करता वधारे वधारे रडवा लागी.
" घणुं करीने दु खनी दशामा पोताना सुदरनी भे
ट थयथी विसेला दु खनु फिरी नवेसरथी स्मरण था
य छे " पछी तेना मामाए तेने धैर्य दीधु, ने पोतानी
साथे आवेला कोई निमित्तिआने ते बालकना ज
न्म विषे पूछवा लागो निमित्तिए कह्यु के, आ बा
लक मोटो पृथ्विपति थशे, अने आज भवमा मो
क्षे जशे जन्मनी वखत ग्रह तथा लग्न घणा सारा
छे, तेथी ए महा धर्मात्मा थशे एम कह्युं. पछी ते प्र
तिसूर्य पोतानी भाणेजी तथा तेनी सखीने पोताना

विमानमां बेसाडीने पोताना नगर तरफ जवा नीक ल्यो. ते विमानने रत्नोनी घुघरीउ बांधेली हती. तेनी राती कांती जमीन उपर तथा ते विमानना आसपास पडवा लागी; तेने जोइने ते बालक तेने लेवा सारू उतावलो थयो तेथी माताना खोलामांथी निकलीने एक पर्वतनी शिखर उपर जइ पड्यो. ते जाणे आकाशमांथी वज्र पड्यो होय! एवी रीतें तें उपर पडतांज पर्वतना कटके कटका थइ गयां. बालक निचे पड्यो एम जोइने अंजनासुंदरी गाती कुटवा लागी. नें मोटा अवाजे रडवा मांडी. तेणे करीने जाणे आसपासनी पोलाणनेज रडवा उसकेरती होय! त्यारें प्रतिसूर्य विमानमांथी निचे उतरीने ते बालकने जइ जूए छे, तो तेने कांइपण लाग्या विना जेमनुं ते दीठामां आव्युं. तेने त्याहांथी पवनवेगे ते वि ाननें हांकीने पोताना हनु नामना नगरमां आव्यो. घरनी पासें पोतानी भाणेजीने उतारी. ते जाणे कोइ कुल देवीज होय! एहवी देखावा लागी. पछी तेनी मामी आवी घरमां लई जइने तेनो सारी रीतें आदर सत्कार करयो. जन्मतां ते बालक हनुपुरमां आव्युं, तेथी तेनुं नाम तेनी माताए हनुमान पाड्युं. तथा विमानमांथी पडती वखत शिलने तोडयो, तेथी बीजुं नाम श्रीशल्ल एवुं राख्युं. पछी जेम मानस सरोवरना कमली वनमां राजहंसनां बालको क्रिडा क-

रे तेम ते हनु नगरमां प्रवेश करवा लाग्यो. अने अंजनासुंदरी निश्चय करे, सासुए माहरी उपर दोष राख्यो छे ते माहरा माथाथी कोण जाणे क्यारें उतरशे? एवो एवो विचार करवा लागी.

पवनजय वरुणनी साथे संग्राह करी अने तेनीपासें थी खर दूषणने मुकावीने रावणने राजी करश्या पछी तेने लंका नगरीमां पहोंचतो कर्यो ने तथा तेनी रजा लइने पाछो पोताना नगरमां आव्यो पोतानां माता पिता वगेरेने यथायोग्य नमस्कार करीने अंजनाना मेहेलमां आव्यो त्यांहां जुए छे तो कांती रहित चंद्रमानी परें अंजनानुं घर निस्तेज दीठामां आव्युं तेथी अति शोक करवा लाग्यो. एटलामां तेणे कोइ स्त्रीने दीठी तेने पूछवा लाग्यो के, जेनुं दर्शन नेत्रोने अमृत जेवुं लागे, एवी माहरी अंजना क्यांहां गइ? त्यारे ते कहेवा लागी के, हे पवनजय तुं गया पछी केटलाएक दिवसे ताहरी स्त्री गर्भिणी थइ एम जाणीने ताहरी मातार कहाडी मेली तेने विमानमां बेसाडीने पापरूपी ताहरा शेवकोए तेने लइ जइने महेंद्र नगरी नजीक ना उतारी मूकी, एवुं सांभळीने वज्रतरनी परें कडूवेग करी स्त्रीनी शोध करवा सारू पोताना सुसराना नगरमां गयो त्यांहां जइ चोकशी करता स्त्रीनो पत्तो मिल्यो नही त्यारे कोइ परस्त्रीने पूछवा लागो के मारी अंजना अहिं आवी हती के नहीं? तेणे कह्युं के,

दोप आरोपण कर्यो, तेनु आ फल मने मिले छे क ह्यु छे के, "अति प्रबल भावे पुन्य अथवा पाप करयु होय तेनु फल तत्काल प्राप्त थाय छे " एवी रिते वि लाप करती थकी केतुमति मोटेथी रडवा लागी. तेने प्रल्हाद राजाए समजावीने तथा पोतानी साथे सैन्य लइने पोताना पुत्रनो तथा तेनी स्त्रीनो शोध करवा सारू निकल्यो. तेमज बीजा दूतोने देशो देश रवाने कर्या. प्रल्हाद राजा केटलाएक विद्याधरो सहित पुत्र तथा तेनी स्त्रीनो शोध करवा सारू केटलाएक देश फिरता फिरता एक भूतवन नामना वनमां जइ पहो- तो त्याहा जइ जूए छे तो पोताना पुत्र पवनजये चि ता रचीने आग सिलगावी छे ने पोते तेनी पासे उ भो रहीने बोले छे, हे वन देवताउ हे विद्याधरेंद्र प्र- ल्हाद माहरो पिता, तथा केतुमति माहरी माता, तेम नो हु पुत्र छु, माहरी अजना नामनी पतिव्रता स्त्री निर्दोप छता तेने में कुबुद्धिये विवाहना दिवसथी घ णु दु:ख दीधु. केटलाएक काल पछी कर्मना योगे ते ने मुकीने रावणना काम सारू प्रयाण कर्यो. गाम- थी केटलाएक दूर गयो दैवना योगे मे मारो दो- प जाण्यो पछी पश्चाताप करीने त्याहाथी एक रात्र मा पाछो आवीने तेनी साथे हु रममाण थयो. त्याहां एक रात्र रहीने सवारमा निकलती वखत हु मारी वीं- टीनी निशानी देइने माहरा मा बापने न कलता फिरी

सैन्यमां जइ पहोतो. ते दिवसथी ते मारी स्त्री गर्भवं
ती थइ. तेनी उपर विना कारण मारी माताए दो
षनो आरोप करीने तेने घरमांथी कहाडी मूकी.
हुं आव्या पछी तेनो में घणो शोध कर्यो पण ते मि
ली नहीं, कोण जाणे क्यांहां छे? तेनी खबर नथी. ए-
रीते विचारी ते स्त्री केवल निर्दोष छतां तेने एवा
दुःखनी प्राप्ति थइ छे, ते सहन थतुं नथी. तेने दुः
ख थवानुं कारण मात्र माहरुं अज्ञान छे. मारा जेवो
पति जीवतो छतां तेनी स्त्रीने दुःख थाय. तेथी म-
ने धिक्कार छे. एवा पश्चातापें करी सर्व पृथ्वि उपर
तेनो में शोध कर्यो पण क्याय पत्तो मिल्यो नहीं जे
म रत्नोनी खाणमां रत्न सोध्युं मिळे नहीं, तेम मने
मारी स्त्री मिले नहीं. हिवे जो हुं जीवतो रहुं तो ए स
दगुणी स्त्रिनो विरह मने जन्मांत सुधि दुःख देशे.
माटे ए जीव्याथी मरवुं भलुं छे. एम जाणीने आ
म्हारा शरीरने आ अग्निमां बाली नाखुं छुं. हिवे पछी

कार जे आ मृत्यु तेमां आ विघ्न कहेवुं। ते वखतें प्रल्हादनी आंखोमा पाणी आवी कहे छे के, ए हुं तारो पापी पिता छु, तारी निरदोष स्त्रीने मे कहाडी मूकी तेनु कारण मात्र तारा मातानु करेलु अघटित कृत्य छे तु मोटो बुद्धिमान छता आ घोर कर्म करवा ने योग्य नथी. ताहरी स्त्रीना शोधने अर्थे मे हजारो विद्याधरोने देशो देश मोकल्या छे ते पाछा आवे त्याहा सुधि तु विलब कर, एवी रीते प्रल्हाद पोताना पुत्रने समजाववा लागो पछी शोध करवा सारू गएला विद्याधरो फिरता फिरता हनुपुर नामना नगरमा आव्या त्याहा प्रतिसूर्यनी पासे जईने पवनजयनो सर्व वृत्तात कही सभलाव्यो ते कहेछे अजनाना विरहथी पवनजय दु खी थइने तेनो घणी रीते शोध करता तेनो पत्तो न मिल्याथी तेणे अग्नीमा प्रवेश करीने वली मरवानो निश्चय कर्यो छे. एम ते विद्याधरो कहेवा लाग्या ते वखतें त्याहा पासें अजना बेठी हती तेणे ए सर्व वात सामली, ते वीज मोटेथी आ विष जेवा वाक्यो मारा हृदयमा पेसताज हु नष्ट थइ छु एम कहीने तथा मूर्छा आईने पृथ्वि उपर पडी त्यारे पासे बेठेली तेनी सखीओए चदनवालु पाणी तेना अग उपर छाट्यु. तथा वीजणाथी पवन करवा लागी केटलोएक वखत गया पछी ऊठी सावध थइ दीन स्वरे रडवा लागी,

ने मुखथी कहे छे—पतिव्रता स्त्री पोताना पतिना शो कथी अग्निमां प्रवेश करे, केमके स्त्रीए पति विना जीवतां रहेवुं दुःखनुं कारण थाय छे. ए योग्य छे. पण हजारो स्त्रीओने भोगववा वाला जर्तीने एक स्त्री- ने माटे एटलो बधो शोक करवो व्यर्थ छे. माटे पु रुषने स्त्रीना वियोगथी अग्नि प्रवेश संभवेज नही. ते कारणथी हे मारा वाहाला पति, तुं अग्निमां बळी मरवाने तयार थयो, ए अघटित कृत्य छे हुं स्त्री छ तां ताहरा विरहती आज दिवस सुधि जीवती रही, तो तुं पुरुष छतां एटली बधी हिम्मत केम मूके छे, आपण बे बिच्चे नीलमणी तथा कांचमणी जेटलुं अं तर छे. हुं अल्प सत्व छुं, ने तुं तो माहा सत्ववान छे, ए वातमां माहरा सासु सुसरानो दोष नथी, म्ह- रा मा बापनो दोश नथी, केवल मज अभागणी ना कर्मनो दोष छे.

एवी रीते अति शोकतुर थएली अंजनाने प्रतिसू र्ये जोइने पोताना विमानमां पुत्र सहीत तेने साथीने पवनजयनो शोध करवा सारूं निकल्यो ते फिरतां फिरतां ज्याहां चिता करीने पवनजय बलवा तइयार थयो ह- तो, ते भूतवनमां आवी पहोतो. तेने प्र सित्ते दीठो. तेवोज प्रल्हाद पासें जइने पुत्रसहित अंज- नाने तेनो मासो विमानमां बेसाडीने अहि तेडी आ व्यो छे. एम कहेवा लाग्यो. एटलामां ते विमान तेना

पासे आव्यु. तेमाथी अजनासुदरी नीचे उतरी, ने पोताना सुसरा प्रल्हादने तेणे नमस्कार कर्यु. प छी प्रतिसूर्य पण प्रल्हाद राजाने घणी प्रीति वडे मि ल्यो. हनुमानने प्रल्हाद राजाए पोताना खोलमा लइने गदगद कंठ थयो थको प्रतिसूर्य सामे जो इने बोलवा लागो, हे प्रतिसूर्य राजा, कुटुब सहि त दुःखरूप समुद्रमां बुडनारो जे हु तेनी उपर घ- णी कृपा करीने तें मने उगार्यो तेथी हु माहरू मोटु भाग्य समजु छु, माहरा सतानने कारणभूत जे आ बिचारी निर्दोष साधवी, तेने मे नाहक कहडी मू- की परतु ते एनु सारी रीतें रक्षण कर्यु, माटे तुं धन्य छे. दुःखना वखतें समुद्रनी परें तु पाछो फि र्यो, तेथी हु ताहरो उपकारी थयो छुं. ए बधु जोईने पवनजयना कोपनी शाति थइ गइ. ने म- नमा राजी थयो एवा प्रसगे सर्व विद्याधरो मोटा उत्साह सहित पोत पोताना विमानोमा बेशीने ह नुपुर नगरमा आव्या महेंद्र राजा पण घणो उ तावलो त्याहा आवी पहोतो, केतुमति देवी तथा भाइउ वगरे सर्व त्याहा आव्या. पछी त्याहा मोटो उत्साह कर्यो ए बधुं थइ रह्या पछी सर्व विद्याधरो पोत पोताना नगरे गया मात्र अजना तथा हनुमान सहित पवनजय त्याहाज रह्यो पछी हनुमान पोताना पिताना हाथतले त्याहा उछर्यो

अने शास्त्र विद्या शिखवा लागो. ते सर्व शस्त्र शास्त्रमां कुशल थयो. सूर्य जेवी कांतिवालो ते हनुमान क्रमें करी यौवन अवस्था पाम्यो.

अहि लंकामां रावण क्रोधायमान थइने, वरुणनी मित्रतामां दुषण उपजावीने तेने जीतवा सारू रथेम नामना पर्वत उपर गयो, प्रथम जे जे विद्याधरोने बोलववा सारू दूतोने मोकल्या हता, ते सर्व रावणने आवी मिल्या. तेमज पवनजय तथा प्रतिसूर्य पण रावण पासें आववाने निकल्या. ते वखते हनुमान तेमने कहेवा लागो, हुं छतां तुमने जवानी जरूर नथी. हुं शत्रुने जीती आवीश. आपणा पासें तिक्ष्ण शस्त्र छतां कोई हाथे करी मारशे के! हुं बालक छुं तथी तुमे माहरी उपर दया करता हशो, परंतु पराक्रममां वयनुं प्रमाण नथी. ए प्रमाणे मोटा आग्रहथी तेमने रोकीने तथा तेमनी रजा लेइने, हनुमान जवा निकल्यो. ते वखतें तेना पिताए तथा मामाए तेनुं मस्तक चुंबन कर्युं. तेनी साथें हजारो गमे सैन्य निकल्युं. एवो महापराक्रमी हनुमान रावणना सैन्यमां आवी पहोतो. त्याहां पवन जयनी पेटें हनुमान आव्यो, एम जाणीने रावण राजी थयो. हनुमाने आवी नमस्कार कर्युं, त्यारें रावण तेने पोताना खोलामां बेसाडीने तेनो घणो आदर सत्कार करवा लागो. पछी तेने साथें लेइने पोताना सैन्य सहित रावण पातालमां वरुण राजानी ग

री पासें आवी पहोतो वरुणे रावण आववानुं जा णीने पोतें तथा पोताना बे पुत्र, ए त्रणेजण सैन्य सहित बाहार निकल्या, त्याहा वरुणना पुत्र राव- णनी साथे लडाई करवा लागा वरुण सुग्रीवादिक सूरवीरोनी सामे युद्ध करवा लागो, महापराक्रमी वरुणना पुत्र पोताना नेत्रो रातांकरीने जेम दुक्करने कुतरा दु ख आपे, ते प्रमाणे ते रावणने दु ख दे वा लागा एटलामा जेम सिंह हाथीनी साथे लडे, तेम हनुमान वरुणना पुत्रो साथे लडतो थको क्रो धमा आवीने पोतानी विद्याना सामर्थ्ये करीने जेम कोई पशुने बाधी लिये, तेम तेमने बाधी लीधा. ते- नी वरुणने खबर पडताज कोपायमान थइने जेम र स्तामा हाथी कामोने तोडी पाडे तेम सुग्रीवादिक सुभटोने दूर करीने हनुमान उपर दोड्यो, एम जा णीने जेम नदीना वेगने पर्वत अटकावी मूके, तेम रावणेबाणोनो वरशाद करीने तेने विचे अटकावी मूक्यो. ते वखते जेम बलदनी सामे बदल लडे, तथा हा थीनी सामें हाथी लडे, तेम रावण तथा वरुण प रस्पर लडवा लागा एम लडता लडता रावणे पो ताना बल वडे वरुणने व्याकुल करीने, तथा कुद को मारीने जेम पूर्वे इद्र राजाने बाध्यो हतो, ते मज वरुणने बाधी लीधो ते वखते आखा सैन्यमां जयजयकार शब्द थवा लागो. पछी रावण पोताना

स्थानक उपर आव्यो. त्यारें वरुण राजाए पोता
ना पुत्रो सहित रावणने नमस्कार करयो, तेथी रा
वणे तेने मूकी दीधो, कह्युं छे के " मोटा पुरुषोनो
क्रोध मात्र नम्रताए करीने जाय छे." पछी वरुणे
पोतानी कन्याने योग्य वर महापराक्रमी एवो हनु
मान जोइने पोतानी सत्यवती नामनी कन्या तेने
आपी. तेवार पछी रावण पोताना सैन्य सहित लं
कामां आव्यो, त्याहां आवीने पोतानी बेन जे चं
द्रनखा. तेनी एक कनककुशळा नामनी कन्या ह
ती तेने घणा आनंद सहित हनुमानने परणावी
दीधी. तेमज सुग्रीवे पोतानी पद्मरागा नामनी
कन्या आपी. हरिनीळ नामना विद्याधरे माळीनी
नामनी कन्या आपी. अने बीजा हजारो विद्याधरोए
पोतानी हजारो कन्याए तेने परणावी आपी. प-
छी रावणे अति आनंदथी तेने मिलीने रजा दीधी.
पछी हनुमान पोतानी सर्व स्त्रीउ सहित हनुपुर मां
आव्यो. तेमज बीजा सुग्रीवादिक विद्याधरो पण
पोतें पोताने ठेकाणे गया. इहां हनुपुर नगरमां हनु
मान पोतानी स्त्रीउ सहित सुख भोगवे छे.

॥ इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचिते श्री राम लक्ष्मण चारि
त्रे पवनजय अंजना संबंध हनुमान जन्म इत्यादि
॥ तृतिय खंड समाप्तः ॥

॥अथ श्रीराम लक्ष्मण चरित्र कथा चतुर्थखंड प्रारम्भ ।



मिथीला नामनी नगरीमा हरीवंशने विषे एक वा सुकेतु नामना राजानी स्त्री विपुलाना पेटे जनक नामे पुत्र थयो ते पृथ्वि उपर घणो विख्यात थयो. प्रजाने पुत्रनी पेरे मानतो हतो, तेथी ते पोताना जनक नामने दीपाववा लाग्यो तेमज अयोध्या नामनी नगरीमां ऋषभदेव स्वामीथी चालेला वंश परंपरानां आदित्य वंशमा थया जे राजाओ तेमा कोइ मोक्षेगया कोइ स्वर्गे गया, एवी रीते वंशावली चालता वीसमा तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामीना तीर्थमा एक विजय नामनो राजा थयो तेनी स्त्री हिमचुलाने पेटे बे पुत्रो जनम्या एकनु नाम वज्रबाहु तथा बीजानु नाम पुरंदर राख्यु नागपुर नामनी नगरीमा एक इन्द्रवाहन नामना राजानी स्त्री चुडामणिने पेटे एक मनोरमा नामनी कन्यानो जन्म थयो तेनी यौवन अवस्था थइ वता, चंद्रने जेम रोहिणी परणी, तेम वज्रबाहुए तेने मोटा आनंदथी वरी, विवाह थया पछी पोतानी स्त्री तथा उदयसुंदर नामना पोताना शालाने साथे लेइने जता रस्तामा उदयाचल पर्वत उपर बेठेला एक गुणसागर नामना मुनिने तेणे दीठो सूर्यनी पेरे जेनी कांति छे.

मोक्ष मार्गना साधन भूत तपना तेज वडे जे शो
भी रह्यो छे. एवा ते मुनिने जोइने जेम मेघने जो
इने मोर राजी थाय तेम ते मनमां राजी थयो थको घोडा
ने उभो करीने नीचे उतरी बे हाथ जोडीने बोलवा लाग्यो.

आहि कोइ महा मुनि वंदना करवा योग्य छे.
चिंतामणीनी परें मोटा पुण्यथी एनुं आजे मने द
र्शन थयुं छे. एवुं वज्रबाहुनो बोलवुं सांभलीने तेनो
सालो उदयसुंदर तेने कहेवा लागो, केम ताहरा म
नमां दीक्षा लेवानी छे के शुं? त्यारें तेणे कह्युं के
एमज माहरा मनमां छे. त्यारें फिरी तेणे मस्करीथी
कह्युं, हिवे विलंब करवी जोइए नही, ए काममां
हुं पण तने सहाय छुं, एवुं तेनु बोलवुं सांभलीने
वज्रबाहु बोल्यो के तुं पोतानी प्रतिज्ञा मात्र मूकजे
नहीं. त्यारें तेणे कह्युं के ठिक. पछी ते घोडा उप
रथी उतरीने बधांने साथें लेईने ते पर्वत तरफ चा
ल्यो. एवी रीतें वज्रबाहुनो पाको मनसुबो जोईने
उदयसुंदरने धास्ती लाग्याथी तेने कहेवा लागो
के. हे वज्रबाहु राजा हुंतो ताहरी साथें मस्करी कर
तो हतो, ने तें दीक्षा लेवी जोइए नही. माहरा बो
लवाने धिक्कार छे, आपण बेहुं विचे केवल मस्करीनुं
बोलवुं थयुं छे, एमांनुं कांइपण साचूं समजवुं नहीं.
विवाहना गीतोनी परें मस्करी पण साची न सम
जवी. हिवे पछी तुं आमने सर्व दुःखमां सहाय

इश आ वखतें अमारा कुलना सर्व मनोरथनो त्याग नही कराय ताहरा हाथमा हजी सुधि विवाह कंकण छे तेनु फल जे उपभोगादिक, तेने तुं अचिंत्यु केम मूकी दे छे जे तु हमाणाज दीक्षा लइश त्तो जेने ससारना सुखनी हजी सुधि काइ पण खवर नथी आ माहरी बेन मनोरमां ताहरा विना केम जीवी शकशे? त्यारे वज्रबाहुं तेने कहेछे— हे उदयसुदर आ मनुष्य जन्मरूप झाडनु चरित्र लक्षणरुंप फल छे ते जे आ मस्करीनु भाषण करयु, ते जेम सीपमा स्वातीनी बुद मोतीनु कारण थाय छे, तेम बोलवु मोक्षनुं कारण भूत थयु ताहरी वेने पण माहरी साथे दीक्षा लेवी जोइए, जो तें एम नहीं करे तो हिवे पछी एनी साथे भोग भोगवनार हु नथी माहरे तो आ मोक्षने मार्गें जवु छे तेमा अटकाव करवु तने योग्य नथी ने माहरी वात माने तो तु पण माहरी साथे दीक्षा ले क्षत्रीए पोते करेली प्रतिज्ञा आवश्य पालवी, ए सर्वनो कुल धर्मछे एम कहीने ते आगल चाल्यो थको गुणसागर मुनि पासे आवी झट दीक्षा लई लीधी त्यारें ते उदयसुदर, तेनी स्त्री मनोरमा तथा बीजा पचीश कुमार ए सर्वें तेनी साथें दीक्षा लीधी

ए वात वज्रबाहुनो पिता विजय राजा सांभ

ढीने मनमां विचार करवा लाग्यो के माहरो पुत्र बालक बतां तेणे दीक्षा लीधी ने मेंतो हजी सुधि वैराग्यनुं ग्रहण कर्युं नथी. माटे हिवे दीक्षा लइने मोक्षना साधनने संपादवुं जोइए, एम जाणीने पोताना पुरंदर नामना पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने एक निर्वाणमोक्ष नामना मुनि पासेंथी दीक्षा लीधी. ते पुरंदर पण पोतानी स्त्री पृथ्वीनी साथें केटलाएक काल उपभोग भोगवीने तेने थएला कीर्तिधर नामना पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने कोई एक क्षेमंकर नामना मुनिनी पासें दीक्षा लीधी. कीर्तिधर राजा पण इंद्राणी सहीत इंद्र राजानी परें पोतानी सहदेवी नामनी स्त्रीनी साथें विषय सुख भोगवीने तथा दीक्षा लेवानुं मनमां धारीने पोताना मंत्रीउने कहेवा लाग्यो, माहरे हिवे दीक्षा लेवी . ए विषे तुमारु केहवुं मत छे? त्यारें प्रधानो कहेवा लागा. हे राजा हजी तुमे पुत्र रहीत छो, माटे तुमने व्रत लेवानो अधिकार नथी. तेम बतां जो तुमे दीक्षा लेशो तो पछी आ पृथ्वीनो स्वामी कोण छे? माटे पुत्र थाय त्याहां सुधि विलंब करो. एहवुं मंत्रीउनुं बोलवुं मान्य करीने तेणे केटलाएक काल ग्रहस्थाश्रम कर्यो. पछी ते सहदेवी राणीना पेटें सुकोशल नामनो पुत्र पेदा थयो. पण सहदेवी राणीए पोताना पतिना दीक्षा लेवाना

नयथी पोताने पुत्र थवानी वात छानी राखीने मने पुत्री थइ एम कह्यु तोपण ते वातनी राजा ने खबर पडी सूर्य ऊगा पछी तेने ढाकवाने को ण समर्थ थइ शके? पछी ते राजा स्वार्थमा तत्प र थइने तथा पोताना पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने एक विजयसैनक नामना आचार्य पासे दीक्षा लीधी. पछी महाउग्र तप करीने गुरुनी आज्ञा-थी विहार करवा लागो

एवी रीते फिरता फिरता कोइ एक समये अ योध्या नगरीमा आव्यो मास उपवासना पारणा क रवा सारू मध्यान बे प्रहरना वखते गाममा गयो, रस्तामा जता महेलमा बेठेली सहदेवी स्त्रीए तेने दीठो. ने तेणे ओलख्यो के आ माहरो पति छे. एणे ज्यारें दीक्षा लीधी त्यारेज हु पति विनानी थ इ. आ माहरो पुत्र सुकोशल एना बापने जोइने ते नी परें दीक्षा लेशे तो हु पुत्र विनानी थइश तो पछी मारू जीववु शा कामनु? ते माटे अद्यपि आ निरपराधी छे व्रतधारी छे तथा पति छे, तथापि पु त्रना कल्याण सारू एने नगरथी बाहार कहाडी मकवो. पछी ते स्त्रीए कोइ अन्यदर्शनीओना हाथें तेने गामथी बाहार कहडावी मूकाव्यो. कह्यु छे के, " लोभी माणशने विवेक क्याथी " ए सर्व वातनी सु कोशलनी धाव माताने खबर पडी पोताना व्रतधा

री, तथा निरपराधी पतीने ए दुष्ट स्त्रीए नगरथी बा
हार कहाडी मूक्यो. एम जाणीने ते रडवा लागी.
ते जोइने सुकोशल राजा तेने पूछवा लाग्यो. हे मा
ता तुं शा सारू रडे छे! त्यारें ते धाव माता तेने क
हे । लागी. हे पुत्र, ताहरो पिता जे कीर्तिधरराजा ते
तहारी बाल्यावस्थामां तने राज्य उपर बेसाडीने पो
तें दीक्षा लइने विचरवा लाग्यो फिरतां फिरतां के
टलाएक दिवश पछी आजे आ नगरमां आव्यो ते
ने जोइने तुं पण दिक्षा लइश एवी पोताना मनमां
शंका लावी तहारी माताए तेने अन्यदर्शनीउ पा-
सें गामथी बाहार कहाडावी मूक्यो. मास उपवासनो
पारणो करवा सारू आवेलाने एमने एम कहाडी मू-
क्यो तेथी हुं रडुं छुं. एहवुं सांभलतां वेतज सुकोश
ल राजा तेज वखतें पोताना बाप पासें गयो, त्या-
हां जई. नमस्कार करी हाथ जोडीने तेनी पासें
थी दीक्षा मागवा लाग्यो. एवा प्रसंगे चित्रमाला
नामनी तेनी स्त्री गर्भिणी छतां पोताना प्रधानो
सहित पति पासें आवीने तेने कहेवा लागी के.
हे स्वामी, आ राज्य मूकवाने तुं योग्य नथी. ए
वुं स्त्रीनुं बोलवुं सांभलीने तथा तेनो सर्व अभिप्रा
य जाणीने तेने राजा कहेवा लागो. हे स्त्री, आग
ल आवनारा कालने माटें वर्तमान कालमां उप-
चार करवुं जोईए, तेनी परें आज दिवसथी ता

हरा गर्नस्थ पुत्रने मे राज्य उपर वेसाड्यो एम कहीने सर्व लोकोनी साथे सारी रीते बोलीने पिताानी पासे दीक्षा लीधी पछी उत्तम प्रकारनो तप करीने कषाय रहित थयो थको पृथ्विने पावन करवा सारू ते मुनिउ (पिता तथा पुत्र) बेहु साथे विहार करवा लागा

अहि सहदेवी पोताना पुत्रना वियोगथी दुःख पामीने रौद्र ध्यान वडे मरीने एक पर्वतनी गुफामां वाघण थइ, कोइ एक समये फिरता फिरतां ते पिता पुत्र बेहु साधुउ पोताना शरीरमा रागरहित थया थका स्वाध्याय ध्यानमा तत्पर थएला कोइएक पर्वतनी गुफामा एकाग्र चित्ते रह्या कार्तिक मासमा पारणा करवा सारू विहार करवाने रस्तामां जतां एक राजी थएली यमदूतीनीं परें वाघणीए तेमने जोयु. पछी दूरथी जेम मित्रने जोइ मित्र दोडे. तेम मोहोडु फाडीने तेमने खावा सारू ते दोडी. तेने पोतानी पासे आवती जोइ क्षमा श्रमणोत्तम ते बेहु जण धर्म ध्यान धारण करीने कायोत्सर्गे उभा रह्या एटलामां वीजलीनी परे ते वाघण आवीने सुकोशल उपर पडी पोतानां पगें करीने तेने जमीन उपर पाड्यो पछी तीक्ष्ण नखे करीने तेनु चामडु चरचर फाडवा लागी जेम मारवाड देशनो पथी तरश्यो थको पाणी पीने घणो राजी थाय, तेम

ते अति प्रीति वडे मुनिनुं लोहि पीने राजी थवा ला
गी. दांतोथी तेनुं मांश तड तड तोडीने जेम कोइ
भिखारिणी फलादिकने तोडीने खाय तेम खावा लागी.
जेम हाथी पोताना दांते करी शेरडी कडकडावीने खाय,
तेम तेना हाडोने चावी चावीने खावा लागी. जो
पण ते हिंसक प्राणिए निर्दोषी मुनिना एवा हाल
कर्यां तोपण ते मुनि दिलगीर न थइने आ माह
श कर्म खपाववाने साधनरूप थइ, एवो तेनो पका
र मान्यो, अने ते विषे कांइ पण खराब भाव आण्यो
नही, जेमनो तेम ध्यान धरतो. तां तेना रोमांच उभा थ
या. पछी शुकल ध्याने करीने ते सुकोशल मुनि काल
करीने मोक्षने पाम्यो. तेमज कीर्तिधर मुनि पण
क्रमें करी केवलज्ञान पामीने देहत्याग करी परम
पदने पाम्यो. इहां ते मुनिना कलेवरने ते वाघणे
ज्यारें खाइ लीधुं, त्यारें तेना दांतो उपर एक
सोनानी रे तेने दीठामां आवी. ते जोतांज तेने
र्छा आवी गइ, पछी शुद्धिमां आवी त्यारें ते नि
मित्तथी तेने जाति स्मरण थयुं, तेथी पस्तावो करी
ने पोताने धिक्कारवा लागी. अरे हुं महा पापिणी-
छुं. में पोताना पुत्रनुं भक्षण कर्युं. ए महा पाप
थी कोण जाणे मारी केवी गति थशे? एवो तेणे
घणा प्रकारे धोखो कर्यो, ते कीर्तिधर मुनिए जा
णी लीधुं, त्यारें तेने उपदेश कर्यो. तेना योगे

ते अनशन व्रतने धारण करीने मरी जइने जु:गलीआमा जनमी, पछी कीर्तिधर मुनि पण उपर कह्या प्रमाणे मोक्ष गया

सुकोशल राजानी स्त्री चित्रमालाना पेटे एक पुत्रनु जन्म थयु तेनु नाम हिरण्यगर्भ पाड्यु पूर्वे कह्या प्रमाणे ते गर्भमाज राजा थयो ते हिरण्यगर्भ यौवन अवस्थामा आव्या पछी, मृग जेवा नेत्रोवाली मृगावति नामनी तेनी स्त्रीना पेटे पोताना जेवा शरीरवालो एक नहुप नामनो पुत्र उत्पन्न थयो केटलाएक काल पछी हिरण्यगर्भ राजाए पोताना माथा उपरना केश सफेद थया एम जाणीने, पोतानी वृद्ध अवस्था तरफ नजर करीने, महा वैराग्यने पामीने तथा पोताना नहुष नामना पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने, एक विमलाचार्य नामना गुरु पासे चारित्र व्रत लीधु पाछल सिंह जेवो पराक्रमी नहुप राजा, पोतानी सिंहिका नामनी स्त्रीनी साथे उपभोग भोगवतो छता पोताना पितानु राज्य चलाववा लागो.

कोइ एक समये उत्तर दिशाना राजाउने जीतवा सारू पोतानी स्त्रीने राज्यगादी उपर बेसाडीने सैन्य सहित नहुप राजा प्रवास गयो तेनी दक्षिण दिशाना राजाउने खबर पडताज आवीने अयोध्या नगरीने तेउए घेरो घाल्यो त्यारें

शुर पुरुषनी उपमाने लायक एवी ते सिंहिका स्त्रीं पोतानुं सैन्य सजीने तेउनी साथें युद्ध करीने जेम सिंहिणी हाथीने मारे, तेम तेउने मारीने हठाव्या.

केटलाएक दिवस गया पछी उत्तर दिशाना राजाउने जीतीने नहुष राजा पाछो पोतानी नगरी मां आव्यो. त्यारें पोतानी स्त्रीए दक्षिण दिशाना आवेला राजाउने जीतीने तेउने हठाव्या, ते सर्व वृत्तांत सांजल्यो. ने मनमां विचार करवा लागो के, मारा जेवा शुर पुरुषने पण जीतवाने मुश्केल एवा महा पराक्रमी राजानी साथें लमी तमने जीती लीधो, ए केवल एनुं काम नहीं पण कोइ एनी साथें लागेलानी मदतथी थएलुं जणाय छे, पति घरे न छतां कोइ वैरी साथें युद्ध करवुं ते कुलीन स्त्रीउने लायक नथी. माटे ए जरूर व्यजिचारिणी छे. पतिव्रता स्त्रीउने पति विना बीजुं कांइ अधिक नथी. पतिनी सेवा विना ते बीजुं कांइ पण जाणती नथी. आ स्त्रीए एथी उलटुं कर्युं तेथी ए पतिव्रता नही. जो पण ते स्त्री उपर पोतानी घणी प्रीति हती तोपण खंमित प्रतिमानी परें तेने तेणे मूकी दीधी. एवी रीते केटलोएक काल गया पछी नहुष राजाना शरीरे तापनी असर थइ. तेने मटामवा सारूं घणा उपायो कर्या. पण दुष्ट शत्रुनी परें ते गयो नहीं. एवा प्रसंगे पोतानुं पति

व्रतापणु देखाडवा सारू, तथा पतिनी पीडा दूर करवा सारू, सिंहिका स्त्री हाथमां पाणी लइने. पोताना पतिनी पासे आवीने, तेने सम्भलाय एवी रीते बोलवा लागी. हे नाथ, आज दिवश सुधि तारा शिवाय बीजो कोइ पण पुरुष में जोयो होय, तो आ ताप मिटे नहीं, ने जो हु कलक रहित होऊ, तो काइ पण विलब नकरता मिटी जाय एम कहीने हाथमांना पाणीने तेना आग उपर छाट्यु. तेज वखते अमृतथी धोवायानी परे ताप मिटी गयो ते वखतें देवोए सिंहिका स्त्री उपर फूलोनो वरसात कर्यो ते दिवसथी प्रथमनी परे नहुष राजा तेनी उपर प्रीति करवा लागो, एवी रीते केटलाएक वखत पछी नहुष राजाने सिंहिकाना पेटे एक सौदास नामनो पुत्र थयो तेने राज्य उपर बेसाडीने नहुष राजाए मोक्षनी उपायभूत दिक्षा लीधी.

जे वखतें सौदास राजा राज्यासन उपर बेठो ते वखतें तेना प्रधनो ए अरिहतनो अष्टाहिक महोत्सव करीने राज्यमा थाली पीटावी के कोइए मांस खावु नहीं, अने सौदास राजाने पण कह्यु के, अरिहतनो अष्टाहिक महोत्सव करीने ताहरा पूर्वजोए कोइ वखत पण मास खायु नथी. माटे तने पण मास खावानो त्याग करवो जोइए तथापि तेने मास खावामा घणी प्रीति होवाथी सौदास राजाए पो

ताना रसोईयाने कह्युं के, आजथी तुं छानी रीते मांस लइ आवतो जा. थाली पिटायाना दिवसथी रसोइयाने क्यांय मांस मिल्युं नहीं. आकाशना फूलोनी परें अजावज थइ गयो; तेथी रसोइयानो कांइ पण उपाय चाल्यो नहीं. त्यारें ते विचार करवा लाग्यो के, जोहुं मांस लीधा विना खाली हाथे गयो तो राजा माहरी उपर गूस्सो करशे. त्यारें हिवे हुं शुं करूं ? एम विचार करतो फिरतो छतां कोइ एक मूवेला बालक तेनी नजरे पड्यो. तेनुं मांस लावी रांधीने तेणे राजाने खवराव्यो, तेनो सारो स्वाद लाग्याथी, तेनी तारीफ करवा लाग्यो. आ मांसनो केवो सारो स्वाद छे. आखा जन्ममां पण कोइ वखतें एवुं मांस मने मिल्युं नहोतुं. पछी ते रसोईयाने पूछवा लागो के, ओ क्यां प्राणीनुं मांस छे ! त्यारें तेणे कह्युं के, ए माणसनुं मांस छे. राजाए कह्युं के आजथी तुं दररोज एवुं मांस लावतो जा. ते दिवसथी ते रसोइयाए घरमांथी नाना नाना बालकोने चोरीने तथा तेने मारीने तेनुं मांस रांधीने राजाने देवा लागो. राजाना हुकमथी ते अन्यायथी डरतो नहीं. केटलाएक दिवस पछी एवा महा क्रूर कर्मनी प्रधानोने खबर पडतां ज जेम घरमांथी निकलेला सर्पने झालीने दूर जई नाखीये, तेम तेने पकडीने एक घोर वनमां जइ मू

की आव्या पछी तेनो पुत्र सिंहरथ पोताना बापना रा
ज्यासन उपर बेठो. ने सुख रूप राज्य चलाववा लागो.
सौदास राजा पण ते वनमा मास खातो थको
विचरवा लागो कोइएक समये दक्षिण दिशा त
रफ जता एक मुनि तेणे दीठो तेमनी पासें आ
वीने तेने धर्म पूछवा लागो ते सांभलीने एने प
श्चाताप थयो तेथी ए धर्मना उपदेशने योग्य छे,
एम जाणीने जेमा मासनो निषेध करयो छे एवा
जैन धर्मनो उपदेश मुनिए तेणे करयो ते सांभ
लीने सौदास राजाने चमत्कार थयो पछी ते अ
ति आनंद वडे श्रावक थयो एवा प्रसंगे एक महा
पुर नामना नगरमा कोई एक अपुत्री राजा मरी
गयो. तेवा समये सौदास त्याहां गयो तेने जोइ
ने त्याहनां प्रधानोए पच दिव्ये करी अभिषेक
करीने घोडो, हाथी, छत्र, चामर, तथा कलस, धा
रण करीने तेने राज्य उपर बेसाड्यो सौदास रा
जा राज्य करतो छता केटलाएक दिवस पछी पो
ताना एक दूतने पोताना पुत्र सिंहरथ पासे मो-
कल्यो तेना पासेंथी कहेवराव्यु के, माहरी आ
ज्ञा मान सिंहरथे तेनो तिरस्कार करीने तेने कहा
ढी मूक्यो ते सर्व वृतांत ते दूते सौदास राजाने
आवीने कह्यो सौदास पोतानु सैन्य तइयार करीने
त्याहाथी नीकलीने सिंहरथनी साथें लडवा सारू

अयोध्या नगरीमां आव्यो. पछी ते पिता पुत्रनो परस्पर युद्ध थयो. तेमां सौदास राजा ए सिंहरथ नो हाथ झालीने तेने बेहुं राज्य उपर बेसा डीने पोतें दिक्षा लीधी.

एवी रीतें सिंहरथनो पुत्र ब्रह्मरथ थयो, तेनो चतुर्मुख. चतुर्मुखनो हेमरथ, तेथी सत्यरथ थयो, सत्यरथनो उदय नामनो पुत्र थयो, उदयनो पृथु. तेना थकी वारिरथ, वारिरथना पेटें इंदुरथ, तेनो आदित्यरथ, तेनो पुत्र मानधाता. मानधातानो वीरसेन, वीरसेननो पुत्र श्रुतिमन्यु, तेनो पुत्र पद्मबंधु तेनो रवीमन्यु, तेना थकी वसंततिलक, तेनो पुत्र कुबेरदत्त. तेनो कुंथु, कुंथुनो शरभ, तेना थकी द्विरद, तेना पेटें सिंहदर्शन थयो. तेना थकी हिरण्यकश्यपु तेनो पुंजस्थल, तेना पेटें ककुत्स्थ तेना पेटें रघु नामनो पुत्र थयो. ए प्रमाणे वंश परंपरा चालतां केटलाएक राजा थइ गया. तेमां केटलाएक स्वर्गे गया. तथा केटलाएक मोक्षगामी थया. पछी रघु राजा एवो धर्मात्मा थयो के, शरणार्थीउने कल्पवृक्षनी उपमाने धारण करवा लागो तेनो पुत्र अनरण्य राजा थयो. तेनी स्त्री पृथ्विना पेटें अनंतरथ तथा दशरथ ए नामना बे पुत्रो थया.

ए समयें अनरण्यनो मित्र जे सहस्रांशु राजा, तेने रावणे युद्धमां जीत्यां पछी वैराग्य धारण करीने

तेणे दिक्षा लीधी. त्यारे मित्रनी साथे करेला क रार प्रमाणे अनरण्य राजाए पण पोताना अनंत रथ नामना पुत्र सहित मोक्षना मार्गरूप एवी दीक्षा लीधी अने पोताना एक मासना दशरथ नामना नान्हा पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने अनु- क्रमे पोते मोक्षे गयो अने अनंतरथ तीव्रतप क रीने पृथ्वि उपर स्वेछाविचरवा लाग्यो सहस्रांशु ए दीक्षा लीधा पछी तेना राज्य उपर तेनो पुत्र श्रीकंठ बेठो श्रीकंठ ने दशरथ ए बेहु पराक्रममा सरखा थया थका वृद्धिने पामवा लाग्या. नक्षत्रो- मा चन्द्रनी परे ग्रहोमा सूर्य जेवो, पर्वतमां मेरू स मान सर्व राज्यमा दशरथ राजा शोभवा लाग्यो, जे दिवसथी ए राज्य उपर बेठो, ते दिवशथी को इ पण शत्रु दीठामा आव्यो नहीं उपद्रव तो आ काशना फूलो जेवो थयो याचक लोकोने द्रव्य तथा अलंकार यथेछ देवा लागो. तेथी मद्यकादिक जे दश कल्पवृक्ष तेमा ए इग्यारमो कल्पवृक्ष देखावा लाग्यो, परंपरा चाल्यो आव्यो जे सामरा ज्य ते प्रमाणे अहिंसा धर्म पालवा लागो

दर्भस्थलनो (कुशस्थलनो)स्वामी सुकोशल रा जा, तेनी स्त्री अमृतप्रभाने पेटें जन्मेली अपरा- जीता नामनी कन्या महा रूपवान तथा अति लाव ण्यता सहित तेनी साथे सग्राममा जयश्रीनी परें

लग्न करयुं तेमज कमल संकुल नामना नगरना राजा सबंधुतिलकनी स्त्री मित्रादेवीना पेटें जन्मेली कैकइ (सुमित्रा) नामनी कन्यानी साथें बीजुं लग्न करयुं, ते जेम चंद्रमा रोहिणीने परणे तेम ते सुमित्राने परण्यो, एवो विवेकी लोकोमां शिरोमणि दशरथ राजा पोतानो धर्मार्थ न मूकतां ते स्त्रीउनी साथें नाना प्रकारना उपनोग नोगववा लागो.

अहियां लंकानो राजा रावण कोइ एक समयें सनामां बेठो ठतां एक सारा ज्योतिषीने पूठवा लाग्यो हे महाराज, अमरपणुं जे ठे ते मात्र कहेवानुं ठे. पण वास्तविक रीते कोइ वखत अमर नथी, संसारमां रहेला प्राणीनो जरुर नाश थशे. एम बधा जाणे ठे.तथापि मारो मृत्यु माहारा पोताना परिणामथी थशे? अथवा कोइ बीजाना हाथें थशे? कांइ पण नय न राखतां जे साचुं होय ते कहो. साचुं बोलनारा पुरुषना मुखमांथी खोटुं पडतुंज नथी एम सांनलीने ते नैमित्तिक रावणने कहेवा लाग्यो. हे राजा, हिवे पठी उत्पन्न थनारी एक जानकी (शीता) ने दशरथ राजाना पुत्र राम एना हाथें ताहरो मृत्यु थवानो ठे. त्यारें पासें बेठेलो बिनिषण बोलवा लाग्यो. एनुं नाषण साचुं ठे. पण तेने हुं खोटुं करीश. कन्या अने पुत्र ए बेहुंनो बीज जे जनक तथा दशरथ तेमने मारी नाख्याथी रावणनुं मरवुं मिटशे. जेथी जिनी

त्पति थाय तेना मूलनेज कहाडी नाखीए तो बीज क्याथी थाय' ने आ नैमित्तिकना वाक्य पण खोटा थशे. एवु रावणे साजलीने बिजिपणनु बोलवुमान्य करयु पछी ते बेहु उठीने घरमा गया एवा प्रसगे त्याहा नारद मुनि बेठो हतो. तेणे सर्व वृतांत साजली लइने त्याथी उठी दशरथ राजा पासे आव्यो तेने दूरथी जोइने दशरथ राजा पोते बेठेला आसन उप रथी उठयो पछी नमस्कार करीने नारदने आसन उ पर बेसाड्यो गुरुनी परे तेनो आदर सत्कार करयो पछी पोते पण निचे बेशीने नारदने पूछवा लाग्यो. हे मुनिराज आप क्याथी आव्या? तथा आववानुं कारण शु छे ? त्यारे तेने नारद मुनि कहेवा लाग्यो. हे दशरथ, पूर्व विदेहमा पुडरिकीणी नगरीमां श्री सिमधर स्वामीनो करेलो सुरासुर दीक्षा महोत्सव जोवा सारू हु गयो हतो त्याथी फिरीने मेरु पर्वत उ पर जइने शाश्वत तीर्थनी वदना करी. त्याथी लका मा गयो त्याहा शातिनाथ भगवानना मदीरमा जइ दर्शन वगैरे करीने हु रावणने घरे गयो त्याहां कोइ एक जोतिषी निमित्तियाए रावणने कह्यु के, जानकी ना निमित्य तथा दशरथ राजाना पुत्रना हाथे रावण मरशे एवुं साजलीने जानकी तथा रामना कारणभूत जे जनक, तथा दशरथ राजाने मारयाथी रावणने कोण मारशे? एवु कहीने तुमने बे जणोने मारवानी

बिभीशणे प्रतिज्ञा करी छे. ए बधो वृतांत मे सांभ
ळी लइने तुं मारो साधर्मीक छे, वास्ते तने सावचेत
करवा सारू घणो उतावळो दोडीने हुं आंइ आव्यो
छुं माटे तुमे तुमारे सावचेत थावो. एवुं नारदनुं बोल
वुं सांभलीने तेनो यथा योग्य दशरथ राजाए सत्का
र करयो. पछी त्याहांथी उठीने नारद मुनि जनकराजा
पासे गयो. त्याहां पण सर्व वात कही संभलावी.

पछी दशरथ राजाए पोताना मंत्रीउने एकठा
करीने तिणोने ते सर्व वृतांत कही संभलाव्यो. ने पो
तानुं राज्य तेमने स्वाधीन करीने योगीनी परे काल
वंचना करवा सारू बाहार निकल्यो. पाछल ते मं-
त्रीउए शत्रुने फसाववा सारू दशरथनी आकृतीनी
एक माटीनी मूर्ति करीने राजग्रहमां अंधरामां राखी,
पछे जनक राजाए पण एमज करयुं. तेना मंत्रीउए
पण तेमज करयुं एवी रीते त्याहांथी निकलीने ते बे
उ जनक तथा दशरथ राजा पृथ्वी उपर फिरवा लाग्या.

पछी संकेत प्रमाणे बिभीषण मोटा वेगथी अयो-
ध्या नगरीमां आवीने तेणे माटीनी राखेली दशरथ
राजानी मूर्तिनुं माथुं कापी नाख्युं. ते वखते नगरमां
मोटो कलकलाट थई रह्यो. अंतःपूरमां मोटुं रडवुं पी
टवुं थई रह्युं. शुरवीर लोको मारनारनो शोध करवा
लाग्या. ने कहेवा लाग्या के दशरथने कोणे मारी
नाख्यो. तथा कोईने संशय नआवे माटे घणी धा

मधुम करवा लाग्या पछी राजा मशलतवाला प्र धानोए दशरथ राजानी प्रेत क्रिया करी इत्यादिक वर्तणुक जोईने तथा दशरथ मरीगयो एम निश्चाय करीने विभीषण पाछो लंकामा आव्यो जो पण तेना मनमां जनक राजाने मारवानु आव्यु हतु, तो पण तेणे विचार कर्यो के एकलो जनक राजा शुकरनार छे एने मारीने काई पण फायदो थनार नथी. एम जाणीने तेने मूकी दीधो

जनक राजा तथा दशरथ राजा बेउ साथे फरतां फरता उत्तर. दिशाए गया त्याहा एक कौतुकमगल नामना नगरनो राजा शुभमतितेणी स्त्री पृथ्वीने पेटे जन्मेली द्रोणमेवनी बेन बहुतेर कलाए करी परिपूर्ण एवी कैकई नामनी कन्या उपवर थई छतां तेनो स्वयवर रच्यो हतो तेवा समयमा ते मंडपमा दशरथ तथा जनक पण जई पहोता त्याहा बेठेला हरिवाहन प्रमुख राजाउमा, कमलोमा जेम हस शोभे तेम एकज आसन उपर बेठेला जनक तथा दशरथ ए बेउ शोभवा लाग्या एटलामा रत्नालकारे करी शोभीत तथा सर्व कन्यउमा रत्नभुत एवी कैकई नामनी कन्या पोतानी सखीना खाधा उपर हाथ राखीने ते स्वयवर मडपमा आवी पछी एक कोरेथी राजाउने जोती जोती तेणे चालवानो आरम्भ कर्यो. ते जेम चद्रमा नक्षत्रोनु उल

घन करे, तेम पोतानी सखी ए बता वेला सर्व राजाउनुं उल घन करीने गंगा नदी जेम सागरमां आवी मिले ते म ते दशरथ राजा पासें आवी उभी रही, अने समुद्रमां मूकेला नांगरवाला वहाणनी परें आशिंग थइ गइ. ते वखते अंग उपर रोमांच उभां थयां. पछी ते कैकइए पोतानी भुजारूप लतावडे वरमा ला दशरथ राजाना गलामां घाली. एवी प्रसंगे स भामां बेठेला बीजानुं महत्व सहन न करनारा हरिवाहनादिक अभिमानी राजाओ कोपाग्नि ए करीने लाल थया थका बोलवा लाग्या. ओ दरि द्री कोई कपटना वेषनेधारणकरीने आवेला धुता- रामां शुं जोईने कैकइ एने परणी ! एनी पासेथी कन्याने अमे लुटवी लईशुं तो पछी ए शुं कर- नार छे ? एवीरीते गुस्सामां आवीने पोताना रथा नक उपरथी उठीने युद्ध करवानी तयारी करवा ला ग्या ए बातनी खबर पडतांज शुभमति राजानी साथें मशलत करीने चतुरंग सैन्य सहित युद्ध करवाने दशरथ राजा तइयार थयो. ते वखते पा से आवेली कैकईने कहेवा लाग्यो. हे प्रिया, आ शत्रुउने मारवाने तने पण माहारी साह्यता क- रवी जोइए. एवुं राजानुं बोलवुं सांभलीने बहु तेर कलामां पूरी, तथा माहाबुद्धिमान, एवी ते कैकइ त्वराथी घोडाना लगामने हाथमां झालीने रथ उ

पर घडी, दशरथ राजा पण धनुष्य बाण हाथ
मा लइने, तथा वेरीउने तृण समान समजीने र
थ उपर आरुढ थयो थको हरिवाहनादिक राजा
उनी सामें कमर कशीने युद्ध करवाने उन्नो रह्यो.
ते वखते कैकइ पोतानी कलाना जोरथी तथा मो
टी वेलाइथी सर्व शत्रुउमा पोताना रथनें फेरववा
लागी के जाणें अनेक रुप धारण करीने शत्रुउ
ना अनेक रथोनी सामे एकेक रथने उनु करयु
होय ! एवी रीते रथनी योजना करवा लागी,
एटलामां माहा जोशमा आवीने शीघ्रवेगी, तथा
माहा पराक्रमी जे दशरथ राजा तेणे हरिवाहन प्र
मुखनां रथोनो एक घडीमा नाशकरयो अने सर्व
राजाउने जीती लीधा तेवार पवी जगम पृथ्वीनी
परें दशरथ राजाए कैकईनी साथे विवाह करयो.
ते वखतें घणा आनदमा आवीने ते राजा पोता-
नी स्त्रीने कहेवा लाग्यो के, हे कैकई, ताहरी च-
लाकी तथा तारू सामर्थ्य जोईने हु घणो राजी थ
यो बु हिवे तेनो बदलो तु मारी पासेथी मागी ले
हु ताहरा उपर प्रसन्न थयो बु, तु माहरा पासे वर-
माग. त्यारें कैकई कहेवा लागी के हे प्राणनाथ जे
वखते मने गरज लागशे तेवखते हुं मागी लईश
हाल ए वर हु तुमारी पासे अनामत राखु बु.
एवु तेनु बोलवु साम्भलीने राजाए ते मान्य करयु.

त्यार पछी ते लक्ष्मी जेवी कैकईने साथे लईने त था पोताना सैन्य सहित दशरथ राजा पाछो आ वीने पोताना राजगृहमां गयो. अने जनक राजा पोतानी मिथिला नगरीमां गयो, कह्युं छे के, "स मय जाणनारा बुद्धिमान पुरुषो कार्य शिवाय न-लताज ठिकाणे रहीने वेल गमावता नथी."

पछी दशरथ राजा मगध देशना राजाने जीती ने तेज नगरमां राज्य करवा लाग्यो. प्रथम ना नयथी अयोध्या नगरीमां गयो नहीं. अने पो तानी कौशल्या प्रमुख स्त्रीउने पण त्यांहांज बोला वी लीधी. कह्युं छे के, "पराक्रमी पुरुष ज्यांहां जा य त्यांहां तेने पोतानुं राज्यज छे," ते नगरमां पो तानी स्त्रीयो सहित दशरथ राजा घणा दिवस र-ह्यो. केमके पोतें मेलवेली पृथ्वी राजाने घणी प्रि य होय छे. कोईएक समये पाछली रातना वखते कौशल्याने एक स्वप्न आव्युं. तेमां हाथी, सिंह, चंद्र, तथा सूर्य ए चार पदार्थ तेणे दीठां. बलदेव ना जन्मना सूचक थया, तेवा प्रसंगे ब्रह्मदेव लो कथी कोई एक मार्धिक देव चवीने जेम पुष्करणी मां हंस त्पन्न थाय, ते प्रमाणे कौशल्याना उद-रमां तेणे आवी अवतार लीधो. मास पूरा थए थी माणसोमां कमल जेवो, रंगमां पुंडरीक नामना कमलने पण लजायमान करे एवा, संपूर्ण लक्षण

सहित, ---- दिव्य पुत्रनो जन्म थयो चंद्रना द-
र्शनथी जेम समुद्रने आनंद थाय तेम कमळ जेवा
नेत्र वाळा पहेला पुत्रने जोताज दशरथ राजाने म
हा आनंद थयो. ते वखते अर्थी जनोने चिंतामणी
नी पेरे राजाए आगणित दान दीधु. मोटा पुरुष
ने घरे पुत्रनो जन्म थएथी दान देवानी चाल
ज छे सर्व प्रजाने खबर पडताज ते प्रजा अति रा
जी थइ ने मोटो उत्साह कर्यो, दुर्वा, फूल, मेवा
फिलादिके करी युक्त पूर्ण पात्र प्रजाए राजाने घ
र मोकलाव्यां आखा नगरमा उत्तम प्रकारनो गा
यन थवा लाग्यो, केसरना छटा नाखवा लाग्या.
घर घरमा तोरण बधाया, केटलाएक राजाउनी
तरफथी दशरथ राजाने पुत्रना जन्मना वखतें कर-
भार आव्या—लक्ष्मी वास करी रहेवाना हेतुथीं क
मलनु नाम पद्म होवाथी तेनी बराबरीने माटे तेबाळ
कनु नाम पद्म राख्यु तथा बीजु राम एवु नाम पाम्युं,

त्यार पछी केटलाएक कालें प्रथमनी परेज बिजी
सुमित्रा नामनी दशरथ राजानी स्त्रीने रातना पाछ-
ली पहोरे वासुदेवना अवतारने सूचन करनारा हाथी,
सिंह, सूर्य, इंद्र, अग्नि, लक्ष्मी, अने समुद्र, ए सात
पदार्थ दीठामा आव्या ते वखते कोईएक परम मह
र्धिक देवता देवलोकथी चवीने तेणे सुमित्राना उदर
मा अवतार लीधो, मास पूरा थया पछी श्यामवर्ण,

सर्व लक्षण युक्त. तथा जगतना मित्ररूप पुत्रनुं जन्म थयुं, ते दिवसे संपूर्ण चैत्योनी श्री सदर्हत प्रतिमाउने स्नात्र पूर्वक आठ प्रकारनी पूजा करी. तथा सर्व बंधीवानोने बंधीखानामांथी गेडी मूक्या. सर्व जनोना मनमां परम आनंद उत्पन्न थयो. तेमज राजाने पण महा आनंद थयो. मात्र एटलुज नही पण आखी पृथ्विने आनंद थयो, राम जन्मना वखते जेवो उत्साह थयो हतो ते प्रमाणे लक्ष्मणना जन्मना वखते अधिक उत्साह कस्यो, तेनुं नाम नारायण तथा लक्ष्मण राख्युं. पगी ते बेउ्जाई आस्ते आस्ते वधवा लाग्या. राम तथा लक्ष्मण खेलतां खेलतां पोताना बाप पासें जइने तेना खोलामां बेशीने तेनी मूगे तथा वालोने जालीने रमवा लाग्या. (एवी बालकोनी रीत गे.) धाइउना पालण पोषण थकी दिन दिन प्रत्यें उछरवा लाग्या. ते वखतें एवा दी ठामां आवता हता के जाणे राजानी बीजी बे भुजाज होय! एवा बे पुत्रोने दशरथ राजा जोइने महा आनंद पामवा लाग्यो. सन्नामां आवे त्यारे घमीमां राजाना खोलामां बेसे, त्याहांथी उठीने पासें बेठेला कोइ प्रधानना खोलामां जइ बेसें, वली त्याहांथी उठीने कोई त्रीजा पुरुषनी पासें जइने तेने हसावे, त्याहांथी पागा आवे. एवी रीते जेनी पासें जाय तेने एवुं लागे के जाणे अमृतज आंगने स्प

शं करतु होय ? वसुदेवने पीला वस्त्र तथा रा मने नीला वस्त्र पहेरयां थका पाद प्रहारे करी जा णे पृथ्वीने कपायमान करता होय ! एवी रीते य थेच्छ क्रिडा करवा लागा पछी क्रमे करी सपूर्ण वि द्यानो अभ्यास करयो ते एवी बुद्धिथी सीखवा ला गा के गुरुनी गरज तो केवल निमित्त मात्र हती. अने ते एवा दिपवा लागा के, जाणे पुन्यनी रा- सीज होय ! फिरता फिरता ते राम तथा ल- क्ष्मण पर्वत उपर जइने तेने मुठ मारयाथी ते चू र्ण थइ जवा लागो. धनुष्य बाण हाथमा लइने ल क्षवेध करती वखते सूर्य पण कपायमान थवा लागो. अस्त्र, शस्त्र, तथा कौशल्य वगैरे जेने कौतुक जेवा भासवा लागा. एवा पोताना पुत्रना अस्त्र, शस्त्र, त था कौशल्ये करीने दशरथ राजा पोताने सुरासुरने पण अजय मानवा लागो. एवी रीते केटलाएक काल पछी पोताना पुत्रना बलना धैर्य वडे इक्ष्वाकु वंसनी राजधानी जे अयोध्या नगरी ते प्रते आ- व्यो वादला दूर थयेथी जेम सूर्य प्रकाशमान भासे, तेम दुर्दशा दूर थयाथी दशरथ राजा पो- ताना प्रतापे करी प्रकाशमान थयो थको पृथ्वीनु पालन करवा लाग्यो,

केटलाएक दिवश पछी शुभ स्वप्न करी सूचन क- रेला भरत क्षेत्रने भुषणरूप भरत नामनो पुत्र

दशरथ राजानी स्त्री केकईना उदरथी जनम्यो. त्या र पछी केटलाएक दिवशें स्वकुलने आनंद देनारो, तथा माहा पराक्रमी शत्रुघ्न नामनो पुत्र सुप्रजा नामनी चोथी स्त्रीने पेटें जनम्यो. भरत अने शत्रुघ्न ए बेउ क्रमें करी मोटा थईने साथें फिरवा लाग्या. ते जाणे बीजा बलदेव तथा वासुदेवज होय ! एवा शोभवा लागा. गजदंत प्रमुख आकारवाला चार पर्वत वडे जेम मेरु पर्वत शोभे छे; तेम पोताना चार पुत्र वडे दशरथ राजा शोभवा लागो.

जंबुद्वीपना भरथक्षेत्रमांना दारुग्राममां एक वसुभूति नामना ब्राह्मणनी स्त्री अनुकेशाना पेटें एक अतिभूति नामनो पुत्र थयो. तेनी सरसा नामनी स्त्री कोईएक क्यान नामना ब्राह्मणनी साथे आशक्त थई. केटलाएक दिवश पछी क्यान सरसाने हरण करी लई गयो. कह्युं छे के, "कामे करी पीडातो पुरुष शुं न करे" ते स्त्रीने शोधवा सारूं तेनो पति अतिभूति भूतनी परें पृथ्वी पर फिरवा लाग्यो. ए वातनी वसुभूति तथा अनुकेशानें खबर पडतांज पोताना पुत्र तथा तेनी स्त्रीने शोधवा सारू बाहार निकल्या पृथ्वी उपर फिरतां फिरतां कोईएक समये तेमणे कोईएक साधुने दीठो. तेने भक्ति पूर्वक नमस्कार करीने ते

नी पासें धर्म सांभलवा लाग्या भाव उत्पन्न थया थी अनुकेशा तथा वसुभूति ए बेउ स्त्री पुरुषे ते साधु पासेथी दिक्षा लीधी पछी गुरुनी आज्ञा लईने एक कमलश्री नामक आर्यानी पासे अनुके शा जइ रहेना लागी एवी रीते केटलाएक काल पछी ते बेउ काल करीने सौधर्म देव लोकमां देव थया एकज व्रत करयो छता मात्र स्वर्गनी प्राप्ती थाय छे, ते शिवाय बीजी पदवी मिले नहीं। ते वसु भूति केटलाएक काल सुधी देवलोकमां रहीने त्या हाथी चवी वैताढ्य पर्वत उपर रथनुपुरमां चंद्रगति नामनो राजा थयो. तेमज तेनी स्त्री अनुकेशा पण देव लोकथी चवीने तेज राजानी पुष्पवती नामनी स्त्री थइ

आतेभूतेनी स्त्री सरसा पण कोइ एक साधवी पासेथी दिक्षा लइने काल करी इशान देवलोकमां देवी थइ तेमज अतिभूति पण स्त्रीने शोधतो थको केटलाएक दिवसे काल करी गया पछी संसारमां घणा काल भटकीने कोइ एक समये ते एक हंस नो बालक थयो तेने एक सेन नामना पक्षीए ल इने खावा मांड्यु पण प्रालब्धना योगे तेनी पासेथी छुटीने तथा जेम तेम उडतो उडतो एक साधु पासें आवी पड्यो मात्र कंठमां थोडु एक श्वासोश्वास रहेलु हतु, तेवा प्रसंगे ते हंसना बालकने नमस्कार (नवकार) मंत्र कह्यु तेना सामर्थ्य वडे ते जीव द

श हजार वर्षना आयुष्यनो किंनर लोकमां एक दे
व थयो. कालें करी त्याहांथी चवीने विदग्ध नाम
ना नगरना राजा प्रकाश सिंहनी स्त्री प्रवराराणीना
पेटें कुंमलमंडित नामनो पुत्र थयो.

उपभोगमां आशक्त जे क्यान, ते पण काले क
री मरण पामीने भवाटवीमां भटकतो थको चक्रपुर
नामना नगरना राजा चक्रध्वजना उपाध्याय धुम-
केतुनी स्त्री स्वाहाने पेटें पिंग नामनो पुत्र थयो.
केटलाएक दिवश पछी चक्रध्वज राजानी कन्या अ
ति सुंदरी तथा ते पिंग एकज गुरुनी पासें विद्या
भ्यास करवा लागा. केटलाएक काल पछी ते बेउ
विचे परस्पर प्रीति बंधाइ. तेथी ते अतिसुंदरी
ने पिंग हरण करीने विदग्ध नगरमां जइ रह्यो. त्या
हां ते पिंग घास तथा लाकडाने वेचीने जेम तेम
पोतानो निर्वाह करवा लागो. केमके गुण रहित पु
रुषने एवुं काम कर्या विना छुटकोज नही. कोइ ए
क प्रसंगे ते नगरना राजा कुंमलमंडिते ते अतिसुं-
दरीने दीठी तेवीज ते बेउ विचे प्रीति बंधाइ. पछी ते
कुंमलमंडिते तेने हरण करीने पोताना बापना भयथी
त्याहांथी नीकलीने एक पर्वतमां घर करीने रहेवा लागो.

आंइ अतिसुंदरीना विरहथी उन्मतनी परें थ-
एलो ते पिंग जमीन उपर फिरतो फिरतो कोइए
क समये कोइएक गुप्ताह्व नामना आचार्यने तेणे

दीठो. तेमनी पासे धर्म सांभलीने तेणे दिक्षा लीधी. परंतु अतिसुंदरी विषेनी प्रीति गइ नही.

डुंगरमा रहेला कुंडलमंडिते कुतरानी परे दशरथ राजाना राज्यमा लुट करवानु सुरूं करयु एक समये कोई एक बालचंद नामना सुभटे तेने पकडी बांधीने ते दशरथ राजा पासे लाव्यो. तेने केटलाएक काल सुधी राजाए बंधीखानामा राखीने पछी मूकी दीधो. कह्यु छे के, " शत्रुदीन थयेथी मोटा पुरुषोनो कोप शांत थाय छे " पछी ते कुंडलमंडित पोताना बापनु राज्य मेलववानी इछाथी पृथ्वी उपर फरवा लागो. कोई वखते एक मुनिचंद्र नामना मुनिनी साथे तेनो समागम थइ गयो तेनी पासेथी धर्म सांभलीने ते श्रावक थयो तेना मनमा पूर्वे कह्या प्रमाणे राज्यनी इछा हती तेथी काल करी मरण पामीने मिथिला नामनी नगरीना राजा जनकनी स्त्री विदेहाना पेटे अवतरयो अने पेली सरसा स्त्री पण केटला एक काल सुधी भवमा भटकीने राजाना उपाध्याय नी वेगवती नामनी कन्या थइ समयना योगे तेणे दिक्षा लइने ते मूवा पछी ब्रह्मदेव लोकमा एक देवी थइ कालें करी त्याहाथी चवीने विदेहीना उदरमा कुंडलमंडितना जीवनी साथे अवतरी विदेही ने मास पूरा थया पछी ते पुत्र तथा कन्याने तेणे प्रसव्या. पिंगनो जीव सौधर्म देवलोकमा देव थयो

हलो तेने जातिस्मरण थएथी जनक राजाने घर पुत्र रूप जन्मेला पोताना शत्रुने जोईने तथा पूर्व जन्मना वैरेकरी क्रोधायमान थईने तेने जन्मती वख ते हरण करीने लई गयो. पछी मनमां विचार करवा लाग्यो के, एने शिला उपर पछाडीने मारूं? अथवा पूर्व जन्ममां करेला दुष्ट कर्मनुं फल में घणा जन्मे लीधुं, पछी दैवना योगे साधु नव पा ने आ देव भुमिमां आव्यो. फरी आ बालकने मारीने मने घणा जन्म लेवा पडशे. माटे एने मूकीदेउं. ए विचार तेने सारो जणायाथी ते बालकने अलंकारादिक पेहेरावीने पोतानी कांति करीने चारे दिशाने भरी मूकेला बालकने वैताढ्य पर्वत उपर रथनुपुर नगरना नंदन उद्यानमां रुउनी परें हलवेथी पृथ्वी उपर मूकीने चालतो थयो.

त्याहांना चंद्रगति नामना राजानी औचिती तेना तेज उपर नजर पडी.तेथी आश्चर्य पामीने कहेवा लाग्यो के एकाएकी आ उपरथी केवो तेजनो भभको पड्यो. पछी तिहां राजा दोडतो आव्यो. ने जूवे छे तो दिव्य अलंकारे करी भुषीत एक बालक जमीन उपर पडेलो देखायो. तेने उचलीने पोताने पुत्र नहतो तेथी तेने पुत्र मानीने पोतानी पुष्पवती स्त्रीने आवी सोंप्यो. ते दिवसे ते नगरमां थाली पीटावी के पुष्पवतीने पेटें पुत्रनो जन्म थयो. प

ी प्रीति सहित राजाए तेनो जन्मोत्सव कर्यो ने भामन्डलना योगे तेनु नाम भामंडल एवु राख्यु ते नु पालण पोषण विद्याधरोनी स्त्रीउए पोताना हाथे कर्यु पछी ते दिवसे दिवस चन्द्रनी पेठे वधवा लाग्यो

आइ जनकनी स्त्री विदेहा पोतानो पुत्र हरण थयो तेथी दीनस्वर वडे मोटेथी रडवा लागी, ते वखते आखु कुटुंब शोक समुद्रमा डूबी गएलु देखावा लाग्यु जनक राजाए ते पुत्रने घणा प्रकारे शोध्यो तथापि ते क्यांए मिल्यो नही तेनी साथे जन्मेली जे कन्या ते अनेक गुणरुपनिधान्यनु अंकुरजुत जाणीने तेनु नाम सीता एव राख्यु जनक राजा तथा विदेहा राणीने ते पुत्रनो शोक केटलाएक दिवस पछी उछो थयो कह्यु छे के " संसारमा पुरुषने हर्ष अने शोक जाय छे तथा आवे छे. "

पछी ते सीतारुप, लावण्य, तथा अनेक गुणे करी युक्त थइ थकी चन्द्ररेखानी परे वधवा लागी हलवे हलवे ते सर्व कलामा पूर्ण थइ क्रमे करी यौवन अवस्थाने पामी, त्यारे जाणे रुप तथा लावण्यलतानी नदीज होय ? एवी देखाइ. अने कमल पत्रना जेवा जेना नेत्र छे, एवी ते कन्या लक्ष्मी जेवी शोभवा लागी तेने जोईने जनकने विचार थयो के एना योग्यवर कोण मिलशे ? एवु रात दिवस राजाने चिंतन थवा लाग्यु, तेथी पोताना दूतो

द्वारा दरेक राजाना पुत्रोने राजाए जोया. तेमांनो कोइपण राजाने गम्यो नही. कोई एक वखते आ तरंग तमादिक अर्धबर्बर नामना राजा आवीने दे त्यनी परें जनक राजाने उपद्रव देवा लाग्या तथा कल्पांतना समुद्रनी परें उछलवा लाग्या. तेउनुं निवा रण करवा सारूं दशरथ राजा तरफ एक दूत मो कल्यो. ते त्याहां जइ पोहता पछी दशरथ राजाने ख बर पडतांज तेने बोलावी पोतानी पासे बेसाडीने तेनी साथें बोलवा लागो. मारो मित्र जनक मारा थी दूर रहेलो छे. तेमज हुं तेनाथी दूर रहेलो छुं. अमारा बेउनो मेलाप थाय तो दैव उपर आधार राखे छे. तथापि आज तारा आववाथी मने जनक नी साथें भेट थइ एम हुं समजु छुं. जनकना राज्यमां, तेना नगरमां, सैन्यमां, पोताना कुलमां तथा पोताना शरीरना अवयवोमां सुख साता छे? ते कहे. त्यारे दूत कहेवा लागो के हे दशरथ राजा, मारा स्वामी जनक राजाना घणा सगावाला छे ते बधामां आपने ते सुहृत, हृदय, अथवा पो ताना आत्मानी परें जाणे छे. सुख अथवा दुःख नी वखतें तुमारा विना बीजा कोईने याद करतो नथी. तुमे केवल तेना कुलदेवतारुप छो. मारा आववानुं कारण एछे के, वैताढ्य पर्वतनी दक्षि ण दिशामां तथा कैलाश पर्वतनी उत्तर तरफ घणा

अनार्यजन पद छे. बर्बरकुल जेवो एक अर्ध व-र्वर नामनो देश छे तेमा माह्वा भयकर पुरुष र हे छे. तेमा ते देशना घरेणारूप एक मयुरमाल नामना नगरनो एक आतरग नामनो माहा म्लेछ राजा छे. शुक देश, अकन देश, कांबोज देश, वगैरे बीजा पण केटलाएक देशोमां तेना हजारो पुत्रो राजा थइने त्याहाना उपभोगने भोगवे छे एक एक अक्षोहिणी सैन्यना पति एवा तेना ते हजारो पुत्रो सहित ते आतरग राजा जनकना देशमा आवीने तेनी पृथ्वीनो नाश करवा लाग्योछे. नगरमा आवीने ते दुष्ट बुद्दिए चैत्यनो भग कर्यो आपणा धर्मनो नाश करवामा ते स्वधर्म मानेछे. माटे हे धर्मीष्ट राजा, आपणा स्वधर्मनी तथा जनक राजानी जेम बने तेम आप रक्षा करो. ए वेउना हाल प्राणभूत आप छो एवा ते दूतना वाक्यो सांभळीने आज दशरथ राजाए प्रयाण भेरी वजाडी. कह्यु छे के " सज्जन पुरुष रक्षा करवा सारू कदी पण विलब करता नथी "

एवा प्रसगे दशरथ राजा पासें राम आवीने केहेवा लाग्यो के, हे तात म्लेछोने मारवा सारू तुमे पोते जशो तो (पोतानी सामे हाथ करीने) भाइ उ सहित उभेलो जे आ राम ते श्या कामनो ? जो केहेशो के पुत्रनो स्नेह करी त्यांने शत्रुउनी सामें

मोकलवानी माहरी हिम्मत चालती नथी. तो भरत राजाथी इक्ष्वांकु वंशमां जन्मसिद्ध पराक्रम छे. त्यारे हिवे आप आंइज रहो. ने म्लेछोनो नाश करवाने मने आज्ञा आपो. हे स्वामिन्, पोताना पुत्रना जयनी वात तुमे थोडाज दिवशमां सांभलशो. एवी रीते मोठा आग्रहथी राजानी रजा लेइने पोताना न्हाना भाई सहित पोताना सैन्यने साथे लेईने मिथिला नगरी प्रत्यें गयो. तीहां माहा वनमां जेम हरण, वाघ. शार्दूल, अथवा सिंह वगेरे माहा भयंकर प्राणिन देखाय तेम ते म्लेछोना सुभटोने रामे दीठा. तेमज तेओए रामने जोतांज लडाई करवा विषे जेनी भूजा कांपी रही छे. तथा महा पराक्रमी ते म्लेछो रामने दुःख देवा लाग्या. तेओए बाणोनी एहवी वृष्टी करी के, तेथी ऊडेली धुल वडे जाणे आकाशज आंधलुं थतुं होय! ते प्रमाणे पोताना शस्त्रादिकोए करी म्लेछोए रामना सैन्यने ढांकी लीधुं. ते वखते म्लेछो पोतानुं जय थयुं एम मानवा लाग्या. तेमज जनक राजा पोताना सैन्यनो पराभव थयो एम जाणवा लाग्यो. तथा आपणा सर्व सैन्यनुं मरण आव्युं एम मानवा लाग्यो. ते वखते रामे पोताना धनुष्य बाण सजीने तेनी कमान चडावीने एवो टणकार कर्यो के तेथी सर्वनां आंखोनां पापण हालतां रही गयां. पछी पृथ्वी उपर आवेला देवतानी

परे ते राम जेम मृगोने पारधी मारे तेम ते प्र-
माणे पोताना अस्त्रादिके करी क्रोधे म्लेछोने मार
वा मंडी गयो, ते वखते म्लेछोना योद्धाओ म
नमां विचार करवा लाग्या के आ जनक राजा
तो केवळ गरीब छे, अने एनुं सैन्य मच्छर जे
वुं छे तेनी साह्यता करवा सारू आवेलो जे सै-
न्य ते पण नाश पामीने दशोदिशा तरफ ना-
शी जाय तेम छतां आ आकाशने पण आछादन
करवावाळा गरुड पक्षीओना जेवा क्याथी आवे छे ? ए
वी रीते ते आतरंगादिक म्लेछ परस्पर भाषण क
रीने, तथा कोपायमान थइने, एकदम राम उपर
शस्त्र तथा अस्त्रनी वृष्टी करवा लाग्या तेने ते जो-
ईने सिंह जेम हाथीने मारे तेम दृढमार करनारो
दूरथी अस्त्रोने पाडनारो, तथा सिघ्रवेध करनारो
जे राम, तेणे लीला मात्रे करी एक क्षणमां तेओनो
नाश करी मूक्यो बाकी रहेला कागडाओनी परें द
से दिशा तरफ नाशी गया ते वखते जनक राजा
प्रजा सहित आनंदवान थयो पछी ते राजा खुशी
मां आवीने तेणे पोतानी कन्या जे सीता ते रामने
आपी राम आव्याथी पोतानी पुत्रीने वर तथा पो
ताने जय. ए बेउ कार्य एक वखतेज थया

कोइएक समये नारद लोकोना मुख थकी जान
की (सीता) ना स्वरूपनी तारीफ सांभळीने कौतुक

वडे ते स्वरुप जोवा सारूं मिथीला नगरीमां आ
वीने ते कन्याना घरमां गयो, पीला छे जेना केश
नेत्रो पण पीला. पीली छत्रीने जेणे धारण करयो छे,
कोपीन पेरेली छे, जेनुं शरीर पातलुं, ने माथा उ
पर चोटली लफी रही छे. एवा महा भयंकर नारद
ने जोईने सीता कंपायमान थइने, हा मातः हा मा
तः ए प्रमाणे मोटा अवाजे हाक पाडवा लागी ने बी
जा घरमां नाशी गइ. त्यारे तीहांना द्वारपाल दासी
उए आवीने नारदनुं गलुं पकड्युं. कोईए चोटली
पकडी, कोईए भुजा पकडी. एवा नारदना बुरा हा
ल करवा लागी. एटलामां ते कलकलाट सांभलीने
यम दूतना जेवा क्रोधायमान राजपुरुष हाथमां शस्त्र
लइ त्याहां आवीने आ कोई चोर छे एने मारो, प
कडो, बांधो, एवी रीते बोलवा लाग्या, पछी नार
दने धक्का धुंबो करीने मूकी दीधो. तेओना हाथमां
थी मोटा संकटे करी नारद छुटीने त्याहांथी नाशी
ने वैताढ्य पर्वत उपर आवी विचार करवा लागो
के जेम कोई वाघणीना मुखमां आव्या पछी जीव
तो रहे तेम हुं ते दाशीउना हाथमांथी जीवतो
नीकलीने आ घणा विद्याधरोनो इश्वर जे वैता-
ढ्य पर्वत, तेउपर मोटा भाग्ये करी आवी पोहो
तो छुं, हिवे आ पर्वतनी दक्षिण दिशा तरफ इ
न्द्र जेवो पराक्रमी चंद्रगति राजानो पुत्र भा मल

राजा छे त्याहा जइने कागद उपर सीतानु चित्र कहाडीने तेने वतावीश, तो ते जोईने बलात्कारे ते सीतानु हरण करशे, पछी जेम तेनी दासीउए मारी अवस्था करी एवी हु तेनी अवस्था करीश एवो विचार करीने पट उपर सीतानु चित्र कहाडीने नारदे भामण्डल राजाने जई बताव्यु त्रण भुवनमा अपूर्व एवु सीतानु चित्र भामडल जोईने तथा तेज वखते कामे करी पीडायमान थईने, तेमा एवी लय लागी के, तेने रात तथा दिवस जरा पण उंघ आवी नही, विंध्या पर्वत उपरथी लावेलो हाथी जेम खाय पिये नही, तेम भामडल राजा खावु पीवु मूकीने, तथा मौन धारण करीने योगीनी परे ध्यान धारण करवा लागो, पोताना पुत्रने एवी अवस्थामां जोईने तेने चद्रगति कहेवा लागो के, हे पुत्र, तारा मनमा शु दु ख छे? अथवा तारा शरीरे काइ व्याधी उत्पन्न थइ! कोईए तारी आज्ञा खडन करी छे! कोईए अपमान कर्यु छे! अथवा काइ बीजु दु ख छे? ते मने कहे त्यारे ते भामण्डल लजाथी मुख नीचे करीने कांइ पण जबाब नबोलता मुको बेशी रह्यो कह्यु छे के, कुलीन पुरुप गुरुनी पासे तेवी वात कहेवाने समर्थ होता नथी

ते समये भामण्डलना दु खनु कारण नारदे बतावेला स्त्रीना चित्र विषे तेना मित्रे राजाने कह्यु.

ते सांभळीने राजाए घणी जक्तिथी नारदने पोता ना घर लावीने तेने पुछवा लाग्यो के, जे स्त्रीनुं तें चित्र बताव्युं. ते स्त्री कोण छे? अने ते कोननी कन्या छे? त्यारे नारद कहेवा लाग्यो. हे राजा ते जनक राजानी कन्या छे. ने सीता तेनुं नाम छे. तेनुं चित्र कहाडीने में तारा पुत्रने बताव्युं. ते जेवी स्वरुपवान छे. तेवुं चित्र कहाडी बतावबाने हुं अगर बीजो कोई पण समर्थ थनार नथी. ए स्त्री शरीरे एवी सुंदर छे के, तेने बीजी कोई उ मां देवाय नही. तेना रुपना जेवुं बीजी कोई स्त्रीनुं रुप नथी. नाग कन्याउमां एवी रुपवान नथी. गांधर्वनी कन्याउमां पण एनी बराबरी करनारी कोई मिलशे नथी. तो पछी मनुष्यनी स्त्री ते तेनी आगल शा हिसाबमां? सीताना यथास्थित रुपने धारण करवाने देव पण समर्थ न थाय, तेनो वेष लेवाने देवोना नटोनी शुं बिशाद छे! साक्षात ब्रम्हदेव पण तेनुं रुप लेवाने समर्थ थनार नथी, तेनी आकृतीमां. तेना वचनोमां, तथा तेना कंठमां जे मधुरता छे, अने तेना हाथ तथा पगमां जे रक्ततां छे, तेनी एक जुदीज तरा . घणु तो शुं पण तेनुं स्वजाविक रुप लिखवाने अथवा बोलवाने हुं समर्थ थनार नथी, परमार्थपणे कहुं छुं के, ए कन्या आ जामंडलने योग्य छे, एवो मनमां विचार करीने मारी बुद्धिए करी

ने तेने आ चित्रपट उपर मे लखी बतावी एवां ना रदाना वचन सांभलीने चद्रगति राजा पुत्रने कहे छे के हे पुत्र, ए तारी स्त्री थशे तु मनमा चिंता कर नही, एवी रीते तेनु समाधान करीने नारद मुनिने विदाय कर्यो पछी चपलगति नामना विद्याधरने आज्ञा करी के, तु जलदी जइने जनक राजाने हरण करी आंई लइ आव एवी राजानी रजा थताज ते विद्याधर रातना त्याहा जइ कोईने समजवा न देता जनक राजानु हरण करीने पोताना राजाने आवी सोंप्यो तेने जोईने चद्रगति राजा भाइनी परे स्नेह वडे आलिंगन करीने आसन उपर वेसाडी प्रेम सहित तेनी साथे भाषण करवा लाग्यो हे जनक राजा लोकोत्तर गुणोवाली जे तारी सीता नामनी कन्या ते आ रुप संपत्तिवान मारा भामडल नामना पुत्रने देवा योग्य छे ए सबंध वडे आपण वेउमा मित्रभाव थशे एवु ते राजानु वोलवु सांभलीने जनक राजा कहेवा लागो के, मारी कन्या मे रामने दीधी छे ते केम बीजाने आपु ! कन्या तो एकज वखत देवाय छे, चद्रगति बोल्यो हे जनक, स्नेह वधारवा सारू तने आंइ लावीने में कन्या विषे याचना करी तेने हरण करवाने हु पण समर्थ छु जो पण ते कन्या ते रामने दीधी छे, तो पण अमने जीत्या शिवाय राम तेने

वरवाने समर्थ थनार नथी, अने हजारो यक्षोए जे नुं रक्षण करेलुं छे, एवा महा तेजस्वी वज्रावर्त, तथा अर्णवावर्त, ए नामना बे धनुष्य देवतानी आ ज्ञाथी अमारा घर जे छे, ते हमणां कुल देवतानी परें पूजाय छे, ते नुं ले. तेमांना एक धनुष्यने जो रामे सज्ज कर्युं तो जाणे सर्व राजा जीताया, एम जाणीने पछी तारी कन्यानी साथें राम सुखे विवाह करे, एवी बलात्कारे जनक राजानी पासेथी प्रतिज्ञा करावीने तथा ते बेउ धनुष्य मिथिला नगरीमां लावीने पोताना पुत्र सहित राजग्रहमां चंद्रगति राजाए राख्या, अने पोते परिवार सहित नगरीनी बाहार रह्यो. ए सर्व वृतांत जनक राजाए पोताना विदहा स्त्रीने कह्यो. ते सांभलीने तेना हृदयमा शल्य जेवुं लाग्युं. पछी रुदन करती थकी ते कहेवा लागी. हे दैव तुं मोठो निर्दय छे. मारा पुत्रनुं हरण करतां पण तारी तृप्ती थइ नथी! हिवे कन्यानुं पण हरण करवाने तैयार थयो छे के! लोकमां पोतानी इछाए करी वर थाय छे, परइछा वडे थतो नथी. पण आ वखते दैवे करी परनी इछा वडे वर करवुं पडे छे आ धनुष्य विषे पण करेलो जो रामे पूरो न कर्यो, अने बीजा कोईए पूरो कर्यो तो इछीत वर मिलशे नही. एवुं राणीनुं बोलवुं सांभलीनें जनक राजा कहे छे हे स्त्री, तुं भीय नही. ए रा

मनो पराक्रम मे जोयो छे. आ धनुष्य तेने एक ल ता (वेल) जेवु छे, एवु विदेहा राणीनुं समाधान करीने तथा ते बेउ धनुष्योनी पूजा करीने ते स्वयंवर मडपमा राख्या, सीताना स्वयवरने वास्ते वोलावेला जे विद्याधर राजाओ ते पोत पोताना योग्य आसन उपर बेठा

पछी दिव्य अलकार धारण करीने पृथ्वी उपर फिरनारी देवागना जेवी पोतानी सखी सहित सीता मडपमा आवीने तथा धनुष्यनी पूजा करीने अ- त करणमा रामनो ध्यान धरती उभी रही, ते वखते नारदे कह्या प्रमाणे सीतानु रूप जोईने नामन्डल रा जाने कामज्वर उत्पन्न थयो पछी जनकनो द्वारपा ल सर्वने वोलवा लाग्यो हे राजाउ अमारा ज- नक राजानी आवी आज्ञा छे के जे कोइ पुरुष आ वे धनुमा एक धनुष्यनी कमान जडावशे, तेने मारी कन्या परणशे एवी प्रतिज्ञा सांभलीने माहा प- राक्रमी सर्व राजा धनुष्य चढाववाना हेतुथी तेनी पासें आवीने उभा रह्या, ते समयें मोटा मोटा स र्पे जेने घेरी लीधा छे. तीव्र छे जेनु तेज, एवा ते धनुष्योने जोईने तेओने अडकावनी पण कोईनी हि म्मत चाली नहीं. तो पछी तेने उपाडवु तो दूर र ह्यु [१] ते धनुष्योमाथी नीकलेला जे अग्नीना कण ते थकी वलता थका ते सर्व राजाउ एक तरफ बेठा

तेवार पछी जेणे सोनाना कुंडल कानमां पेहेरयांछे हार्थ.ना जेवुं जेनुं चालवुं, चंद्रगत्यादिक राजा जे नी सामे मस्करीथी जोइ रह्या छे, अने जेनी सामे शंका सहित जनक राजा जोइ रह्यो छे, एवा लक्ष्मणनो मोटो भाइ रामचंद्र निशंकपणे ते धनुष्य पासे जइने इंद्र जेम वज्रने ग्रहण करे, ते प्रमाणे सर्प तथा अग्नि जेना उपरथी शांत थइ गया छे. एवा वज्रावर्त धनुष्यने हातथी उपाडी पृथ्वी उपर राखीने वेतनी लाकडीनी परें नरम करीने ते धनुष्यनी कमान कान सुधी खेंची चढावीने सज्ज करयो पछी गर्जना शब्द वडे आकाश अने पृथ्वी विषे एकज ध्वनी थई रही, एवा वेगथी पोताना यशनी नोवतनी परें ते धनुष्यनो टणकार करयो, ते जोईने विलंब न करतां सीताए रामना गळामां स्वयंवर माला घाली. त्यार पछी रामचंद्रे धनुष्यनी प्रत्यंचाने उतारी नाखी. पछी रामनी आज्ञाथी लक्ष्मणे अर्णवावर्त धनुष्य सज्ज करीने तेनो टणकार करयो. तेना शब्दे करी सर्व लोकोना कान बेहेरा थई गया. पछी लक्ष्मणे ते धनुष्यनी प्रत्यंचा उतारीने फिरी ठिकाणा उपर राख्युं. ते जोईने विद्याधर अति विस्मय थईने देवांगना जेवी पोतानी अढार कन्या लक्ष्मणने आपी. भामंडल सहित चंद्रगत्यादी राजाओ लज्जायमान थईने पोतपोताना नग

र प्रत्यें गया. पछी जनकनी रजा लेइने दशरथ राजाए मोटा उत्साहे करी राम सीतानो विवाह कर्यो. ते वखतें जनकनो भाई कनक तेनी स्त्री सुप्रभाना उदरे थएली भद्रा नामनी कन्या भरतने आपी. ए सर्व थया पछी दशरथ राजा पोताना पुत्र तथा तेमनी स्त्रीउने साथे लेइने पोतानी अयोध्या नगरीमा आव्यो तिहां पोतानी प्रजा सहित मोटो उत्साह कर्यो.

कोइ एक समये ते अयोध्या नगरीमां एक सत्यभुति नामना चारज्ञानने धारण करनार महामुनि आवी समोसर्या तेनां दरशन करवासारू पोताना पुत्रादि परिवार सहित दशरथ राजा तिहां आवीने तथा तेने वंदना करीने धर्म देशना सांभलवा लाग्यो. एवा समयें वैताढ्य पर्वत उपर सीताभिलापे करी संतप्त थएला पोताना भामण्डल नामना पुत्र सहित चंद्रगति राजा विद्याधरोने साथे लेइने रथावर्त पर्वत उपर श्री अरिहंतनी वंदना करीने पाछो आवती वखतें आकाशमाथी ते मुनिने जोइने नीचे उतरीने तथा नमस्कार करीने धर्मदेशना सांभलवा लाग्यो. ते वखते सीतानी इछाथी भामंडलने तापे घेरी लीधेलो जाणीने सत्यवादी ते सत्यभुति सुरीए तेना पूर्व जन्मनु प्रस्तावन करी तेना पापनी निवृत्तिने अ-

र्थ चंद्रगति राजा, तेनी स्त्री पुष्पवती. भामंडल अ
ने सीता एबोनी पूर्व जन्मनी कथा कहीने प ा ते
ा जन्म ां सीता अने भामंडल ए बेऊं एकज ा
लें ग्म (जोडला) थयां तेमज भामंडलना हर
णनी था यथार्थ कही संभळावी. ए सर्व वृतां
त मुनिना मुख थकी भामंडले सांभल्याथी तेने
जातिस्मरण ज्ञान थयुं. तेथी मुर्छा खाइने
थ्वी उपर पड्यो. केटलाएक वखत पछी सावध
थइने सम्यग्ज्ञातए कहेलो पूर्व जन्मनो वृतांत
पोते कहेवा लाग्यो. ते सांभलीने चंद्रगत्यादि रा-
जा परम आश्चर्यने पाम्या. पछी माहा बुद्धिमान भा
मंडळे सीता मारी बेन छे एम जाणीने तेने नम
स्कार करवा लाग्यो. जन्मती वखतेज जेनुं हरण
थयुं ते आ ारो भाइ छे एम कही आनंद पामी
ने सीताए तेने अशीरवाद आप्यो. पछी जेणा-
अंग पर आनंदे करी रोमांच ठेलाछे अने
तत्काल जेने सुहृद भाव उपनो छे. एवो ते भामं
डल, तेणे भुमि उपर माथुं टेकीने रामने स्का
र कर्यो. ते वखत चंद्रगति राजाए जनक राजा-
नी तरफ दूत मोकलीने विदेहा सहित तेने बुला
व्यो. ते तिहां आव्या पछी तेउने भामंडलनो सर्व वृ-
तांत संभळावीने कह्युं के, आ ताहरो पुत्र छे. एवुं
तेनं बोलवुं सांभलीने मेघनी गर्जनाए करी जे

मोरने आनद थाय ते प्रमाणे जनक राजा अने तेनी स्त्री विदेहाने घणो आनद थयो, पछी विदेहाना स्तनोमाथी दूध निकलवा लाग्यु तेथी आ माहरा माता पिताछे एम भामडले जाणीने तेउने नम स्कार कर्यो. पछी तेउए पोताना पुत्रना माथानु चुबन करयु, ए सर्व जोइने ससारथी विरक्त थ यो थको चद्रगति राजा भामडरने राज्य उपर बे साडीने तेणे वसुभुति मुनिनी पासे दिक्षा लीधी तेवा'र पछी भामडल राजा सत्यभुति मुनिने, पोता ना पिता चद्रगति मुनिने, जनकने, विदेहाने, द शरथने, सीताने, तथा रामचद्रने नमस्कार करीने पोताना नगर प्रत्ये गयो, दशरथ राजा सत्यभुति मुनिने नमस्कार करीने पोताना पूर्व जन्मनो वृतात तेने पूछवा लाग्यो त्यारें मुनि कहे छे के, हे दशरथ,एक सेना पुर नामना नगरमा एक महात्मा भावन नामनो वाणी ओ रहेतो हतो तेनी स्त्री दीपिकाना उदरथी उपा स्थि नामनी कन्यापणे तु पूर्व जन्समा थयो, ते पुत्री साधुनी निंदा करनारी थइ, ते पापना यो गथी मरीने तेनो जीव बीजी पशुवादिक योनी ने पाम्यो एम करता कोइ एक समये चद्र- पुर नामना नगरमा धन्य नामना एक व्यापा रीनी स्त्री सुदरीना पेटे वरुण नामनो पुत्र थ यो ते भवमा तु उदार स्वभावने पामीने

सावुडने वास्ते इछा करतां वधारे दान देवा लागो. काले करी मरण पामीने धातकीखंड द्वीपमां उत्तर कुरुक्षेत्रने विषे युगलीआमां जन्म पाम्यो. त्याहांथी काल करीने एक देवलोकमां तुं देव थयो. त्याहांथी चवीने पुष्करार्ध नगरीमां नंदिघोष राजानी स्त्री पृथ्वी देवीना उदरथी नंदिवर्धन नामनो तुं पुत्र थयो. नंदिघोष राजा तने राज्य उपर बेसाडीने तथा पोते यशोधर नामना मुनिनी पासे दिक्षा लेइने ग्रईवेयक देवलोकने पाम्यो, पछी तुं श्रावक धर्म पालीने काल करी गया पछी ब्रह्मदेवलोकमां देव थयो. त्याहांथी चवीने पूर्व महाविदेहक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतनी उत्तर दिशा तरफ शशिपुर नगरना विद्याधरोना स्वामीनी स्त्री विद्युलताना पेटे महापराक्रमी सूर्यजय नामनो पुत्र थयो. एक समय रत्नमाली नामनो राजा अति गर्वीत विद्याधरोना स्वामी व्रजनयन राजाने जीतवा सारू सिंहपुर नामना नगरमां आवीने तेणे बाल, वृद्ध, स्त्री, पशु, तथा उपवन सहित ते नगरने बालवानुं सुरू करयुं. तेवा समयनां पूर्व जन्मनो उपाध्याय उपमन्यु नामनो काल करी गया पछी सहस्त्रार देवलोकमां देव थयो हतो, ते त्याहांथी आवीने रत्नमालीने कहेवा लागो के आ माहा पाप तुं किम करे. पूर्व जन्ममां तुं भूरिनंदन नामनो राजा हतो. ते वखते मांस

ठाना विषे तें प्रतिज्ञा करी एहवुं ते उपमन्यु कहे छे, ते सांभलीने त मुराटे बेशी गयो.

पछी पोताना पूर्व जन्मनो वृतांत तेने कहेवा लाग्यो के, हे राजा, एक समये एक स्कंद नामना पुरुषे पूर्वनवना हुं उपाध्याय हता मने मारयो, मू वा पछी मने हाथीनी योनी प्राप्त थई, तेने पकडीने भूरीनंदन राजा पोताना घर लाव्यो. एवी रीते तिहां केटलाएक काल रहीने एक वखत मध्यममा म रायो. तिहांथी भूरीनंदन राजानी स्त्री गधारीना पेटे माहरो जीव आरेसुदन नमनो पुत्र थयो ते नवमा जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं, तेथी दिक्षा लेईने काल करी गया पछी सहस्रार नामना देव लोकमां आ हुं देव थयो छुं. अने ते भूरिनंदन राजा मूवा पछी एक मोटो वनमां अजगर थयो. त्याहां ते दावानलमां बली मरीने नरकमां गयो. ताह री साथे माहरो पूर्वनो स्नेह होवाथी तिहां में आ वीने तने बोध करयो, त्याहांथी नीकलीने तुं आ जन्ममां रत्नमाली राजा थयो छे. पूर्वे तें मास खा वानी प्रतिज्ञानो भंग करयो, तेथी ते एटला जन्म लीधा त्यारे हिवे अनेक दुःखने उत्पन्न करनारूं अ घोर कृत्य जे आ नगरनुं बालव तेने तुं मूकी दे. एहवा ते देवना वचनो सांभली, तथा ते युद्धथी पराङ्मुख थइने तेनज पोताना कुळनंदन नामना

पुत्रने राज्य उपर बेसाडीने पोताना बीजा सूर्यजय ना मना पुत्र सहित तेज वखत एक त्रिगुप्ताचार्य पासें दिक्षा लीधी, पछी ते बेहु पिता पुत्र सहित मरण पाम्या पछी महाशुक्र देवलोकमां देव थया. सूर्यजय तिहांथी चवीने आ तुं दशरथ राजा थयो, अने ते रत्नमाळी देवलोकथी चवीने आ जनक राजा थयो छे, ते उपमन्यु जनकनो मोटो भाई कनक नामे थयो. नंदिवर्धनना भवमां ताहरा पिता जे नंदिघोष ते हुं ग्रैवेयक देव लोकमांथी चवीने आ सत्यभूतेना नामें थयो छुं. एवां ते मुनिना वाक्य सांभळीने ते दशरथ राजा समकितने पाम्यो. पछी ते मुनिने नमस्कार करीने दिक्षा लेवानी इच्छाथी तिहांथी उठीने पोताना घरे आव्यो.

तेवार पछी दशरथ राजाए पोतानी स्त्रीओ, पुत्रो तथा मंत्रीउ वगैरे सर्वने बोलावीने दिक्षा लेवा विषे तेवोने पूछवा लाग्यो. ते वखतें भरत नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो के, हे राजा, तुमारी सायें हुं पण दिक्षा लेइश, तुमारा शिवाय हुं एक घडी पण रहेनार नथी. हे स्वामी तुमारा चरणोनो विरह, ने बीजो आ संसारनी पंचायत ए बेउं महा मोटा दुःख माहराथी केम सहन थाय? एवां भरतना वाक्यो सांभळीने कैकई विचार करवा लागी, के जो भरत दिक्षा लीवी तो हुं तेज दिवसथी पुत्र तथा पति

रहित थइ. एम जाणीने बोलवा लागी के हे स्वा मीनाथ, पूर्वे स्वयवरोत्सवमा मे तुमारू सारथ्य क र्म करयु तेथी प्रसन्न थईने जे तुमे वरआप्यो छे, तेनी तुमने याद छे के ? हे नाथ ते वर आ समये पूर्ण करो. कह्यु छे के, " महात्मा पुरुषनी प्रतिज्ञा पथ्थर उपरनी रेखनी बराबर छे " एवु तेनु बोल वु सामलीने, दशरथ राजा कहेवा लाग्यो के, मे जे पूर्वे अगीकार करयु ते तेनु मने हजी स्मरण छे. तेने बदले एक दिक्षाना निषेध शिवाय जे ताहरी इ छामा आवे ते मागी ले त्यारे कैकई कहेवा लागी. हे स्वामी, जे तुमे दिक्षा लेवो तो आ पृथ्वीनु रा-ज्य माहरा पुत्र भरतने आपो त्यारे दशरथ राजाए कह्यु के, ले आ पृथ्वी आजथीज एने मे आपी. ए म कहीने लक्ष्मण सहित रामनी साथे राजा बोल वा लाग्यो के पूर्वे एना सारथ्य कर्म करीने राजी थइ ने मे एने वर दीधो हतो. ते आज एने भरत पुत्र ने राज्य देवा विषे मागी लीधो त्यारे राम बोल्यो, कैकई माताए ए घणुसारू करयु, अने माहरो भाइ जे भरत ए ने राज्यदान करवा विषे पिताए मने पूछवु, एथी मा त्र मारू मन खिन्न थाय छे राजाए सतुष्ट थइने को ई एक चाकरने राज्य आप्यु होय, तो पण तेना निषेधमा अथवा अनुमतिमा हु समर्थ थनार नथी केमके मने तो पितानी आज्ञा पालन करवा योग्य छे.

ने एज माहरो धर्म छे, भरत जे छे ते हुंज छुं, अने तमने अमे बेउं सरखा छैए, माटे मोटा आनंदे करी भरतने राज्य उपर बेठावो. एवुं रामनुं बोलवुं सांभलीने दशरथ राजा विस्मित थइने प्रधानोने कहे छे, एटलामां भरत बोल्यो. हे स्वामि तुमारी साथे दिक्षा लेवाने में प्रथमज प्रार्थना करी छे. ते कोईना केहेवा अन्यथा थनार नथी, एवुं भरतनुं बोलवुं सांभलीने राजा कहे छे के, हे वत्स, माहरी प्रतिज्ञा तुं खोटी कर नही, तारी माताने में वर आपीने मारी पासे आज दिवश सुधि राख्यो हतो, तेनो बदलो आज केकइए तने राज्य देवानो मांग्यो, ते तारी माताना आज्ञा फेरववा योग्य नथी, तेवारे पासे बेठेलो राम पण भरतने कहेवा लाग्यो के, तने जो पण गर्व नथी तो पण पिताना प्रतिज्ञा पालवा सारू तुं आ राज्य कर. एवुं रामनुं बोलवुं सांभलीने जेनी आंखोमां पाणी आव्युं छे, एवो ते भरत रामना पगउपर माथुं राखीने तथा हाथ जोडीने गदगद स्वरे बोलवा लाग्यो. आ राज्य देवाने पिताथी तुमे योग्य छो, पण मने ए राज करवा योग्य नथी, तुमे पिताना पुत्र छो ने हुं पितानो पुत्र नथी के शुं ! तुमारोनानो भाई हुं छुं आ निंद्यकर्म जो में करयुं तो मारा जेवो बीजो कोइ मुर्ख नथी. एवुं तेनुं बोलवुं सांभलीने राम कहे

छे, हे राजा, हु आंहि छता आ भरत राज्य करनार नथी तेथी हु वनवाश जाऊ छु ए प्रमाणे राजानी रजा लेइने तथा भक्ति वडे पिताने नमस्कार करीने ते समयें भरत रुदन करतो छता तेने मूकीने पोताना धनुष्य बाण हाथमा लेइने राम वनवाश जावा सारू बाहार निकल्या.

राम वनवाश जाय छे,एम जोईने दशरथ राजा वारवार मुर्छा खाइने पडवा लाग्यो, पछी राम कौशल्याने नमस्कार करीने तेने कहे छे के, हेमाता, हु तारो जेवो पुत्र छु, तेवोज तने भरत छे पोतानी प्रतिज्ञा साची करवा सारू पिताए तेने राज्य दीधुं ते हु आंइ छता ते राज्य लेतो नथी ते कारण माटे हु आवश्य वनमा जावु छु, जेवी मारी उपर तारी प्रसन्न द्रष्टी छे, एवीज भरत उपर राखजे मारा वियोगथी तु कदी पण दुःखी थाजे नही एवी रामनी वाणी सांभलीने कौशल्या मुर्छीत थइने पृथ्वी उपर पडी दासीए सीतल जल तेना अंग उपर छांट्याथी सावध थइने बोलवा लागी मने कोणे सावध करी? आ मुर्छा सुखे करी मृत्युने कारण छे, रामना विरहथी थता दुःखने हु जीवती रहीने केम सहन करू? पुत्र वनमा जशे ने पति दिक्षा लेशे, ए सांभलीने मारू मन केम विदारण न थाय! त्यारे फिरी राम कहे छे के, हे माता, तुं माहरा पितानी पत्नी छता

सामान्य स्त्रीउना योग्य एवां केहवां कामनो तें आरंभ करयो छे? सिंहनो पुत्र एकलो वनमां फिरवा जाय छे ते वखतें तेनी माता सिंहणीनुं चित्त स्वस्थ होय छे, कदी पण मनमां भय पामती नथी तेम तने पण भय पामवुं नही. ए जे आपेलो वर ताराा बापने मोटो ऋण हतो. तेथी आजे ते बूट्यो, ते घणुं सारूथयुं. हूं जो आंई रह्यो तो हे माता, मारो पिता कर्जथी केम मूकाशे! इत्यादिक युक्तिना वचनोथी कौशल्यानुं समाधान करीने तेने तथा बीजी माताउने नमस्कार करी राम तिहांथी जावा निकल्यो.

ए सर्व जोई सीताए दूरथी दशरथ राजाने नमस्कार करी कौशल्या पासे आवीने तथा तेने नमस्कार करीने रामना अनुलक्षे जावा सारू आज्ञा मांगी, ते समयें कौशल्या जानकीने खोळामां लेईने नेत्रोना उष्ण आंसुना पाणीथी तेने स्नान करावती की तेने कहेवा लागी के, हे वत्से रामचंद्र पोताना पितानी आज्ञाए वनमां जाय छे. ते नृसिंहने मांर हेवुं कठिण नथी. परंतु जन्मथी उत्तम वाहनादिके करी लालित एवी तुं देवी जेवी पगे करी चाली जवानी पीडा केम सहन करीश! कमलफूल जेवा कोमल जे तारो अंग, ते तापादिकना योगे क्षीण थएलो जोईने रामने पण दुःख थशे, तथापि तुं पोताना पतिनी साथे जाय छे, तेमज जातां तने घणुं कष्ट थशे. एवुं

मनमां आणीने मोकलवाने तथा रोकवाने हुं समर्थ थई शकती नथी एवु पोतानी सामुं बोलवु सांभलीने शोक रहित सीता कौशल्याने नमस्कार करीने कहे छे के, हे कौशल्या माता, मारी भक्ति तुमारा आधीन छे, तेना योगे मार्गमा ते मने कल्याण कारक थशे. विद्युल्लता जेम मेघ बराबर जाय छे तेम हु रामनी साथे जाऊ छु. एम कही फिरी कौशल्याने नमस्कार करी तथा मनमा रामनो ध्यान धरती वनमा जावा सारू निकली, ते वखतनी जे पति भक्ति तेना योगे पतिव्रता स्त्रीउने प्रथमज जानकी उदाहरण रूप थइ. दु ख थकी भय न पामनारी, पतिव्रतामां शिरोमणी जे आ सीता, ते पोताना शील वडे पोताना पतिना कुलने पावन करे छे. माटे एने धन्य छे एवा शोकें करी गद्गद् वाणी वडे वर्णन करनारी नगरनी स्त्रीउ वनमा जवावाली सीताने मोटा सकटथी जोवा लागी

तें वखतें राम वनमा जवा वास्तें निकल्यो एम जाणीने मोटा क्रोधमा आवीने लक्ष्मण मनमा विचार करवा लाग्यो के, पिता तो स्वभावें करी सरल छे, परंतु तेनी स्त्रीओ स्वभावे करीने कपटी छे, एटला दिवश वर पोताना मनमा राखीने हमणा आ अनुचित मागी लीधो राजाए भरतने राज्य आप्युं ने ते हेतुंथी पोतानु ऋण फेड्यु तेना ऋणना भयथी अमे मू

काया. हिवे आ मारो क्रोध मिटाववा सारू निर्नय थईने आ भरत पासेंथी राज्य हरण करीने रामने राज्य उपर बेसाडुं! पण आ राम महासत्यवान छे. तेणे राज्य ने तृणनी परें मूकी दीधुं. तेनुं पण तेने दुःख थयुंनही वली भरत पासेंथी राज्य लेवाथी पिताने पण दुःख थशे ! माटें भरत, राजा थावो ! वगेरे गमे ते था- . हुं तो रामनी चाकरी करवा सारू तेनी साथे ज इश, एवो विचार करीने लक्ष्मण पोताना पिताने न मस्कार करीने तथा पुछीने सुमित्राने पुछवा सारू नि कल्यो. सुमित्रा पासे आवीने तथा तेने नमस्कार क रीने कहेवा लागो. राम वनमां जाय छे तेनी साथे हुं पण जाऊ छुं. मर्यादशील जे राम ते शिवाय लक्ष्मण रहेवाने समर्थ नथी. एवुं तेनुं बोलवुं सांभली सुमि- त्रा कींचित धैर्य धारण करीने लक्ष्मणने कहे छे. हे ालक, तुं मोटा भाइनी पाछल जाय छे, घणुं सारूं छे. तुं माहरो पुत्र छैए. माटे ए कामथी हुं राजी थाउ छुं. मने नमस्कार करीने आंइथी राम गयाने घणो वखत थइ गयो, हिवे तुं विलंब मती कर. एवुं माता नुं बोलवुं सांभलीने लक्ष्मण कहेवा लागो. के हे मा ता, तें घणुं सारूं कह्युं. तुं माहरी साची माता छैए. एम कही तेने नमस्कार करीने कौशल्याने पगे ला गवा सारू चाल्यो. तेने नमस्कार करीने कहेवा ला ग्यो के. माहारो मोटो भाइ एकलो न ां गयो. हुं

पण तेनी पाछळ जवा सारू निकळवानी आगमज तने पुछवाने आव्यो छु एवु लक्ष्मणनुं बोलवु सांभ ळीने तेने कोशल्या कहेवा लागी के, हुं मोटी मंद भाग्य छु केमके, तु पण मने मूकीने वनमा जाय छे, मने धैर्य देवासारू तु एकलो तो आइ रहे. त्यारे ल क्ष्मण तेने कहे छे के, तु रामनी माता छैए माटे सा मान्य स्त्रीओने परे तने धैर्य मूकवा योग्य नथी माह रा भाइने वनमा गये घणो वखत थयो, अने त दूर गयो हशे माटे मने विलंब न करता तेनी पाछळ ज वु जोइए तेमा विघ्न करवु तने योग्य नथी हु रामनो आधीन छु एवु भाषण करीने तथा तेने नमस्कार करी ध नुष्य बाण हाथमा लेइने मोटा वेगथी रामनी पासे गयो

विकसित मुखकमळ छे जेमना, वनमा जवाने त त्पर थएला, क्रीडा वनमा जवानी परे ते त्रणे जण नगरथी बाहार निकल्या ते वखते नगरीना लोको जेम देहमाथी प्राण निकळती वखते दु ख थाय, ते- म राम, लक्ष्मण तथा जानकी वनवास जावा सारू निकल्याथी ते स्त्री पुरुषो दु ख पामवा लाग्या आ कैकेई मोटी क्रुर छे, आ विधाता दूष्ट छे एम बोलता थका सर्व प्रजालोक शोक करता करता मोटा वेगथी राम नी पाछळ दोड्या. तेमज नेत्रमा पाणी आणी पोता

ई. ते सर्व रामनी पासे आव्याथी तेमां पोताना मा
बाप छे, एम जोईने राम चालतो उभो रही गयो. प
छी विनय सहित वाणीथी तेउने समजावीने रामे पा
छा फेरव्या, नगरीना लोकोनी साथें पण यथोचित
बोलीने तेमने विदाय कर्या, तदनंतर सीता तथा
लक्ष्मण सहित राम उतावलो वननी तरफ चालवा
लाग्यो. जे जे गाममां तेउ जाये, तिहांना मोटा मोटा
लोको तेउने रहेवा बाबत घणी प्रार्थना करवा ला-
ग्या. परंतु ते किहांए रह्या नही.

आंइ भरतने पोताना भाइनो विरह थयाथी ते
राज्यने ग्रहण न करतां कैकइनी निंदा करीने पोता
ना पितानी साथें दिक्षा लेवाने तइयार थयो, अ
ने लक्ष्मण तथा सीता सहित रामने पाछो बोलावी
लाववा सारू पोताना प्रधानोने मोकल्या. प्रधानो
तिहांथी निकली मोटा वेगथी रामनी पासे आवीने
तेउने पाछा फेरववा सारू तिहां घणी युक्तिओ करवा
लाग्या.तथा घणी प्रार्थना करी. पण राम पाछो फि
र्यो नही. कह्युं छे के, "मोटानी प्रतिज्ञा कदी पण पाछी
फिरती नथी." पछी रामचंद्रे तेमने पाछा जवानुं घणुं
कह्युं तथापि तेओपाछा न फिरतां रामनीसाथे चालवा
लाग्या.चालतां चालतां जेमां मोटा व्याघ्रो विचरी र
ह्या छे. कोइ माणसनुं तो जेमां पगलुं पण मिले नही;
जिहां जुवे तिहां झाडविना बीजुं कांइ पण दीठामां आ

वे नही एवी वन आटवीमा राम, लक्ष्मण तथा सीता वगैरे सर्व सथवारो आव्यो ते वनमा एक नदी आवी. मोटो छे जेनो प्रवाह पाणीना मोटा मोटा चक्रावर्त थइ रह्या छे, तेने जोइने तथा तेना किनारा उपर आवी ने रामचद्र पोताना प्रधानादिकोने कहेवा लाग्यो, हिवे अहिथी तुमे पाछा जावो. आगल रस्तो घणो कठण आव्यो छे अमारी कुशल वारता अमारा मा वापने ज इ काहिजो अमारी माताओ तथा भरतनी सारी रीते सेवा चाकरी करजो. एवा रामना वाक्यो साभलीने ते प्रधानादिकोना मनमा करुणानो भाव उत्पन्न थया थी आखोमाआसु आव्या तेथी वस्त्र भिजाइ गया. तेउना गद्गद कठ थएथी मुखमाथी शब्द निकलवा नी शक्ती रही नही, तथापि आ रामना चरणकमल नी पासे अमारी योग्यता क्याथी? रामनो वियोग थ यो माटे अमने धिक्कार छे एम जेम तेम बोलीने त था माहा सतापे करी पाछा फिरया

तेवार पछी सीता तथा लक्ष्मण सहित राम ते न दी उतरीने पेली तरफ गया. ते वनमा जतां जिहां सुधि देखावा लाग्या, तिहा सुधि ते प्रधानादिको ते मने जोता उभा रह्या ज्यारे अदृष्ट थया, त्यारे ते अयोध्या नगरी तरफ चालवा लाग्या. तिहा आवीने सर्व वृतात राजाने कह्यो त्यारे दशरथ राजा भरत ने कहेवा लाग्यो के, राम पाछो आव्यो नही हिवे तु

राज्यने अंगीकार कर. तेम ते न करयांथी माहरे दि
क्षामां विघ्न थशे, माटे एम करवुं तने योग्य नथी.
त्यारें भरत कहेवा लाग्यो के, हे पिता, ने राज्यनी
खप नथी. हुं पोते मारा भाई रामनी पासे जई ते
ने राजी करीने पाछो बोलावी लावीश. एम कहीने
तिहांथी भरत निकल्यो त्यारे तेनी माता कैकई राजाने
कहेवा लागी के, हे राजा, तुमे भरतने राज्य आप्युं,
तेथी तुमारी प्रतिज्ञा साची थई. हिवे आ तुमारो वि
नई पुत्र राज्यने ग्रहण करतो नथी, तेमज तुमारी बी
जी सर्व स्त्रीउने घणुं दुःख थाय छे. केमके मे ए का-
म करतां कांइ पण विचार करयो नही. तेथी तुमे पु
त्र सहित तां राज्य अराज्य रूप थयुं. कौशल्या,
सुमित्रा, तथा सुप्रभा, एमनुं रडवुं कोईथी पण सह-
न थतुं नथी. ते रोदन सांभलीने मारूं हृदय पण फा
टी जाय छे. त्यारें हिवे आ भरतनी साथे हुं जइने
लक्ष्मण तथा सीता सहित रामने पाछो लावियाथी स
र्वने सुख थशे. माटे मने आज्ञा आपो. एवां कैकइना
वचनो सांभलीने राजा घणो राजी थयो, अने तेमने
जवाने रजा आपी. भरत तथा कैकइ गामथी निक
ल्या पछी छठे दिवशे तिहां जइ पहोतां. ते वखते राम,
लक्ष्मण तथा जानकी, ए त्रणे जण एक झाडना छाया
मां बेठां हता. तेमने जोइने कैकइ रथमांथी नीचे उ
तरीने तेमनी पासें आवीने मोटा प्रेमे करी तेमने क

हेवा लागी हे वत्स, हे वत्स, एटलामां रामे आवीने तेने नमस्कार करयो त्यारें ते तेना माथानु चुबन करवा लागी तेमज सीता अने लक्ष्मणे नमस्कार करयो त्यारे तेउने पेटनी साथे दावीने मोटा स्वरे रूवा लागी तेवार पछी भरत रामने नमस्कार करीने घणा स्नेहमा आव्याथी मुर्छा खाइने जमीन उपर पड्यो. एम जोइमे रामे तेने सावध करयो त्यारें ते काइक शुद्धिमा आवीने रामने कहेवालाग्यो

हे मारा प्रिय बधु, भक्तनी परे मने मूकीने तु आ अरण्यमा केम आव्यो ! "माताना दोष वडे भरत राज्यनो अर्थी थयो," एवो माहरी उपर लोकोनो अपवाद आव्यो छे ते तु महारी साथे चालीने दूर कर अने अयोध्या नगरीमां आवीने तिहानी राज्य लक्ष्मीनो उपभोग ले हे भ्राता, एम करया शिवाय माहरो लोकोपवाद दूर थवानो नथी तु राज्यासन उपर बेठ्याथी जगतनो मित्र जे लक्ष्मण ते ताहरो प्रधान थशे हु ताहरो द्वारपाल थइश अने शत्रुघ्न छत्र धारण करनारो थशे एहवा दिनता सहित भरतना वाक्यो सांभलीने तेने टेको देवा सारू कैकइ बोलवा लागी हे वत्स, तु सदा भाइउ विषे दयालु छेए तेथी आ भरतनु बोलवु तने मान्य करवा योग्य छे आ कृत्यमा ताहरा पितानो दोष नथी. ए केवल आ मुझ अभागणीनो दोष छे, स्त्रीओनो

एवो दुष्ट स्वभावज होय छे; माटे तेने धिक्कार छे आ कृत्यथी एक व्यभिचार शिवाय बीजा सर्व दोष मारामां संभवे छे. लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुमित्रा, कौशल्या तथा सुप्रभा वगेरेने आ कामेकरी में जे दुःख दीधुं छे ते तुं सहन कर, तने हुं प्रिय पुत्र समजु छुं. अने एवा हेतुथीज आ मारूं बोलवुं छे. ते तुं मान्य कर. एवुं कैकईनुं करुणात्मक बोलवुं सांभलीने तेने राम कहेवा लाग्यो. हे कैकई माता, हुं दशरथ राजानो पुत्र थईने मारी करेली प्रतिज्ञाने केम मूकु? तेणे आ भरतने मारी सन्नाथी राज्य आप्युं छे. ते दशरथ मारो पिता, तथा आ मारो भाइ, ए बेउजण जीवतां छतां मारा वचनने हुं केम फेरवुं? भरतने राज्य करवा विषे अमारी बेउनी आज्ञा छे. तेम छतां पोताना पिता प्रमाणे मारी आज्ञा पण फेरववाने आ भरतने योग्य नथी. एटलामां सीता पाणीभरी आवी, ते वडे तिहां आवेला सर्व सामंतोनी साक्षीए रामे भरतने राज्याभिषेक कर्यो. ते वखते नाइलाजथी रामने कांइ पण कह्या विना सर्व मुकाटे रही गया. पछी रामे अति आनंद वडे कैकईने न स्कार कर्यो. तेमज भरतनो यथायोग्य आदर सत्कार कर्यो. अने तेउनी साथे मधुरवाणी वडे भाषण करीने तथा तेउने घणी रीते समजावीने पा । अयोध्या नगरी तरफ रवाने कर्या. अने पोते दक्षिण दिशा तरफ चाल्या.

पछी केटलाएक दिवशे भरत अयोध्यामां आवीने पोता ना पिताना तथा भाइनी आज्ञाथी जेम तेम राज्य करवा लाग्यो. अने दशरथ राजाए पोताना परिवार सहित सत्यभुति मुनिनी पासे दिक्षा लीधी. पछी भरत राजा पोताना मोटा भाईना वनवाशना दुःखे करी पीडाणो थको अरिहंत पूजामां तत्पर थईने घणो वखत धर्म ध्यानमां कहाडवा लाग्यो. पण लक्ष्मण तथा सीता सहित राम नाना प्रकारना महा विकट वन तथा पर्वतोने उलघन करीने चित्रकुट नामना पर्वत उपर जई पहोता. तिहां केटलाएक दिवश रहीने कोइएक समयें एक अवंति नामनी नगरीना सिमाडामां आव्या.

इति श्री हेमचद्राचार्य विरचिते श्री रामलक्ष्मण चरित्रे राम लक्ष्मण सीता उत्पत्ति तथावनवाश गमननो नाम चतुर्थ खरु समाप्तः

अथ श्री राम लक्ष्मण चरित्र कथा पांचमो खड प्रारंभः

एवीरीते रामचंद्रजी रस्ते जता जानकीने अति थाक लाग्याथी तेने विसामो खवराववा सारू एक वडना झाड निचे बेठा आम तेम सर्व दिशा तरफ जोईने रामचद्र लक्ष्मणने कहे छे. आ सर्व देश उज्जड

जणाय . ते कोईना नय शिवाय थाय नहीं. त्यारे अ
हीं कोइनो नय हशे! चारे तरफ उद्यानोमां पाणी न
र्युं छे. धान्यना खलामां जेमनुतेम धान्य नरेलुं दीठा
मां आवे छे. ए उपरथी ए देश हमणांज शुन्य थयो
जणाय छे. एटलामां कोईएक वाटमारगोने जतो जोई
ने तेने पू छुं के आ देश शुन्य थवानुं कारण शुं छे!
त्यारे ते माणस रामचंद्रने कहेवा लाग्यो.

अ ति ना ना देशमांनी अवंति नामनी नगरीनो
स्वामी सिंहनी परे शत्रुओने दुःसह सिंहोदर ना -
नो राजा छे. तेनो एक दशांग पुरनो स्वामी वज्रक
र्ण ना नो सुनट एक समये वनमां गयो. तिहां एक
कायोत्सर्ग धारण करनारा प्रीतिवर्धन नामना महामु
निने जोईने तेने ते कहेवा लाग्यो के, हे मुनि, ए
वन ां तुं ामनी परे शा सारू उन्नो छे! त्यारे मुनि
ए क ुं के ुं मारा आत्माना कल्याणने अर्थे ीं
उन्नो ुं. त्यारे फिरी तेणे पूछ्युं के, जेमां खावा पि
वाने पण कांइ न मिले एवा आ जंगलमां तारा आ
ानुं शुं सारू थवानुं छे!त्यारे ुनिए जाण्युं के आ
जीव धर्म सांनलवा योग्य . एम जाणीने तेने आ
हितरुप धर्म कह्यो. ते सांनलीने तथा त ाळ
ते श्रावकपणाने पामीने "अरिहंत देव, तथा जैनलिं
गी साधु शिवाय बीजा कोईने ुं नमस्कार रनार
नथी" एवो ते मुनी पासे पाको नि ह करीने त

था तेने नमस्कार करीने दशांगपुरमां गयो त्या
हा श्रावकपणु पालीने मनमा विचार करवा लाग्यो
के, मे कबुल करेला शिवाय बीजा कोईने नमवु नही,
एवो निग्रह कर्यो खरो पण जो आ सिंहोदर राजा
ने हु नमस्कार करीश नही तो ए मारो वेरी थशे प
छी तेणे एक रत्ननी वींटी करावीने तेमा श्री मुनिमु-
व्रत स्वामिनी प्रतिमाने राखीने ते वींटी पोताना हा
थनी आगलीमा घाली सिंहोदर राजाने नमस्कार
करती वखत पोताना हेतु प्रमाणे ते प्रतिमानेज न
म्यो एम मानी लीधु. कह्यु छे के "बलवाननी आ
गल कपट कर्या विना छुटकोज नही.

एम केटलाएक दिवश गया पछी कोइ एक माणसे
वज्रकर्णनो सर्व वृतांत सिंहोदर राजाने कह्यो, ते
सांभलीने सर्पनी परे मोठा श्वासोश्वास लेतो थको
ते सिंहोदर राजा महाकोपायमान थयो. ए वात को
ईएक पुरुषे वज्रकर्णने जई कही. त्यारे तेने ते पूछवा
लाग्यो के, राजानो मारा उपर कोप थयो ते तें शा
उपरथी जाण्यु त्यारे ते कहेवा लाग्यो.

कुन्पुर नगरमा एक समुद्रसगम नामनो वाणियो श्रा
वक छे तेनी स्त्री यमुनानो हु विद्युद्वेग नामनो पुत्र हुं
मने यौवन अवस्था आव्या पछी वस्त्र पात्रादिक लेई
ने विकरी करवा सारू उज्जयनी नगरीमा हु गयो
तेमां जता एक मृगना जेवा नेत्रोवाली कामलता ना

मनी वेश्याने में दीठी. तेथी कामना बाणे करी हुं पि डाणो. पछी तेनी पांसे एक रात रेहेवाना मनसुबाथी तेम करीने में मारी कामना पूरी करी. पछी जेम ला- लचे करीने मृग पासमां बंधाइ जाय छे, तेम हुं प्रीति ना आवेशथी त्याहां फसाई पड्यो, मारा पिताए आ खा जन्म पर्यंत मेलवेलुं द्रव्य, ते में वेश्यानी संगती थी एक महीनामां उडावी नाख्युं. एक दिवसे ते वे श्याए मने कह्युं के. सिंहोदर राजानी स्त्री श्रीधराना कानना कुंडलोना जेवा कुंडल मारा सारू लेइ आव. ते वखते मारी पासे कांइपण द्रव्य रह्युं नहोतुं, पछी राणीना कुंडल चोरने लाइ देवानी मरजीथी तेज रा तना चोरी करवा सारू हुं राजाना मेहेलमां पेठो ते वखतें राणी राजाने केहेती हती के हे नाथ, चिंतातु र पुरुषनी परे आज तमने उंघ केम आवती नथी? त्यारें ते राजा बोल्यो के; जिहां सुधि मने नमस्कार न कर नारो वज्रकंठने में मार्यो नथी तिहां सुधि मने उंघ क्यां थी? सवार तथांज तेना पुत्र बंधु परिवार सहित तेने मा रीने पछी सुखे उंघ लेइश. एवुं तेनुं बोलवुं में सांभ ली लीधुं. तेज वखते हुं मारूं काम मूकीने तुं मारो सा धर्मी छे तेथी जलदी दोडीने तने केहेवा आव्यो छुं. ए वो वृतांत सांभलीने तेज वखतें वज्रकर्णे पोतानुं स रंजाम तइयार कर्युं. एटलामां बाहारथी आवेलाको इ बीजा लश्करनी दीधु उडती आकाशमां तेणे दी

ठी तेने जूए छे, तेटलामा जेम चदनना झाडने सर्प घेरो घाले, तेम सिंहोदर राजाना सैन्ये दशागपुर नगरने घेरो घाल्यो. पछी सिंहोदर राजाए वज्रकरणनी पासे एक दूत मोकल्यो ते द्रूत तेनी पासे आवीने कहेवा लाग्यो हे वज्रकरण, अमारा राजाए एवी आज्ञा करी छे के आज दिवश सुधि तें मारी कपटे करी वदना करी ते मे जाण्यु, पण हिवे ते वींटी हाथमां न घालीने मने आवी नमस्कार कर नितर कुटुंव सहित तने आजे हु यमने घर मोकलावीश एवु तेनु बोलवु सानलीने वज्रकरण कहेवा लाग्यो के, अरिहत अथवा तेना साधु शिवाय कोइने हु नमस्कार करनार नथी एवो मारो पण छे, ते पराक्रमनो अनिमान नथी मण धर्मनो अनिमान छे. ते माटे एक नमस्कार शिवाँय वीजु जे काइ मारा घरमा छे, तेनी तने इछा होय तो लइजा. मने मात्र धर्मनो द्वार आप धर्म सारू अहिंथी हु बीजा ठेकाणे जइ रहीश. ए सर्व वात दूते जइने सिंहोदर राजाने कही. ते सानलीने तेना नापणने मान दीधो नही. कह्यु छे के," मानी पुरुपो धर्म अथवा अधर्मने कदी पण मानता नथी."

पछी सिंहोदर राजा वज्रकरणसहित नगरने घेरो घालुने तथा वाहार रहीने आखा देशने लूटवानुं सुरू करयुं, तेना नये करी आ देश उजड थइ गयो. हु

राजाना नयथी मारा कुटुंब सहित तिहांथी नाशी गयो. आ नगरमांना सर्व घरो आज बली गया. मारूं घर घणुं जुनुं छे, ते जोइने क्रुर बुद्धि जे मारी स्त्री, तेणे मने बलेला साहुकारना घरमांथी सामान लेइ आववाने मोकल्यो छे. तेना ते दुष्ट वचनो वडे आ तुमारा दरशनरूप शुन्न फल थयुं. मोटा प्रालब्धना योगे देवनी परें में आज तुमने दीठा. एवी रीते ते दरिद्री पुरुप दीनतांथी बोल्यो त्यारें रामचंद्रने तेनी उपर दया आवी तेथी पोताना सोनानो कंदोरो तेनें आप्यो. पछी ते पुरुषने जवानी आज्ञा करी. पोते तिहांथी चाल्या दशांगपुरमां आवी श्री चंद्रप्रन्न अरिहंतना चैत्यने नमस्कार करीने तिहांज रह्या.

पछी रामनी आज्ञा लेईने लक्ष्मण नगरमां वज्रकरण पासे गयो. तेने कोई उत्तम पुरुप जाणीने वज्रकरण बोलवा लाग्यो के, हे माहान्नाग्य तुमे आज माहरे घरे पावणा थइने न्नोजन करो, त्यारें तेने लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के, पोतानी स्त्री सहित मारो स्वामी बाहार उद्यानमां बेठलो छे. प्रथम तेने न्नोजन करावीने पछी हुं जिमीश, त्यारें वज्रकरणे सीता सहित रामने बोलावीने न्नक्ति सहित न्नोजन पदार्थ तेमनी पासे लावी राख्यो. तेनुं आनंद सहित सर्वें न्नोजन कर्युं. पछी रामनी आज्ञाथी लक्ष्मण अवंती नगरीमां तिहांना राजा पासे जइने मधुर न्नाषणथी

केहेवा लाग्यो ,के, जेने सर्व राजा आधीन एवो भरत छे तेनी एवी आज्ञा छे के,वज्रकरणनी साथे वेर करणो नही.
एवु सांभलीने सिंहोदर राजा कहेवा लाग्यो के, हे लक्ष्मण, भरत राजा पण पोताना भक्त उपर अनुग्रह करे छे, बीजानी उपर करतो नथी, आ माहरो सेवक वज्रकरण मोटो दुष्ट छे मने नमस्कार करतो नथी. तेना उपर हु एम अनुग्रह करूं? त्यारे लक्ष्मण बोलवा लाग्यो के, ए तारो अभक्त नथी एने नमस्कार न करवानो निग्रह धर्मना अनुरोधे करी छे. माटे एना उपर कोप करवो तने योग्य नथी समुद्र सुधि पृथ्विनो स्वामी भरत राजा छे, तेनी आज्ञा तु मान्य कर एवु सांभलीने सिंहोदर क्रोधमां आवी बोलवा लाग्यो, अरे! भरत राजा कोण छे? जे माहरा आधीन छता वायुवाला माणसनी परें एटली वड वड करी रह्यो छे! त्यारे कोपे करी नेत्रो राता करीने तथा होट चावीने लक्ष्मण बोल्यो. अरे! भरतने तु जाणतो नथी के? हवे तेनी तने जलदी जाण करू छु उठ मारी सामेज युद्ध करवाने उभो रहे ए मारी भुजारूप वज्रे करी तु ताडित थएथी गोधाना जेवी तारी अवस्था थशे त्यारे जेम बालक राखमां ढाकेला अग्निने भभकवाने तईयार थाय,तेम पोताना सैन्य सहित सिंहोदर राजा लक्ष्मणने मारवाने तैयार थयो. तेनी सामे लक्ष्मण पण एक हाथीनां दांतने उ

स्वामीने यमनी परें शत्रुने मारवा मंडी गयो. प
ढी कुदको मारी हाथी उपर बेठेला सिंहोदरनुं ग
लुं पकडी तथा तेनाज कपडाथी तेने बांधीने सर्व लो
कोना देखतां गायनी परें खेंचीने लक्ष्मण तेने रामनी
पासे लेइ आव्यो, ते वखते तेणे रामने जोईने तथा
नमस्कार करीने केहेवा लाग्यो. हे राम, तुमे अहिं
आव्या छो,तेनी मने खबर नथी, अथवा हे देव, आ
मारी परीक्षा लेवाने तुमे एम कर्युं छे? अज्ञाने करी मा
राथी आ अपराध थयो तेनी मने क्षमा करो. तुमारूं
जे कांइ काम होय ते करवाने मने आज्ञा करो.जेम
गुरूनो शिष्य उपर कोप थाय ते प्रमाणें आ सेवक
उपर तुमारो कोप थयो तेनी एटली शिक्षा बस
छे. एवुं तेनुं दीनतानुं बोलवुं सांभलीने रा केहेवा
लाग्या के, हे सिंहोदर, वज्रकरणनी साथे तुं सल्ला
कर. ए बोलवुं सिंहोदरे पोताना माथा पर चढा
व्युं. पछी वज्रकरणने पण तिहांज बोलावी लीधो.
ते आवी हाथ जोडी नमस्कार करीने बोलवा लाग्यो.
हे स्वामि, ऋषभदेव स्वामिना वंशमां तुमे जे राम
लक्ष्मण उत्प थया तेनी घणा दिवसथी मने खबर
हती. परंतु आज मोटा भाग्यथी में तुमारो दरशन
कर्यो. हुं अने बीजा सर्व राजा तुमारा चाकर छे.
आ सिंहोदर राजा मारो स्वामी छे. तेने तुमे मूकी
द्यो, अने हिवे पछी एने एवी आज्ञा करो. के, आ

तारो शेवक तने नमस्कार करतो नथी, ए एना ध-
र्मना नियहने तु सहन कर केमके हु साधु तथा अ
रिहतनी मूर्ती शिवाय बीजा कोईने नमस्कार करतो
नथी एवो मे प्रीतिवर्धन नामना मुनि पासेथी निग्र
ह लीधो छे एवु साम्नलीने नेत्रे करी सूचना करयाथी
सिंहोदर राजाए ते मान्य करयाथी लक्ष्मणे तेने
छेडी मूक्यो, पछी वज्रकरणने अलिगन करीने मो-
टी प्रीति वडे रामनी साक्षीए भाइनी परे वज्रकरण
ने तेणे पोतानु अरधु राज्य दीधु तेमज वज्रकरणे
सिंहोदरनी स्त्रीना कुडल तेनी पासेथी मागी लेइने
विद्युद्वेग नामना वणिक पुत्रने आप्या पछी वज्रकर
णे लक्ष्मणने पोतानी आठ कन्या आपी तेमज सु
भट सहित सिंहोदर राजाए लक्ष्मणने त्रणसे कन्या
आपी ते वखते लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के, ए तुमा
री कन्याउ हमाणा तुमारा घरमाज रहेवा द्यो, अमा
रा पिताए हाल राज्य उपर भरतने बेसाड्यो छे,अने अ
मने वनवाश छे, समय आव्याथी हु एमने अंगीकार क
रीश, हमणा अमे मलयाचल पर्वत उपर जवाना छे
ए ए वात सर्वे मान्य करीने तथा रामनी आज्ञा ले
इने सिंहोदर तथा वज्रकरण वगैरे पोत पोताना घरे गया.

राम ते रातना तिहा रह्या सवारना उठी चालता
थया, त्याहांथी केटलेएक दूर एक वनमा गया त्यारे
पाणी न मिलवाने लीधे सीताने तृषा लागी तेथी

तेने विसामो खवराववा सारूं त्रणे जण एक झाडनी निचे बेठा. रामनी आज्ञा लेइने लक्ष्मण, अन्न त था पाणी लावाने निकल्यो. फिरतां फिरतां अनेककमले करी शोभित एवा एक सरोवरने तेणे दीठो, ते वख ते जाणे मित्रज मिल्यो होय! एवो आनंद थयो. ए समये कुबरपुरनो स्वामी कल्याणमाल नामनो राजा वन क्रीडा करवा सारू निकल्यो हतो. ते फिरतो फि रतो तिहां आवी पहोतो. तलाव उपर लक्ष्मणने जो इने कामविकारे पीडाणो थको तेनी उपर मोहित थ यो. पछी नमस्कार करीने लक्ष्मणने केहेवा लाग्यो. हे लक्ष्मण तुं .आज मारा घर पावणो छे, मा टे भोजन करवाने चाल. तेना ए बोलवा उपरथी लक्ष्मणे तेना सर्व कामना चिन्ह जाणी लीधा. ने म नमां विचारवा लाग्यो के आ पुरुषना वेशे कोई स्त्री छे, आ वेश लेवानुं कारण कोई जुदुंज होवुं जोईए. एम विचार करी तेने कहेवा लाग्यो के, हे राजा पोतानी स्त्री सहित मारो स्वामी साथे छे, ते आ पासेज एक झाडना तले बेठा छे. तेणे भोजन कर्या विना ुं भो जन करतो नथी. त्यारे ते राजाए पोताना प्रधा ने ोकलीने सीता सहित रा ने बोलावी लीधो, तेने न मस्कार करीने तेउने रेहेवा सारू गाम बाहार एक तंबु कराव्यो. ते ठेकाने ते ने स्नान भोजन वगेरे सारी रीते आदरसत्कार कर्यो. पछी एकांत स्त्रीनो

वेश लेईने लज्जायमान थई थकी पोताना मंत्रीने सा थे लेईने रामनी पासे आवी उभी रही त्यारे राम तेने कहेवा लाग्यो के, हे भद्र पुरुषना वेशे करी पोताना स्त्रीपणाने ढाकवानु कारण शु छे त्यारे ते कहेवा लागी के, आ कुवर नगरना वालिखील्य राजानी स्त्री पृथ्वी गर्भिणी हता कोई महा शुरवीर म्लेछ लोको आवीने राजाने हरण करी लेई गया त्यार पछी केटलाएक दिवशे राणीने मास पूरा थएथी ते मने जन्मी तेनो प्रधान महाबुद्धिमान हतो तेणे मारा जन्मना वखते एवी थाळी पिटावी के राणीने पुत्र थयो. अने सिंहोदर राजाने पण पुत्र थयानी खबर आपी त्यारे तेणे कह्यु के, आ कुवरपुर नगरनु राज्य ए बालक करशे पछी हु मोटी थवा लागी. करेला हेतुथी राज्य चलाववा सारू बाळ पणाथीज मारी माताए तथा प्रधाने मने एवो वेश दीधाथी ते हजी सुधी कायम छे, ते ज्यारे वालिखिल्य राजा आवशे त्यारे उतारी नाखीश ए वेशनी मारी माता अने प्रधान शिवाय बीजा कोईने खबर नथी मारू नाम कल्याणमाला छे ज्याथी हु अवस्थामा आवी त्याथी ओ राज्य करवा लागी छु पिताने हरण करी गएला म्लेछोने हु घणु द्रव्य आपु छु तो पण ते तेने मुक करता नथी माटे हे राम, मारी उपर कृपा करीने जेम पूर्वे सिंहोदर राजाना भयथी वज्रक

रणने मूकाव्यो तेम मारा बापने ते म्लेछोना हातथी मूकावो. त्यारें राम बोल्यो के, ज्यां लगण तारा बापने हुं मुकावुं नही, त्यां लगण तुं पुरुषना वेशने मूकजे नही. अने प्रथमनी परें राज्य चलावजे. ज्यारे तारो बाप घरे आवे त्यारे मूकी देजे, त्यारे तेणे कह्युं के ते मारे मान्य छे. ने हुं धन्य छुं तुमारी मारा उपर कृपा थइ. एटलामां तेनो महाबुद्धिमान मंत्री विनंती करवा लाग्यो के, हे माहाबाहो, आ कन्याने योग्य वर लक्ष्मण छे. राम कहेवा लाग्यो. अमारा पितानी आज्ञाथी पोतानो देश मूकीने अमे देशांतरे निकल्या छैए. तिहांथी ज्यारें पाछा फिरशुं त्यारें लक्ष्मण जरूर एने परणशे. एवुं सांभलीने ते प्रधानने कबूल कर्युं. पछी त्रण दिवश तिहां रहीने चोथे दिवसे सवारना लक्ष्मण तथा सीता सहित राम तिहांथी निकल्या. ते जोइने ते स्त्रीना मनमां घणुं माठुं लाग्युं, पछी प्रथमनी परें राज्य चलाववा लागी. अने राम तथा लक्ष्मण सीता सहित वालिख्यने छोडववा सारू त्याहां जइने ते म्लेछ राजानी पासेथी वालिखिल्य राजाने छोडावी दूतोनी साथें तेनी कुबरपुरी नामनी नगरीमां तेने पहोचतो कर्यो. तिहां पुरुषनो वेश धारण करेली पोतानी कन्याने तेणे दीठी, ने रामनो सर्व वृत्तांत तेने कही संभलाव्यो. तेमज ते कन्याए पण तिहां आवेला वखतनी

रामनी सर्व हकिगत कही संभलावी, पछी वालिखि ल्य राजाने पहोचाडवा गएलो कांकाजिल्ल तेने मूकी पाछो तेनी पहोच लेइने पोतानी वस्तीमां गयो.

ए सर्व थया पछी तिहांथी राम चाल्या. केटलाएक दिवसे ते विंध्याटवीने वटावीने तथा तापी नदी उत रीने एक अरुण नामना गाममा गया तिहां सीताने तृषा लाग्याथी लक्ष्मण सहित राम एक महा क्रोधी कपिल नामना कोई अग्निहोत्री ब्राह्मणने घरे आ व्या तेमने जोईने तेनी सुशर्मा नामनी स्त्रीए तेम ने जूदा जूदा वेसवाना आसनो कहाडी आप्या. स्व च्छ तथा शितल पाणी लावी आप्यु एटलामा पि- शाचनी परे माहा भयकर ते कपिल घरमा आवीने तथा तेउने आसन उपर वेठेला जोईने पोतानी स्त्री ने केहेवा लाग्यो के, अरे ! ए महा मलीन पापी म नुष्यो मारा घरमा केम आव्या? एमने वेसवाने ज गा कोणे आपी ? हे पापीणी तें एने घरमा वेसाडी ने मारा अग्निहोत्रने अशुद्ध कर्यो, एवो शोक कर तो ब्राह्मणनी गडबड जोई, लक्ष्मण क्रोधमा आवीने जेम कुतराने हाथी पकडे तेम तेने पकडीने उचली लीधो ने मनमा विचार करवा लाग्यो के, एने आ काशमा फेकी देउं? एटलामा राम वोलवा लाग्या के, आ किडी उपर एटलो बधो शो कोप? ए बीचारो भिख्या री छे माटे एने तुं मूकी दे त्यारे लक्ष्मणे तेने मूकी दीधो.

रामनी सर्व हकिगत कही समजावी, पछी वालिखि ल्य राजाने पहोचाडवा गएलो काकजिल्ल तेने मूकी पाछो तेनी पहोच लइने पोतानी वस्तीमा गयो.

ए सर्व थया पछी तिहांथी राम चाल्या केटलाएक दिवसे ते विंध्याटवीने वटावीने तथा तापी नदी उत रीने एक अरुण नामना गाममां गया तिहा सीताने तृषा लाग्याथी लक्ष्मण सहित राम एक महा क्रोधी कपिल नामना कोइ अग्निहोत्री ब्राह्मणने घरे आ व्या तेमने जोईने तेनी सुशर्मा नामनी स्त्रीए तेम ने जूदा जूदा बेसवाना आसनो कहाडी आप्या स्व छ तथा शितल पाणी लावी आप्यु एटलामा पि- शाचनी परे माहा भयकर ते कपिल घरमा आवीने तथा तेउने आसन उपर बेठेला जोईने पोतानी स्त्री ने कहेवा लाग्यो के, अरे ! ए महा मलीन पापी म नुष्यो मारा घरमां केम आव्या? एमने बेसवाने ज गा कोणे आपी ? हे पापीणी तें एने घरमा बेसाडी ने मारा अग्निहोत्रने अशुद्ध कर्यो, एवो शोक कर तो ब्राह्मणनी गम्मड जोई, लक्ष्मण क्रोधमा आवीने जेम कुतराने हाथी पकडे तेम तेने पकडीने उचली लीधो ने मनमां विचार करवा लाग्यो के, एने आ काशमा फेंकी देउ? एटलामा राम बोलवा लाग्या के, आ किडी उपर एटलो बधो शो कोप? ए बीचारो भिख्या री छे माटे एने तु मूकी दे त्यारे लक्ष्मणे तेने मूकी दीधो.

पछी राम लक्ष्मण अने सीता तिहांथी निकल्या. ते चालतां चालतां एक मोठा वनमां गया. ते समये काजल जेवा काला रंगवालो वर्षाकाल आव्यो. त्या रे एक वडना झाडनी निचे विचार करवा लाग्या. ए च्यार महिना आपण अहिंज रहिए. ते वड उपर ए क इभकरण नामनो यक्ष रहेतो हतो. तेणे ते बोल वुं सांभली लीधुं. तेथी ते भय पामीने पोताना स्वामी गो कर्ण नामना यक्ष पासे गयो, तेने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो. हेस्वामी मारा झाडनी निचे कोई एक तेज स्वी पुरुष आव्यो छे. तेणे त्यांथी मने कहाडी मू क्यो, हिवे अमारा प्राणनुं रक्षण तुं कर. आ वर्षा काल सुधि तो ते झाडनी निचे रहेशे. एवी रीते ते यक्षनुं बोलवुं सांभलीने गोकर्ण अवधिज्ञान वडे सर्व जाणी लीधुं, पछी तेने कहेवा लाग्यो के ए आपणा घरे पावणा आव्या छे. ए कोई साधारण मनुष्य न- ही. आठमां वासुदेव, बलदेव, आपणने पूज्य छे. ए म कहीने तेज रातना ते यक्ष तिहां आवी, एक नव योजन लांबी. बार योजन पोहोली, धन धान्ये करी परिपूर्ण, मोटा घरो तथा किल्लाए करी शोभित. ना ना प्रकारनी रत्नादिक वस्तुए करी भरेली, मोटा ब जारोए करी दीपेली. रामपुरी नामनी एक नगरीनी रचना करी. सवारना रामना उठवाना वखते तेने नाना प्रकारना मंगलकारक शब्द सांभलवामां आ-

ञ्या ते वखते एक वीणा धारण करेला यक्षने रामे दीठो तेथी ते मनमा विस्मित् थयो एम जाणीने ते यक्ष रामनी पासे आवीने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामि तुमे माह्रा घरे पावणा छो, तेथी तुमारो आदर सत्कार करवो ए मारो धर्म छे. हु गोकर्ण नामे यक्ष छु तुमारा सारू आ रामपुरी रात्रें मे बनावी छे तेमां तुमे रहो, हु मारा परिवार सहित नित्य तुमारी चाकरी करीश जिहां सुधि तुमारी मरजीमां आवे तिहां सुधि तुमे अहिं सुखे रहो ए प्रमाणे ते यक्षे रामनी प्रार्थना करया पछी रामचद्र तिहा सुखे करी रहेवा लाग्या.

कोइ एक समयें कपिल ब्राह्मण लाकडा कापवा सारू खादा उपर कुहाडो लेईने ते वनमा आव्यो तिहां नवीन नगरी जोइने ते विस्मयने पाम्यो, पछी मनमा विचार करवा लाग्यो के, आ माया छे? कोई इद्रजाल छे! अथवा गाधर्व नगर छे एवा आश्चर्य वडे आम तेम जूए छे, एटलामा एक सुदर यक्षणी जेणे नाना प्रकारना अग उपर घरेणा पेहरेला छे, तथा जेणे मनुष्यनु रुप धारण करेलु छे, एवी दीठामा आवी तेने पूछवा लागो के, आ नवीन नगरी कोनी छे? त्यारे ते कहेवा लागी के, ए नगरी गोकर्ण नामना यक्षनी छे ते लक्ष्मण सीता, तथा रामने रहेवा सारू करेली छे. तेथी एनु नाम पण रा

मपुरी पाड्युं छे. ए रा मोटो दयानिधि छे. याचवा जावनारा लोकोने घणुं दान आपे छे. दरिद्री लोकोनी कामना पूरी करे . एवुं सांजलीने ते ब्राह्मणे माथा उपरनो लाकडानो जो निचे पटक्यो. ने ते नी पासे आवी विनवणी करीने तेने कहेवा लाग्यो. हे सौ जाग्यवती ए राम मारी नजरे केम पडे ! त्यारें तेणे कह्यु के, आ नगरीना च्यार दरवाजा छे. तिहां मोटा यक्षो पहेरो करे छे. तेथी ए नगरीमां पेसवुं अति कठिण छे. जो तुमने माहेली कोरे जवुं होय तो हुं कहुं ते युक्ति करो. पूर्व दिशा तरफ एक दरवाजो छे तेमां एक चैत्य छे. तेने वंदना करीने जो तुं श्रावक थइश तो तुं एमां पेशी सकीश. एम सांजलीने ते लालच्युं ब्राह्मण ते देवालयमां गयो. तिहां चैत्यनी वंदना वगेरे करीने तिहांना साधुं पासें आव्यो. तेने नमस्कार करीने तेनी पासेथी धर्म सांजलवा लाग्यो. सांजलतां तेना अंतःकरणना परिणाम फिरयांथी ते शुद्ध श्रावक थयो, पछी तिहांथी उठीने तें पोताने घरें गयो. तिहां पोतानी स्त्रीने धर्म कहीने तेने श्राविका करी. ते ब्राह्मण जन्मथी दरिद्री होवाथी रामनी पासेथी द्रव्य लेवा सारू ते बेउं स्त्री पुरुष रामपुरी नामनी नगरीमां आव्या. ते चैत्योने नमस्कार करीने राजग्रहमां गया. तिहां सीता, राम तथा लक्ष्मणने जोई ते ब्राह्मणने प्रथमनी वात याद आवी. तेथी ते जयने पा-

ग्यो. पछी ते तिहाथी नाशी जवानो विचार करवा ला ग्यो एटलामा लक्ष्मण तेने कहेवा लाग्यो के, हे ब्रा ह्मण तु जीव नही राख, तने जो द्रव्यनी इछा होय तो मागी ले, एवु सांभलीने ते निर्भय थयो, ने राम ने अशीर्वाद देवा लाग्यो एटलामा ते यक्षे तेने ए क आसन उपर वेसाड्यो, त्यारे राम तेने पूछे छे के, हे महाराज, आप क्याथी आव्या छो? ब्राह्मण वो- ल्यो हु अरुण गाममा रहु छु, ने मारी अग्निहोत्री ब्रा ह्मणनी ज्ञाती छे ते शु तुमे नथी जाणता? तुमे ज्या रे मारे घरे आव्या हता, त्यारे मे तुमने घणु खराव भाषण कह्यु, तेनो द्वेष न राखता तुमे कृपापात्र हो वाथी आजे मने उलटो विशेष मान देवा लाग्या छो, माटे तुमे धन्य छो, अने तेनी स्त्री सुशर्मा सीतानी पासे जइ वेठी, तेने पूर्वनी वात सर्व कही सभला- वीने अशीरवाद आप्यो, पछी रामे तेने अगणित द्रव्य आपीने विदाय करयो, ते रामनी आज्ञा ले इने पोताने घर गयो, कर्मना योगे ते ब्राह्मणने सारू ज्ञान थएथी इछा माफक दान देइने एक न दावतस नामना सुरि पासे जइ दिक्षा लीधी,

वरषाकाल गया पछी रामचद्र जावनार छे एम जाणी ने गोकर्ण तेनी पासे आवी हात जोडीने कहेवा लाग्यो के, हे देव, हिवे तुमे अहिंथी जावनार छो एम जाणीने हु तुमारी पासेथी मागी लउ छु के जो माराथी कांई

अपराध थयो होय तो तुमे क्षमा करो. तेमज मारा उपर कृपा राखजो. तुमरो योग्य सत्कार करवाने को ण समर्थ छे! एम कहीने एक स्वयंप्रभ नामनो हार तेणे रामने आप्यो. तेमज लक्ष्मणने दिव्य रत्नोनां करेला जडाऊ बे कुंडलां आप्यां. तथा एक मुकुट आप्युं अने सीताने इछाए करी वाजनारी एक वीणा आपी. त्यारें राम तेनो घणो उपकार मानीने पोतानी इछाथी तिहांथी निकल्या. राम गया पछी यक्षे ते पुरी समावी मूकी.

राम तिहांथी चालतां रस्तामां महा भयंकर वनो आव्या. त्योने वटावीने सांजना एक विजयपुर नामना नगर पासे आव्या. तेनी वायव्य दिशा तरफ एक वडना झाडनी निचे सर्वे बेठा. ते नगरनो म धिर नामे राजा हतो. तेनी स्त्री इंद्राणीने पेटें एक वन ाला नामनी कन्या जन्मी हती, ते कन्याए बाल्यावस्थामां लक्ष्मणना गुण तथा रुप सांभलीने तेने वरवा विशे पण करयो हतो. कोइ एक वखतें दशरथ राजाए दिक्षा लेवानुं सांभलीने तथा राम लक्ष् ण वनमां गया एवी खबर पड्याथी महीधर राजा मनमां कचवाइने एक चंद्रनगरमां ऋषभ स्वामीना कुलमां उत्पन्न थयेला सुरेंद्ररुप नामना राजाने पोतानी कन्या वनमाला आपवाने धारयुं. तेनी वनमालाने खबर पडतांज तेणे मरवानो निश्चय करयो. ते आज रा

तना घरथी बाहार निकलीने दैवना योगे एकलीज वनमा आवी. तिहां वन देवतानी पूजा करीने कहेवा लागी के, आ जन्ममा तो मारो पण पूरो थयो नहीं. पण आवता जन्ममा मने लक्ष्मणज वर मिलजो, एम कहीने फाशी खावा सारू तेज वडना झाडनी नीचे आवी. ते वखते राम अने जानकी सुता हता तेनो पोहोरो करवा सारु लक्ष्मण जागतो हतो, ते तेने जोइने आश्चर्य पामवा लाग्यो, के आ शु वनदेवता छे ? अथवा आ झाड उपर रहेवावाली कोई यक्षणी छे ? एम विचार करे छे, एटलामा ते वडना झाडनी उपर ते चढवा लागी ते जोइने ए झाड उपर शा मारूं चडे छे ! ते जोवा सारू लक्ष्मण पण तेनी पाछल उपर चड्यो वनमाला उपर जइने पोताना बे हात जोडीने कहेवा लागी के, हे माता, वन देवता हे दिग्देवी हे व्योम देवी, तुमे सर्व मारू बोलवु सांभलो आ जन्ममा मने लक्ष्मण पति मिल्यो नही परंतु जन्मांतरमा ए माहरो पति थाय. एवी कृपा करो माहरी तेनामा घणी प्रीति छे एम कही गलामा वस्त्र घालीने तें तेने ते वडनी डाल साथें बांध्यो पोते उपरथी पडीने अधर लटकवा लागी त्यारें लक्ष्मण बोल्यो के हे भद्रे, आ अघटित कर्म तु कर नही आ हु लक्ष्मण ताहरी सामेज उभो छु तेम छता मरवा नु कारण शु छे ! एम कही तेना गलामाथी फाशी क

हाडीने तेने लेइ झाडथी निचे उतरयो. एटलामां पा
छली रात्रे सीता तथा राम ऊंघ करीने उठ्या, लक्ष्
मणे तेमने वनमालानो सर्व वृतांत संभलाव्यो. वन
माला लज्जा पामी, माथा उपर वस्त्र लइने पछी रा-
म सीताना चरणोने नमस्कार करयो.

अहिं महीधर राजानी स्त्री इद्राणीने वनमाला न
देखायाथी मोटा करुणस्वरे करी रडवा लागी. तेनो
शोध करवा सारू महीधर राजा गामथी बाहेर निक
ल्यो. तें वडना झाडनी नजीक आवीने आम तेम जु
ए छे तो ते झाडना निचेज पोतानी कन्या दीठामां
आवी; तेनी पासे बेठेला माणसोने जोईने आ माह
री कन्यानें चोरनारा लोको छे, एमने मारो एम बोल
वा लाग्यो. एटलामां लक्ष्मण क्रोधायमान थइने त
था धनुष्य सज्ज करीने पोताना शत्रुनो अहंकार दूर
करवा सारू पोताना धनुष्यनो टंकार कस्यो. ते अवा
जना योगे केटलाएक लोको जमीन उपर पडी गया,
तेमज केटलाएक नाशी गया. त्यारे महीधर राजा पा
से आवी लक्ष्मणने जोईने तेने कहेवा लाग्यो; हिवे
तुं धनुष्यनी प्रत्यंचा उतार. दैवयोगे मारी कन्याना
पुण्य वडे अकस्मात तुं अहिं आवी पोहोत्यो छे, अ
ने माहारा मोहोटा भाग्ये तुं अहिं आज माहारी नजरे
पड्यो. एवुं सांभलीने लक्ष्मणे धनुष्यनी कमान उतारी.
त्यारें महीधर राजा पासे आवी रामने नमस्कार करीने

कहेवा लाग्यो आ माहारी कन्या तुमारा जाइ लक्ष्म
णने मे आप्यानो निश्चय कर्यो हतो, तेमां काइ वि
घ्न जेवु जणायाथी मारी पुत्रीने घणु दुःख थतु हतु
ते बेऊनो अकस्मात समागम थइ गयो तेथी हु मा-
हारू मोहोटु भाग्य समजु छु लक्ष्मण जेवा जमाइ
ने राम जेवा वेवाइ क्याथी मिले? पछी मोटी धामा-
धुमथी तेओने पोताने घरे तेमी लाव्या अने तेमनो
घणो आदर सत्कार कर्यो केटलाएक दिवस गया प
छी एक दिवस राजा सभामा बेठो छे, राम लक्ष्मण पण
बेठा छे एटलामां नंदावर्त नामना नगरना अतिवीर्य
नामना राजानी तरफथी एक दूत आवीने कहेवा ला
ग्यो के हे राजा माहारा स्वामी अने भरतनी विच्चे
युद्ध चाले छे, तेमा भरत राजानी तरफ घणा राजा
आव्या छे, अने अतिवीर्यनी तरफ थोडा छे, तुमने
महा पराक्रमी जाणीने पोतानी साह्यता सारू राजा
ए बोलाव्या छे एटलामा ते दूतने लक्ष्मण पूछवा ला
ग्यो के ए बेऊमा द्वेष थवानु कारण शु? दूत बोल्यो
माहरो स्वामी भरतने पोताना हुकममा राखवा मागे
छे, तेमज भरत एने पोताना हुकममा राखवा मागे
छे तेथी ए बेऊमा द्वेप थयो छे एवु साभलीने राम
कहेवा लाग्यो के, भरत शा सारू तेनी आज्ञा मान
तो नथी? अतिवीर्य राजानी साथे लडवाने भरत स
मर्थ छे के शु? त्यारे ते दूत बोल्यो, महारो स्वामी

महा पराक्रमी छे, तेमज बळवान पण छे; अने भरत राजा पण तेजोज छे, सामान्य नथी. ए बेऊंमां कोण कोने जीतशे, एवुं धारयामां आवतुं नथी. त्यारे राजा ते दूतने कहेवा लाग्यो के, तुं जा हुं पाछलथी आवुं. पछी ते रामने कहेवा लाग्यो के, आ राजा केटलो मूरख छे! अमारी साह्यता लेइने भरतनी सामे युद्ध करवा मांगे छे? हिवे माहारा सैन्य सहित हुं तिहां जइने तेने शत्रुभाव न बतावतां तेनीज हार करावुं!अने तुमे अहींज रहो. त्यारे तेने राम कहेवा लाग्यो के. तने जवानुं काम नथी. हुंज तिहां जाऊं छुं. माहरी साथे ताहरो पुत्र तथा सैन्य आप. जे कांइ करवुं हशे ते हुं करीश. ते वात राजाए कबुल करी. त्यारे तेनो पुत्र तथा तेनुं सैन्य, साथे लेइने लक्ष्मण तथा सीता सहित राम तिहांथी निकल्या. केटलाएक दिवश पछी नंदावर्तपुर पासे आवी पहोता. तिहां बाहेर उपवनमां रह्या. रामने जोइने तिहांनो क्षेत्रदेवता कहेवा लाग्यो के, हे माहाभाग्य, तुमारा उपर हुं शुं उपकार करूं! त्यारे तेने रामे कह्युं के, मारा उपर आ वर्ते उपकार करवानी कांइ जरूर नथी. तथापि ते देव कहेवा लाग्यो के, मारे उपकार कारवानी लायकी छे. माटे हुं आ प्रमाणे करूं छुं.

हिवे आ अतिवीर्य राजाने स्त्रीए जीत्यो एवी अपकीर्ति थवा सारू आ सेन्य सहित तुमारू कामिक

स्त्रीनु रूप करू छुं, एम कहीने स्त्री राज्यनी परें रामनु सैन्य तेज वखते स्त्रीरूप थयु तेम राम तथा लक्ष्मण पण स्त्री रूपे थया पछी रामचन्द्रे पोताना दूतनी साथे ते राजाने कहेवरावी मोकल्यु के, ताहरी साह्यता करवा सारू महीधर राजाए पोतानु सैन्य मोकल्यु छे. एवु दूतना मुखथी साजलीने तेने पुछ्यु के, राजा पोते शासारू न आव्यो? तेना सैन्यने मने शु करवानु छे? हु एकलोज भरतने जीतवाने समर्थ छु मने बीजानी साह्यता शा सारू जोइए? ए अपयशकर सैन्यने मारा नगर पासेथी कहाडी मूको एटलामा बीजो कोई पासे बेठेलो बोल्यो के, महीधर राजा पोते नहीं आव्यो ते तो रह्यु पण उलटु तारी मस्करी करवा सारू तेणे स्त्रीओनु सैन्य मोकल्यु छे एवु साजलीने राजा अति क्रोधायमान थयो, ने ते स्त्री रूप सैन्यने तेणे पोताना नजरे जोयु. त्यारे दूतोने कहेवा लाग्यो के, आ दासी जेवी स्त्रीओना गलाने पकडीने बाहार कहाडी मूको एवो राजानो हुकम थतांज तेना सुभटो ते सैन्यने दु ख देवा लाग्या. ते जोईने रामे एक झाडना स्थभने पोताना हाथथी जमीनमाथी उखेडीने सर्वेने मारी हटाव्या. ए वृतांत साजलीने राजा कोपायमान थयो थको हातमा खड्ग लेईने दोड्यो तेने जोइने लक्ष्मणे तेना हाथमाथी खड्ग छीनावी लीधु अने तेना केश पकडी, खें

चीने तेने वस्त्रथी बांध्यो. पछी वाघ जेम हरणने ले इ जाय ते प्रमाणे ते नृत्यधर लक्ष्मण ते राजाने लेइने चाल्यो. ते जोइने सीताने तेनी दया आवी. तेथी लक्ष्मणने कही तेने मूकी दीधो. पछी लक्ष्मण तेने कह्युं के, आजथी तुं भरतनी शेवा करजे. एटलां क्षेत्रदेवताए तेउनो स्त्री वेश हरण करयो. ते जोईने राजाए जाणी लीधुं के, आ राम लक्ष्मण छे. पछी तेमनो यथायोग्य आदरसत्कार कर्यो. ने मानभंग थयो तेथी वैराग्य धारण करीने कहेवा लाग्यो के, हुं हिवे बीजानी सेवा करूं के? एवा अहंकारे करी दिक्षा लेवा सारू पोतानो पुत्र जे विजयरथ तेने राज्य उपर बेसाड्यो. त्यारें राम तेनेकहेवा लाग्यो के, तुंबीजो भरत छे. प्रथमनी परें राज्य कर, एवा अभिप्रायथी दिक्षा लेवानी कांइ गरज नथी. तथापि ते न मानतां तेणे दिक्षा लीधी, तेना पुत्रे पोतानी बेन रतिमाला लक्ष्मणने आपी. पछी सैन्य सहित राम विजयपुर नगरमां आव्या. पाछल विजयरथ भरतनी सेवा करवा सारूं गयो. ने थयेलो सर्व वृतांत भरतने कही संभलाव्यो. भरते तेनो मोटो आदरसत्कार करयो. कह्युं छे के, " सत्पुरुषो जे छे ते. पोताने नमेला पुरुष विषे मोटा दयालुं होय छे." पछी रतिमालानी नानी बेन विजयसुंदरीने तेणे भरतने परणावी. एवा समयें अतिवीर्य मुनि फिरतां फिरतां तिहां आवी पोहोता, तेने भ

रते नमस्कार करीने तेनी पासे क्षमा करावी पछी ते मुनिए विहार कर्यो तेमज विजयरथ पण खुशीथइने पोताना नंदावर्त पुरमा गयो.

पछी महीधर राजानी रजा लेइने राम तिहांथी जावा ने निकल्यो, त्यारे लक्ष्मणे वनमाला पासेथी जावानी रजा मांगी त्यारे ते महा चिंतातूर थइ थकी कहेवा लागी के, हे स्वामी प्राणत्यागना वखते तुमे जे मारी रक्षा करी ते परिश्रम व्यर्थ थयो हे प्राणवल्लभ, तेवारे जो हु मरी जात तो आ विरहनु दु ख दीठु न होतु. माटे ए साराने बदले निरस थयु हे पति, तारा वियोगनी सखी जोडने मने कोई बीजोज लेई जशे माटे हमणा माहरी साथे लग्न करीने मने पोतानी साथे राख तेवारे लक्ष्मण बोल्यो के, हु भाइनो सेवक छु. जो तु माहरी साथे चालीश तो तेनी सेवामा विघ्न थशे माटे आ वखते तने जिहा रहेवानु होय, तिहा रेहे. तने एक घडी पण भुलनार नथी फिरी ज्यारे पाछो हु फिरीश त्यारें अहीं आवीने तने माहरी साथे हु लेइ जइश एने माटे जे तु सोगन आपे ते हु लेवा तइयार छुं हु जो फिरी पाछो अहीं न आवु तो जेटलो रात्रे भोजन करनारने पाप लागे छे, ते मने लागो. एम कही तेने राजी करीने तथा ते रात्र तिहां रहीने सवारना तिहाथी निकल्या चालता चालतां ते वन वटावीने एक क्षेमाजली नामनी नगरी पासे

आव्या. तिहां बाहेर भूगोलमां रह्या. भूख लागयाथी लक्ष्मण जईने वनमांथी फल लइ आव्यो. तेने तइयार करीने जानकीए रामने आप्यां त्यार पछी पोते पण खाधां. एम करतां केटलाएक दिवश गया पछी रामनी रजा लेइने लक्ष्मण ते नगरने जोवा सारू वस्तीमां गयो तिहां रस्तामां चालतां एक थाली पिटती हती ते तेणे जोइ पासे जइ सांभलवा लाग्यो, "जे कोई पुरुष आ राजानो शक्तिप्रहार सहन करशे, तो तेने राजा पोतानी कन्या परणावशे, " एवुं सांभलीने कोई पासे उभेला पुरुपने तेणे पुछ्युं के, आ थाली शानी पिटाइ ? त्यारें ते कहेवा लागो के, शत्रुदमन नामनो अहीं राजा छे, तेनी स्त्री कनकावतीना पेटें एक कवलुं कमल जेवां जेना नेत्रो छे, अने जाणे लक्ष्मीनेज रहेवानी जगा होय ! एवी कन्या जन्मी, तेनुं नाम जीतपद्मा छे, ते उपवर थइ छतां तेणे वर करी आपवानी आगमज तेनुं सामर्थ्य जोवा सारू राजा नित्य आ प्रमाणे थाली पिटावे छे, परंतु आज सुधि कोइ पण एवो पुरुप मिल्यो नही, जे राजानो मुष्टी प्रहार सहन करे.

एवुं सांभलीने लक्ष्मण तेज वखतें राज सभामां गयो. त्यारे तेने राजा पूछवा लागो के, तुं कोण छे? तथा क्यांथी आव्यो छे? त्यारे लक्ष्मणे कह्युं के, हुं भरत राजानो दूत छुं, तेना कोई एक काम सा

रू जतां तारा नगरमा आ थाली पिटाती हती ते मे सांजली, तेथी तारी कन्यानी साथे हु परणवा सारू अहीं आव्यो बु त्यारे राजाए पुठ्यु के, तु मारो मार सहन करीश? लक्ष्मणे कह्युं, एक तो शु पण पाच मार हु सहन करीश. एटलामा राजा नी कन्या जितपद्मा लक्ष्मणने जोईने तेनी उपर आशक्त थइ अने कामे करी पिडाती थकी बोलवा लागी के. हे पिता, तु ए पुरुषने मारे नही तथापि ते न मानता पोतानो पण साचो करवा सारू तथा तेनी परिक्षा करवा सारू राजाए लक्ष्मणने पाच श क्ति प्रहार कर्या लक्ष्मणे बे हाथमा लीधा, बे काख मा, तथा एक दातोमा लीधो, त्यारें जितपद्माए ते ना गलामां स्वयवर माला आवी घाली, ते समयें पोतानी पुत्रीने राजा केहवा लाग्यो के, आ तने यो ग्य वर मिल्यो बे. एनी साथे सुखे करी तु लग्न कर. एवु तेनु बोलवु साजलीने तेने लक्ष्मण केहवा लाग्यो के, माहरो मोटो जाइ पोतानी स्त्री सहित बाहार उप- वनमा बेठेलो बे, हु हमणा तेना ताबामा बु जेम ते केहेशे तेम करीश एवु बोल्या उपरथी राजा ए जा णी लीधु के, ए राम लक्ष्मण बे, पबी बाहार जइने रामने घणा आदरसत्कारे ते राजाए नमस्कार क- र्यो ने पोताने घर तेडी लाव्यो तिहा मोटा आड बरथी रामनी पूजा करं.. कह्यु बे के, ससारी मोटा

पुरुषो पूजा करवा लायक छे, तो पछी पुरुषोतमानी पूजा करवा विषे शुं पूछवुं छे ? यथा इछा राम तिहां रहीने तिहांथी निकलती वखत लक्ष्मण राजाने केहेवा लाग्यो के, हुं पाछो आवती वखतें ताहरी कन्याने परणीश ते तेणे कबुल कर्युं. पछी रातना स थें तिहांथी ते चालतां थया. केटलाएक दूर गयांथी एक दिवश सांजना एक वंशस्थल नामनुं नगर आव्युं. तेना उपवनमां जइ विश्राम कर्यो; एम ते फिरतां ति ंना लोकोने जोतां तेनां चेहरा निस्तेज दीठामां आव्या. तथा ते सर्व भयने पामेला दीठा ं आव्या, त्यारें ते नगरमां कोई लोकोने राम लक्ष ण ू वा लाग्या के, आ तुमारी एवी दशा थवानुं कारण शुं ! त्यारें ते कहेवा लाग्या के, आ पर्वत पर रातना एक भयंकर शब्द थाय छे, तेने आजे त्रण दिवश थया, तेना भयथी अहींना सर्व लोक रातना बीजा ठिकाणे जई रहे ॆ, फिरी स ार थतांज अहीं आवे ॆ. एवी नित्य स्थिति छे.

एवुं सांभली रामनी आज्ञा लेइने लक्ष्मण पर्वत उपर चड्यो. तिहां जइ जूए छे तो कायोत्सर्ग करी रहेला बे साधु तेना दीठामां आव्या. तेमने वंदनादिक करीने तेने नमस्कार करे ॆ एटलामां रा सीता पण तिहां आव्यां. पछी राम ते साधुउनी सामे प्रथम गोकर्णे आपेली वीणा वजडावा लाग्या. लक्ष्मण

रू जतां तारा नगरमा आ थाली पिटाती हती ते
मे सांजली, तेथी तारी कन्यानी साथे हु परणवा
सारू अहीं आव्यो बु त्यारे राजाए पुव्यु के, तु
मारो मार सहन करीश? लक्ष्मणे कह्यु, एक तो
शु पण पाच मार हुं सहन करीश एटलामा राजा
नी कन्या जितपद्मा लक्ष्मणने जोईने तेनी उपर
आशक्त थइ अने कामे करी पिडाती थकी बोलवा
लागी के. हे पिता, तु ए पुरुपने मारे नही तथापि
ते न मानतां पोतानो पण साचो करवा सारू तथा
तेनी परिक्षा करवा सारू राजाए लक्ष्मणने पांच श
क्ति प्रहार कर्या लक्ष्मणे बे हाथमा लीधा, बे काख
मा, तथा एक दातोमा लीधो, त्यारे जितपद्माए ते
ना गलामा स्वयवर माला आवी घाली, ते समये
पोतानी पुत्रीने राजा केहेवा लाग्यो के, आ तने यो
ग्य वर मिल्यो बे एनी साथे सुखे करी तु लग्न कर.
एवु तेनु बोलवु साजलीने तेने लक्ष्मण केहेवा लाग्यो के,
माहरो मोटो जाइ पोतानी स्त्री सहित बाहार उप-
वनमा बेठेलो बे, हु हमणा तेना ताबामां बु जेम ते
केहेशे तेम करीश. एवु बोल्या उपरथी राजा ए जा
णी लीधु के, ए राम लक्ष्मण बे, पबी बाहार जइने
रामने घणा आदरसत्कारे ते राजाए नमस्कार क-
रयो ने पोताने घर तेडी लाव्यो तिहा मोटा आड
बरथी रामनी पूजा करी. कह्यु बे के, ससारी मोटा

पुरुषो पूजा करवा लायक छे, तो पछी पुरुषोतमानी पूजा करवा विषे शुं पूछवुं छे ? यथा इच्छा राम तिहां रहीने तिहांथी निकलती वखत लक्ष्मण राजाने कहेवा लाग्यो के, हुं पाछो आवती वखतें ताहरी कन्याने परणीश ते तेणे कबुल कर्युं. पछी रातना स थें तिहांथी ते चालतां थया. केटलाएक दूर गयांथी एक दिवश सांजना एक वंशस्थल नामनुं नगर आव्युं. तेना उपवनमां जइ विश्राम कर्यो; एम ते फिरतां ति ंना लोकोने जोतां तेनां चेहरा निस्तेज दीठामां आव्या. तथा ते सर्व भयने पामेला दीठा ं आव्या, त्यारें ते नगरमां कोई लोकोने राम लक्ष् ण वा लाग्या के, आ तुमारी एवी दशा थवानुं कारण शुं ? त्यारें ते कहेवा लाग्या के, आ पर्वत पर रातना एक भयंकर शब्द थाय छे, तेने आजे त्रण दिवश थया, तेना भयथी अहींना सर्व लोक रातना बीजा ठिकाणे जई रहे े, फिरी सवार थतांज अहीं आवे छे. एवी नित्य स्थिति छे.

एवुं सांभली रामनी आज्ञा लेइने लक्ष्मण पर्वत उपर चढ्यो. तिहां जइ जूए छे तो कायोत्सर्ग करी रहेला बे साधु तेना दीठामां आव्या. तेमने वंदनादिक करीने तेने नमस्कार करे े एटलामां रा सीता पण तिहां आव्यां. पछी राम ते साधुउनी सामे थम गोकर्णे आपेली वीणा वजडावा लाग्या. लक्ष्मण

उत्तम राग सहित मनोहर गायन करवा लाग्यो ते मज सीता हावभाव सहित तिहां नाचवा लागी. एट लामा सूर्य अस्तने पाम्यो. रात्र थताज कोई एक अग्नि जेवी कांतिवालो वेताल तिहां आवीने ते मुनिउ ने उपद्रव करवा लाग्यो तेने जोईने तथा सीताने ते मुनिउनी पासे बेसाडीने राम तथा लक्ष्मण तेने मारवा सारू जवाने तैयार थया तेवारे एमनो तेज ते देवथी सहन न थयो तेथी जयने पामीने त्याथी नाशी गयो तेज वखते साधुउने केवलज्ञान उपन्युं ते मने रामे नमस्कार करीने पूछ्युं के, ए उपद्रव थवानु कारण शु छे? त्यारे तेमाना एक मुनि उत्तर देवा लाग्या तेवोए केवलज्ञानना प्रभावथी पोताना पाछला भवनो वृत्तांत कही सभलाव्यो, एवे समे त्याहा आवेलो माहा लोचन नामनो देवता राम लक्ष्मणनी उपर प्रसन्न थयो पछी रामने वचन आपी पोताना स्थानके गयो एटलामा वशस्थळ नगरनो राजा सुरप्रभ तिहा आवीने तथा रामने नमस्कार करीने तेनी यथायोग्य पूजा करी अने रामनी आज्ञाथी ते पर्वत उपर तेणे एक अरिहंतनु चैत्य करयु ते दिवशथी ते पर्वतनू नाम रामगिरी पड्यु छे, पछी सुरप्रभ राजानी रजा लइने रामचद्र दडक नामना वनमा गया त्याहां जइने एक गुफामां घरनी परे रह्या.

कोइएक दिवसे जिमवाना वखतें आकाश मार्गथी

कोइ त्रिगुप्त तथा सुगुप्त ए ना ना बे चारण ुनि-
ने मासना पोषणना पारणा करवा सारू आ ने
दरवाजा उपर उभा रह्या. तेमने जोईने त्रणे जणा
नमस्कार कर्यां. पछी सीताए यथोचित अ दा ।
दिक तेमने आपीने पारणा कराव्या. ते खतें दे ो
ए तिहां रत्नोनी तथा सुगंधीत पाणीनी वृष्टी करी.
एटलामां कंबुद्वीपनो स्वामी रत्नजटी ि द्याधर राजा.
तथा बीजा बे देव ए त्रण जणा आवी प्रसन्न थईने
रामने घोडा सहित रथ आप्यो. प्रथम देवें करेली सु
गंधी जलनी वृष्टिने जोईने एक गंधाभिध नामनो रो
गी पक्षी एक झाड उपरथी उतरीने तिहां आवी उभो
रह्यो. तेने मुनिना दर्शन योगे जातिस्मरण ज्ञान उ
पन्युं. तेथी मुर्छा खाइने ते पृथ्वी उपर पड्यो. तेने
जोइने तेनी उपर शीतल जल नाख्यांथी ते सा ध थ
इने मुनिओना चरणोमां आवी पड्यो. तेनो स्पर्श थ
तांज ते रोग रहित थई गयो. पांख सोनाना थयां. चुं-
च प्रवालानी थई. लाल मणीना पग थया. रत्न जे
वी कांती थई. रत्नांकुर जेवी जटा थई. ते दिवशथी
ते पक्षीनुं नाम जटायु पड्युं. एवो च त्कार जोइने
रामचंद्र ते मुनिने पूछवा लाग्या के, आ माहाक्रोधी,
तथा मांसखानारो गीध्र पक्षी तुमारा चरणो पासे
आवीने केम शांत थयो, प्रथम एना अंगना अवय
व विरूप हता ते घडीकमां सरूप थया. एना

शरीरनी कांती रत्नो जेवी केम थई? त्यारें राम प्रत्यें सुगुप्त मुनि कहेवा लाग्या

हमणां अमारा दर्शन थयां, तेनुं पूर्व जन्मनुं वृतांत सांभलीने एने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं अमारा चरण स्पर्शरुप औषधि मिल्याथी एनो रोग जतो रह्यो. ए सर्व वृतांत सांभलीने पक्षी घणो राजी थयो पछी ते मुनिउने नमस्कार करी धर्म सांभलीने श्रावक थयो पछी तेने मुनिए जीवघात, मांस भक्षण, रात्रे भोजन वगैरे खराब कुकर्मना पचखाण कराव्यो. अने ते बेऊ मुनी रामने कहेवा लाग्या के, आ तुमारो साधर्मीक छे.माटे एनो प्रतिपालन करो "साधर्म वात्सल्य शुभकारक छे, एवु श्रीजिनेंद्र वचन छे" त्यारे रामे कह्यु के, ए अमारो भाई छे एम अमे जाणशुं. एम कहीने ते बेउ मुनिउने घणी प्रीति वडे वंदना करी पछी ते मुनिओ आकाश मार्गे गया अने रामादिक त्रण जणा ते दिव्य रथमा बेशीने जटायु सहित क्रीडा करवा लाग्या.

पाताल लंकामां खर अने चंद्रनखाना पुत्र शबुक अने सुंद ए बेऊ यौवन अवस्थामा आव्या. तेमानो शबुक सूर्यहास्य नामनो खड्ग साधवा सारूं जावा निकल्यो ते वखतें तेना पिताए तेने घणु समजाव्यु. तथापि तेनु न मानता ते दंडक नामना वनमां गयो. तिहां एक क्रौंचरवा नामनी नदीना तीरे ए

क बंशनुं जोईने तेमां पेशीने कहे ।लाग ो के, जे कोइ मने अहींथी कहाडशे तेने ुं मारी नाखीश. ए हीने ते खड्गनी साधना करवा सारूं ते अ न ।रो ो, अंतःकरणी थयोछे. जेना निरमल इंद्रीउ जेणे जीत्या छे,एवा ब्रह्मचर्य व्रतनो पालनारो. शंबुक ए व नी ।लने पग ।धीने ।रे र्ष अने दि शे सिद्ध थ । ।ली विद्या सूर्यहास्य ड्ग मिल सारूं ।ध ।नो आरंभ कर लाग्यो. ते मये ते ने वागरण ना । ह्रीनी उ । देवाय. एवी री ते बारे वर्ष अने चार दि सथया सूर्यहास्य ग ि द्ध हो ।नी यें एक म्यान हित सूर्यना जेवी । ती ।लो, अ जेनी चारे रफ सुगंधी व्यापी रही छे, एवो ते दिव्य खड्ग तिहां आव्यो. एटला । लक्ष्म ण तिहां क्रिमा रतो करतो ते बंशना वनमां आव्यो. तिहां र्यना जेवा तेज ।लो ते सूर्यहास्य नामनो ड्ग जोइने तेने लक्ष्मणे लेइ लीधो. ी. तेने म्यान । थी हाडीने जोवा लाग्यो.तो ते अति अ ूर्व दीठ् । आव्यो. तेथी घणो कौतुक लाग्युं. ह्युं छे ," स्तु जोइने क्षत्रीउने मोटो आश्चर्य थाय छे." ते नी धारनी परीक्षा करवा सारूं ते ड्गे करी पासे नी बंशनी फाडीने कमलनी नालनी परें कापी ना ी तेमां उंधे माथे लटकेलो जे शंबुक तेनुं माथुं प तेनी ।थे कपाइने जमीन उपर पड्युं. ते लक्ष्म

णे जोयुं, त्यारें पासे आवीने जूए छे तो तेनो धम छ परना वडनी शाखामा लटकतो देखायो त्यारें आ निरप राधी तथा हथियार रहित एवा कोई पुरुपने नाहक मे मार्यो, एवो शोक करवा लाग्यो. ए कर्मनायोगे मने धिक्कार छे एवी पोतानी निंदा करी रामनी पासे जईने थएलो सर्व वृतात कही समजाव्यो अने ते खड्ग पण तेने बताव्यो. त्यारें राम तेने केहेवा लाग्या. ओ सूर्यहाश्य खड्ग छे. एनी साधना करनाराने ते मार्यो जणाय छे पण एनो उत्तर साधक कोई आटलामाज होवो जोईए.

पछी रावणनी बेन चद्रनखाए जाण्यु के, मारा पुत्रने आजे सूर्यहास्य खड्ग मिलशे, एवा हेतुथी मोटा उमगे करी पूजा वगैरेनी सामग्री लेईने उतावली दोडती ते वनमां आवी जूवेछे तो कुम्लेकरी शोभायमान पोताना पुत्रनुं माथुं कापेलु जमीन उपर पड्यु छे ते जोईने विलाप करवा लागी. हे वत्स शंबुक तुं क्याहां छे! अने तने हु क्याहां जोउ एवी रीते वारंवार बोलती थकी रुवा लागी ते ढाल लिख्यते.

ढाळ॥ वह्यारी कालो कान माला चोरीरे॥ ए देशी॥

ताहरी मावडी रोवेरे पूत, शवुक बोलोने॥ कोणे छेद्यु मस्तक तुज॥ शंबुक बोलोने॥ ए टेक॥ में जाण्युं जे पुत्र तुमारा, फलशे मनोरथ आजरे॥ एम जाणी हरखे अहीं आवी, दीठ्ठ विपरीत काज॥ शवुक

बोलोने ॥ ताहरी मावडी रोवेरे पूत, शंबुक बोलोने ॥ ॥ १ ॥ बार वरश लगी साधन साधी, नुख तृषा बहु वेठीरे ॥ शील व्रत पाल्युं सुख कारण, पण सी द्धि नवि देखी ॥ शंबुक० ॥ २ ॥ कोण पापी एवो इहां आव्यो, जेणे छेद्युं तुज शीशरे ॥ जणावुं तुज बंधव पिताने, आवे इहां करी रीश ॥ शंबुक० ॥ ३ ॥ तुज ने मारी ते कीहां जाशे, शोध करूं त्रण लोकरे ॥ जो ते कदी पेसे पाताले, जावे कही देवलोक, ॥ शंबुक बोलोने० ॥ ४ ॥ संन्नलावुं जइ मुज बंधवनें, आवे सनूररे ॥ खोल करावी ते पापीने, मारूं तुज हजूर ॥ शंबुक बोलोने० ॥ ५ ॥ चंद्रनखा एम अति टलवल ती, मृतक पुत्रनी पासरे ॥ हे वत्स एकवार मुज सा मे, जोवो अति उसास ॥ शंबुक बोलोने० ॥ ६ ॥ वि द्या साधी चंद्रहाश्यनी, खड्ग ग्रहो निज हातरे ॥ स्त छेदो शत्रु केरो, पोचाडो यम पास ॥ शंबु बोलोने० ॥ ७ ॥ केम तुं मौन करीने बेठो, उत्तर के न ी लेरे ॥ के तुं रिसाणो मुज साथे, नसु केम नही नाले ॥ शंबुक० ॥ ८ ॥ एम विलपती स्वछंद थइने, श गवेखण काजरे ॥ पगले पगले जोती चाली, जेम उडे पंखी ज्य ॥ शंबुक० ॥ ९ ॥

एवी रीते अत्यंत विलाप करती थकी तिहां जमी उपर लक्ष्मणना पडेला पगलां जोइने कहेवा लागी के, जेणे हरा पुत्रने रयो तेना आ पग छे. ए

म जाणीने ते पगले पगले चालवा लागी केटलाए क दूर गइ तिहां एक झाडना तले सीता, राम त था लक्ष्मण तेणे जोया, तेमा रामनुं स्वरुप जोइने तेने कामविकार उपन्यो, कह्यु छे के, " कामि स्त्रीउ ने शोकना समयमा पण कामनो आवेश थाय छे " पछी ते एक तरुण नागकन्यानु रुप धारण करीने कामे पिडानी छता कापती थकी रामनी पासे आ वी. तेने जोइने राम पुछवा लाग्या के, हे भद्रे, यमसदन (कालना घर) जोवा आ दंडक नामना म हा भयकर वनमां तु शा सारूं आवी छे ? त्यारें ते कहेवा लागी के, हु अवतिना राजानी पुत्री छुं. एक समयें रातना हु सूती छता एक विद्याधर आवी ने मने हरण करी लेई गयो ते आ वनमां लाव्यो, तेने कोई बीजा पुरुषे जोयो तेना हाथमा एकमो टो खड्ग हतो, पछी ते तेने पूछवा लाग्यो के चील पक्षी जेम हार लतानु हरण करेछे तेम आ स्त्री रत्न ह रण करीने हे पापी तु किहा लेई जायछे ताहरो मोत आ हुं सामे उभो छु तेम छता तु आगल केम जइ शकीस ?

एवु तेनु बोलवु साभली मने अहीं मूकीने ते बे ऊं परस्पर लढाइ करवा लाग्या जेम वनना हाथिउं पोतपोतामा लढीने अंते प्राण गमावे तेम ते बेऊ मरी गया अने हु आ जगलमा फिरता फिरता को ई पुन्ययोगे तडकामा छकनी छया परें तमारा आ-

श्रये आवी छुं. हुं मोटा कुलमां उपनी छुं. माटे आप मने अंगीकार करो. एवी माहरी इच्छा छे. क ुं `के " महा पुरुषो पासे अर्थी जनोनी प्रार्थना व्यर्थ जती नथी. " एवुं तेनुं बोलवुं सांभलीने रामे विचार कर्यो के, आ कोइ मायावी नटना जेवो वेश धारण रनारी कुट नाटक उत्पन्न करीने अमने ठगवा सारू अहीं आवी छे. ए जाणीने राम तथा लक्ष् णे एक बीजानी सामें जोयुं. पछी रा चंद्र तेने हेवा लाग्या के, माहरी स्त्री तो छे. आ लक्ष् णने स्त्री नथी, तेनी पासें तुं जा. पछी ते लक्ष्मणनी प्रार्थना करवा लागी. त्यारें तेणे कह्युं के, तुं प्रथम माहरा डी रामनी पासे गइ, तेथी तुं पण अमारे पूज्य ठरी अंगीकार कर ानी वात ाहरी पासे ो नही. एवी रीते बेउं ठिकाणे आशा पुरी थइ नही. त्यारें पोताना पुत्रने याद करी क्रोधमां आवीने खरादिक विद्याधरो पासे गइ. तेमनी पासे लक्ष् णे पोताना ु-त्रने ार ानो र्व वृतांत संभलाव्यो. ते सांभलीने च दे हजार विद्याधरो सहित रादि तिहां आव्यो अने जे हाती पर्वतने पद्र करे, ते ते रा ाने दुःख देवा लाग्या. त्यारें लक्ष्मण रा ने कहेवा लाग्यो के, ' पासें तां तु ारे युद्ध करवानुं कांइ कारण नथी. हुं एकलो दुशमनोने मारीश. त्यारें रामे कह्युं के, जा तुं एमनी साथें युद्ध कर. जे वखतें

कट पडे ते वखतें मने बोलाववा सारू एक मोटो सिंहनाद करजे. एवु बोलवु मान्य करी तथा तेनी आज्ञा लेइने, धनुष्य बाण सज्ज करी, गरुड जेम सर्पादिकोने मारे ते प्रमाणे लक्ष्मणे खरादिकोने मारवानो आरम्भ करयो

परस्पर युद्ध चालता चंद्रनखा पोताना पतिनी रक्षा करवा सारू जलदी रावण पासे जइने थयेली सर्व हकिगत तेने कहेवा लागी हे भाइ दंडक वनमां कोइ राम लक्ष्मण नामना बे पुरुषो आव्या छे. तेम णे अजाणथी ताहरा शंबुक भाणेजने माहरी नाख्यो. ए वातनी खबर पडताज ताहरो बनेवी तथा भाणेज सैन्य सहित तिहां जइने लक्ष्मणनी साथें युद्ध करेछे. ते वनमां केटलाएक दिवसथी राम पोताना नाना भाइना बलथी तथा पोताना बले करी गर्वित थयो थको विलास करे छे, तेनी स्त्री सीता रुप लावण्यनी केवल सीमाज छे, एना जेवी कोई देवी पण हशे नहीं! नाग कन्या एनी पासे शा हिसाबमां! पछी मनुष्यना ते क्याथी? एनु रुप जाणे सुरासुरनी स्त्रीओना रूपने तिरस्कार करती होय! वाणीथी तो केहेवाइ शकायज नही आ जगतमा ए कोइ अपूर्व रत्न छे. ते तने योग्य छे ताहरा घरे कोइ एवु स्त्री रत्न नथी तेथी तु एने रहण करी लेइ आव,

एवु सांभलीने तत्काल रावण पोताना पुष्पक ना

मना विमानमां बेशीने दंडक वनमां आव्यो. तिहां रामना आश्रम पासे आवी जूवे छे तो जेम अग्निना तेजथी वाघ दूर रहे, तेम ते रामना तेजथी नजीक आवी शक्यो नही. रामनो जय अने सीतानुं हरण, ए कार्य जेम एक कोरे तट अने बीजी कोरे सिंह, तेनी परें रावणने थयुं. पछी अवलोकनी नामनी विद्यानुं तेणे स्मरण कस्युं. त्यारें ते रावणनी सामें हाथ जोडी आवी उभी रही. रावणने तेने कह्युं के, आ सीताना हरण करवामां तुं साह्यता कर. त्यारें ते कहेवा लागी के, मोटा नागना माथामांनुं रत्न लेवाने समर्थ थवाय. पण रामनी सामें सीतानुं हरण करवाने देवता पण असमर्थ छे. माटे एक उपाय छे ते करवाथी तारो मनोरथ पूरो थशे. लक्ष्मणनी साथें रामनो सिंहनादनो संकेत छे. तेथी तुं तिहां जइ सिंहनाद करवाथी राम तिहां आवशे. पछी तुं सीताने लइने चालतो थजे. एवुं सांभलीने रावणे तिहां जईने बराबर लक्ष्मणना जेवो सिंहनाद कस्यो. ते सांभलीने राम पोताना मनमां विचार करवा लाग्या के, आ जगमां हाथीमल्लनी परें लक्ष्मण जेवो बीजो कोई प्रतिमल्ल नथी जेथी एने एटलो घणो संकट थाय! सिंहनादनो संकेत प्रमाणे थायछे! एवी रीते राम तर्क वितर्क करे छे. एटलामां सीता लक्ष्मण उपर दया करीने कहेवा लागी के, हे आर्य. वत्स लक्ष्मण हमणां

सङ्कटमां पड्यो जणाय छे तेम छतां तुमे केम हजी विलंब करी रह्या छो ? हिवे जलदी जइने तेनुं रक्षण करो, इत्यादिक सीतानुं बोलवु सांभलीने अपशकुनादिकने न मानता राम उतावला दोडीने गया

पछी रावण विमानमाथी उतरीने रोदन करनारी सीताने विमानमा बेसाडवानी युक्ती करवा लाग्यो, ते वखते सीताना विलाप साम्भलीने पासेंथी एक शब्द थयो के, हे स्वामीनी हे जानकी, तुमे भय पामो नही एम कही हे निशाचर उभो रहे, उभो रहे, एवी रीते क्रोधे करी बोलीने दूरथी जटायु रावण उपर दोड्यो ते जेम खेडूत हले करी जमीनने खणी नाखे तेम पोतानी चांच वडे रावणनी छाती वीखेरी नाखी त्यारें रावण रिसमा आवीने पोताना खड्गे करीने तेनी पाखो कापी नाख्या पछी ते पृथ्वी उपर पडी गयो त्यारे रावण निशंक थई सीताने पोताना पुष्पक विमानमा बेसाडीने तथा पोतानो मनोरथ पूर्ण थयो एम जाणीने आकाश मार्गें चाल्यो त्यारें सीता कहेवा लागी के हे राम, हे-राम, हे वत्स लक्ष्मण, हे तात, हे भ्रात हे भामण्डल जेम कागलो बलीपिंडने हरण करे, तेम तुमारी सीता एणे हरण करी छे एम कहीने अति दीनताथी रडवा लागी तेनु रडवु साम्भलीने अर्कजटी नामना विद्याधरनो पुत्र रत्नजटी मनमा विचार करवा लाग्यो के, आ स्वर रामनी स्त्री सीतानो छे. ए शब्द समुद्र

उपर संभलाय छे. ए उपरथी एवुं समजाय छे के,
रा लक्ष्मणने ठगीने रावणे एनुं हरण कर्युं छे. ए
जाणीने माहरे भामंडलराजा उपर उपकार करवो जो
इए एवा हेतुथी हातमां खड्ग लेईने तें रावण उपर दो
ड्यो. तेने जोई रावण हस्यो, ने पोतानी विद्याना सा
र्थें करी तेनी सर्व विद्या हरण करी लिधी. त्यारें पां
खो कपायाथी जेम पक्षी निचे पडी जाय तेम तेनी
विद्या गया पछी ते जमीन उपर पड्यो. पछी ते कंबु
द्वीपना कंबु नामना पर्वत उपर जइ रह्यो,

रावण विमानमां बेशी जतां रस्तामां समुद्र उपर
आव्यो. त्यारें कामें करी पिडणो थको सीताने कहे
वा लाग्यो के, सर्व विद्याधरोनो राजा जे हुं, तेनी
तुं स्त्री थइ. तेम छतां शा सारूं रडे छे? आ आ
नंदना ठिकाणे शोक केवो! ते योग्य नही. ताहरी यो
जना तो माहरी साथें करवानी हती, ते दैवना यो
गे रा साथें थएथी, हे देवी तुं हिवे मने पति मान,
अने तेम कर्यांथी हुं ताहरो दास थयो एम समज,
हुं तने आधीन थएथी सर्व विद्याधर ताहरा दास
थशे. ने ते नी तारी दासी थशे. त्यारें सीता
निचे मुख करीने अति भक्तिथी रा नुं ना जप-
वा बेठी, एटला मां कामें करी अंध थएला रावणे
सीताना पग उपर माथुं राख्युं, तरे परपुरुषनो
स्पर्श थाय छे ए हेतुथी सीताए तेने दूर कर्यो, अ

ने कहेवा लागी के, हे रावण, तु महा निर्लज्य छे आ पर स्त्रीनी कामनाए करी तने जलदीज मृत्यु थशे, एवो क्रोधे करी श्राप दीधो. एटलमां सारणादि मत्रीउ तथा बीजा राक्षसो रावणनी सामे आव्या तेम नी साथें मोटा उत्साहे रावण लंकामा गयो, अने सीताए एवो नियम लीधो के, जिहा सुधि राम लक्ष्मण नो कुशल वृतात मे सांभल्यो नथी, तिहां सुधि हुं जिमनार नही एम जाणीने लंकानी पूर्व दिशामा देव रमण नामना उद्यानमा एक रक्तअशोक नामना झाडनी निचे चित्रजटा अने बीजा राक्षसो सहित सीताने बेसाडी पोते राजी थइने पोताना घर गयो पण काम विकारे करीने सीता विषे पोताना माठा अध्य व्यवसायमा गुतायो थको एक सीता माहेज ध्यान करी रह्यो छे

इत्याचार्य श्री हेमचद्र विरचिते श्री राम लक्ष्मण चरित्रे सीता हरण इत्यादि, ॥ पाचमो खड समाप्त ॥

॥ अथ श्री राम लक्ष्मण चरित्र शष्टमो खंड प्रारम्भ ॥



जे जगाए लक्ष्मण दुसमनोनी साथे युद्ध करे छे तिहा रामचद्र गया तेने जोईने लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के, हे बधु सीताने एकली वनमा मूकीने तुमने

अहीं आववानुं कारण शुं हतुं? तेवारे राम बोल्या के, ताहरो सिंहनाद सांभलीने हुं अहीं आव्यो छुं लक्ष्मणे कह्युं में सिंहनाद कर्यो नथी. तेम छतां तुमे सांभ ल्यो. एथी कोइए आपणने ठगा जणाय छे, अने सी ताने हरण करवा सारू आ पाय कर्यो जणाय छे. टे हे राम सीतानुं रक्षण करवा सारू तुमे अहीं याथी जलदी जाउ. पाछलथी आ शत्रुउने मारीने हुं पण जलदीज आवुं छुं, एम सांभलीने राम पाछो आवीने जूए छे तो सीता दीठी नही तेथी ूछीत थ इने पृथ्वी उपर पड्यो, केटलोएक वखत गया पछी सावध थइ जूवे छे तो रण तुल्य थएलो जटायु दे- ायो. तेने जोइने मन ां बिचार करवा लाग्यो के, कोइ पुरुषे ले करी माहरी सीतानुं हरण कर्युं, तेनो पहार कर ा सारू क्रोधमां आवीने तेने आ आ- डो आव्याथी तेणे एने ार्यो जणाय े. त्यारें हि बे एनी पर मारे प्रती पकार कर ो जोइए एवो विचार करीने ते श्रावक पक्षीने परलोक सारू भातानी पेठे न स्कार (नवकार) ंत्र ह्युं. ते जटायु मूवा पछी महेंद्र देवलोकमां एक देव थयो. प ी रामचंद्र पोतानी ीसी ाने शोधवा सारू नमां फिरवा लाग्या.

पछी महा शुरवीर लक्ष्मण र विद्याधरनी साथे युद्ध करतो तां रनो न्हानो भाइ त्रिशीरा आगल थइने पोताना मोटा भाइने प र्यो. पोते रथ

मां बेशीने लक्ष्मणनी सामें आव्यो. ते जोइने एक क्षणमा लक्ष्मणे तेणे मारी नाख्यो एटलामा पाताल लंकानो राजा चंद्रोदरनो पुत्र विराध पोताना सैन्य सहित तिहा आवी लक्ष्मणने नमस्कार करी हाथ जोडीने कहेवा लाग्यो के, तुमारा शत्रुनो हु शत्रु छु. अने तुमारो भक्त छु. मारा पिता चंद्रोदरने कहाडीने रावणे आ पोताना बनोइने पाताल लंकानु राज्य आप्यु. ते कारणथी अमारा ए शत्रु छे यद्यपि आ शत्रुउना नाश विषे जेम अंधकारनो नाश करवामा एकलो सूर्यज समर्थ छे, तेम तुमे एकलाज समर्थ छो. तथापि तुमारो हु दास होवाथी मने एमनी साथें युद्ध करवानी आज्ञा आपो. त्यारे लक्ष्मण हशीने तेने कहेवा लाग्यो के, हे विराध, आ सर्व शत्रुउने हमणां ज में मार्या एम तु जाण कह्युं छे के, " पराक्रमी पुरुषने बीजानी साह्यता लेवी ए लज्जा भरेलुं केहवाय छे. " माटे आजथी मारो मोटो भाइ राम तारो स्वामी छे अने आजथी तु पाताल लकाना राज्य उपर बेठो एम समज.

पोतानो शत्रु विराध लक्ष्मणनी पासे आव्यो छे, एम जाणी अती क्रोधमां आवीने पोतानु धनुष्य सज्ज करी, आगल आवीने खर विद्याधर बोलवा लाग्यो. हे विश्वासघातक, माहरा शंबुक नामना पुत्रने मारनारो तुज कें ? हिवे तारू रक्षण आ बाप

डो विराध करनार छे के, ? त्यारें तेने लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के. हे खर, ताहरा पुत्रनी उत्कंठाए करी ताहरा भाइ त्रिशीराने में तेनी पाछल मोकली दीधो. तेनी परें तने पण जो घणी इछा होय तो तेनी पासे पहोचाडवाने हुं तइयार छुं. जेम कुंथुप्रमुख वारीक जीव सहज पगथी कचराइ जाय, तेम ताहरो पुत्र माहराथी मरायो खरो; एथी मोटो अपराध कर्यो कहेवाय नही, हिवे जो तुं पोताने शुरवीर मानतो होय, तो कांइ चमत्कार बताव जोऊं! पण हमणां हुं वनवाशमां ुं. तो पण ताहरो भक्ष आपीने हुं यम राजाने राजी रीश.

एवां लक्ष्मणना क्यो सांभलीने जेम हाथी प तनी शिखर उपर प्रहार करे, तेम खर राक्षस लक्ष्मणने रवा मी गयो. तेनी सामें लक्ष्मणे पण जे सूर्य पोताना किर्णोएकरी आकाशने भरी नाखे , ते णो ते नआकाश भरी मूक्यो. एवी रीते लक्ष ण अने खर राक्ष नुं महाभयंकर युद्ध थयुं. अने य ना घरमां लीला हेर थइ. एटलामां एक आकाश णी थइ , विष्णुनी शक्ति सहन करवाने प्रतिविष्णु पण स र्थ थाय नही, तेम छतां आ र हजी ुधि केम सहन रे छे? एवुं सांभलीने हिवे एने घणो वखत रहेवा देवो नही. एम जाणी एक हथियारे करी क्षण वारमां खरनुं थुं कापी ना

ર્યુ એટલામાં દૂષણ સૈન્ય સહિત યુદ્ધ કરવાને આ-
વ્યો તે જેમ વનના અગ્નિમાં હાથી પોતાના પરિવાર
સહિત બળી જાય તેમ તે પોતાના સૈન્ય સહિત ના
શને પામ્યા. એવી રીતે સર્વ ખલાસ થઇ ગયા. પછી લ
ક્ષ્મણ વિરાધને સાથે લેઈને પાછો ફર્યો, દૂરથી એક ઝા
ડની નિચે બેઠેલા રામને સીતા વિના એકલા જોઈને
મોટો શોક કરવા લાગ્યો જો પણ રામની પાસે લ
ક્ષ્મણ આવ્યો તો પણ સીતાના વિરહથી પિડિત થઇને તે
ની સામેં ન જોતા આકાશમા નજર કરી બોલવા લાગ્યા.

આ આખુ વન હુ ફર્યો તો પણ સીતા દીઠી
નહી. હે વન દેવતા કિહાઇ પણ જોઈ હોય તો કહો!
ભુતો તથા ભયકર જનાવરે કરી ભરેલા વનમાં હુ જા
નકીને એકલી મૂકીને લક્ષ્મણના પાસે ગયો તિહાં હ
જારો રાક્ષસો યોદ્ધાઉની સામેં તેને લડતો મૂકીને ફિ
રી પાછો આવી જોઊ છુ તો સીતા દેખાઇ નહી! એ
વખતેં મારી બુદ્ધિને શું થયુ! હા સીતા! આ નિર્જન
વનમા તને મેં એકલી કેમ મૂકી? હા વત્સ લક્ષ્મણ!
તને વનમા સકટમા મે કેમ નાખ્યો? એવી રીતે કેહે
તા છતા મૂર્છા આવી તેથી જમીન ઉપર પડ્યા. એવો
રામનો શોક જોઈને જાણે પક્ષીઉ પણ મોટા શ-
બ્દો વડે રુતા હોય! અને એ સર્વે રામની તરફ
જોતા હોય! એટલામા લક્ષ્મણ પાસેં આવીને કહેવા
લાગ્યો કે, હે આર્ય, હે આર્ય, આ શુ!, હુ તુમારો

लक्ष्मण न्हाई शत्रुने जीतीने तुमारी सामें उन्नो बुं. एवी अमृत जेवी वाणी सांन्नलीने रामे जरा सावध थइ लक्ष्मणने आलिंगण करयुं. त्यारें लक्ष्मण आंखो मां पाणी आणीने बोलवा लाग्यो के, थएला सिंहना दनुं कारण कोइ कपटी पुरुपनुं कृत्य बे, अने तेणेज सीता हरण करी बे. हिवे तेना प्राण सहित तेनो ठा ए कहाडीने जलदिथी सीताने पाबी तेडी लावुं बुं. तुमे लगारे चिंता करो नही. हिवे तो तेने शोधवाना उपायो करवा जोइए. आ विराधने एना पिताना पाताल लंकाना राज्य उपर बेसाडवो बे. एवी खरनां संग्राममां में प्रतिज्ञा करी बे. एवा समयें सीताने शोधवा सारू विराधे पोताना विद्याधर सुन्नटोने रवाने करयां. अने महा शोकमां गरकाब थएला रा तथा लक्ष ण क्रोधें करी पोताना होटने चावीने मोटा मोटा श्वासोश्वास लेता थका त्यांहांज रह्या. विराधे मोकलेला विद्याधरो जानकीनो घणो शोध करीने क्यां

पत्तो न ि ल्याथी पाबा आवी निचुं मुख करी न स्कार करीने बेठा. रा तेमने शरमाय जोइने कहेवा लाग्या के, स्वामीना कार्य सारू पोतानी शक्ति प्र णे हिनत रतां ते कार्यनी सिद्धि न थयाथी

पर इ पण दोष नथी. हे सुन्नटो तुम घणी हेनत करी, पण सीतानो शोध नही ते ं मारो शुं दोष ?दै ि स्याथी कोइनुं काइ चालतुं नथी. तुमे शुं!ने बीजा शुं!

एवु रामनु बोलवुं सांभलीने विराध आवी नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के, हे राम तुमे खेद करो नही कह्यु छे के, चिंता थकी रहित रहेवु ते लक्ष्मी मिलवानु कारण छे हु तुमारो दास छु. मारी पाताल लङ्कामां रहेवा सारू तुमे आवो. त्याहां आव्याथी सीतानो शोध सहज मिली सकशे एवु विराधनु बोलवु कबुल करीने तेनी साथे सैन्य सहित राम तथा लक्ष्मण पाताल लंका पासे आव्या. त्यारें खरनो पुत्र सुद युद्ध करवा सारू सैन्य सहित तेमनी सामे आव्यो. पूर्वेनो शत्रु जे विराध तेनी सामे ते आवी उभो रह्यो युद्ध चाल्या पछी चंद्रनखाए कह्याथी सुद त्याहांथी नाशीने रावणने शरण रहेवा सारू लंकामा गयो. पछी राम तथा लक्ष्मण वगेरे पाताल लंकामा जइने विराधने राज्य उपर बेसाड्यो पोते खर राजाना महेलमा रहेवा लाग्या. अने विराध युवराजानी परें सुदना घरमा रह्यो.

किस्किंधा नगरीना राजा सुग्रीवनी तारा नामनी अती मनोहर रूपवाली स्त्री छे ते जेवारे सुग्रीव ताराने परण्यो तेवारे ते कन्या साहासगती नामना विद्याधरने परणवानी इछा हती अने तेना उपर ते साहासगती घणोज मोहित थयो हतो तेथी ताराना बाप पासे तेनी मागणी करी, पण ते कन्या तेने नही आपता सुग्रीवने परणावी पछी ते साहासगतीने ताराना भोगना अभिलाषे करी रात दिव

स उंघ आवे नही तेथी करी तेणे सिद्धवान पर्वतनी गुफामां जइने प्रतारणी विद्याने साधीने, ते विद्याना योगें सुग्रीवनुं रुप लेइने महा दिपवा लाग्यो, ते जाणे बीजोज सुर्य होय! कोई एक वखतें सुग्रीव क्रिडा करवा सारूं उद्यानमां गयो. ते लाग जोइने ते किस्किंधानगरीमां जइ तेना अंतःपुरमां जवा लाग्यो. एटलामां साचो सुग्रीव बाहार दरवाजा पासें आव्यो. तेने जोइने द्वारपाले पाछो फिराव्यो. अने कहेवा लाग्यो के, सुग्रीव राजा हमणांज अंदर गयो. तुं कोण छे? ए उपरथी सुग्रीवे जाण्युं के, कोई बीजो कपटी सुग्रीव छे. ए संशयथी अंतःपुरनुं रक्षण करवा सारूं ते दरवाजा उपरज उभो रह्यो. ए वातनी लीना पुत्रने खबर पडतांज अंतःपुरमां जइने जे नदीना वेगने पर्वत अटकावे तेम तेणे ते जार सुगरीवने रोक्यो. पछी किस्किंधा नगरीमां चवदे अक्षोहिणी सैन्य मिल्युं. ते बेउंमां खरो कोण? ने खोटो कोण? तेनो भेद न जाणतां अरधुं सैन्य ए तरफ, ने अरधुं बीजी तरफ थयुं. पछी बेउंना माहो माहे दारुण युद्ध थयुं. घोडेस्वारनी सामें घोडेस्वार, हाथीना सामे हाथी, रथनी सामे रथ, अने पालानी सामे पालो, एम चतुरंग सैन्यमां परस्पर लडाई चाली. ते वखतें प्रौढप्रिय समागमे करी जेम मुग्धा नायका कंपायमान थाय, तें प्रमाणे पृथ्वी कंपावा लागी. सुग्रीव क्रोधमां आवीने कहेवा ला-

ग्यो के, हे पारका घरमां चोरनी परे पेशनारा, आ
व मारी सामें, एम कहीने तेने पोतानी साथें लढा
इ करवा सारू पासे बोलाव्यो. त्यारें ते जार सुग्रीव
मस्त हाथीनी परे गर्जना करीने सामें आव्यो.
पछी ते बेऊ माहो माहे लडवा लाग्या. तेथी यमना
भाईनी परें त्रणे जगतने दु ख देवा लाग्या. लडवा-
मा बेऊ कुशल हता. तेथी एक बीजाना हथियारो सू
कां घासनी परे तोडवा लाग्या पहाडानी लडाइमा
जेम झाडना कटके कटका उडी जाय, तेम तेउनी ल
डाइमा हथियारोना कटका थइने उड्या तेथी विद्या
धरोनी स्त्रीउ अति भय पामवा लागी. ज्यारे तेम
ना सर्व हथियारो तुटी गया त्यारें क्रोधायमान थइने
चालनारा पर्वतनी परे मल्लयुद्ध करवा लाग्या घडीकमा
आकाशे उडे, तो घडीकमा जमीन उपर लोटे, एवा ते
बेऊ शुरवीरोना चुडामणी कुकडानी परें मांहो माहे
जीतवा सारू एक बीजाथी दूर थइने बेलनी परें उ
भा रहे, फिरी बाथ भीडीने लडवा मडी जाय, पण को
ई कोइने जीते नही त्यारें साचा सुग्रीवे पोतानी मदत
करवा सारू हनुमानने बोलावीने फिरी खोटा सुग्रीवनी
साथे लडवा लाग्यो पण साचा झूठानो भेद न जा
णयाथी हनुमान कोईनी मदते आव्यो नही अने स
र्वेनी परें जोतो उभो रह्यो एटलामा खोटा सुग्रीवे
साचा सुग्रीवने कूटी पाड्यो त्यारें साचो सुग्रीव ला

चार थइ तथा म ां चिंता करतो थको नगरीनी
ाहार ज रह्यो. अने जार सुग्री जयने मारे
पोताने ठिकाणे गयो. लीना पुत्रे तेने अटका-
व्याथी ते अंदर जइ शक्यो नही.

पछी ाचो सुगरी नागोल ां बेठो थको विचार
कर लाग्यो के, ओ पर ी लंपट मारो वैरी कपट
कर ां के ो चतुर े! केते ी मायाए करी प्राणप्री
मित्र पण ारा शत्रु नी गया छे. ा ना परा
क्रमे री माराथी बल जे ओ ाहरो दुश्मन. तेने
ारी सकीश! फक्त ारा बल वडे ओ जीतवा
नें ि ण े. में वालीना ामने ल ाव्युं. माहरा पराक्र
ने धिक्कार छे. अने अ परा ी जे ाहरो नाई
ी ते तृणाशि नी परें राज्य कीने परंपदने पा
म्यो. तेने धन्य छे. ओ माहरो चंद्ररश्मी नो त्र
आ ा जग थी न ; ण लस्या विना ते
ाहरूं रक्षण री शके? पण एटलुं मा सारूं
करयुं के, ते पापीने ज न ा ां ज ा दीधो ही.
ए हा ल ानने मार ा किहां ी शर
णे जाऊं! पृथ्वी ां बलवान, था शु ीर
मरुत राजाना यज्ञने ोड ारो ए रावण द ां
आवे छे. त्यारें हिवे एनी शरणे ाऊं तो ा रूं
थाय! पण स्वनावे करी ए पण स्त्री ट छे, तेम
ज त्रण लोकने दं र ारो े, दै ना ोगे एने ण

बुरी बुद्धि आव्याथी बेऊने मारीने पोतेज तारा ने ल इ गयो तो पछी हु शु करू? एवा नाना प्रकारना त र्कों करवा लाग्यो. एटलामा याद आव्यु के, साह्य करवा लायक एक खर विद्याधर हतो तेने रामे मारी नाख्यो. ते वखतें आवेला विद्याधरोने जेणे पाताल लकानु राज्य आप्यु. एवा राम अने लक्ष्मण आश्रय लेवा योग्य छे एमनी साथे दोस्ती करू तो माहरू का म थाय ते महा पराक्रमी छे हमणां विराधना आग्र हेकरीने पाताल लकामा रहेला छे एवो विचार क- रीने सुगरीव, एकातमा पोताना एक दूतने समजावीने पाताल लकामा विराध पासे मोकल्यो.

ते दूत तिहाथी चाल्यो पाताल लकामां जइ वि राधने नमस्कार करीने पोताना स्वामीना-दु खनी स र्व वात कही समजावचा लाग्यो हमणा सुगरीव महा दु खमा पडेलो छे तुमारा तरफथी ने रामनी शरण लेवानी इछा करे छे एवु साजलीने विराध कहेवा ला ग्यो के, त्यारें ढील शानी छे? सुगरीवने अहीं जल दी मोकलु. कह्यु छे के, "मोटा पुन्यथी उत्तम पुरुषो नो समागम थाय छे" त्यारें ते दूत तिहाथी उठीने सुगरीव पासें गयो ने विराधे कहेलो वात कही सम जावी त्यारें सुगरीव घोडाना शब्दो सहित अति उ तावलो पाताल लकामा आव्यो थोडांज वखतमा विराधनी नगरीमा आवीने रामने मिल्यो. तेने जोइ

ने विराध अति राजी थयो. पछी विराधनी साथे रा
मचंद्रनी पासें आवी तेने नमस्कार करीने पोताना
दुःखनी वात सर्व कही संभलावीने केहेवा लाग्यो.
ए । हा दुःखना वखतें मने तुमारो आश्रय छे.
शोक आवती मुझायाथी सूर्यनी शरण , तेम ए
स ये तुमारा शरण छुं. एवुं तेनुं बोलवुं सांभ-
ली रा पोते दुःखमां तां तेनुं दुःख मिटाडवानुं क
बुल करयुं, कह्युं के, " मोटा पुरुषो छे ते पोताना कार्य
करतां जाना कार्य करवा षे अधिक महेनत ले छे "

पछी सुगरीवने विराधे सीताना हरणनी सर्व वात
कही भलावी. त्यारें सुगरीव हात जोडीने प्रार्थना कर
वा लाग्यो के, तुमे तो आखा जगतनुं रक्षण करना
रा ो. जेम अंधकारने नाश करवाने सूर्यने कोईनी
पिण मदत लागती नथी, तेम शत्रुने मारवाने तुमे
कोईनी मदत लेवा योग्य नथी. तथापि हे देव तमा
री पाथी मारा शत्रुनो नाश थएथी हुं माहारा सैन्य
सहित तुमारी सीतानो गमे तेम शोध करी पत्तो लगा
वीश. एवुं सुगरीवनुं बोलवुं सांभलीने सुगरीवने साथे
लेइने राम किस्किंधा नगरी प्रत्यें आव्या. तेमनी
पाछल विराध आववा निकल्यो तेने रामे पाछो फि
राव्यो. पछे रा नी मदतथी साचा सुगरीव खोटा सु
गरिवने लडाइ करवाने ेलाव्यो. तेवोज ते गर्जना क
री ाहार आव्यो. कह्यु छे " जेम भोजन करवा

सारूं बोलाव्याथी ब्राह्मण आलस करे नही, तेम शु र पुरुषो युद्ध करवामा आलशी होता नथी " पछी वेऊ मदोनमत्त हाथीनी पेरे युद्ध करवा लाग्या. रामे ते वेऊना सरिखा रुप जोईने साचा सुगरीवने उलख्यो नही. तेमज खोटो पण जाण्यो नही एवा संशयथी थोडीवार उदासीन थइ रह्या. एटलामा युक्ति याद आ व्याथी पोतानी पासेना वज्रावर्त धनुष्यनो मोटेथी ए क ठणकार कर्यो. तेना योगे रुपांतर करनारी साहा सगतीनी विद्या हरणनी पेरें नाशी गइ त्यारें तेनुं कपट देखाइ रह्यु. त्यारें तेने राम केहेवा लाग्या के, माया वडे सर्वने मोहित करीने परस्त्रीनी साथे सुख भोग भोगववानी इछा करे छे, माटे तेने धिःक्कार छे, हे पापी हवे मारी सामे धनुष्य सज्ज कर. एवुं सां भलीने ते घावरो बनी गयो. एटलामा रामे एक बा णथी तेना प्राण लीधा जेम हरणने मारवाने सिंह ना हालने बीजीवार मेहेनत पडती नथी तेमज रा मने बीजा बाणनी गरज रही नही पछी विराधनी परें-सुगरीवने किस्किंधाना राज्य उपर रामे वेसाड्यो. तेवारपछी त्याहांनी सर्व प्रजा सुगरीवने राजा मानवा लागी. सुगरीव प्रसन्न थइने पोतानी तेरे कन्या राम ने देवानी प्रार्थना करवा लाग्यो त्यारें तेने रामे क ह्यु के, हे सुगरीव, ए कन्याउ अने बीजी हरेक वस्तु लेइने माहरे शु करवु छे? माहरी सीतानो शोध कर्या

थीज तारो प्रत्युपकार मानी लेईश. एम कही राम त्या
थी बाहार आवीने रह्या. सुग्रीव पोतानी नगरीमां गयो.

लंका नगरीमां खरादिक मरी गयानुं सांभलीने मंदोदरी आदिक स्त्रीयो अने सुंद पुत्र सहित चंद्रन खा वगेरे रडती रडती तथा बाती कुटती रावणने घर ग ई. चंद्रनखा रावणना कंठने लागीने मोटा स्वरे र डती थकी बोलवा लागी. हे भाइ. दैवे करी हुं हणा इ छुं. माहरो पुत्र मरी गयो, पति पण मुवो. बेउं देव रोनी तेवी गति थइ, चवदे हजार सैन्यनो पत्तो पिण मिल्यो नही. तें दीधेली पाताल लंकानी राजधानी पिण रही नही. तुं जीवतो छतां गर्वे करी मातेला वै रीयोए अमारी एवी अवस्था करी. हुं तथा आ माह रो पुत्र ए बे जण ज्यारें पोतानो जीव लेइने नाठा, त्यारें आ तारी पासें आवी पहोता छेए. हिवे माहरूं रहेवानुं ठेकाणुं क्युं? ते मने कहे, एवुं तेनुं बोलवुं सांभलीने रावणे तेने धैर्य आप्युं, ने कह्युं के ताह रा पति तथा पुत्रने मारवा वालाने हुं थोडाज दिव शमां मारीश. एम कहीने रावण खरादिक पोताना संबंधीनो शोक. तथा सीता साथें भोग भोगववानी संपूर्ण इछानी पिडानी वेदनाथी बेशुद्ध थइने एकाए की पलंग उपर पड्यो, त्यारें मंदोदरी राणी तेनी पा सें आवीने कहेवा लागी के, हे स्वामी; सामान्य जीवो नी परें केम तुमे चिंतातुर थया छो? त्यारें रावण कां

इक शुद्धिमां आवीने कहेवा लाग्यो के, हे प्राणप्रिय स्त्री, जानकीना विरहरुप तापे करी बुद्धि मूझाइ ग ई छे, हाल चाल करवाने शक्ति रही नथी. बोलवानो सामर्थ्य नथी. खावा पीवानु गमतुं नथी कांइ जोवा नी इछा थती नथी हिवे थोडा दिवशमा प्राण पण चालता रही जवाय जेवु देखाय छे तेथी जो माहरा जी ववानी तने आशा होय तो पोतानो मान मूकी सी तानी पासे जइने तेनी माहरा विषे प्रीति कराव. इछा न करनारी स्त्रीनी साथें हु कदी पण जोग करना र नथी एवो में गुरुनी साक्षीथी नियम करयो छे. माटे ते मारी इछा करे तेवु कर एवा रावणना वच नो सांभळीने पतिनी पिडाए पिडाती थकी ते कूली न मदोदरी तेज वखते देवरणोद्यानमा सीतानी पासे जइने तेने कहेवा लागी के, हुं रावणनी स्त्री मदोद री छु आजथी ताहरी दासी थवानी इछा करू छु. हमणा तने बोलाववा आवी छु माहरी साथें चालीने तु रावणनी सेवा कर हे सीता, तु धन्य छे केमके माह रो पति रात दिवश तारी सेवा करवानी इछा करे छे, आ रावण ताहरो पति थएथी, भुचर, तपस्वी, त था पगे चालनारो राम तने गमशेज नही अने ते ने तु शु करीश एवु मदोदरीनु बोलवु सांभलीने सीता क्रोध करी कहेवा लागी अरे ! सिंह किहा ! ने कोल्हो किहा ! गरुड किहा ! ने कागडो किहा ! ते

मज तारो पति रावण किहां! ने मारो पति राम किहां? हे मंदोदरी तारो पति पापिष्ट जे रावण, अने तुं दुष्ट जे तेनी स्त्री, ए बेऊंनुं दंपतित्व (स्त्री पुरुषपणुं) योग्य छे. केमके तारो पति परस्त्री लंपट छतां तुं तेनुं कुंटणपणुं करवा निकली छेए. माटे ताहरूं मुख पण जोवा योग्य नथी. तो पछे मिलवुं तो दुरज रह्युं, तो हिवे मारी निजरनी सामें उभी रहेवुं तने योग्य नथी. हिवे अहींथी जलदी जती रहे. एटलामां रावण पण तिहां आवीने बोलवा लाग्यो. हे सीता तुं शा साहरू कोपायमान थइ छे. आ मंदोदरी तारी दासी छे. अने हुं पण तारो दास छुं. हे देवी, हिवे माहरा उपर कृपादृष्टी कर. हे जानकी. मारी साथें तुं निजरथी पण जोती नथी के! एवुं रावणनुं बोलवुं सांभलीने सीता पोतानुं मुख फिरावी बेशीने केहवा लागी के, हे पापी! रामनी स्त्री जे हुं; तेनी उपर तें कुदृष्टि करयांथी हुं तारी उपर कालदृष्टीए जोऊं छुं. अप्रार्थीनी प्रार्थना करनारो जे तुं; तेना आ नष्ट आशाने धिःकार छे. अरे! विचार कर. के शत्रुउनो नाश करनारो जे मारो पति राम. ते जीवतो छतां तुं केम जीवतो रहीश? ए प्रमाणे जानकीए रावणनुं वारंवार तिरस्कार करयुं छतां फिरी फिरी रावण तेमज बोलवा लाग्यो. माटे तेने धिःकार छे. कह्युंछे के, कामावस्था मोटी बलवान छे.

एटलामा दु ख पामेली सीतानी सामे जोवाई न
ही शकवाने लीधेज जाणे पश्चिम क्षीर समुद्रमां सू
र्य पेसी गयो होय । अने महा घोर रात्र आवी प
डी ते वखते रावण सीताने उपद्रव करवा लाग्यो वे
लुक पक्षी महा भयकर शब्दो करवा लाग्या. जंबु
क पूकार करवा लाग्या वृक नामना जिनावर बुबो
करवा लाग्या. मोटामोटा व्याघ्र जमीन उपर पूछमां
पटकाववा लाग्या महान सर्प फूंफूकारो करवा लाग्या.
भुत, प्रेत पिशाच्य, वेताल, वगैरे नाचवा अने उडवा
लाग्या. ते निशाचरो पासेथी रावणे विकराल रुपो
लेवरावीने सीतानी पासें आण्या. त्यारे सीता पोता
ना अत करणमा पच परमेष्टीरुप [नवकार] मन्त्रे
करी निर्भय थइने जेमनी तेम रही पण रावणनी से
वा करी नही. बीजे दिवशे सवारना बिभीषण राम
नो वृतात जाणीने रावणनी पासें गयो पछी सीता
पासे जइने तेने पूछवा लाग्यो हे भद्रे, तु कोण छे ?
किहाथी आवी छे ? भय मत राख जेवी वात होय ते-
वी मने कहे एवु तेनु मीठु बोलवु सांभलीने, आ कोई
निष्कपटी छे एम जाणी सीता निचे मुख करीने ते
ने कहेवा लागी, हु जनक राजानी कन्या छु भामंड
ल राजानी बेन छु सीता माहरू नाम छे रामनी स्त्री
छु अने दशरथ मारो सुसरो छे. पति अने देवर स
हित हु दंडक वनमा आवी तिहा एक समये मारो

देवर क्रीडा करवा सारू आम तेम फिरतां आकाशमां एक मोटो खड्ग जोइने कौतुके करी तेणे लइ लीधो, ते खड्गथी तेणे एक पासेनी वंसजाली छेदन करी. तेमां खड्गने साधनारनुं माथुं अजाणे कपाई गयुं. त्यारें ते पश्चाताप करवा लाग्यो के, आ अयुद्धमान तथा निरपराधी छतां तेने में अज्ञाने करी मारी नाख्यो, पछी ते रामनी पासे आव्यो. ते खड्गनी उत्तर साधक कोइ एक स्त्री पण माहरा देवरनी पाछल आवी. ते माहरा पतीने जोइने कामातुर थइ. तेने रामे निरादर करयो. त्यारें ते कोपायमान थइने गइ. त्यार पछी राक्षसोनुं सैन्य युद्ध करवा सारूं आव्युं. ते जोइने रामनी साथें लक्ष्मण सिंहनादनो संकेत करीने युद्ध करवाने गयो. तिहां एक राक्षसे कपटें करी सिंहनाद करीने मारा पतिने दूर कहाडीने पोताना मरण सारू माहरूं हरण करयुं.

(एवुं सीतानुं बोलवुं सांभल्या पछी रावणने नमस्कार करीने तेने बिभीषण कहेवा लाग्यो.)

हे स्वामी, तें आ काम करयाथी आपणा कुलने कलंक लाग्युं. जिहां सुधी भाइ सहित राम आपणने मारवाने आंहीं आव्यो नथी; तेनी आगलज सीताने लेइ जइने पाछी आपवाथी आपणुं सारू थशे. तथा आ लोकनो अपवाद अने परलोके दुर्गती ते मिटशे, एवुं [illegible]भीषणनुं [illegible]लवुं [illegible]ांभलीने रावण

थमां आवीने केहे छे, हे बिभीषण; तु आ शुं बो-
ले छे ? शु माहरा पराक्रमनी तने खबर नथी ! आल
वत में सीतानु हरण करयु छे. ते मारी स्त्री थशे. बि
चारा गरीब ते राम लक्ष्मण आही आव्यां तो त्योने
तेज वखते मारी नाखीश मारी पासे तेमनुं शु चालवा
नु छे ? एवु रावणनु बोलवुं सांभलीने बिभीषण केहे छे,

हे रावण, " रामनी स्त्री जे सीता तेना थकी आ
पणा कुलनो क्षय थशे " एवा जे ते ज्ञानी पुरुष
ना वचनो छे ते खरा थवाना छे थवानु छे ते अ
वश्य थाय छे तथापि हु तने प्रार्थना करू छु के,
ए सीताने तु पाछी आप

एवी रीते बिभीषणे शिखामण आपी ते नही
मानता तेनो अनादर करीने तथा पुष्पक विमानमा सी
ताने बेसाडीने चालता वाटमा तेने एवी रीते देखाडेछे

सीताने पोतानी आगलीथी बतावे छे आ रत्नो
ना सिखरोनो क्रीडा पर्वत छे. आ नदन उद्यान
जेवा उपवन छे, आ पाणीना फुवाराना घरो छे, आ
क्रीडा करवानी नदियो छे, आ स्वर्गना जेवा रतिभो
ग करवाना घरो छे,हेस्त्री तु अही मारी साथें रममाण था.

एवी रीते सांभलीने सिंहीणी जेवी सीता रामनु
ध्यान करीने तेना बोल्याथी काइ पण ललचाइ न
ही. ए प्रमाणे रावणे सर्व रम्य स्थानोमा फिरी फि
री सीताने बताव्याथी तेनु मन न पिगलवाने ली-

धे, फिरी तेने अशोक वनमां जइ की. एवी - न्मत दशामां रावणने बिनीपण जोईने पोताना प्र धानो थें सलेहत करवा लाग्यो.

हे अमात्यो! कामादिक जे अंतर शत्रु छे तेमा नो एक तो प्राणीउने नुतनी परें उन्मत करी नाखे `. तेथीज आपणो राजा रावण कामातुर थइ रह्यो छे. ए एकलोज अति दुर्जय छे. तो पछी तेन सा- ह्यता मिल्याथी शुं केहवुं? आ रावण परस्त्रीनी अभि लापाए ोटा दुखमां पडनार छे. एवुं तेनुं बोलवुं सांनली ते त्रीउ केहे । लाग्या.

नाई अमेतो नामना मंत्रीउ छेए. खरो मंत्री तो तुं छे. जेनी एवी दूर दृष्टी छे! ए ं त्रीउनां चन ंनलीने बिनीषण केहे छे. जेम मिथ्यादृष्टी ज ोने जैन ध ना उपदेशनी परें कामाधिन जे आ रा ण तेने विषे शुं त्तम विचार करूं! सुग्रीव हनुमा ादिक जे सुनटो ते रामने जइ मिलेला `. क ुं छे के, "न्याय ` चालनारा पुरुषोनो पक्ष कोण अ वलंबन रे?" सीता थकी अमारा कुलनो ना- श थवा ुं तो ानीए क ुं छे. तथापि समयोचित कर्तव्य पुरु ाधिन छे.

एम कही प्रा ारो उपर त्रादिकोनी योजना करवा लाग्यो अने त्री आगलथ ाना कार्य, ते जोवा लाग्या.

आंही रा चंद्रना विरहे करी पिडि लक्ष ऐ केट

ळोएक वखत कहाड्यो पणी रामनी आज्ञाए करी धनुष्य बाण हाथमा लेइने सुग्रीव तरफ चाल्यो. ते वखते पृथ्वी चूर्ण थवा लागी पर्वतो कंपायमान थ- वा लाग्या उतावला वेग वडे रस्ताना ऋाडो पणा ज वा लाग्या एवी रीते लक्ष्मण पोतानी भृकुटी चमावी ने सुग्रीवना घरमा लक्ष्मण गयो ए वातनी सुग्रीव- ने खबर पडताज ते अंत पुरथी बहार आवीने भये करी कापतो थको हाथ जोडीने लक्ष्मणनी सामे ऊ- भो रह्यो, त्यारे लक्ष्मण क्रोधमां आवीने तेने कहेवा लाग्यो के, हे वानर, तारू काम थयु एटले तु निःश क अंत पुरमां रहेवा लाग्यो अने राम बाहेर ऋाडनी निचे बेशीने पर्वतनी परे दिवस कहाडे छे तु जे प्रथम बोल्यो हतो ते शु भुली गयो के? हे सुग्रीव हिवे विलंब न करता सीताना शोधने वास्ते जलदी ऊठ. नहितर साहसगतिनो रस्तो जोवो पडशे. एवु ल क्ष्मणनु बोलवु सामलीने सुग्रीव तेने नमस्कार करी ने केहवा लाग्यो के, हे लक्ष्मण तुमे कोप करो न- ही मारा आ पेहेला अपराधनी क्षमा करो, एवी रीते राजी करीने लक्ष्मण सहित सुग्रीव रामनी पा से आवीने भक्तिथी तेने नमस्कार कर्यो. अने पो ताना सैनिकोने आज्ञा करवा लाग्यो के, तुमे सर्वत्र अकुंदित गति छो, माटे हमणा सीतानो शोध करो विलंब करवानु काम नथी, एवी सुग्रीवनी आज्ञा थ

इथी ते सर्व वानर जानकीना शोधने ास्ते सर्व द्वी पोमां, पर्वतोमां; फिरतां फिरतां जवा लाग्या,

सीताना हरणनी वात भामंडल राजा सांभलीने रामनी पासें आव्यो, अने अति शोक करवा लाग्यो, विराध पण पोताना सैन्य सहित आवीने रामनी सेवा करवा लाग्यो. अने पासेज रहेवा लाग्यो.

सुग्रीव पोते सीतानो शोध करवा सारू फिरतो फिरतो कंबुद्वीपमां आव्यो तेने रत्नजटी विद्याधर जोईने मनमां विचार करवा लाग्यो के, रावणे मारा अपराधनुं स्मरण करीने मने मारवा सारू सुग्रीवने मोकल्यो जणाय छे! पूर्वे रावणे मारी विद्या हरण करी, अने आ वखतें सुग्रीव मारा प्राण हरण करशे. एवी चिंता करे छे एटलामां सुग्रीव पासे आवीने केहवा लाग्यो के, तुं मने जोईने केम उठ्यो नही? आकाश मार्गे जवाने तुं आलशी थयो के शुं? त्यारें ते बोल्यो के, रावणे मारी सर्व विद्या हरण करी, तेथी हु असमर्थ थयो छुं, जे वखतें रावणे जानकीनुं हरण कर्युं ते वखतें तेनी साथें हुं युद्ध करवाने तेनी सामें गयो, तेथी मारी एवी अवस्था थइ छे, एवुं तेनुं बोलवुं सांभलीने सुग्रीव तेने रामनी पासें लेइ आव्यो. तिहां तेने सीतानी खबर पूछयाथी ते केहवा लाग्यो के, हे दे , दुरात्मा जे रावण, तेणे सीताने ने री विद्याने हरण करी, सीताने विमानमां

बेसाडीने लेइ जतां, हा राम ! हा वत्स लक्ष्मण ! हा भामंडल बधु ! एवो सीतानो आक्रोश सांभलीने मने रावण उपर घणो क्रोध चड्यो, ने तेनी साथे लडवा गयो तेथी तेणे मारी एवी दशा करी, एवो वृतांत सां भलीने राम मनमा राजी थयो थको रत्नजटी विद्याधरने आलिंगण कर्यु ने फिरी फिरी सीता नो वृतांत रामे पूछयो, ने तेने रत्नजटीए कह्यो. पछी सुग्रीवादिक महा शुर वीरोने रामे पूछ्यु के, ते रा क्षसनी लंका नगरी आहींथी केटली दुर छे? त्यारे ते ओ केहेवा लाग्या के, लंका नगरी दूर अथवा पासे होवाथी शु करवानु छे? जगतने जीतवावालो जे राव ण, तेनी सामे अमे सर्व कसपट जेवा छैए त्यारे तेओने राम कहेवा लाग्या के, जय अथवा अजय नो विचार हु पूछतो नथी. पण ते राक्षस क्यां छे? ते बतावो एक वखत मने बताव्या पछी मारा सा मर्थ्यनी तुमने खबर पडशे. त्यारें लक्ष्मण बोल्यो के, ते रावण कोण छे? तेणे आ काम करवाथी कुत्रा नी परें निर्बल जणाय छे केमके, कपटे करी सीता नु हरण कर्यु पण मारा क्षात्रिय धर्मे करी हु ते नु माथु काप्या विना रहीश नही. तुमे स्वस्थ थइ ने मात्र संग्रामनाटक जूवो त्यारे जाम्बुवान बोल्यां के, तुमे कहो छो ते योग्यज छे, पण जे "कोटि शिला नामक शिलाने उखेडशे. ते रावणने मारशे" एवां

अनंतवीर्य साधुनां वचन छे. त्यारें हिवे अमने धै र्य आववा सारू ते शिलानुं उत्पाटण करो. त्यारें लक्ष्मणे कह्युं के, ते हुं कबुल करूं छुं. त्यारें जांबु वानादिक सुभटो लक्ष्मणने आकाश मार्गें लइ जइ जिहां ते कोटि शिला हती तिहां ते विद्याधरोए उतारयो तेने जोइने पासे जइ लतानी परें ते शिलाने लक्ष्म णे खेडी नाखी, ते समयें देवोए तेनी उपर फूलो नी वृष्टि करी. त्यारें विद्याधरोने धैर्य आव्याथी फि. री आकाश मार्गें उमीने किस्किधा नगरी प्रत्ये आ व्या. तिहां रामनी पासें लक्ष्मण आववा लाग्यो त्या रें तिहां आवेला मोटा वानर बोलवा लाग्या के, तु मारा हाते रावणनो नाश थशे, माटे प्रथम शत्रु पा से दूतने मोकलो, एवी नीति छे, दूतद्वारा जो कार्य सिद्धि थइ तो यत्न शा सारूं करवो? तथी तिहां ए क महा पराक्रमी दूतने मोकलो. केमके ते लंकामां जावा आववाने घणुं कठण काम छे; एम संभलाय छे. दूते लंकामां जइने सीता पाछी देवा विषे बिभी षणने कहेवुं. केमके ते राक्षसकुलमां वजनदार छे. सीताने मूकी देवाने ते रावणने बोध करशे, अने जो रावणे तेनुं नहीं मान्यो तो ते तुमारा तरफमां थशे, ए वचनो रामे मान्य कर्यां, एटलामां सुग्रीवे हनु .मनने बोलाववा सारूं एक श्रीभूति ना ना वानर ने मोकल्यो. तेना कह्याथी हनुमान तिहां आवीने सु

ग्रीवादिक सहित बेठेला रामने नमस्कार कर्यो, त्यां रे सुग्रीव रामने केहेवा लाग्यो के ओ महा पराक्रमी हनुमान विपत्ति समयें परम बांधव छे. ए सर्व विद्या धरोमां एनी बराबरी करनारो बीजो कोई नथी, तें माटे हे स्वामि, सीतानो शोध करवा सारू एनें आज्ञा करो, त्यारे हनुमान केहेवा लाग्यो के, माहरा जेवा हजारो वानर छे, पण मारा उपर सुग्रीवनो प्रेम होवाथी ए मारी तारीफ करी रह्यो छे, धव, गवाक्ष,गवय,शरभ,गंधमादन,नील,द्विविद,जांबुवान, अंगद, नल, अने बीजा पण हजारो श्रेष्ठ वानर छे, तेउनानो एक संख्या पूरी करनारो हु तुमारा कार्य सिद्धिने अर्थें कहो तो राक्षसद्वीप सहित लंकाने उखेडीने आंही लावु ! कहो तो भाइउ सहित रावणने बांधी लावु ? अथवा कुटुंब सहित रावणने तिहांज मारीने जानकीने आंही लेइ आवु, एवु सांभलीने तेनें राम केहेवा लाग्यो के, तारा विषे सर्व मनावे छे, ते माटे तुं लंकामां जलदी जइने सीतानो शोध लगाव, मारा हातमानी मुद्रिका लेइने ए मारी नीशानी तेने देजे, अने तेनो चुडामणी मने लावी आप, सीताने मारा तरफथी एम केहेजे के,हे देवी,राम तारा वियोगथी पिडित थइ रात्र दिवश ते तारूज ध्यान करता रह्या छे,मारा वियोगे करी तु पोताना प्राण त्याग करीश नही, लक्ष्मणे रावण मारेलो तु थोडाज दिवशमां दे

शीश. एवुं सांभलीने हनुमान कहेवा लाग्यो के, हे प्रभु तुमारी आज्ञाथी हुं लंकामां जईने थोडाज कालमां फिरी पाछो आवीश. तिहां सुधी तुमे आंहीज रहीजो. एम कही रामने नमस्कार करीने पोताना परिवार सहित विमानमां बेशीने मोटा वेगथी सीताना शोध सारूं लंकापुरी तरफ चाल्यो.

हनुमान आकाश मार्गे जतां रस्तामां माहेंद्र पर्वत उपर पोताना मातामह (मातानो बाप) जे महेंद्र राजा, तेनुं नगर जोईने विचार करवा लाग्यो के जेणे निरअपराधी मारी माताने नगरमांथी बाहेर कहाडी मूकी हती, तेनुं आ नगर छे, एवुं स्मरण करीने महा क्रोधायमान थयो थको तेणे रणवाद्यनो नाद कर्यो. महेंद्र राजा शत्रुनुं सैन्य जोइने पुत्र अने सैन्य सहित युद्ध करवा सारू बाहेर निकल्यो. पछी महेंद्र अने हनुमान विचे परस्पर लडाइ थवा लागी. त्यारें वायु जेम झाडोनो नाश करे, तेवी रीते हनुमाने पोताना शत्रुना सैन्यनो क्षण मात्रमां नाश कर्यो. महेंद्रनो पुत्र प्रसन्नकीर्ति, ते आ हनुमान पोतानी बेननो पुत्र छे, एम न जाणीने तेनी साथें युद्ध करवा लाग्यो. बेउं महा पराक्रमी हतां अत्यंत क्रोधायमान थइने मोटो युद्ध करतां हनुमान मनमां विचार करवा लाग्यो के, हुं युद्धमां रोकाइ गयो थी रामना कार्यमां ढील थइ. माटे मने धिक्कार छे. [illegible]

मीज वारमां जीतवाना ते बीजाज छे, आ सैन्य मा॰ रो मातृकुल (माताना मोसाळीआं) छे. तोपण जे आ रंभ कर्यो ते निभाववाना हेतुथी एमने जीत्योज जो इए. एवो विचार करीने हनुमान क्रोधमां आवी थो डाज वारमां पोताना शस्त्रे करी तेना सर्व सैन्यने मो हित कर्यु. तेमना अश्व रथ, तथा सारथीओ वगेरे नु धाण कहाडी नाख्युं पछी हनुमाने प्रसन्नकीर्ति ने पकडी लीधो. तेमज महेंद्र राजानी साथे युद्ध क॰ रीने तेणे पण पकडी लीधो. पछी तेने नमस्कार करी ने केहवा लाग्यो के, हु तुमारो दोहित्रो [पुत्रीनो पु त्र] छु. रामनी आज्ञाए करी जानकीना शोधें लंका तरफ जता आहीं आव्यो. त्यारे मारी माताने तुमें कहाडी मूक्यानु स्मरण थयुं तेथी क्रोध आव्याने लीधे आ युद्ध कर्यु हे स्वामी, तेनी तुमे क्षमा क रो हमणा हुं मारा स्वामीना काम सारू जाऊ छुं. मारा स्वामी रामनी पासें तुमे जावो. एवुं सांभळीने महेंद्र राजा तेनु आलिंगन करीने कहेवा लाग्यो के, हे महाभुज, एटला दिवस हु लोकोना मुख थकी तारू सामर्थ्य सांभळतो हतो, ते आज मोटा भाग्ये में तने प्रत्यक्ष पराक्रमी जोयो. हिवे तुं तारा स्वामीना कार्य सारूं जा, आ मार्ग तने कल्याण करनार थाओ. पछी पोताना सैन्य सहित महेंद्र राजा रामनी पासें गयो.

हनुमान आकाश मार्गे जता दधिमुख नामना

द्वीपमां कायोत्सर्ग ध्याने रहेला बे मुनिउने तेणे दी
ठा. अने तेमनी पासें ध्यानमां बेठेली त्रण विद्याध-
रोनी कुमारिकाने जोइ. एवां समयमां ते द्वीपमां एक
मोटुं दावानल लाग्युं, तेना संकटथी ते साधु तथा कु
मारीयो मोटुं दुःख पामवा लागी. हनुमानने तेओ
नी दया आवी. तेथी पोतानी विद्याना बले समुद्रमां
थी पाणी आणीने मेघनी परें ते दावानल ओलावी
नाख्युं. एवां प्रसंगे ते कन्याउ ने विद्या सिद्ध थइ.
प गी ते मुनिउले प्रदक्षिणा करीने हनुमानने केहेवा
लागी के, साधुउनो उपसर्गथी रक्षण करवुं ए योग्य
बे. तारी साह्यताए करी समय शिवाय अमने वि
द्या सिद्ध थइ तेथी अमे तारो उपकार मानीए गेए.
त्यारें हनुमान तेमने पूबवा लाग्यो के, तुमे कोण गे?
त्यारें ते केहेवा लागी के, दधिमुख पुर नामना नगर
ां गांधर्वराज नामनो एक राजा बे, तेनी स्त्री कुसु
म ालाना उदरथी अमारू जन्म थयुं . अमारा बा
पनी पासें घणा विद्याधरो तरफथी अमारी मागणी
थ आवी, तेमां एक अंगारक नामनो विद्याधर अ
ारा साहू अति उन्मत थयो. तेमानां कोइने अमा
रा ापे आपी नही. कोइएक दिवशे अमारा बापे ए
क मुनिने पुबयुं के, आ मारी कन्याउनो पति कोण
थशे! त्यारें तेणे कह्युं के, जे साहसगति विद्याधर
ो नाश करशे ते ए कन्याउनो पति थशे. एवी री

ते ते मुनिना केहेवा उपरथी अमारा बापे तेनो घ. णो शोध कर्यो, परंतु ते किहाय मिल्यो नही. ते मि लवा सारू अमे आहीं आवीने विद्यानी साधना कर वानो आरंभ कर्यो. तेनो नाश करवा सारू अंगा- रक विद्याधरे आजे दावानल सलगाव्यु हतुं, तेनो ते निष्कारण मांहए नाश कर्यो. तेथी मनो गामीनी विद्या जे छ महिने सिद्ध थनार ते अमने थोडीज वारमा सिद्ध थइ. एवु तेनु बोलवु सांभलीने रामे साह सगतिने मारवानु तेउने हनुमाने कह्यु अने पोता नु लंकामा जवानु पण कह्युं एवु सांभलीने ते कन्या ओ पोताना पिता पासे जइ तेने सर्व वात कही त्यारें ते पोतानु सैन्य तैयार करीने तत्काल रामनी पासे आव्यो.

हनुमान तिहाथी उडीने लंका नगरीनी पासें आ व्यो, तिहा कालरात्रनी परें आशालीका विद्या जोइ. तेनी पासें आव्यो, त्यारे ते विद्या हनुमानने केहेवा लागी के, हे कपी, तु किहा चाल्यो ? आज मने तु भक्षण मिल्यो, एम कहीने ते विद्याए पोतानु मुख पसार्यु त्यारें हातमा गदा धारण करनारो हनु- मान तेमा पेठो, पछी जेम सूर्य वादलाने दूर करीने निकले, तेम तेना पेटने फाडीने हनुमान बाहेर नि- कल्यो, ते विद्याए करेला लंकापुरीना किल्लाने हनु माने पोतानी विद्या वडे जेम ठीकराने फोडी नाखेछे तेम कटके कटका करीने तोडी नाख्यो, ते किल्लाने

राखवावालो जे वज्रमुख नामनो राक्षस, तेनी साथें लडाइ करीने तेने मारयो. त्यारें तेनी लंकासुंदरी नामनी कन्या क्रोधमां आवीने हनुमाननी साथें लडवा तैयार थइ, ने हनुमानने बोलाव्यो. पछी आकाशमां विजलीनी परें रणभुमिमां लंकासुंदरी आवीने पर्वतने मारवानी परें हनुमानने मारवा लागी, त्यारें तेना सर्व हथियारोने हनुमाने पोताना हथियारोथी लीला मात्र तोडी नाख्यां, तेथी पांदडा विनानी लतानी परें ते हथियार विनानी लंकासुंदरी देखावा लागी. पछी ते मनमां विचार करवा लागी के, एते कोण छे! एवां आश्चर्यने पामीने हनुमाननी सामें जोवा लागी, तेथी तेने कामविकार उपन्यो, त्यारें तेने कहेवा लागी के मारो बाप मुवाथी हुं रीसमां आवीने विचार न करतां तारी साथें युद्ध करवा लागी. पूर्वें एक साधुए मने कह्युं हतुं के, जे तारा पिताने मारशे ते तारो पति थशे. माटे हे नाथ, तुमें माहरी जोडे लग्न करो. आ जगतमां तारा जेवो शुरवीर कोण छे? आपणो मेलाप थएथी सर्व स्त्रीउमां गर्वीत रहीश. एवुं बोलवुं सांभलीने हनुमाने तेनी साथे गांधर्व विवाह करयो. पछी ते रात्रे लंकासुंदरीनी साथे रममाण थइने हनुमाने कहाडी.

पछी सोनाना तंतु जेवां पोताना किरणो वडे प्रकाश करतो थको सूर्य उदय थयो. विकसित कुमुदिनीनी उ

पर सूर्यना किरणो पड्याथी ते सकोचावा लागी- श्रोओए माथामांना फूलो कहाडी नाख्यां, रात्रना जागरणथी नेत्रो जेनां राता थया छे एवी जे गणिका ओ, ते कामी पुरुषोना घरोथी पाछी फिरी जेम मुख माथी श्वास निकाले छे तेम विकसित कमलना को शमाथी भमरा निकल्या सूर्यना तेजे करी लतातनु नी परे काति रहित चद्रमा देखावा लाग्यो मोठा वा युथी जेम मेघनो नाश थाय छे,तेम आखा ब्रह्मांड मां न समावनारो अधकारनो सूर्यना किरणो वडे नाश थयो रात्रनी परे निंद्रा गया पछी सर्व लोक पोत पोतानु काम करवा लाग्या ते समये लकासुदरीने हनु माने पूछीने ते लकामा विभिषणने घर गयो विभिष णे तेनो सत्कार करीने तेने आववानुं कारण पूछ्यु. त्यारे हनुमान गभीर वाणीथी बोलवा लाग्यो हे वि भीषण तु रावणनो भाई छे, माटे तेना कल्याणनो विचार करीने रामनी स्त्री पतिव्रता जे सीता, तेने रा वणना हातथी मूकाव सीतानु हरण करनारो तारो भाई जो पण बलवान छे, तो पण तेने आ लोकमा अने परलोकमा दु खकारक छे. एवु सामलीने बिभी षण केहेवा लाग्यो के, हे हनुमान, ते घणु सारू क ह्यु, सीताने मूकी देवाने मे पूर्वेज कह्यु हतु अने फि री रावणनी हु प्रार्थना करीश मारा भाषणथी जो ते सीताने मूकशे तो ठीकज छे एवु विभिषणनु बोलवुं सा

भलीने हनुमान तिहांथी उठी देवरमण उद्यानमां गयो.
तिहां जइ जूए छे तो अशोक वृक्षना नीचे सीता बेठी छे. तेना भाल उपर बाल पसरेला छे. नेत्रोमांथी पाणी वहे छे. जाणे तेना योगेज पृथ्वी उपर न्हाना तलावो थयां होय ! मुखो जेनुं उतरी गयुं छे, शरीर सुकाइ गयुं छे. उष्णश्वास करीने जेना होठ फिका थइ गया छे. योगिनीनी परें मुखथी राम राम जप करी रही छे. अंग उपरना वस्त्र जेना मलीन थयां छे, रतिमात्र पण जेने देहनी अपेक्षा नथी, एवी अवस्थामां सीताने हनुमान जोईने मनमां चिंतन करवा लाग्यो के, आ सीता महा पतिव्रता छे. एना दरशनथी सर्व जन पवित्र थाय छे. तेना विरहे करीने राम खिन्न थाय छे. ए योग्यज छे. केमके रूपमां अने शीलमां एना जेवी पवित्र कोणनी स्त्री छे? आ रावण, रामना प्रतापे करी, तथा पोताना पापथी अति कष्ट भोगवशे, पछी हनुमाने अंतरहित थइने सीताना खोलामां रामना हातनी वींटी नाखी. तेने जोइने सीता राजी थइ. ते वखतें त्रिजटाए जइने रावणने कह्युं के. एटला दिवस सुधी जानकी महा शोकमां हती. पण आज आनंदमां आवेली जणाय छे. एवुं सांभलीने रावण मनमां केहवा लाग्यो के, ए रामने भूली गइ. हिवे मारी साथें रममाण थशे. एवो विचार करीने मंदोदरीने केहवा लाग्यो के, तुं जईने सी-

ताने उपदेश कर. एवु साम्भलीने तथा पतिनु दूतप एुं कबुल करीने सीताने फसाववा सारू तेनी पासे आवीने कहेवा लागी ऐश्वर्ये करीअने सौंदर्ये करी 'श वण श्रेष्ठ छे तेमज तु पण रुप लावण्य सपत्ति वडे अप्रतिमरुप छे ते वेऊनो जो पण अद्य विधाताए संयो ग करयो नही. तथापि सयोग करवानी आ वेला छे. त्या रे हे सीता. हिवे तु आःहीथी उठ अने ते रावणनी सेवा कर हु अने तेनी बीजी स्त्रीउ तारी आज्ञामा रहिश, एवु साम्भलीने तेने सीता केहे छे के, हे दूष्ट, पतिनी, कुठणी, हे पापिष्ट, तारा पतिनी परे तारू मुख जोवाथी पण पाप लागे. तु पाको समज के हु राम- नी पासेज बेठी छु खरादिकोनी परे भाइउ सहित तारा पतिने मारवा सारू लक्ष्मण आव्यो एम सम ज हे पापिष्ट, आहीथी उठ ? तारी साथे मने बोलवानो अधिकार नथी एवी रीते सीताए तेनो तिरस्कार करयाथी मदोदरी कोपायमान थइने तिहाथी जती रही

एटलामा हनुमान प्रगट थइ हात जोडी नमस्का र करीने सीताने कहेवा लाग्यो के, हे देवी लक्ष्मण साहित राम कुशल छे. तुमारा शोध सारू रामनी आ ज्ञाथी हु अहीं आव्यो छु हु गया पछी शत्रुनो ना श करवा सारू रामचद्र अहीं आवशे एवु साम्भली सीता आखमा आमू आणीने तेने पूछवा लागी के, आ समुद्र केम उलघन करी आव्यो? लक्ष्मण सहित

मारो प्राणनाथ सुखी छे के?तें तेमने क्या जोया?त्यारें हनुमान कहेवा लाग्यो के, माहरूं नाम हनुमान छे. पवन अने अंजनानो पुत्र छुं. विद्याना बलथी आकाश मार्गें में समुद्रनो उलंघन करयो, सर्व ानर नो अधिपती जे सुग्री तेना श ने ारीने लक्ष्मण सहित राम किस्किंधा नगरीमां छे. दा ानले करी ता पेला पर्वतनी परें तुमारा वियोगथी रा तापे । छे. गाय विना वाछडानी परें तुमारा विना राम लक्ष्मणने पण रतिमात्र सुख नथी. सर्व दिशाउ जे ने शुन्य दीठामां आवे छे, एवा राम अने लक्ष्मण क्षणमां शोक पामे, तो क्षणमां क्रोधायमान थाय छे. जो पण सुग्रीव तेमनुं अश्वासन करे छे, तथापि सुख पामता नथी. जेम सर्व देव इंद्रनी अने इशान्यनी सेवा करें छे, तेम भामंडल राजा, विराध तथा बीजा महेंद्रआदिक विद्याधरो राम लक्ष्मणनी सेवा करे . तुमारो शोध करवा सारूं सुग्रीवे बलावेलो जे . तेने पोतानी वींटी आपीने रामे मोकल्यो . अने तुमारी चुडामणीनी निशानी लेइ आववानुं कह्युं छे, जेना दरशने हुं अहीं आव्यो, एवो जे मारो प्रभु तेने ए निशानी बताव्याथी विश्वास आवशे. पछी हनुमाने पारणुं करवा विषे घणुं कहेवाथी तथा रा नो वृतांत सांभलीने राजी थयाथी एकवीस दिवसना उपोषण छोड्या. अने आनंदे करी भोजन करयुं. पछी सीता क

हेवा लागी के, हे हनुमान, आ चुडामणी लेइने तुं उ
तावळो जा, अहीं घणीवार रह्याथी कांइ पण उपद्र
व थशे, अहीं तु आव्यो छे एवी जो रावणने खबर
पडशे तो तने मारवा सारू यमनी पेरें ते आवशे.
त्यारे हनुमान हशीने तथा हात जोडीने केहेवा ला
ग्यो के, माहरी उपर कृपा होवाथी भीति एकेरी, एम
बोलो छो ते तुमने योग्य नथी. पण हे माता. हु राम
लक्ष्मणनो सेवक छु ए तपस्वी रावण अने तेनुं सै-
न्य मारी सामें शा हिसाबमां ! हे स्वामीनी, तुमने
मारा खांद उपर लेइने तथा सैन्य सहित रावणनो
पराभव करीने तुमने हमणाज रामनी पासें लेइ ज-
वाने हु समर्थ छु. एवु सांभळी सीता हशीने कहेवा
लागी के, राम लक्ष्मणनो सेवक जे तु तेमा सर्व संभवे
छे. परतु पुरुषनो स्पर्श थोडो पण मने योग्य नथी. माटे
जलदी जा तु गयाथी सर्व करया जेवु थशे. राम पण उ
द्योग करशे त्यारें हनुमान कहेवा लाग्यो के आ हु चा
ल्यो पण, राक्षसोने काइक पराक्रम बतावुं छुं आ रावण
बीजा कोइनो पराक्रम जाणतो नथी. पण रामना सेव
कनो पराक्रम बतावबो जोइए एवु सांभळीने सीता
ए कह्युं के, ठीक छे, पछी पोतानो चुडामणी हनुमा
नने आप्यो. हनुमान सीताने नमस्कार करीने चा-
लवा लाग्यो जेम वननो हाथी उन्मत थइने अरण्य
मा फिरे ते प्रमाणे ते उद्यानमां फिरवा लाग्यो र

अशोक वृक्ष विषे दया रहित थयो. बकुल वृक्ष वि
षे अनाकुल. आंबाना वृक्षने विषे करुणा रहित,
चंपक वृक्ष विषे कंप रहित, मंदार वृक्ष विषे अधि
क क्रोधी. कंदली वृक्ष विशे निरदय, ए प्रमाणे सर्व
वृक्षोनो लीला मात्रे करी भंग कर्यो, ते उद्याननां
चारे दरवाजानी रक्षा करनारा जे राक्षसो, ते हात
मां मुदगरादिक हाथियारो लेइने हनुमानने मारवा सा
रूं दोड्या. किनाराना पर्वत उपर जेम समुद्रनी लाट
व्यर्थ जाय छे, ते प्रमाणे हनुमान उपर तेउना हथि
यारो व्यर्थ थयां. पछी हनुमान कोपायमान थइने ति
हाना झाडोने उखेडीने तेरक्षकोने मारवा मंडी गयो. ते
थी वृक्षोनी परेंज राक्षसोनो नाश कर्यो. त्यारें बीजा
राक्षसो रावण पासें जइने केहेवा लाग्या के, राक्षसो ने
हनुमान मारी नाख्यां. एवुं सांभलीने हनुमानने मार
वा सारू रावणे अक्षकुमार पुत्रने आज्ञा करी ते तिहां
गयो. त्यारें हनुमान तेने कहेवा लाग्यो के, भोजनमां
जेम फल, ते प्रमाणे आ रणमां तुं पेहेलो आव्यो छे.
त्यारें ते कहेवा लाग्यो के, तुं व्यर्थ गर्जना करे छे,
एम कहीने तीक्ष्ण बाणे करी हनुमानने प्रहार कर्यो,
हनुमाने पण बाणोनो वरसाद करीने रावणना पुत्रने
ढांकी लीधो, एम केटलाएक वखत अस्त्र शस्त्रे करी
लडीने पशुनी परें हनुमाने अक्षकुमारने मार्यो, त्या
रें भाइ मूवाना क्रोधे करी इंद्रजित आवीने, हे मारु

ते, उनो रहे! उनो रहे! एम कहेवा लाग्यो, पछी क ल्पातनी परें महा नयकर बेंऊनुं युद्ध थयु, ते बेउ ज लनी धारा प्रमाणे हथियारो नाखवा लाग्या, त्यारें आकाश पुष्करावर्त मेघनी परें देखावा लाग्यु, अ ने तेमना हथियारो वन्ने क्षण मात्र पण आकाश दे खायुं नही. इद्रजितना हथियारो मारुती तोडवा लाग्यो, अने पोताना हथियारोथी इद्रजितना अग चूर्ण क रवा लाग्यो. त्यारें इद्रजितना सुनटो लोहनी नदीउ जोवा लाग्या, पछी माहरू सैन्य नष्ट थयु, हथियारो व्यर्थ गया. एम जाणीने इद्रजिते हनुमान उपर ना गपाश अस्त्र मूक्यु, ते वखतें जेम चदनना काडने नाग वाधी लेवे, तेम पगथी ते माथा सुधी नागपासें करी हनुमानने बाधी लीधो, ते नागपासनु बधन स हन करीने कौतुक जोवा सारू ते वधनमा पड्यो प छी मारुतीने इद्रजित रावणनी पासे लेइ गयो, त्या रे रावण हनुमानने कहे छे के, हे दुष्ट आ ते शु क र्यु? जन्मथी मारो आश्रय करीने आजे तपस्वीनो आश्रय कर्यो के? ते वनवाश करनारा, फलो खा. नारा. मलीन अने वनना भिल्ल जेवा प्रसन्न थइने तने शु लक्ष्मी देशे? जेना कह्याथी तु आही आव ताज तने प्राण जावा जेवु थयु, तेना विश्वासथी तु आही आव्यो ते राम अने लक्ष्मण पृथ्वी उपर फरनारा छे माटें महा कुशल छे तेणे आ तने दु-

खमां नाखवानो उपाय कर्यो छे. धुतारा लोको जे छे ते बीजाना हातथी अंग गमावे छे. प्रथम तुं मारो शेवक हतो. ते बीजानो थयो तेथी तुं मारवा योग्य नथी. पण शिक्षा करवा सारू मात्र तने निशानी करूं छुं. त्यारें हनुमान केहेवा लाग्यो के हुं तारो सेवक क्यारे हतो ? तेमज तुं मारो स्वामी क्यां हतो ? एवुं बोलतां तने लाज नथी आवती ? एक वखतें तारो प्रिय सामंत जे खर शुरवीर ते बंधाई गयाथी तारा कह्याथी माहरा बापे तेने वरुण पासेथी मूकाव्यो हतो? अने तारी साह्यता करवा सारू हुं आवीने वरुणना पुत्रोना हातथी में तारूं रक्षण कर्युं हतुं? तेम छतां आ वखतें तुं पाप करवाने तत्पर थयो छे, तेथी साह्यता करवाने योग्य नथी, परस्त्री हरण करणारो जे तुं, तेनी साथे बोल्याथी पण पाप लागे. आ वखतें एकला लक्ष्मण थकी तारूं रक्षण करनारो तारा सैन्यमां कोई दिठामां आवतो नथी. एवुं सांभलीने रावण क्रोधायमान थयो. पछी दांते करी होठ चावीने तेने कहेवा लाग्यो के, मारा वैरीनो आश्रय करीने तें मने पोतानो शत्रु कर्यो. माटे तने मारवानी इछा छे. पण कोढ वडे गलेला अंगवाला पुरुषने मोतनो ढूकडो आवेलो जोईने हत्याना भये करीने जेम कोई मारतो नथी, तेम तुं शत्रुनो दूत छे; माटे तने कोण मारशे? तो पण गधेडा उपर बेसाडीने माथामां पांच पा

ट करीने.सर्व लोकना देखतां लकाना रस्तो रस्ते तने फेरवीश एवु सामळीने हनुमान क्रोधमां आवीने नागपाशने तोडी नाख्यु कमलनी नाले हाथी बाधेलो केटलीवार रहे? पछी विजलीनी पेरे कुदको मारीने पोताना पगे करी रावणना मुकटने तोडी नाख्यो. त्यारे एने मारो, एवी रीते रावण पुकारवा लाग्यो. एटलामा हनुमाने तेनी सर्व नगरीने अनाजनी पेरें भग करी एवी क्रीडा करीने हनुमान गरुडनी पेरें उड्डाण करीने रामनी पासे आव्यो, तेने नमस्कार करीने सीतानो चुडामणी आप्यो त्यारे जाणे साक्षांत सीताज आवी होय! एवी रीते राम जानवा लाग्या अने ते चुडामणीने हदयनी साथे दावीने वारवार तेनु अलिंगन करीने तेनो वृतात हनुमानने पुछ्याथी तेणे रावणनो पराभव, तथा सीतानो शोध तथा मारगमा थएलो सग्राम वगेरे सर्व हकीगत कही सभळावी.

इत्याचार्ये श्री हेमचद्र विरचिते श्री राम लक्ष्मण चरित्रे सीता शुद्धि इत्यादी, शठमो खड समाप्त.

अथ श्री राम लक्ष्मण चरित्र कथा सप्तमो खंड प्रारभ·



हनुमानना मुख थकी सीतानो वृतात तथा तेनुं रावणेज हरण कर्यु छे ए सर्व साभलीने रामे राव

णनी साथें युद्ध करवा जवानी तैयारी करी. तवारें सु
ग्री सहित घणा विद्याधर राजाउ पोत पोताना सै-
न्य सहित तथा तेमनी साथें नामंडल, नल, महेंद्र, ह
नुमान. विराध. शुषेण, जांबुवान अंगद इत्यादि अ
नेक राजाउ साहित प्रयाण नेरी वजमावी लंका त
रफ राम अने लक्ष्मणनी साथें चाल्या. पढी वीमा
नो तथा हाथी, घोडा, रथ प्रमुख वाहनो उपर बेशी
ने विद्याधरोनुं सैन्य आकाश मार्गें चाल्युं. थोमीज
वारमां एक वेलंधर नामना पर्वत उपर वेलंधर ना
ना नगरमां आव्या. तवारें ते नगरना राजा समु-
द्र अने सेंतु रामनी साथें युद्ध करवा लाग्या. तेमां
नले समुद्रने तथा नील नामना विद्याधरे सेंतुने बां
धी रामनी पासें लाव्या. रामे तेमनी उपर दया क
रीने तेनुं राज्य पाढुं आप्युं, पढी समुद्र राजाए पो
तानी त्रण कन्याउए लक्ष्मणने आपी. ते रात्र ति
हां रहीने ते बऊं राजाउने साथें लेइने सवारमां चालतां
थया, रस्तामां चालतां चालतां केटलाएक राजाउने जी
तीने शेवट लंका नगरीनी पडोशना हंसद्वीपना रा
जा हंसरथने जीतिने सर्व तिहां रह्या. राम तथा
लक्ष्मण अत्यंत सैन्य सहित लंका नगरीनी नजीक
आव्या. ए वातनी तिहां खबर थयाथी लोको अति
कोलाहल करवा लाग्या. तेम घणा स्त्री पुरुषो नय
पामवा लाग्या. ते जोइने घणाज राक्षस वीरो रावण

ना योद्धा लडाई करवाने तैयार थया. तेवारें दूशम नने मारवाने महा बलवान रावणे सूरी वाजा वजडा व्या ए सर्व हकीगत जाणीने रावणनो नाइ बिन्नीप ण हात जोडी नमस्कार करीने रावणने कहेवा लाग्यो.

हे बंधु हे नाइ, हिवे तु सतोप कर प्रथम विचार किधां विना सीतानु हरण करयु तेथी आपणा कु-लने कलक लाग्यु हिवे राम सीताने लेवा माटे त त्पर थया छे माटे लडाइ करया विनाज सीतानो स त्कार करीने ते रामने पाछी आप. जेथी आपणी शो ना वधशे अने कोटीगमे जीवोना प्राण नतो बचशे ए माहारू कह्युं तुं नही माने तो ताहरो कुल सहित नाश करीने राम सीताने लेइ ज शे हे नाइ ते नथी जोयु साहासगती अने खरादिक विद्याधरोने ते राम लक्ष्मणे, एक शियालीयाने सिंह मारे, तेम मारी नाख्या, ते तो दूर रह्या पण तेनो सेवक एक हनुमान शुं ते नथी जोयो जे सर्व लं-कामा उथल पाथल करी गयो हतो आजे ताहरी सं पत्ति इंद्रना जेवी छे ते तु परस्त्रीने माटे खोवाने त त्पर न था, एवु बिन्नीपणनु बोलवु सांनलीने तेनी पासे बेठेलो रावणनो पुत्र बोल्यो, हे काका, तुं जन्म नोज नित्रो छे. तु आपणा कुलने कलक लगाडे छे. इन्द्रराजा वगैरे बलवानोने जीतनारो जे माहारो पि ता, तेने तु मरवो चिंतवे छे माटे तुज मरवा लाय-

क छे. प्रथम पण तें प्रतिज्ञा करीने दशरथ राजाने मारयो नहीं ने जुठुं बोल्यो के, ं मारी आव्यो एम कहीने अमने ठग्या. अने हिवे इहां आवेला रामने माहारा पोताना हातथी उगारवानो विचार करे छे. माटे तुं रामनो पक्षपाती छे, तेथी तुं अमारी मशल तमां कामनो नथी, एवुं ते इंद्रजीतनुं बोलवुं सांभली ने बिभीषण बोल्यो जे ं लिगार पण रामनो पक्ष पाती नथी, पण तुं तो कुलनो नाश करनार पुत्र शत्रु रुपे पेंदा थयो छे, जे तारो बाप अकार्य करी आव्यो छे तेनुं निवारण करवुं तो दूर रह्युं, पण उलटो कुलने कलंक लगाडवा सामिल थाय , एम कहीने पछी रावणने कहेवा लाग्यो के, हे रावण आ पुत्रनी सल्लाहथी तथा ताहरा कृत्यो वडे तुं थोडाज वखतमां नाश पामीश, तेथी मात्र मने दुःख थवानुं संभवे छे, एवुं तेनुं बचन सांभलीने रावण हाथमां खड्ग लेइने बिभीषणने मारवा उठ्यो. तेवारें बिभीष ण भृकुटी चडावीने एक मोटो स्थंभ उखेडी हाथमां लेइने रावणनी सामें थयो, तेवारें कुंभकरण नामनो रावणनो न्हानो भाइ विचमां पडीने बेउंने जूदा पा ड्या. पछी बउं जणा पोत पोताना स्थानकें गया. प छी रावण बिभीषण प्रत्यें कहे ा लाग्यो, जे तुं महारी नगरीमांथी निकली जा. एवुं रावणनुं बोलवुं सांभ- लीने तुरतज बिभीषण त्रण अक्षोहिणी राक्षस वि-

ना योद्धा लडाई करवाने तैयार थया तेवारें दूशम
नने मारवाने महा बलवान रावणे सूरी वाजा वजडा
व्या ए सर्व हकीगत जाणीने रावणनो भाइ बिभीष
ण हात जोडी नमस्कार करीने रावणने कहेवा लाग्यो.
हे बंधु हे भाइ, हिवे तु सतोष कर प्रथम विचार
किधां विना सीतानु हरण कर्यु तेथी आपणा कु-
लने कलक लाग्यु हिवे राम सीताने लेवा माटे त
त्पर थया छे माटे लडाइ कर्या विनाज सीतानो स
त्कार करीने ते रामने पाछी आप. जेथी आपणी शो
भा वधशे अने कोटीगमे जीवोना प्राण जतां
बचशे ए माहारू कह्युं तुं नही माने तों ताहरो
कुल सहित नाश करीने राम सीताने लेइ ज
शे हे भाइ ते नथी जोयु साहासगती अने खरादिक
विद्याधरोने ते राम लक्ष्मणे, एक शियालीयाने सिंह
मारे, तेम मारी नाख्या, ते तो दूर रह्या पण तेनो
सेवक एक हनुमान शुं ते नथी जोयो जे सर्व लं-
कामा उथल पाथल करी गयो हतो आजे ताहरी सं
पत्ति इंद्रना जेवी छे ते तु परस्त्रीने माटे खोवाने त
त्पर न था, एवु बिभीषणनु बोलवुं सांभलीने तेनी
पासें बेठेलो रावणनो पुत्र बोल्यो, हे काका, तुं जन्म
थोज भिरो छे तु आपणा कुलने कलक लगाडे छे.
इंद्रराजा वगैरे बलवानोने जीतनारो जे माहारो पि
ता, तेने तु मरवो चिंतवे छे माटे तुज मरवा लाय-

क छे. प्रथम पण तें प्रतिज्ञा करीने दशरथ राजाने मारयो नहीं ने जुठुं बोल्यो के, हुं मारी आव्यो एम कहीने अमने ठग्या. अने हिवे इहां आवेला रामने माहारा पीताना हातथी उगारवानो विचार करे छे. माटे तुं रामनो पक्षपाती छे, तेथी तुं अमारी मशलतमां कामनो नथी, एवुं ते इंद्रजीतनुं बोलवुं सांभली ने बिभीषण बोल्यो जे हुं लिगार पण रामनो पक्षपाती नथी, पण तुं तो कुलनो नाश करनार पुत्र शत्रु रुपे पेंदा थयो छे, जे तारो बाप अकार्य करी आव्यो छे तेनुं निवारण करवुं तो दूर रह्युं, पण उलटो कुलने कलंक लगाडवा सामिल थाय छे, एम कहीने पछी रावणने कहेवा लाग्यो के, हे रावण आ पुत्रनी सल्लाहथी तथा ताहरा कृत्यो वडे तुं थोडाज वखतमां नाश पामीश, तेथी मात्र मने दुःख थवानुं संभवे छे, एवुं तेनुं बचन सांभलीने रावण हाथमां खड्ग लेईने बिभीषणने मारवा उठ्यो. तेवारें बिभीषण भृकुटी चडावीने एक मोटो स्थंभ उखेडी हाथमां लेइने रावणनी सामें थयो, तेवारें कुंभकरण नामनो रावणनो न्हानो भाइ विचमां पडीने बेऊने जूदा पाड्या. पछी बऊं जणा पोत पोताना स्थानकें गया. पछी रावण बिभीषण प्रत्यें कहेवा लाग्यो, जे तुं महारी नगरीमांथी निकली जा. एवुं रावणनुं बोलवुं सांभलीने तुरतज बिभीषण त्रण अक्षोहिणी राक्षस वि-

द्याधरोनुं सैन्य लेइने रामनी तरफ गयो तेने आव
तो जोइने सुग्रीवादिकने संशय उत्पन्न थयो कह्यु छे के
"विपारी सर्पनी माफक शत्रुनो विश्वास न करवो" एवु
सुग्रीवनु चित्त जोइने बिभीषणे एक दूत रामनी पा
से मोकलीने केहेवराव्यु के, रावणने अन्यायवंत जा
णी हु तुमारी तरफ आव्यो छु

एवु बिभीषणनु बोलवु साभलीने रामे सुग्रीवना
सामुं जोयु त्यारे सुग्रीव केहेवा लाग्यो, जे स्वभावे क
रीने राक्षसो अशुद्ध छे अने जन्मना कपटी छे तो
पण ए बिभीषणने आववा देवो जोईए तेने अहींया
आव्या पछी खातरी करीशु के, ते कपटथी आव्यो
छे, के काइ खरा कारणथी शुद्धअंतःकरणथीज आप
णी तरफ आव्यो छे, तेनी खातरी करीने पछी आ
पणने जेम अनकुल आवशे तेम करीशु एवी रीते
रामनी साथें सुग्रीव बोले छे एटलामा एक निष्कप
टी अने धर्मनो जाणवावालो राक्षस केहेवा लाग्यो
के, ए बिभीषणे रावण पासेंथी सीता रामने पाछी आ
पवा विषे रावणने घणो समजाव्यो, तेनु नही मान
ता रावणे तेने लंकामाथी जवानु कह्यु तेथी ते राव-
णने अन्यायि जाणीने तथा तेनी साथे अणबनाव
करी तुमारी तरफ आव्यो छे अर्थात तुमारे शरणे
आव्यो छे ए वातमा काइ पण अंदेशो राखशो न
ही. एवु तेनु बोलवु साभलीने पछी रामे बिभीषणने

पोतानी पासें बोलाव्यो तेवारें तेणे आवीने रामने न मस्कार कर्यो, त्यारें रामे तेने आलिंगन कर्युं. ते· वारें बिन्नीषण केहेवा लाग्यो के, हे राम, दुर्जय जे रा वण तेने मूकीने हुं तुमारी तरफ आव्यो बुं. हुं तुमा रो सेवक बुं, माटे तुमारा बीजा सामंतोनी परें मने प ण आज्ञा करो, एवुं तेनुं विनयपुर्वक बोलवुं सांन्नली ने रामे प्रतिज्ञा करीने कह्युं के आ लंकानुं राज हुं तनेज आपीश, कह्युं बे, के "मोटा पुरुषोने नमस्कार क र्यानुं फल व्यर्थ जतुं नथी" इहां राम हंसद्वीपमां आठ दिवस रहीने पोताना सैन्य सहित लंका नगरीनी बा हार आवी पडाव कीधो. तेवारें रामनो सैन्य वीस जोजन पृथ्वी रोकी, ते सैन्यना गोगाटे करीने सर्व लंका नगरी बेहेरी थइ. एवुं जोइने रावणना योद्धाउ हाथमां हथियार लेइने रणन्नुमीमां आव्या, तेमांना केटलाएक घोमा उपर तथा कोई हाथी उपर कोई र थ उपर इत्यादिक वाहनो उपर बेशीने तथा पगे चा लीने, एवी रीते रावण पाशे आव्या. तेवारें रावण प ण अनेक प्रकारना हथियारोथी न्नरेला एक रथमां बे शीने तयार थयो, त्यारें कुंन्नकरण एक हाथमां त्री शुल लेइने तथा इंद्रजीत अने मेघवाहान रावणना बे पुत्र बे बाजु उपर आवीने उन्ना रह्या, बीजा पण रावण ना अनेक पुत्र तथा योद्धाउ आदिक कोटीगमे शुरवी र युद्ध करवाने तयार थया. एवीरीते असंख्य सै-

न्य सहित रावण लंकामाथी बाहार निकल्यो. ते वखतें शुरवीरोए हाथमा हथियारो तथा रथउपर ध्वजाउ धारण करेली छे. ते ध्वजाओना उपर कोइने हाथी, कोइने मोर कोइने हरण, कोइने व्याघ्र, कोइने सिंह इत्यादिक चित्रो सहित ध्वजाओ हती, तथा कोइना हाथमा तरवार, कोइना हाथमा बंदुक कोइना हाथमा कुहाडो, कोइना हाथमा गदा, कोइना हाथमां भालो इत्यादिक नाना प्रकारना हथियारो हाथमा लेइने रावणना योद्धाउ, रामना सैन्यने घेरो नाखवाने तयार थयो, तथा एक एकनी साथे बोलवा लाग्या के, तुएने मार, हु एने मारू छु, एवीरीते बोलता थेका रणभुमीमां आव्या, एवुं रावणनु सैन्य पच्चास जोजन भूमीने रोकनारो लडाइ करवाने तयार थयु

ते सैन्यनी वीरश्रीनी ढाळ लिख्यते (देशी कडखानी)

सूर रस पूर जस नूर वाध्यो,घणो, भूरी रण तूरीको नाद वाजे ॥ ए टेक ॥ राम रावण तणु सैन्य अतुली मिल्यु, लंकनी सीममा युद्ध सारू, ॥ योद्ध नर क्रोध करी, आयुद्ध कर धरी ॥ साम सामी लडे जेम पाडा, ॥ सू० ॥ १ ॥ केइ लडे केइ पडे, केइ धड तडफडे ॥ कायर नर धरे हाथ आडा ॥ नीर जेम तीर वरसाव ता केइ नरा, केइ तणा तन वहे रुधिर धारा ॥ सू० ॥ २ ॥ तेणे समे वानर सुभट क्रोधे भरया, लेइ हथियार तिहा मुख फूजे ॥ जीत करी चीत देई रा

क्षस सैन्यमां, जंग कीधो अती नष्ट त्रासे ॥ सूर० ॥
॥ ३ ॥ आपणुं सैन्य अकलाइ पाछुं फिर्युं, सुभट
अती मार लहि मरण पाम्या ॥ तेह देखी करी, आ
युद्ध कर धरी, हस्त प्रहस्त राक्षस आया ॥ सूर० ॥
॥ ४ ॥ सुभट निज बोधतो, शत्रुभट शोधतो. धनुष्य
टणकार करे अतीय वेगे ॥ तेणे समें वानरसुभट तेह
सामा थया, नल अने नील करी रक्त नयणा ॥ सू०
॥ ५ ॥ वाल विकराल करवाल कर प्रेतज्युं, हीकर
वकील कपीमत्तदंता, वायुने वांबुदा हरण हरणी हि
वे, सैन्यभट सकल तव दूर नासे ॥ सूर० ॥ ६ ॥ सो
पी राक्षसभट हस्त भीषण गती, मेघ ज्युं गाजतो,
नलनी सामो, नीर जिम तीर वरसावतो रस भरे,
प्रहस्त पण झूंजतो नील सामे ॥ सूर० ॥ ७ ॥ साम
सामी लडे केसरी सिंह ज्युं, युद्ध उद्धतपणे को न थाके ॥
तेणे समें नल कपी, बल अणहद् तपी, हस्तने मस्तके ख
ड्ग वाहे ॥ सूर० ॥७॥ तिम तिहां नील पण. ढील कीधा वि
ना, छेदतो शीस प्रहस्त केरूं, तेणे समे देव वृष्टी करे पु
ष्पनी, नल अने नील पर प्रसन्न थाइ ॥सूर०॥ ८ ॥

एवी रीते हस्त तथा प्रहस्त मूवा पछी रावणना सैन्यमांथी क्रोधकरी मरीच, सिंहजघ्न, स्वयंभु, सारण, शुक, चंद्रार्क, उद्दाम, बिभत्स कामाक्ष, मकरज्वर, गंभीर, सिंहरथ इत्यादिक राक्षसो आगल थया. तेमज वानर सैन्यमांथी मदनाकर, संताप, प्र

थित, आक्रोश, नंदन, दुरीत, अनघ, पुष्पास्त्र; विघ्न-
प्रितीकर, इत्यादिक वानरो, राक्षसोनी साथे लड-
वा लाग्या, जेम कुकडो कुकडानी उपर उडे, ते प्रमाणे
ते एकमेक उपरे उछवा लाग्या मारीच राक्षसनी सामे
सताप वानर नदन अने ज्वर, उद्दाम अने विघ्न,
शुक अने दुरित, सिंहजघ्न अने प्रथित, ए परस्पर
लडाई करीने माहोमाहे मारा करवा लाग्या एटला-
मा सूर्य आथमी गयो पछी बेउ सैन्यो पोतपोताना मू.
वेला पुरुषोना शोध करवा लाग्या एम करता करता
रात्रगया पछी राक्षसोना योद्धा रामना सैन्यने युद्ध
करवा सारू बोलाववा लाग्या मेरु पर्वतना जेवो अ
चल रावण, हाथी अने घोडा सहित रथ उपर बेशी
ने सैन्यमा चाल्यो यमथी पण भयकर, ते पोतानी
द्दष्टीए करीने शत्रुने बालतोज होय ! नाना प्र-
कारना अस्त्र तथा शस्त्रोने धारण करनारा पोताना
दरेक सैनीकोने जोतो जोतो शत्रुने त्रणशिलानी परे
माननारो रावण सग्राममा आव्यो ते समये रामना
सैनीकोए सैन्य सहित सग्राम भूमीमा आवीने यु
द्ध करवा लाग्या ते ठेकाणे लोहीनी मोटी नदीयो
वही निकली किहाक पर्वतो जेवा पडेला हाथी दीठा
मा आव्या किहाक मगरमछ जेवा मोठा रथो भांगे
ला पड्या देखाया कबधो (माथा विनाना) नाचवा
लाग्या ते वखते रावणनो सैन्य मोठा बल वडे युद्ध

करीने वानरोना सैन्यनो भंग करयो. ते जोईने क्रोधायमान थयो थको सुग्रीव धनुष्य सज्ज करीने सैन्य सहित पोते युद्ध करवा चाल्यो.त्यारें तेने हनुमान कहेवा लाग्यो के, हे राजा तुं आंहीज उभो रहे अने माहरो पराक्रम जो.एवी रीते सुग्रीवने वारीने आगल चाल्यो. महासमुद्रमां मंदर पर्वतनी परें हनुमान राक्षस सैन्यमां जईने युद्ध करवा लाग्यो, तेनी सामें मेघना जेवी गर्जना करीने माली नामनो राक्षस युद्ध करवा लाग्यो. त्योना संग्राममां सिंहना पुछडाने दूषण देनारा जेवा धनुष्योना टणकार करनारा बेऊ शोभवा लाग्या परस्परनां हथियारो तोडवा लाग्या, एवी रीते घणो वखत युद्ध करीने जेम ग्रीष्मऋतुनो सूर्य न्हाना सरोवरने जल रहित करे, तेम हनुमाने, महा पराक्रमी माली राक्षसने शस्त्र रहित करयो. त्यारें तेने कहेवा लाग्यो के, हे निकामा राक्षस हिवे आंहीथी तुं जा. तने मारीने हुं शुं करूं? एवुं हनुमाननुं बोलवुं सांभलीने तेनी पासें उभेलो वज्रोदर बोल्यो. अरे, हे पाप, एवुं तुछ शुं बोले छे? तुं हमणांज मरीश. आव माहरा साथें युद्ध कर पाछो जा नही. एवुं सांभलीने सिंहनी परें गर्जना करीने हनुमाने तेने बाणे करी ढांकी लीधो. ते समयें आकाशमां देववाणी थइ के, अहो आ वज्रोदर वीर हनुमाननी साथें युद्ध करवा योग्य छे. ते सांभलीने हनुमानने स-

हन थयुं नही. तेथी एकज वखते उत्पात मेघनी परे अस्त्रोनो वरसाद करीने सर्व राक्षसोने देखता वज्रोदरने मारी नाख्यो त्यारे रावणनो पुत्र जबुमाली मारुतीनी साथे युद्ध करवा लाग्यो परस्पर मारवानी इछा छे जेमने एवा महा पराक्रमी ते बेऊ सर्प अने नोलीयानी परे बाणे करीने युद्ध करवा लाग्या जबुमाली एक बाण मारे तो तेने हनुमान बे मारे एम परस्पर बाण वृष्टी करीने लडवा लाग्या, पछी हनुमाने क्रोधमा आवीने तेनो रथ तोडी नाख्यो अने मुदगर वडे माथामा मार्‍यो तेथी जबुमाली मूर्छीत थईने मरी गयो पछी महोदर नामना राक्षसे हनुमान उपर बाण वृष्टी करी अने कुत्रा जेम डुक्करने घेरी लेवे तेम राक्षस भटोए हनुमानने घेरी लीधो, अने बाणे करी मारवा मन्डी गया कोई बाहु उपर कोई मुख उपर, कोई पग उपर, कोई हृदय उपर, कोई कुक्षी उपर, मारवा लाग्या ते समये वनमा अग्निनी परे तथा समुद्रमा वडवा नलनी परे ते राक्षस सैन्यमा मारुती शोभवा लाग्यो, जेम सुर्य अधकारनो नाश करे, तेप्रमाणे हनुमाने राक्षसोनो नाश कर्‍यो त्यारे कुभकरण हाथमा त्रिशुळ लईने इद्रनी परे पोते युद्ध करवा दोड्यो

कोईने पगना जोरे, कोईने मुठना प्रहारे, कोईने बाजूथी, कोईने मुदगर वडे, कोईने त्रिशुलथी, अने केटलाएकने एक बीजा उपर लोटीने कुभकर्णे, बान

राजने मारचा. ते वखतें कल्पांत समुद्रनी परें महाप राक्रमी कुंनकरणने जोईने सुग्रीव, नामंफल, दधिमु ख, महेंद्र, कुमुंद, अंगद, इत्यादिक रामना योद्धाओ ए पारधी जेम सिंहने अटकावे, तेम त्योए कुंनकरणने अटकाव करचो. अने तेनी उपर शस्त्रास्त्रनो वरसात क रवा लाग्या. त्यारें कुंनकरणे प्रस्वापन नामनो अस्त्र मूकीने दिवशने कुमुंदखंडनी परें आखा सैन्यने ऊंघ मां नाखी दीधुं. एवुं जोइने सुग्रीवे प्रबोधीनी विद्या नुं स्मरण करीने सर्व सैन्यने ऊठाड्युं. पळी बोलवा लाग्यो के, अरे ! कुंनकरण तारी रात्र किहांगइ ? ए म कहीने पळी पक्षीजनी परें वानरनट दोमीने कुंन-करणनी साथें युद्ध करवा लाग्या. ते वखतें वैद्य जेम रोगनो नाश करे तेम सुग्रीवे गदाना रथी कुंनकर णना सारथी रथ घोडानो नाश करचो. ते जोइने कुं नकरण हाथमां मुदगर लेइने एक शृंगी पर्वतनी परें सुग्रीव उपर दोड्यो. तेना शरीरना वायु वमे, जेम हा थीना अडक्याथी वृक्षो पमी जाय, तेम केटलाएक वानर पडवा लाग्या. नदीना वेगनी परें अश्व सहि-त कुंनकरणे मुदगरथी सुग्रीवना रथनो चुर्ण करी ना ख्यो. ते वखतें सुग्रीव आकाशमां उडीने इंद्र जेम पर्वत पर वज्र नाखे ते प्रमाणे एक मोटी शिला कुंनकरण उपर नाखी. औत्पातिक रजो वृष्टी वान-राजने बता तो ब्रतां मुदगरे करी ते शिलाना कटका

करी नाख्या सुग्रीवे तडतड शब्द करनारू तडितद ड नामनु अस्त्र कुंभकरण उपर नाख्यु कुंभकरणे ते अस्त्रनो नाश करवा सारू घणा अस्त्र नाख्यां पण ते सर्व व्यर्थ थईने ते अस्त्रना प्रहारे करी पर्वतनी परे पृथ्वी उपर पड्यो, कुंभकरण मूर्छीत थयो. एम जोइने साक्षात कालना जेवो रावण आव्यो. ते वखते इंद्र-जीत नमस्कार करीने तेने केहेवा लाग्यो के, हे स्वामि तुमारी आगल, यम, वरुण, कुबेर, इंद्र ए उभा र हे नही तो आ वानराउनी शु विशाद छे ? तुमे आंहीज उभा रहो हु जईने मर्कटनी परे तेमने मारू छु एवी रीते रावणने रोकीने वानरोना सैन्यना सा-मे युद्ध करवा सारू इंद्रजीत तइयार थयो. जेवी रीते तलावमा सर्प पेसे अने देडका नाशी जाय, तेम वा नरा नाशवा लाग्या, त्यारें त्योने इंद्रजीत कहे छे के, रे रे, उभा रहो युद्ध न करनाराने हु मारनार नथी, हु रावणनो पुत्र छु ते हनुमान अने सुग्रीव किहा छे? ते राम लक्ष्मण किहा छे? एवु तेनु बोलवु सांभलीने सुग्रीवे इंद्रजीतने, तथा भामंडले मेघवाहनने बोलावीने परस्पर युद्ध करवा लाग्या

चार दिगपालनी परे तथा चार समुद्रनी परे, त्रणे लोकने भयकर धनुष्योनो मार करनारा ते चारे शोभवा लाग्या रथोना जावा आववाथी पृथ्वी अने पर्वतो कंपायमान थया समुद्र क्षोभने पाम्यो बाणो

नात्रमां महा कुशल, त्योना बाणो क्यारे जाय आ वे बे? एवुं जाणयामां आवे नही. एवी रीते शस्त्र व र्षे त्योए घणो वखत युद्ध कर्युं. परंतु कोईए कोई ने जीत्यो नही. पबी इंद्रजीत अने मेघवाहन एउने नागपाश अस्त्र नाखीने नामंडल अने सुग्रीवने बांध्यो. त्यारें ते श्वासोश्वास मूकवाने असमर्थ थया. एटलामां कुंनकरण सावध थईने तेणे गदाए करी हनुमानने खंद उपर मार्युं तेथी ते मूर्बीत थईने पड्यो. त्यारें कुंनकरणे तेने काखमां घाल्यो. ए जोइने बिनीपण बोल्यो के, हे राम. तुमारा सैन्यमां महापराक्रमी "मुखने विषे नेत्रोना जेवा सारनुत" नामंफल अने सुग्रीव, त्योने रावणना पुत्रोए जीत्यां. एह ज्यां सुधि लंकामां लइ गया नही. त्यां सुधि हुं तेमने मूकावुं बुं. कुंनकरणे हनुमानने बाहुबले बांध्यो , ते ज्यां लगण लंकामां गयो नही, त्यां लगण फवबा योग्य बे. हे स्वामि, सुग्रीव नामंडल, तथा हनुमान ए विना आपणुं सैन्य निर्वीर . माटे मने आज्ञा आपो, हुं जाऊं . एवी रीते बिनीषण बोले बे. एटलामां वालीनो बोकरो अंगद कुंदको मारी दोडी जइने कुंनकरणने बोलावीने तेनी साथें युद्ध करवा लाग्यो, त्यारें क्रोधे, करी मदांध थएलो कुंनकरण पोतानी नुजा थी हनुमानने बेडयाथी ते पिंजरामांना पक्षीनी परें डी गयो, त्यारें नामंफल अने सुग्रीवने बोडाव

वा सारू रावणना पुत्रोनी साथें युद्ध करवा सारुं बि
भीषण दोड्यो. तेने जोइने इंद्रजीत मेघवाहनने के-
हेवा लाग्यो के, आ आपणो काको आपणी साथे यु
द्ध करवा सारू आवे छे ए पितानो न्हानो भाइ हो
वाथी आपणा बाप जेवो छे. माटे एनी साथे युद्ध के
म करीए ? हिवे अहींथी जवु ए सारू छे कह्यु छे
के, " पूजा करवा लायक पुरुषथी जय पामेला पुरु-
षोने काई पण लाज नथी " पाशथी बांधेला ए
बे शत्रुउ निश्चय करी मरशे माटे त्योने अहींज र-
हेवा देवा, एटले बिभीषण आपणी पासे आवशे न
ही, एवा विचार करीने ते बेहुजण रणमाथी ना
शी गया त्यारें भामंडल तथा सुग्रीवने जोइने बि-
भीषण तिहाज उभो रह्यो तेमज हिम पडवानी वखतें
सूर्य अने चंद्रमानी पेरे राम तथा लक्ष्मणना मुख सु
काइ गया, ने चिंता करता थका तिहाज उभा रह्या. त्या
रें जेणे पूर्वे वर दिधो हतो, एवा महालोचन नामना
देवनु रामे स्मरण करयु, तेणे अवधि ज्ञान वडे जाणी
तिहा आवीने सिंहनदा नामनी विद्या, मुशल, रथ,
तथा शत्रुनो नाश करनारी विद्युद्वर नामनी गदा
लक्ष्मणने दीधी तथा वारुणेय, आग्नेय, वायव्य प्र-
मुख अस्त्रो अने वस्त्रो वेऊने आप्या पछी गरुड उप
र बेठेला लक्ष्मणने जोइने भामंडल अने सुग्रीवना
नागपाश नाशी गया ते समये रामना सैन्यमा जय

जय शब्दो थवा लाग्या अने राक्षसोना सैन्यमां अं
धकार करी सूर्य आथमी गयो.

सवारना फिरी बेऊंनो सैन्य तैयार थई रणसंग्राममां
आव्यो. त्यारें यमना दांतो जेवां दैदीप्यमान समये
तापेला डुकरोना योगे सरोवरनी परें, राक्षसोना वी
रोए वानरसैन्यने अकलाव्युं. त्यारें पोतानुं सैन्य वि
खराई गएलुं जोईने बीजाना शरीरमां पेशनारा योगी
योनी परें सुग्रीवादिक भट राक्षसोना सैन्यमां पेठा.
गरुडने जोईने जेम सर्पो नाशे, तेम वानराओने जो
ईने राक्षसो नाठा. त्यारें रथमां बेशीने तेना संचार
वडे पृथ्विने कंपावतो थको रावण पोते दोड्यो, दावा
नल जेवा रावणने जोईने वानरना सैन्यमांनो कोई ज
भो रह्यो नही, त्यारें रामचंद्र पोते युद्ध करवा सारूं
चाल्या, तेणे वारीने बिभीषणे रावणने थोडीवारमां
जइने अटकाव्यो. त्यारें तेणे रावण केहेवा लाग्यो
के, रे! रे! बिभीषण, ते कोननो आश्रय करयो? आ सं
ग्राममां ग्रासनी परें तुं मारा मुखमां पड्यो, पारधी
जेम कुतराउने डुक्कर उपर मोकले ते प्रमाणे मारी
उपर तने मेलवानो रामे सारो विचार करयो. पोता
ने रक्षण करनारा पुरुषोने ए योग्यज छे. हे वत्स ह
जी सुधि तारा उपर मारी दया छे, तुं आंहींथी जा,
आज हुं सैन्य सहित राम लक्ष्मण मारूं छुं, आ
मरनारानी संख्यामां पूर्ण तूं था नही. पाछो पोताने ठे

काने आव, तारा मस्तक उपर मारो हाथ छे, त्यारे तेणे बिभीशण केहेवा लाग्यो के, कालना जेवो राम पोतेज तारा उपर आवतो हतो, तेनु मे निवारण क-रयु हे रावण तने बोध करवा सारू युद्धना मिषथी हु आही आव्यो छु. हजी सीताने मूक, संतोप कर, अने मारू वचन मान्य कर मे मृत्युना भय थकी अथवा राज्यना लोभ थकी रामनो आश्रय कर्यो न ही फक्त अपवादना भयथी आश्रय कर्यो छे. त्या रे तु सीता आपीने अपवाद दूर कर एटले हु राम ने मूकीने तारा आश्रये आवु त्यारें रावण क्रोधमा आवीने बोलवा लाग्यो के,हे दुर्बुद्धि बिभीषण, हजी मने भय बतावे छे के? मारू केहेवु केवल भाईनी ह त्याना भयथी छे, शिवाय बीजो हेतु नही एम कही ने रावणे धनुष्यनो टणकार कर्यो तेनी सामे बिभी षणे पण तेवोज जवाब देवाने धनुष्यनो टणकार कर्यो.

पछी ते बेऊ भाईयो युद्ध करवाने तइयार थया परस्पर एक बीजा उपर शस्त्र तथा अस्त्रनी वृष्टी क रवा लाग्या, ते वखते इंद्रजीत, कुंभकरण, तथा बी जा राक्षसो स्वामीनी भक्तिए करी यमना किंकरनी परे दोड्या राम अने कुंभकरण, लक्ष्मण अने इंद्रजी त, नील अने सिंहजघ्न, दुर्मुख अने घटोदर, स्वय-भु वानर अने दुर्मीत राक्षस, नल अने शम्भु, अगद अने मय, स्कंद अने चंद्रनख, चंद्रोदरात्मज अने

विघ्न. ज्ञामंडल अने केतु. श्रीदत अने जंबुमाली, कुंजकरणनो पुत्र कुंज अने हनुमान, सुग्रीव अने सुमालि, कुंद अने धुम राक्षस, वालीनो पुत्र चंद्ररश्मी अने सारण राक्षस एवी रीते योग्यताथी परस्पर युद्ध करवा लाग्या. तेमज बीजा राक्षसो अने वानराउ सुसर जातिना मल्लनी परें युद्ध करवा लाग्या. एवी रीते महा जयंकर युद्ध चाल्युं बतां इंद्रजीतें लक्ष्मण उपर तापस नामनुं अस्त्र नाख्युं. त्यारें लक्ष्मणे नागपाश अस्त्र नाखीने जेम जलमांना तंतु जनावरथी हाथी बंधाइ जाय तेम तेणे इंद्रजीतने बांध्यो, नागपाशथी बांधेलो इंद्रजीत वज्रनी परें पड्यो. त्यारें लक्ष्मणनी आज्ञाथी विराधे पोताना रथमां नाखीने बंदीवाननी परें तेने पोतानी जगा उपर लाव्यो. तेम रामे पण नागपाशथी कुंजकरणने बांध्यो तेने पण रामनी आज्ञाथी ज्ञामंडल लेइ गयो. बीजा रामना सैनीकोए मेघवाहन प्रमुख राक्षसोने बांधीने पोताना रेहेवानाठाण उपर लेइ गया. ए सर्व जोइ रावण क्रोधमां आवीने जयश्रीनुं मूल जे त्रिशुल ते बिजीपण उपर नाख्युं. लक्ष्मणे बाणे करी केलीनी परें ते त्रिशुलना आकाशमांज कटका करी नाख्यां. त्यारें धरणेंद्रे आपेली अमोघविजया शक्ति रावणे लीधी. धग धग जांजवल्यमान, तथा तड़तड़ शब्द करनारी वीजली जेवी ते शक्ति आकाशमां फिरवा लागी. ते शक्तिने जोइने आ

काशमाना देव पाछल फिरवा लाग्या सैन्यना नेत्र मी
चाइ गया तेने जोइने कोई पण स्थिर रह्यो नहीं त्या
रे राम केहेवा लाग्यो के,हे लक्ष्मण आपणो पावणो बिभी
षण आजे मारयो जाय छे आश्रीतने घात करनारा
आपणने धिक्कार छे एवु सांभली लक्ष्मणे बिभीषण
नी आगल थइने युद्ध करवाने रावणने हाक मारी.
रावणे गरुड उपर बेठेला लक्ष्मणने जोइने तेने क
हेवा लाग्यो के, मे ताहरा उपर शक्ति नाखी नहीं. मा
टे तु बीजाना मृत्युमा मरे नहीं तेम छता मरवु हो
य तो मर, हु तने मारनार नही तारा आश्रये करी
आ बिचारो गरीब बिभीषण तारी सामें उभो रह्यो
एम कहीने तथा ते शक्तिने फिरावीने लक्ष्मणनी उपर
नाखी तेने आवती जोइने लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान,
भामंडल, विराध अने बीजा वानराउए पोतपोताना
अस्त्र तेनी उपर नाख्या ते शस्त्र तथा अस्त्रने न मा
नता लक्ष्मणना हृदयमा लागी तेथी लक्ष्मण मूर्छीत
थइने पृथ्वी उपर पड्यो ते वखतें रामना सैन्यमा
हाहाकार शब्द थयो पछी रामे क्रोधायमान थइ प-
चानन रथमा बेशी. रावणनी साथें युद्ध करीने क्षण
मात्रमा तेने रथ रहित कर्यो त्यारे रावण मोटा वे
गथी बीजा रथ उपर चड्यो ते रथनो पण रामे नाश क
र्यो, ए प्रमाणे पाच वखत रामे रावणने रथ रहित
कर्यो त्यारे रावणे विचार कर्यो के, आ पोताना

आइना स्नेहथी पोतानी मेले मरशे. एनी साथें व्यर्थ युद्ध शा सारू करवुं ! एम जाणीने रावण लंकामां गयो. ते वखतें रामना शोकेज जाणे सूर्य आथमी गयो होय !

रावण गया पछी राम पाछा फिरया, लक्ष्मणनी पासे आवी तेणे मूर्छावस्थमां जोइने पोते पण मूर्छा खाई पृथ्वि उपर पडया. सुग्रीवादिक रामनी उपर चंदन नुं पाणी छांटीने, तेणे सावध करीने, तथा लक्ष्मणनी पासे बेसाडयो. त्यारें राम रडतां रडतां बोलवा लाग्या. हे वत्स, तने शुं पीडा थाय छे ? बोलतो खरो. मौन ताने मूकी दे. ईशाराथी तो बोल. मने संतुष्ट कर. आ सुग्रीवादिक तारा मुखनी सामें जोइ रह्या छे. एमनी उपर वाणीए करी अथवा दृष्टीए करी अनुग्रह कर. रावण रणमांथी जीवतो गयो तेनी ल ाथी तुं बोलतो नही के शुं ? कांइक तो बोल. हुं तारो मनोरथ पूर्ण करीश. एवी रीतें लक्ष्मणनी साथें बोलीने फिरी कहे के, रे रे, रावण, दुष्टात्मा, उभो रहे ! उभो रहे ! तुं किहां चाल्यो ? आ हुं तने परलोकमां मोकलुं छुं, एवुं बोली धनुष्यनो टणकार करीने उभो रह्यो. एटलामां सुग्रीव आवीने कहेवा लाग्यो के, हे राम, आ रात्र छे. निशाचर जे रावण ते लंकामां जतो रह्यो. आ वखत शक्ति प्रहार दूर करवानो छे. हे राम, धैर्यने धारण करो. अने रावण मूवो एम समजो, अने लक्ष्मणना उपाय करो. फिरी रा कहेवा लाग्या के,

स्त्रीनुं हरण थयुं, भाई नष्ट थयो तेम छता हजी सु धि राम जीवतो छे आ शरीरना सो कटका शा सा रू थता नही? हे सखा सुग्रीव, हे हनुमान, हे भामंड ल, हे नल, हे अंगद हे विराधादिक, तुमे पोतपोताना घरे जाउ, सीतानु हरण थयाथी पण आ लक्ष्मणना वधनु घणु दुःख थयु छे. हे सखा बिभीषण, तु पण ह जी सुधि कृतार्थ थयो नही पण काले सवारे तारा भाइने मारा भाइनी पासे मोकलीश ते तु जोशे. ता रू काम करीने हु लक्ष्मणनी पाछल जइश आ मा रा प्राणप्रिय लक्ष्मण विना सीताने तथा आ जीवी तने शु करवानु छे? त्यारे बिभीषण केहवा लाग्यो के, हे प्रभो! धैर्य धारण करो, आ शक्तिथी हणायलो पुरुष एक रात्र सुधि जीवतो रहे छे ते माटे जिहा सु धि रात्र गइ नही, तिहा सुधि उपायो विषे यत्न करो, एवुं सांभलीने रामे कह्यु के ठीकछे

एवु कह्या पछी सुग्रीवादिकोए विद्याना योगे ल- क्ष्मणनी आस पास चार चार दरवाजावाला सात कोट कर्या. तेना पूर्वद्वार उपर सुग्रीव, हनुमान, ता र, कुंद, दधिमुख, गवाक्ष, गवय, एटला योद्धा उ- भा रह्या, उत्तर द्वार उपर अंगद, कुरभाग, महेंद्र, वि हगम, सूषेण, चंद्ररश्मी, वृषभ, ए उभा रह्या. पश्चि म दिशाना द्वार उपर नील, समरशील, दुर्धर, समर्थ जय, विजय अने सभव, ए वीरो उभा रह्या. दक्षीण

दिशा उपर भामंडल, विराध, गज, भुवनजीत. नल, नी द, बिभीषण, ए ऊभा रह्या. राम अने लक्ष्मणने ते मां बेसाडीने सुग्रीवादिक सर्व रात्र जागता रह्या. लक्ष्मणने शक्ति लागी, एवुं जोईने कोईए सीताने कह्युं के सवारना तेनो भाई राम पण पोताना भाईनी प्रीति वडे मरण पामशे. एवुं सांभलीने हणायली वे लीनी परें जानकी मूर्छा खाईने पृथ्वी उपर पडी ते नी उपर विद्याधरीओए पाणी छांटीने तेने सावध करी, त्यारें ते उठीने करुणा स्वरे विलाप करवा लागी.

हा वत्स लक्ष्मण, रामने मूकीने तुं किहां गयो? तारा विना एकघडी पण राम रहेवाने स थे नहीं. मज मंदभाग्यने धिःक्कार छे. मारा सारू पतिने तथा दे वरने आ वखते महत्‌दुःखनी प्राप्ती थई, हे पृथ्वी मा रा उपर प्रस थईने मने पेसवाने जगा आप. हे हृ दय प्राण निकलवाने तुं तो फाट. ए प्रमाणे मोठा अ वाजे रडनारी सीताने जोईने अवलोकीनी नामनी वि द्याधरी तेने कहेवा लागी के, हे देवी, सवारना ता रो देवर जीवतो थशे. अने ते रामनी साथें आंही आवीने तने संतुष्ट करशे. तेनी वाणीए करी सीता छानी रही गई. अने चक्रवीनी परें सूर्यना उदयनुं चिंतन करती थकी सर्व रात्र जागती रही.

आंही रावण आजे लक्ष्मणने मार्‍यो. तेथी घडीक मां राजी थयो. तो घडीकमां भाईओ तथा पुत्र वगैरे

ना मरवानुं सांभलीने रडवा लाग्यो हा वत्स कुंभक रण, तु मारो बीजो आत्माज छे हे इंद्रजीत, हे मेघ वाहन, तुमे बे मारि भुजा छो हे जंबुमाल्यादिक तुमे हाथीनी पेरे केम बंधाया ! ए प्रमाणे पोताना बांधवन नागपाश बंधन स्मरण करीने तथा फिरी फिरी मूर्छा खाईने रावण पडवा लाग्यो

आहीं रामना सैन्यमा किल्लाना द्वारनो रक्षक भा-मंडल, तेनी पासे कोई एक विद्याधर आवीने कहेवा लाग्यो के, तु रामनो मित्र होय तो मने राम बताव. हु लक्ष्मणने जीवतो करवा विषे उपाय करू छु हु तु-मारो हितकारी छु एवुं सांभलीने भामंडल तेनो हात पकडी रामनी पासे लेई गयो रामने जोई तेने नम स्कार कर्यो पछी विनती करीने ते केहेवा लाग्यो के, संगीतपुर नामना नगरनो शशीमंडल नामनो राजा, तेनी स्त्री स्युप्रभा तेना कूखथी हु प्रतिचंद्र नामनो पु त्र थयो छु कोई एक समये क्रीडा करवा सारू स्त्री स-हित बहार जती वखतें एक सहस्त्रविजय नामना वि-द्याधरे मने जोईने तथा पूर्वनु वैर याद करीने मारी साथे लडवा लाग्यो पछी तेणे माहरी उपर शक्ति प्र हार करीने मने पाड्यो तिहांथी लोटतो लोटतो अयो ध्या नगरीमा गयो तिहाना महेंद्र नामना उपवनमां तेवीज दशामा मने तुमारा भाई भरत राजाए जोयो, अने माहरी उपर सुगंधीत पाणी छांट्यु ते वखते जेम

घरमांथी चोर निकली जाय. ते प्रमाणें मारा शरीर मांथी शक्ति निकली गई त्यारें मारूं शरीर सारू थयुं. पछी हुं आश्चर्य पामीने ते सुगंधीवाला पाणीनुं माहात्म तेने पूछवा लाग्यो. त्यारें तेणे मने कह्युं के, कोई एक विध्य नामनो सार्थवाहक गजपुरथी आंही आव्यो हतो. तेनो एक पाडो घणा भारथी रस्तामां पडी गयो. तेना माथा उपर पग दईने लोक जवा लाग्या. तेथी ते मरी गयो. ते अकाम निर्जराना योगथी श्वेतंकर नगरनो राजा थईने पवन पुत्रक नामनो वायु कुमार देव थयो. ते भवमां अवधिज्ञान वडे प्रथमनुं मृत्यु जाणीने कोपायमान थयो थको. सर्व जनपदमां तथा आ नगरमां रोग उपजाववा लाग्यो. परंतु माहरा मामाना देशमां तथा तेना घरमां व्याधी उपनी नही, ते वखतें व्याधी होवानुं कारण द्रोणमेघ नामना माहरा मामाने पूछ्याथी तेणें कह्युं के, मारी स्त्री प्रियंकरा पूर्वे व्याधी वडे अति पिडाणी हती. ते गर्भीणी थया पछी ते गर्भना प्रभावें करी ते रोगथी छूटी. मास पूरा थएथी तेने विशल्या नामनी एक छोकरी थई. पछे कोईएक समयें ताहरा देशनी परें माहरो देश पण व्याधी वडे पीडित थयो, त्यारें विशल्याना स्नाननुं पाणी छांट्याथीं ते रोग जतो रह्यो. कोईएक समयें एक सत्यभूतिचारण मुनिने तेनुं कारण पूछयाथी तेणें विशल्याना पूर्व जन्मना तपनुं फल कही संभला

व्यु, एना स्नानना पाणीथी शुद्धा मिटी जाय, ...
ग थाय, व्याधी जती रहे, हिवे पछी थनारो जे ...
पति लक्ष्मण ते पण एना थकी जीवतो रहेशे ...
ते मुनिनी वाणीथी, सम्यकत्व ज्ञानीना अनुभवथी ...
तेना स्नानना पाणीना प्रभावथी सर्वए निश्चय,
रयो एम कहीने द्रोणमेघे विशल्याना स्नाननु पा...
मने आप्युं, तेना प्रभावथी मारी भुमी रोग रहि...
थई, अने तेज पाणी मे तारा अग उपर छाट्यु, ते
थी तु थोडी वारमा शक्तिना दु:खथी तथा बलथी
मूकायो एवी रीते भरतनी परे मने पण तेनो अनु
भव थयो त्यारे जिहा लगण सवार थई नही, तिहा ल
गण विशल्याना स्नाननु पाणी लावो ए काममां ढी
ल करवा जेवी नही जलदी करो सवार थई गई
तो शु करशो! कोई काम बिगड्या पछी सु...
एवु तेनु बोलवु सामलीने भरतनी ते...वस्तु नथी
ल्याना स्नाननु पाणी लेवा सारू भामण्डल... तरफ विश
अने अगद ए त्रणे जण जवा निकल्या, राम... हनुमान,
वानी रजा आपी, त्यारे विमानमा बेशीने ... ते ज
गनी परे अयोध्यामा गया. तिहा भरतने पो...ना
घरमा सुवेलो जोई तेने जगाडवा सारू ते सर्व आका
शमा गायन करवा लाग्या, भरत राजा जागीने तेम
ने पूछवा लाग्यो, त्यारे भामण्डल नमस्कार करीने ते
णे आववानु कारण कह्यु कह्यु छे के, " विश्वासीने विश्वा

भीनो भरोसो होय छे " त्यारें भरत कहेवा लाग्यो के, हुं गयाथी ए कार्य थशे, पछी विमानमां बेशीने कौतुक मंगल नामना नगरमां गयो, तिहां जई द्रोणमेघना पाशे विशल्या मांगी, त्यारें तेणे हजार स्त्रीओनी साथे संकल्प करीने विशल्या आपी, भामंडल विशल्याने लेई ने, तथा भरतने अयोध्यामां मूकीने ते परिवार सहित लंकामां रामनी पासें आव्यो, विशल्या सहित विमानमां भामंडलने जोईने सूर्यना उदयनी भ्रांती थई. एटलामां लक्ष्मणनी पासें विशल्या गई, पछी तेणे वासुदेवने स्पर्श करतां वेतज दृष्टि वडे महासर्पीणीनी परें तेना शरीरमांथी ते शक्ति निकलीने त्यांथी उडी. तेने हनुमाने जोईनें जेम स्वेनपक्षी बीजा पक्षीउने पकडे, ते प्रमाणे कुदको मारीने तेणे पकडी, त्यारें ते देवतारूप शक्ति कहेवा लागी के, माहरो दोष नही, धरणेंद्रे एने दीधी छे, ने प्रज्ञाप्ती विद्यानी हुं बेन छुं, आ विशल्याना तपनुं तेज माराथी सहन थतुं नही, हुं निरपराधी छुं, माटे मने तुं मूकी दे, हिवे हुं जाऊं छुं, एवु सांभली मारुतीए तेने मूकी दीधी. त्यारें ते शक्ति विजलीनी परें अंतरधान पामी. विशल्याए फिरी वासुदेवना अंग उपर हाथ फेरव्युं. अने गोशीर्ष चंदन तेना अंगने लगाड्युं शक्तिनो ताप गया पछी लक्ष्मण सुवेलानी परें उठ्यो. तेने रामे अलींगन देइने तेने वि

व्यु, एना स्नानना पाणीथी शुद्धा मिटी जाय, शुलनो ना
श थाय, व्याधी जती रहे, हिवे पछी थनारो जे एनो
पति लक्ष्मण ते पण एना थकी जीवतो रहेशे एवी
ते मुनिनी वाणीथी, सम्यकत्व ज्ञानीना अनुभवथी तथा
तेना स्नानना पाणीना प्रभावथी सर्वेए निश्चय क
र्यो. एम कहीने द्रोणमेघे विशल्याना स्नाननु पाणी
मने आप्युं, तेना प्रभावथी मारी भुमी रोग रहित
थई, अने तेज पाणी मे तारा अंग उपर छाट्यु ते
थी तु थोडी वारमा शक्तिना दु खथी तथा वलवाथी
मूकायो एवी रीते भरतनी परे मने पण तेनो आनु
भव थयो त्यारे जिहा लगण सवार थई नही, तिहा ल
गण विशल्याना स्नाननु पाणी लावो ए काममां ढी
लं करवा जेवी नही जलदी करो सवार थईगई
तो शु करशो! कोई काम विगड्या पछी सुधरतु नथी.

एवु तेनु बोलवु माभलीने भरतनी तरफ विश-
ल्याना स्नाननु पाणी लेवा सारू भामण्डल, हनुमान,
अने अगद ए त्रणे जण जवा निकल्या, रामे, त्यने ज
वानी रजा आपी, त्यारे विमानमा वेशीने व[illegible] वे
गनी परे अयोध्यामा गया. तिहा भरतने पो[illegible]ना
घरमा सुवेलो जोई तेने जगाडवा सारू ते सर्वे आका
शमा गायन करवा लाग्या, भरत राजा जागीने तेम
ने पूछवा लाग्यो, त्यारे भामण्डल नमस्कार करीने ते
ऐ आववानु कारण कह्यु कह्यु छे के, "विश्वासीने विश्वा

नीनो जरोसो होय छे " त्यारें जरत कहेवा लाग्यो के, हुं गयाथी ए कार्य थशे, पछी विमानमां बेशीने कौतुक मंगल नामना नगरमां गयो, तिहां जई द्रोणमेघना पाशे विशल्या मांगी, त्यारें तेणे हजार स्त्रीओनी साथे संकल्प करीने विशल्या आपी, जामंडल विशल्याने लेई ने, तथा जरतने अयोध्यामां मूकीने ते परिवार सहित लंकामां रामनी पासें आव्यो, विशल्या सहित विमानमां जामंडलने जोईने सूर्यना उदयनी भ्रांती थई. एटलामां लक्ष्मणनी पासें विशल्या गई, पछी तेणे वासुदेवने स्पर्श करतां वेतज दृष्टि वडे महासर्पीणीनी परे तेना शरीरमांथी ते शक्ति निकलीने त्यांथी उडी. तेने हनुमाने जोईनें जेम स्येनपक्षी बीजा पक्षीउने पकडे, ते प्रमाणे कूदको मारीने तेणे पकडी, त्यारें ते देवतारूप शक्ति कहेवा लागी के, माहरो दोष नही, धरणेंद्रे एने दीधी छे, ने प्रज्ञाप्ती विद्यानी हुं बेन छुं, आ विशल्याना तपनुं तेज माराथी सहन थतुं नही, हुं निरपराधी छुं, माटे मने तुं मूकी दे, हिवे हुं जाऊं छुं, एवु सांजली मारुतीए तेने मूकी दीधी. त्यारें ते शक्ति विजलीना परें अंतरधान पामी. विशल्याए फिरी वासुदेवना अंग उपर हाथ फेरव्युं. अने गोशीर्ष चंदन तेना अंगने लगाडयुं शक्तिनो ताप गया पछी लक्ष्मण सुवेलानी परें उठ्यो. तेने रामे अलींगन देइने तेने वि

शल्यानो वृत्तांत कह्यो तेना स्नाननु पाणी पोताना सर्व माणसोना अग उपर छाट्यु तेथी तेवोना घाय रुजाइ गया पछी रामनी आज्ञाए करी ते हजार स्त्रीओ सहित तेनी साथेलक्ष्मणे विवाह करयो तिहा विद्याधर राजा ए लक्ष्मणनो जीवन, विवाह, जन्म उत्सव करयो

आंही दूतना मुखथी लक्ष्मण जीवतो थयो एवु सान्नलीने रावण विचार करवा लाग्यो के, शक्तिना न्नारथी लक्ष्मण ताडित थयो, ते सवार थताज मरशे अने तेना स्नेहथी राम पण मरशे. कपी पण नष्ट थ शे, माहरा कुन्नकरणादिक तथा इद्रजीतादिक सर्व आ हीं आवशे,एवो माहरो मनोन्नाव हतो, पण दैव प्राति कुल होवाथी लक्ष्मण जीव्यो , हिवे कुन्नकरणादिको ने केम मूकावु ए सर्व वात पोताना प्रधानोने कहे वाथी ते बोल्या के, जानकीने मूक्या शिवाय कुन्नक करणादिको छुटनारा नहीं, हमणा आपणो कल्याण देखातो नहीं, जे थयु ते सर्व सारू थयु, तणे शोक करवो नहीं, हिवे हे रावण, आपणा कुलनी रक्षा कर रामने थडो करया विना बीजो उपाय नहीं, एवु सा न्नलीने रावणे तेनो तिरस्कार करयो, पछी एक दूत ने आज्ञा करी के, तु रामनीपासे जईने तेने साम, दाम, दड वडे समजाव त्यारे ते दूते जइने सुग्रीवा दिके करी घेरायला रामने नमस्कार करयो, पछी रावण नी तरफथी बोलवा लाग्यो हे राम, तमे मारा पुत्रने अने

भाइउने मुकी आप, एक जानकी शिवाय बीजुं जे [illegible] मां गे ते तने आपुं. मारूं अर्ध राज्य ले, बीजी त्रणसे कन्या तने आपुं. ते लेइने संतोष कर. एवुं जो मान्य करीश नही तो प्राणनो नाश करी लेइश. एवुं रावणनुं केहेणुं सांभलीने ते दूतने राम केहेवा लाग्या. ताहरी राज्य संपत्ति, तथा बीजी स्त्रीउना उपभोगनी मने इच्छा नही. रावण जो जानकीनो सत्कार करीने तेने पाछी मोकले, तो तेना भाइ तथा पुत्रने हुं मूकी देउं. ते शिवाय मूकनार नही. त्यारें फिरी ते दूत बोलवा लाग्यो के, हे राम, स्त्रीने माटे प्राण देवो, ए तुमने योग्य नही. रावणे मारेलो लक्ष्मण एकवार जीवतो थयो. परंतु आज तुं अने आ वानर केम जीवतां रहेशो? रावण एकलो सर्वने मारवा समर्थ छे. आ माहरा वचन जरूर मान्य करीने तुमे पोते पण विचार करो, त्यारें लक्ष्मण क्रोधमां आवीने तेने कहे छे. हे दूताधम, हजी सुधि रावण पोतानी शक्ति तथा बीजानी शक्ति जाणतो नही, जेना परिवारने बंदीखानामां नाख्यो. हिवे मात्र स्त्री लेवानुं करवुं बाकी रह्युं छे. तथापि हजी सुधि ते पोतानी बडाइ करी रह्यो छे. अरे! केटली एनी हलकाइ! डाहाली तुटेला वृक्ष मुसलनी परें एकलो रहे छे, तेम आ रावण एकलो केटला एक दिवस रेहेशे? माटे हे दूत तुं जा अने रावणने युद्ध करवा सारूं मोकल. तेने मारवाने अर्थें यम

नी परें माहरा हात तैयार छे एवी रीते लक्ष्मण बो ल्या पछी वानराउए तेनु गलु पकडीने तेने कहाडी मूक्यो. ते दूते जईने रावणनी पासे सर्व वात कही त्यारे रावण पोताना प्रधानोने बोलावीने तेउने पूछ- वा लाग्यो के, हिवे केम करवु ? ते कहो त्यारें प्रधा नो केहेवा लाग्या के, सीता आपवी ए योग्य छे. सी ता लावीने व्यतिरेक फल जोयु हिवे अन्वय फलने जो अन्वय अने व्यतिरेक बन्ने सर्व कार्यनी परिक्षा थाय छे हे दशानन, तु एकलो व्यतिरेक पणे रह्यो. हजी ताहरा पुत्र बधु घणा जीवता छे सीता अर्पण क रयाथी ते सर्व बाधव छुटशे पछी तेमनी साथें सुखे करी राज्य सपत्तिनो उपज्ञोग कर एवु तेनु बोलवु सां ज्ञलीने रावण मनमा अति दु खी थयो अने पोते विचार करवा लाग्यो के, बहुरुपा विद्यानु साधन कर वु एम मनमा निश्चय करीने तथा कषाय रहित थ- ईने रावण शातिनाथ चैत्यना प्रत्ये गयो तिहा इद्र नी परे ज्ञक्ति वडे रावणे शातिनाथ स्वामीने जलना कलसथी स्नात्र पूजा करी गोरोचन इत्यादिके करी अगने अर्चन करयु अने फूलादिक पूजा करीने ते मनी स्तुति करी हे देवोना देव जगतना रक्षक, पर मात्मा श्रीमान सोलमा तीर्थंकर शातिनाथ हु तुम ने नमस्कार करू छु हे श्री शातिनाथ, हे ज्ञगवान हे ज्ञव समुद्रतारक, सर्वार्थसिद्धिमत्र स्वरूप, तेहेना

नामने नमस्कार होजो. हे परमेश्वर, हे प्रभो, जे ता
हरी अष्टविध पूजा करे छे तेमना हातोमां अष्ट अ-
णियमादि सिद्धि छे. जे नेत्र वडे नित्य तने जूए छे, ते
ना नेत्र धन्य छे. नेत्रें करी जोयलो जे तुं तेने हृदय
नेत्रथी धन्य छे. हे देव. तारा स्पर्शें करी जन पवित्र
थाय छे. जेम स्पर्शवेधी रसना योगे लोखंडनुं सुवर्ण
थाय छे. हे प्रभो. तारा चरण कमलने नमस्कार क-
रवाथी तथा तारी पासे लोटवाथी मारा कपालनी गां
ठ शृंगारतिलक थशे. पवित्र चंदनादिक पदार्थ तने
अर्पण करवाथी मारी राज्य संपति रूप वेलीने निरं
तर फल आवो ए प्रकारे वारंवार प्रार्थना करीने क
हे छे के. हे जगतविभो. जन्म जन्ममां तारा विषे मा
री भक्ति होजो. एवी शांतिनाथनी स्तुति करीने ते
नी सामें रत्ननी शिला उपर रावण बेठो. पछी अक्ष
माला हाथमां लईने ते विद्या साधन करवानो आरं-
भ कर्यो. ते वखतें मंदोदरीए यमदंड नामना द्वार
पालने आज्ञा करी के, आजथी आठ दिवस सुधी
लंकामां सर्वोए अष्टाह्निक महोत्सव करवो. जे नही
करशे तेनुं माथुं कापी नाख्यामां आवशे, एवी थाली
पिटाव. एवुं सांभलीने द्वारपाले आज्ञा प्रमाणे नगर
मां थाली पिटावी. ते सांभलीने एक खबरवालाए
आवीने सुग्रीवने कह्युं. ते सांभलीने सुग्रीव रामने क
हेवा लाग्यो के, हे स्वामी जिहां सुधी बहुरूपा विद्या

नी परें माहरा हाल तैयार छे एवी रीते लक्ष्मण बो
ल्या पछी वानराज्रए तेनु गलु पकडीने तेने कहाडी
मूक्यो ते दूते जईने रावणना पासे सर्व वात कही.
त्यारे रावण पोताना प्रधानोने बोलावीने तेउने पूछ
वा लाग्यो के, हिवे केम करवु ? ते कहो. त्यारे प्रधा
नो केहेवा लाग्या के, सीता आपवी ए योग्य छे. सी
ता लावीने व्यतिरेक फल जोयु हिवे अन्वय फलने
जो अन्वय अने व्यतिरेक वडे सर्व कार्यनी परिक्षा
थाय छे हे दशानन, तु एकलो व्यतिरेक पणे रह्यो
हजी ताहरा पुत्र बधु घणा जीवता छे सीता अर्पण क
रयाथी ते सर्व बांधव छुटशे पछी तेमनी साथे सुखे
करी राज्य संपत्तिनो उपभोग कर एवु तेनु बोलवु सां
भलीने रावण मनमा अति दु खी थयो. अने पोते
विचार करवा लाग्यो के, बहुरुपा विद्यानु साधन कर
वु एम मनमां निश्चय करीने तथा कषाय रहित थ-
ईने रावण शांतिनाथ चैत्यना प्रत्ये गयो तिहा इंद्र
नी परे भक्ति वडे रावणे शांतिनाथ स्वामीने जलना
कलसथी स्नात्र पूजा करी गोरोचन इत्यादिके करी
अगने अर्चन करयु अने फूलादिक पूजा करीने ते
मनी स्तुति करी हे देवोना देव जगतना रक्षक. पर
मात्मा श्रीमान सोलमा तीर्थंकर शांतिनाथ हु तुम
ने नमस्कार करू छु हे श्री शांतिनाथ, हे भगवान
हे भव समुद्रतारक, सर्वार्थसिद्धिमंत्र स्वरूप, तेहेना

नामने नमस्कार होजो. हे परमेश्वर, हे प्रभो, जे ता हरी अष्टविध पूजा करे छे तेमना हातोमां अष्ट अणिमादि सिद्धि छे. जे नेत्र वडे नित्य तने जूए छे, तेना नेत्र धन्य छे. नेत्रें करी जोयलो जे तुं तेने हृदय नेत्रथी धन्य छे. हे देव. तारा स्पर्शे करी जन पवित्र थाय छे. जेम स्पर्शवेधी रसना योगे लोखंडनुं सुवर्ण थाय छे. हे प्रभो. तारा चरण कमलने नमस्कार करवाथी तथा तारी पासे लोट्याथी मारा कपालनी गांठ शृंगारतिलक थशे. पवित्र चंदनादिक पदार्थ तने अर्पण करवाथी मारी राज्य संपति रूप वेलीने निरंतर फल आवो ए प्रकारे वारंवार प्रार्थना करीने कहे छे के. हे जगताविभो. जन्म जन्ममां तारा विषे मारी भक्ति होजो. एवी शांतिनाथनी स्तुति करीने तेनी सामें रत्ननी शिला उपर रावण बेठो. पछी अक्षमाला हाथमां लेईने ते विद्या साधन करवानो आरंभ करयो. ते वखतें मंदोदरीए यमदंड नामना द्वारपालने आज्ञा करी के, आजथी आठ दिवस सुधी लंकामां सर्वोए अष्टाह्निक महोत्सव करवो. जे नहीं करशे तेनुं माथुं कापी नाख्यामां आवशे, एवी थाली पिटाव. एवुं सांभलीने द्वारपाले आज्ञा प्रमाणे नगरमां थाली पिटावी. ते सांभलीने एक खबरवालाए आवीने सुग्रीवने कह्युं. ते सांभलीने सुग्रीव रामने कहेवा लाग्यो के, हे स्वामी जिहां सुधी बहुरूपा विद्या

सिद्ध थइ नही तिहा सुधी दशानन साध्य छे एवु सांभलीने राम हसीने कहे छे के शांतिनाथना ध्यानमा बेठेला रावणने केम पकडु ? हु ते-ना जेवो कपटी नही एवा रामना वचनो सांभलीने रामने न समजता अंगदादिक रावणनी विद्यानो नाश करवा सारू गया त्यारे तेमणे घणो उपद्रव दिधो तथापि रावण ध्याननथी लिगारे डग्यो नही. त्यारे अंगद बोल्यो के, हे रावण रामथी डरीने तेनी शरणे न आवता आ शु पाखंड करता बेठो छे ? महापतिव्रता, माहा स्वामीनी स्त्री सीताने ते हरण करी परतु हमणा ताहरी सामे ताहरी मंदोदरीनु हु हरण करू छु एम कहीने हाते करी केश पकडीने तेने खेचवा लाग्यो त्यारे ते अनाथनी परे करुणास्वरे करी रडवा लागी तथापि ध्यानमा बेठेला रावणे ते-नी सामे जोयु नही ते वखतें ते विद्या सिद्ध थइ तेना योगे आकाश प्रकाशमान थयु ते विद्या आवीने कहेवा लागी के, हे रावण हु तने सिद्ध थई, तारू शु काम छे ? ते कहे सर्व जगत तने स्वाधीन करी दऊ पछी एकला लक्ष्मणनी ते शु कथा , त्यारे रावण तेने कहेवा लाग्यो के, सर्व तु करशे परतु जे वखते तारू स्मरण करू त्यारें तु आवजे आ वखते पोताना ठेकाणे जा एवु सांभलीने तेज वखतें ते अंतरध्यान थइ त्यारे सर्व वानर तिहाथी पोत पोताना स्थानके गया.

पछी रावणे मंदोदरी अने अंगदनी वात सांभ-
लीने अहंकारे करीने मोटो हुंकारो कर्यो पछी रावण
स्नान भोजन करीने देवरमण उद्यानमां गयो तिहां
सीताने केहेवा लाग्यो के में घणा दिवश विनय वडे
ताहरी प्रार्थना करी, हिवे हुं विनय न करतां ताहरो
पति तथा देवर मारीने बलात्कारे ताहरो उपभोग ले
इश. एवी वीष जेवी तेनी वाणी सांभलीने तथा मू-
र्छीत थइने निर आशानी परें जानकी पृथ्वी उपर प
डी. केटलाएक वखत पछी सावध थइने एवो निय
कर्यो के, राम लक्ष्मण जो मूवा तो ते दिवशथी
हुं अनशण व्रत लेइश. एवुं सांभलीने रावण मनमां
विचार करवा लाग्यो के, रामना विषे एनो स्वभावि
क स्नेह छे, अने माहरा विषे प्रीति स्थलछे तें पथर उ
पर कमलने रोपवा जेवीछे, में बिभीषणनी अवज्ञाक
री ते सारू कर्युं नही. तेमज में प्रधानोनुं पण मा
न्युं नही. कुलने कलंक लगाड्युं. हिवे जो एने हुं
मूकुं तो मने अविचारपणुं आवे, अने रामना पराक्र
मथी मूकाशे तो माहरी अपकीर्ति थशे. तेथी राम
लक्ष्मणने बांधीने आंही लाव्याथी तेमने सीता स्वा
धीन कर्याथी माहरी कीर्ति थशे. एवो निश्चय क
रीने ते रात्र गया पछी सवारना अपशुकन थया. ते
ने न मानता रावण युद्ध करवा निकल्यो. त्यारें राम
अने रावणना सैन्यमां युद्ध चाल्युं. तेमां सुभटोनी

जाउना शब्दोथी दिग्गज त्रास पामवा लाग्या ते व खते लक्ष्मणे राक्षसोना सैन्यनु नाश करीने बाण करी दशकंधरने रूप मार्यो

एवो लक्ष्मणनो पराक्रम जोईने रावण शंका पाम्यो त्यारे तेणे बहुरुपा विद्यानु स्मरण कर्यु ते रावणनी सामे उभी रही तेना योगे रावणे पोताना अनेक रुपो कर्या ते वखते पृथ्वी उपर आकाशमा पोताना पावल, तथा आगल नाना प्रकारे शस्त्रनो वरसात करता रावणने लक्ष्मणे जोयो, त्यारे तेटला सर्व रुपोने एकला लक्ष्मणे तीक्ष्ण बाणो वडे मार्यो ते बाणोथी रावण विव्हल थइने अर्धचक्रीपणाना चिन्हरुप चक्रनु तेणे स्मरण कर्यु ते आव्याथी तेने आकाशमा फेरवीने रावणे लक्ष्मण उपर नाख्यु ते चक्र आवीने लक्ष्मणने प्रदक्षिणा करीने विंध्याचल पर्वतनी शिखर उपर सूर्यनी परे लक्ष्मणना हाथमा आवी रह्यु, त्यारे रावण खेद पामीने विचार करवा लाग्यो के, मुनिना वचन साचा थया, बिभीषणादिको नु बोलवु खरू थयु, एवी रीते रावण शोकातुर थयो तेने जोइने बिभीषण केहेवा लाग्यो के, हे रावण हजी तने जो जीवता रेहेवु होय तो जानकीने मूक, त्यारे रावण क्रोधमा आवीने केहेवा लाग्यो के, रे चक्रज मारू अस्त्र छे के, आ चक्र सहित शत्रुने मुठथी हु मारी नाखीश, एम बोले छे एटलामा तेज च

कथी लक्ष्मणे रावणनुं हृदय कोल्हाली पर कापी ना ख्युं, जेठ महीनाना कृष्ण पक्षनी एकादशीना दिव शे चोथा प्रहरे रावण मरण पाम्यो, ने तिहांथी ते चोथा नरकमां गयो, ते वखतें देवोए जयजय शब्द क रीने लक्ष्मणनी उपर फूलोनी वृष्टी करी, ते समें वि द्याधरो घणा खुशी थवा लाग्या, अने राक्षसो शोक क रवा लाग्या, ए प्रमाणे रावणनुं मृत्यु लक्ष्मणने हाते थयुं,

इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचिते श्री राम लक्ष्मण चरित्रे रावणवध इत्यादि ॥ सातमो खंड समाप्तः ॥

अथ श्री राम लक्ष्मण चरित्र कथा अष्टमो खंड प्रारंभः



पोतानो स्वामी रावण मरण पाम्यो. ते जोईने रा वणनुं सैन्य भयभीत थई घबराववा लाग्युं, तेवारें ते वोनी पासें जईने बिभीषण समजाववा लाग्यो के, आ राम लक्ष्मण आठमां बलदेव वासुदेव छे. तुमे ए ओनी शरणे जाओ. एवुं सांभलीने सर्व राक्षसो राम ल क्ष्मनी शरणे गया. तेमनी उपर राम लक्ष्मणे कृपा दृ ष्टि करी. कह्युं छे के "धीर पुरुषोनी प्रजा ऊपर समदृष्टि होय छे." पछी बिभिषण भाई मूवो एम जाणीने शोकना आवेशथी मरवा सारू एक छुरी हातमां ली- धी. ने ते पेटमां खोसवानो विचार करे छे, एटलामां

रामे तेने पकडी लिधो पछी बिभिषण मंदोदरी सहित रावणनी पासे जईने, हा भाई! हा भाई! एवी रीते करुणा स्वरे करी रडन करे जे बिभिषण, तेणे लक्ष्मणे तथा रामे आगल थवाना प्रकारनो बोध कर्यो संग्राममा जेनी आगल देव पण भयने पामे एवा पराक्रमी रावणनो शोक करवो योग्य नही आ शुरवीर पणाए मूवो तेथी जगतमा एनी कीर्ति थई छे माटे हिवे एनी प्रेतक्रीया करो रडवाथी शु थवानु छे, एम कहिने नागपाशादिके बंधायला जे कुंभकरणादिक वीरो, तेमने मूकीने रामे सारी रीते समजाव्या

पछी बिभिषण, कुंभकरण, इद्रजीत, मेघवाहन, तथा मंदोदरी आदिक बीजा राक्षसो गोरोचन, कपुर, अगर, इत्यादिके करीने रावणनो अगसस्कार कर्यो. रामे पद्म सरोवर उपर आवीने स्नान कर्यु तेमज कुंभकरणादिकोए पण स्नान करीने, पछी लक्ष्मण सहित राम, कुंभकरणादिकोने कहेवा लाग्या के, प्रथमनी परें हिवे पण तुमे पोत पोतानो राज्य करो, तुमारी राज्यलक्ष्मी अमारे लेवी नही तुमारू कल्याण थाओ एवु राम बोल्या पछी एक वखतेज शोक अने आश्चर्य करीने कुंभकरणादिक बोलवा लाग्या. हे महाभूज आ मोटा राज्यथी अमने काई प्रयोजन नही, अमे तो मोक्ष आपनारी दिक्षा मार्ग लइए छैए, हमणा कुसुमायुध उद्यानमा अप्रमेयबल नामना चतुर ज्ञा-

नी एक मुनि आव्या छे, तिहांज ते रात्रे तेमने केव लज्ञान उत्पन्न थयुं छे, ते वखतें देवोए केवलज्ञान म होत्सव कर्यो, एवुं सांभलीने सवारना राम, लक्ष्मण तथा कुंभकर्णादिक तिहां आवीने तथा तेमने वंदना करीने, तेमनी पासें धर्म सांभल्यो, देशनानी समाप्ती थया पछी इंद्रजीत अने मेघवाहनने वैराग्य उपनो,तेथी तेवो मुनिने पूर्व जन्मनी वात पूछवा लाग्या, त्यारें ते मुनि तेमने कहेवा लाग्या,

भरतक्षेत्रमांनी कौशांबी नामनी नगरीमां प्रथम तथा पश्चिम नामना अति दरिद्री तुमे बेउं भाइ थया. एक वखतें भवदत्त नामना महामुनि पासें धर्म सांभलीने तेमणे दिक्षा लीधी. पछी कषायने तजिने मुनिविहार करवा लाग्या. कोई एक समयें तें बेउं जणा कौशांबी नगरीमां आव्या. तिहांना नंदीघोष नामना राजाने पोतानी स्त्री इंदुमुखी सहित क्रीडा करतां जोईने. पश्चिम नामना मुनिए नियाणो बांध्यो के. आ तपना योगे एवी क्रिडा करनारानो पुत्र थाउं, तेने बीजा साधुए वार्यो तथापि ते निश्चय तेनो पाको बंधाइ गयो. तेथी मरण पाम्या पछी ते पश्चिम तेज राजानो रतिवर्धन नामनो पुत्र थयो. क्रमे करी यौवन अवस्था पामीने राज्य उपर बेठो. प छी ते पितानी परें स्त्रीनी साथें क्रिडा करवा लाग्यो. अने बीजो मुनि कालकरी गया पछी निदान तपना योगे

पंचमकल्प देवलोकमा एक परम महर्द्धीक देव थयो, तेणे अवधिज्ञान वडे पोताना पूर्व जन्मना ज्ञाइनी उत्पत्ति जाणीने तेने बोध करवा सारु ते देव मुनिना वेशे तिहा आव्यो तेने जोइने रतिवर्धन राजाए आसन उपर वेसाड्यो पछी बधुना स्नेहे करीने मुनिए पोतानो तथा तेनो पूर्व भव कही संभलाव्यो त्यारे राजाने जाति स्मरण ज्ञान थयु तेथी वैराग्य पामीने तेणे दिक्षा लीधी तिहाथी काल करीने विदेह क्षेत्रने विषे, विबुद्ध नामना नगरमा तुमे वेऊ भाइ राजा थया ते राज्य मूकीने तुमे दिक्षा लीधी काल करी देहत्याग करीने अच्युत देवलोकमा गया तिहाथी आवीने आ प्रतिविष्णु जे रावण तेना घरे इंद्रजीत तथा मेघवाहन एवा तुमे वेऊ पुत्र थया अने रतिवर्धननी माता इंदुमुखी पण घणा भव फिरीने तुमारी माता मंदोदरी थइ ए वात कुंभकरणादिक अने मंदोदरी आदिके सांभलीने तेज वखते ते साधुनी पासे दिक्षा लीधी पछी राम लक्ष्मण अने सुग्रीव ते मुनिने नमस्कार करीने तथा चोपदार बिभीषणने आगल करीने तेणे देखाड्येला मारगमाथी लंकामा गया तिहाथी पुष्पगिरी पर्वत उपर उपवनमा गया तिहा हनुमानना कह्या प्रमाणे रामे सिताने दीठी ते वखते पोताना प्राणनी परे सीता पासे जईने हु हमणाज जीव्यो एम जाण्यु एटलामा आकाशमा

सिद्ध अने गंधर्व सीतानो जयथाउ एम बोलवा ला
ग्या. लक्ष्मणे आंखोमां पाणी आणीने सीताना पग
उपर माथुं राख्युं. त्यारें चीरंजीवो घणा काल आनंद
पामो, ताहरो घणा काल जय थाउ, एवो सीताए ते
ने अशीरवाद दीधो. अने तेना मस्तकनुं चुंबन क-
र्युं. तेमज भामंडले पण नमस्कार कर्या पछी सी-
ताए तेने अशीरवाद दीधो. त्यार पछी सुग्रीव, बि
भीषण, हनुमान, अंगद, अने बीजा विद्याधरोए पो
त पोतानां नाम कहीने जानकीने नमस्कार करवा ला
ग्या. सीताए तेमनो सत्कार कर्यो ते समयें पूनम
ना चंद्र वडे जेम कुमुदनी शोभे तेम रामना दर्शन-
थी सीता शोभवा लागी. पछी सीता सहित राम, भु
वनालंकार नामना हाथी उपर बेसीने तथा सुग्रीवादि
कोने सार्थे लेइने, रावणना घर गया, तिहांथी हजार
मणिस्थंभे करी युक्त शांतिनाथना चैत्यनी वंदना कर
वा सारू गया. ते वखतें बिभीषणे लावी आपेला फू
लो वगेरे सीता लक्ष्मण सहित रामे शांतिनाथनी पू-
जा करी. पछी बिभीषणे प्रार्थना कर्याथी तेना घर
जईने परिवार सहित रामे स्नान तथा भोजनादिक
कर्युं. त्यारें रामने सिंहासन उपर बेसाडीने बिभी
षणे बे वस्त्रो रामने आप्यां, पछी हात जोडीने क-
हेवा लाग्यो के, आ रत्नोना तथा सोनाना कोशो आ
हाथीउ तथा घोडाउ आ राक्षसद्वीप ए सर्व तुमे

ह्यो, हुं तुमारो शेवक छु, तुमारी आज्ञाथीज हु तुम ने राज्य उपर वेसाडु छु. माहरी उपर प्रसन्न थईने आ लंकापुरीने अने मने तुमे पवित्र करो, एवु बिन्नी षणनु वोलनु सान्नलीने तेने राम केहेवा लाग्यो के, आ लंकानु राज्य मे प्रथमज तने आप्यु छे, तु न्नक्तिमा मोहित थईने न्नुली गयो के शु ? एम कहीने रामे तेज वखते बिन्नीषणने लंकाना राज्य उपर वेसाड्यो, त्यार पछी सुधरमा सन्नाना इंद्रनी परे लक्ष्मणादिक सहित राम रावणना घर आव्या सिंहोदरादिक राजाओनी कन्याओने विवाह करवा सारू रामनी रजाथी लाव्या, ते कन्याओए पोत पोतानी प्रतिज्ञा प्रमाणे यथाविधी लक्ष्मणनी साथें लग्न कर्यु, तिहा निरविघ्नपणे उपन्नोग न्नोगवीने राम तथा लक्ष्मण छ वर्ष रह्या एवा समयमा विंध्याचल पर्वत उपर इंद्रजीत अने मेघवाहन सिद्धपदने पाम्या, तिहां मेघरथ नामनु तीर्थ थयु अने नर्मदामा कुन्नकरण सिद्धि पाम्यो, तिहा पष्ठरक्षित तीर्थ थयु

अयोध्यामा राम तथा लक्ष्मणनी माताओने पोताना पुत्रनी वात नही समजीयाथी अति दु:खने पामी त्यारे धातकीखडथी नारद तिहा आव्यो. तेणे तेमने पूछ्यु के, तुमे दु खी शा सारू छो ? त्यारें कौशल्या कहेवा लागी के, सीता सहित राम तथा लक्ष्मण पितानी आज्ञाथी वनमा गया. तिहा सीतानु हरण

थयाथी लंकामां गया, पछी रावण साथे युद्ध थयुं. तेमां रावणे लक्ष्मण उपर शक्ति नाखी. तेनुं शल्य कहाडवा सारूं विशल्याने लेई गया. त्यारपछी शुं थयुं तेनी खबर नही, अमारो पुत्र लक्ष्मण जीवतो छे के नही? एम कहीने' हे वत्स, हे वत्स, एवा करुण स्वर वडे सुमित्रा सहित रडवा लागी. त्यारें त्योने नारद कहेवा लाग्यो के, तुमे धीर धरो. तुमारा पुत्रो ने हुं जोईने तेमने आंही लावुं छुं. एवी प्रतिज्ञा करी ने नारद आकाश मार्गें उडयो. लोकोना मुख थकी सांजलेलो सर्व वृत्तांत पोताना मनमां राख्युं. पछी रामनी पासे आव्याथी रामे तेनुं आदर सत्कार कर्युं. अने योग्य आसन उपर बेसाडीने तेने पूछवा लाग्या के, आंही आववानुं कारण शुं छे? एवुं पूछ्याथी नारदे रामनी माताओनुं दुःख कही संजलाव्युं त्यारें बिभीषणने कहेवा लाग्या के,हुं माहरी माताओनुं दुःख भूली जईने ताहरी भक्तिथी घणा दिवश आंही रह्यो. अमारा विरहना दुःखथी तेवो ज्याहांलगण मरी गया नही, त्याहां लगण अमने तिहांजवुं जोईए माटे हिवे अमने रजा आप. त्यारें बिभीषण नमस्कार करीने कहे छे के, अयोध्या नगरीने शिल्पिओ पासेथी सुधारवाने आजथी हुं लागुं छुं.तेने दिन सोले लागशे. ते काम थई रह्या पछी तुमे सुखे पधारजो. त्यारें रामे कह्युं के ठीक छे, पछी बिभीषणे कारागीरो पासेथी सो

लें दिवशमा अयोध्या नगरी लकाना जेवी कराधी. त्यारे नारद् रामनी पासेथी आदर सत्कार पामीने त्याथी गयो, ते अयोध्यामा आवीने रामनी माताओ ने तेमनापुत्र आववानो महोत्सव निवेदन कर्यो सो लमा दिवशे स्त्रीयो सहित इशान इन्द्रनी पेरे राम लक्ष्मण घणा विमानोमा बेशीने निकल्या साथे बिभी षण, सुग्रीव; भामडल, तथा सर्व राजादिक लेईने क्षण मात्रमा अयोध्या नगरीमा राम लक्ष्मण आव्या. तेमने दूरथी पुष्पक विमानमा बेशीने आवे छे एम जोईने शत्रुघ्न सहित भरत हाथी उपर बेशीने तेमनी सामे आव्यो तेने जोईने जेम इन्द्रनी आज्ञाथी पालक विमान निचे उतारे, तेम रामनी आज्ञाथी पुष्पक विमान पृथ्वी उपर उतर्यु त्यारे प्रथम भाई सहित भरत हाथी उपरथी उतर्यो. पछी आनद सहित राम तथा लक्ष्मण पुष्पक विमानमाथी उतर्या ते वारे भरते रामने नमस्कार कर्यो तेने पगमाथी उठाडीने वारवार तेनु मस्तक चुबन करयु तेमज शत्रुघ्न पण नमस्कार कर्या पछी तेने भरतनी परे उठाडीने वस्त्र वडे तेनी आखोमाना आसु पूछीने आलिंगन करयु तेमज लक्ष्मणे पण नमस्कार करनारा जे भरत अने शत्रुघ्न तेमने अलिंगन करयु पछी ते त्रण भाइओ सहित राम पुष्पक विमानमा बेशीने अयोध्यामा आववा सारू विमानने आज्ञा करी ते

वर्त्ते आकाशमां अने पृथ्वी उपर बाजां वाज र्‍
ह्यां हता, एवा नाटारंभे करीने राम अयोध्या नगरी
मां गया. त्यारें जेम मेघने मोर जूवे तेनी परें नगरी
ना लोको उपर माथुं करीने आंखोनी पापणी न ल
वतां एक सरखा रामनी सामें जोवा लाग्या. रस्ता-
मां ठेकाणे ठेकाणे लोकोए अर्घपाद्यादिक वडे तेम
नी पूजा करी. पछी राम लक्ष्मण पुष्पकविमानमांथी उ
तरीने माताना घरमां गया. तिहां कौशल्या तथा सु
मित्रादिकोने नमस्कार कर्यो. त्यारें त्योए अशीर्वाद
दीधो. तेमज सीता तथा विशल्यादिक स्त्रीओए पण
घणा उमंगे अपराजीतादिक सासुओने नमस्कार क
र्यो. त्यारें तेमणे एवो अशीर्वाद दीधो के, अमारी
परें वीरपुरुषने जणनारी तुमे थाउ. पछी कौशल्या
लक्ष्मणना अंग उपर हातफेरवीने तथा मस्तक चुंब
न करीने तेने कहेवा लागी के, हे वत्स, में मोटा भा
ग्ये करी तने जोयुं. विदेशमां जईने तथा तिहां पो
तानुं विजय करीने पाछो आंहीं आव्यो, तेथी हुं ए
म जाणुं छुं के, तारूं फिरी जन्म थयुं. ताहरी सेवा-
थी राम अने सीताए वनमांना दुःखने लोटयुं. एवुं
सांभलीने लक्ष्मण बोल्यो के, हे माता, राम अने सी
ताए मारूं ताहरी परेंज वनमां पालन कर्युं, तेने ली
धेज हुं वनमां सुखे करी रही शक्यो, तिहां माहरी व
तणुकथी रामनी साथें वैर बंधायुं. तेथीज सीताने दुः

ख थयु. हे देवी, घणु तो शु कहु ? पण तुमारा आ-
शीर्वादे करी वैरसागर तरीने पोताना परिवार सहि
त राम फिरी आहीं आव्यो, ए मोटो भाग्य समज
वो त्यार पछी भरते अयोध्यामा मोटो उत्सव कराव्यो
अने पोते रामनी पासे सेवक थइने रह्यो

कोई एक समये रामने नमस्कार करीने भरते क
ह्यु के, हे आर्य, ताहरी आज्ञाथी आज दिवस सुधि
आ राज्य मे कर्यु नहितर हु तो दशरथ राजानी सा
थेज दिक्षा लेतो हतो. परतु वडीलनी आज्ञा राज्यनु
पालन करवा विषे थइ,तेथी आज दिवस सुधि रह्यो हि
वे मने दिक्षा लेवाने आज्ञा आपो आ ससारथी हु
विरक्त थयो छु. तेथी हिवे हु आहीं रहेवाने समर्थ थ
नार नहीं एवु भरतनु बोलवु साभलीने रामनी आ
खोमा आसु आव्या, ने तेने कहेवा लाग्यो के, हे व
त्स तु एम केम बोले छे ? आ राज्य तुज कर ता
री उत्कठाथी हु आहीं रहीश राज्य सहित अमने मू
कीने जवु तने योग्य नहीं एवो रामनो आग्रह जा-
णीने भरत रामने नमस्कार करीने तिहाथी उठ्यो ए
टलामा लक्ष्मणे तेनु हात पकडी लीधु भरतने दि-
क्षा लेवानी सीता तथा विशल्यादिक वात साभली,
ने तेने दिक्षानो आग्रह मूकाववा सारू विचार करी
ने जलक्रीडा करवाने भरतनी प्रार्थना करी ते स्त्रीउ
ना आग्रहथी अत पुर सहित भरत क्रीडा करवा सा

ई गयो. जो पण पोते विरक्त हतो, तो पण तेमनी साथें बे घडी सुधि जलक्रीमा करी. पठी जलमांथी बहार निकलीने तीर उपर हंसनी परें नरत राजा उन्नो रह्यो. एटलामां नुवनालंकार हाथी स्थंन उखाडी नरत पासें गयो. ते मदें करी आंधलो हतो. तथापि नरतने जोतांज मद रहित थई गयो. तेमज तेना दरशन थकी नरत पण आनंदने पाम्यो. त्यारें ते उपद्रव करनारा हाथीने बांधवा सारू राम लक्ष्मण तथा बीजा सुनटो आव्या. पठी रामनी आज्ञाथी मावते पकमीने हाथीने स्थंननी पासें आण्यो. तिहां देशनुषण अने कुलनुषण ए बे मुनि आव्या. तेमने वंदना करवा सारू परिवार सहित राम, लक्ष्मण, अने नरत ए त्रणे जण आव्या. ते वखतें तेमने नमस्कार करीने राम पूठवा लाग्या के, माहरो हाथी नरतना दर्शनथी मद रहित केम थयो? त्यारें देशनुषण मुनि केवल ज्ञानना प्रनावे कहेवा लाग्या.

पूर्वें ऋषनस्वामीनी साथें चार हजार राजाए दीक्षा लीधी. तेमां ऋषनस्वामी आहार मूकीने तथा मौन धारण करीने विहार करवा लाग्या, तेथी तेमनी साथेंना सर्व तापस आहार शिवा दुःखी थया. तेमां प्रल्हादनेसुप्रन राजाना, चंद्रोदय, तथा सूर्योदय ए नामना बे तापस पुत्र हता. ते घणा काल नव फिरीने तेमांनो चंद्रोदय गजपुरना हस्तमति राजा

नी स्त्री चंद्रलेखाना उदरथी कुलकर नामनो पुत्र थयो अने सूर्यउदय पण तिहाज विश्वश्रुति ब्राह्मण नी अग्निकुंडा नामनी स्त्रीना कुखे शृतिरति नामनो पुत्र थयो. पछी ते कुलकर राज्य उपर बेशीने कोई एक दिवशे तापसना आश्रममा गयो. तेने अवधि ज्ञानी अभीनंदन साधु केहवा लाग्या के, आ आश्रममा पंचाग्नि साधन करनारा एक तपस्वीए बालवाने माटे लाकडा आण्या छे तेमा एक सर्प छे ते ताहरा पूर्व जन्मानो क्षेमकर नामनो ताहरो पितामह (बापनो बाप) छे. माटे ते लाकडा चिरीने ते सर्पनी तु रक्षा कर एवु ते मुनिनु बोलवु सांभलीने तथा दु:खीत थईने कुलकरे ते लाकडा फोडाव्या. तेमाथी ते सर्प निकल्यो तेने जोईने विस्मय थयो ते वखते कुलकर राजाना मनमा आव्यु के, दीक्षा लेवी एटलामा शुतिरति ब्राह्मण तेने केहवा लाग्यो के, हे राजन् ए धर्मनु नाम शु ? जो ताहरो आग्रह होय तो मोटी अवस्थामा दीक्षा लेजे हमणा शा सारू दु:ख भोगवे छे ? तेनु एवु बोलवु सांभलीने दीक्षा लेवानो आग्रह मूक्यो अने विचार करवा लाग्यो के. हवे शु करू ? तेनी स्त्री श्रीदामा तेज उपाध्यायनी साथे लागेली हती, तेणे विचार कर्यो के, आ कर्म जो राजा जाणशे, तो ते अमने मारी नाखशे एटलामा हु जएने मारी नाखु तो पीडा जाय एवो विचार करीने उपा

ध्यायनी सल्लाहथी राजाने विष देईने मारयो. त्यार प
छी कालांतरे ते श्रुतिरति नामनो ब्राह्मण पण मरी गयो.
ते बेऊ घणा काल नव नटकीने नाना योनीउमां गया.
कोईएक समयें राजगृही नगरीमां कपिल नामना
ब्राह्मणनी स्त्री सावित्रीना कुखें ते जोमवा विनोद अ
ने रमण ए बे पुत्र थया. तेउमांनो रमण वेदाध्ययन क
रवा सारूं देशांतरे गयो, तिहां वेद शिखीने केटला
एक काल पछी राजग्रही नगरीमां रात्रना समयें आ
व्यो. ते वखतें नगरमां जवानो समय न होवाथी ते
बाहेरज रही गयो. तिहां एक यक्षना मंदिरमां ते सु
तो. ते ठेकाणे विनोदनी स्त्री शाखादत्त नामना ब्राह्म
णना साथें संकेत करीने रात्रना आवी, तेनी पाछल
विनोद पण आव्यो. ते वखतें रमणने शाखादत्त जा
णी नोग नोगववा सारूं ते रममाण थई. पछी विनो
दें खड्ग करीने तेने मारी नाख्यो. त्यारें रमणनी इछा
करनारी जे ते शाखादत्त तेणे विनोदने मारी नाख्यो.
ते विनोद घणा काल नव नटकीने एक धन नामना
विश्वशेठनो पुत्र थयो, रमण पण काल करीने ते धननी
स्त्री लक्ष्मीना कुखें नुषण नामनो पुत्र थयो. तेणे धन
शेठनी आज्ञाथी बत्रीश कन्याउनी साथें विवाह करयो.
एक वखतें ते स्त्रीउनी साथें क्रीडा करतो छतां रात्रना चो
गठा उपर बेठो. पाछली रात्रना एक श्रीधर मुनिने केवल
ज्ञान उपन्युं, तेनो उत्साह देवताए करयो, ते जोइ

ने तेने धर्मनो परिणाम थयो तेज वखते त्यांथी उ
ठीने ते साधुने वंदना करवा सारू चाल्यो ते वखते
मार्गमा एक सर्प तेने डंश करयो ते वखते तेना परि
णाम सारा होवाथी काल करीने शुभ गतिने पाम्यो.पछी
माहाविदेह क्षेत्रना जंबुद्विपमा हनुपुर नगरमा अचल
नामना चक्रवर्ति राजानी स्त्री हरिणीना कुखे प्रियदर्शन
नामनो धर्मतत्पर पुत्र थयो तेणे दीक्षा लेवानी इ
छा करी परंतु पितानी आज्ञाथी ते त्रण हजार कन्याओ
नी साथे परण्यो, तो पण अंतःकरणमा विरक्त रह्यो.
ग्रहवासमा पण तेणे चोसठ हजार वरस उत्तम तप क
रीने तिहांथी चवीने ते ब्रह्मदेवलोकमा देव थयो

अने ते धनशेठ पण घणा काल भवमा फिरीने एक पो
तनपुर नगरमा शकुनाग्निमुख ब्राह्मणनी स्त्री ब्रह्मपत्नि
ना कुखे मृदुमति नामनो पुत्र थयो, ते अविनयी हतो.
तेथी तेना पिताए तेने कहाडी मूक्यो,पछी ते सर्व कला
शीखीने पाछो पोताने घर आव्यो, तिहां रात्रदिव-
स रमे पण तेने कोई जीतवाने समर्थ थाय नहीं. प
छी हमेश जुगार रमीने बीजा लोकोने जीतीने घण
द्रव्य मेलव्युं. त्यारें वसंतसेना नामनी वेश्यानी सा
थें प्रीति बंधायाथी तेनी साथें घणा उपभोग भोग-
व्या पछी वैराग्य उपन्यो, तेथी दीक्षा लेइने ते ब्र
ह्मदेवलोकमा देव थयो तिहांथी आवीने पूर्व जन्म
ना मायाना दोषथी वैताढ्य पर्वत उपर श्री भुवना

पण तिहांथी आवीने आ महानुज ताहरो नाइ नर त थयो. एना दर्शनथी हाथीने जातिस्मरण थइने ते मद थकी रहित थयो. कह्युं े के " विचार करयां- थी रौद्र नय रहेतो नथी."

एवी रीते पूर्व नव सांनलीने नरतने घारे वै- राग्य ऊपन्यो, तेथी पोते एक हजार राजा हित दी क्षा लेइने अंते मोक्षे गयो. अने ते हजार राजा घ णा काल दीक्षा पालीने नाना लब्धि नोग नोगवतां थका अक्षय पदने पाम्या. अने ते हाथी ण विवि ध तप करी अनसन व्रत पालीने मूवा पबी ब्रह्मदे वलोकमां देव थयो. तेवारं पबी नरतनी माता कैकई पण दीक्षा लेइने निष्कलंक व्रत पालती थकी ोक्ष ने पामी. नरते दीक्षा लीधा पबी नूचर विद्याधर रा जाउए रामने राज्य ऊपर बेसवानी नक्ति सहित प्रार्थना करी. त्यारें रामे कह्युं के आ माहरो नाई ल क्ष्मण वासुदेव बे, तेने राज्यनो अनिषेक करो. एवी रामनी आग्रहथी आज्ञा थतांज सर्व लोकोए लक्ष्म णने राज्य ऊपर बेसाड्यो. तेमज रा बलदे नो अ तार बे, तेथी रामने पण राज्यनो अनिषेक कस्यो. एवी रीते आठमां बलदेव तथा वासुदेव ए बेऊं राज्य करवा ला ग्या. तेवारें रामे बिनीषणने कह्या प्रमाणे राक्षसद्वीप आप्यो. तेमज सुग्रीवने वानरद्वीप आप्यो, हनुमान ने श्रीपुरं मोकल्यो, विराधने पाताल लंकामां रवाना

करयो, नीलने रुक्षपुर, प्रतिसूर्यने हनुपुर, रत्नजटी ने देवोपगीत नगर, भामण्डलने रथनुपुर, अने बीजा राजाउने पण यथायोग्य आपीने राम शत्रुघ्नने कहेछे के, हे वत्स तने किसो देश गमे छे? ते ले त्यारे श त्रुघ्न कहेवा लाग्यो के मने मथुरा नगरी जोइए. त्या रे राम बोल्यो के हे वत्स मथुरा नगरी लेवी महा क ठण छे तिहाना मधु नामना राजाने पूर्वे एक चम रेंद्र नामना देवताए त्रिशुल आप्यु छे ते शत्रुना सै न्यनो दूरथी नाश करीने फिरी पोताना धणीना हाथ मा जाय छे त्यारे शत्रुघ्न बोल्यो के हे देव, हु तुमा रो भाई छु, माहरा युद्धमा तेनु रक्षण करनारो कोण छे? माटे मने मथुरा नगरी आपो एटलो हुज जेम वैद्य व्याधीनो परिहार करे छे, तेम तेने जीती लेइश एवी रीते शत्रुघ्नना आग्रहथी तेने मथुरा नगरी आ पीने राम केहेवा लाग्या हे वत्स, तें मधु राजाना हा थमा जे वखत त्रिशुळ होय नही तथा जे वखते उ- न्मत्त थयो होय ते वखते तेनी साथें तु युद्ध करजे एम कहीने अक्षयपसायक एवा बे भाता अने कृता त वदन नामनो सेनानी ए बे पदार्थ सायें दीधा. तेमज लक्ष्मणे अग्नीमुख बाण अने अर्णवावर्त ध नुष्य ए बे वस्तु आपी

पछी शत्रुघ्न प्रयाण करीने एक सरखो चालतो छतो मथुरा नगरीनी पासे जई नदीना तीर उपर र

ह्यो. प्रथम मधु राजानी पासें चार दूत मोकल्या, ते तिहां जईने पाछा आव्या, ने शत्रुघनने केहेवा लाग्या के मधु राजा पोतानी जयंती नामनी स्त्री सहित मथुरानी पूर्व दिशाए कुबेर नामना उद्यानमां गयो छे, अने ते त्रिशूल अस्त्र पोताना घर पड्युं छे. आ युद्धनो वखत छे. एवुं ते दूतनुं बोलवुं सांभलीने शत्रुघ्न रात्रना मथुरा नगरीमां गयो. मधु राजा पण तेज वखतें नगरीमां पेसवा लाग्यो. त्यारें तेने शत्रुघनना सैन्ये अटकाव्यो, अने प्रथम रामना रणसंग्रामना आरंभे जेम खरने मार्यो हतो तेम मधुनो पुत्र जे लवण तेने मारी नाख्यो. पुत्रना मूवाथी मधु क्रोधायमान थइने तेणे पोताना धनुष्यनो टणकार कर्यो. पछी शत्रुघननी सामें युद्ध करवा लाग्यो. ते संग्राममां परस्परना अस्त्रो कापी नाखीने देव अने असुरनी परें ते बेऊ परस्पर शस्त्र तथा अस्त्रनो वरसात वरसाववा लाग्या. ते वखतें शत्रुघ्ने, लक्ष्मणे दीधेलो अर्णवावर्त धनुष्य तथा अग्निमुख बाण ए बेऊनुं स्मरण कर्युं. ते बांज ते प्रगट थइने सामें आवी उभा रह्या. पछी ते धनुष्य सज्ज करीने ते अग्निमुख बाण वडे शत्रुघ्ने मधु राजाने जखमी कर्यो. ते बाणना मारथी विकल थएलो मधु विचार करवा लाग्यो के मारूं त्रिशूल हातमां आव्युं नही, अने आ शत्रुघनने पण मार्यो नही, माटे माहरो जन्म व्यर्थ गयो, तेमज श्री जि-

नेंद्रनी पूजा पण करी नही, देरासरो पण बांध्या न
ही, सत्य वडे दान पण कर्यो नही, एवो विचार क
रीने तेणे दीक्षा लीधी पछी नवकार मन्त्रनो जाप क
रीने काल करी गया पछी सनतकुमार देवलोकमा ते
मधु महर्द्धिक देव थयो तेना शरीर उपर देवोए फू
लोनो वरसात करीने एनो जय थाउ. एवी रीते ते-
उ बोलवा लाग्या.

पछी ते देवतारुप त्रिशुल चमरेंद्र पासें आवीने
तेणे शत्रुघनना हाते मधुना मृत्युनी वात कही स-
नलावी त्यारें चमरेंद्र क्रोधमा आवीने पोते चाल्यो.
ते वखतें वेणुद्धारी नामनो तार्क्ष्यस्वामी तेने पूछवा
लाग्यो के तु किहांजाय छे? त्यारें चमरेंद्र बोल्यो के
मारा मित्रने मारनारा शत्रुघनने मारवा सारू हु
जाउछु एवु तेनु बोलवु सान्नलीने तेने ते वेणुद्धारी
केहेवा लाग्यो के धरणेंद्र पासेंथी रावणने मिलेली श
क्तिने पण महा पुन्यवान जे अर्धचक्री लक्ष्मण ते
णे जीती लीधी. अने ते लक्ष्मणे रावणने मार्यो. ते
नो शेवक मधु ते विचारो शा हिसावमा! ते लक्ष्मण
नी आज्ञाथीज शत्रुघ्ने संग्राममा मधुने मार्यो छे,
एवुं सान्नलीने चमरेंद्र तेने केहेवा लाग्यो के, लक्ष्म
णे जे शक्तिने जीती ते विशल्या कन्याना प्रन्नावथी
हमणां तेने विवाह कर्याथी तेनो प्रन्नाव जतो रह्यो
छे माटे मारा मित्रने मारनाराने मारवा सारू हु जा

ळं के नहीं? ए कहीने क्रोधमां आव्यो थको चमरेंद्र शत्रुघनना देश । आव्यो. तिहां न्यायमां रहेला सर्व लोकोने तेणे जोया की पेहेला प्रजाने उपद्रव देवा लाग्यो. अने शत्रुघनने दुःख देवा सारूं नाना प्रकार नी व्याधी उत्प री, श घनने पोताना कुल देवताए व्याधी थवानुं सर्व कारण कह्युं. त्यारें तिहांथी निकलीने ते अयोध्यामां रा लक्ष्मणनी पासें आव्यो. एवा प्रसंगे देशभुषण तथा कुलभुषण ए बे मुनि पण तिहां आव्या, ते ने रा लक्ष्मण तथा श न स्कार करयो ते र पछी तेमने राम पू वा लाग्या के, आ शत्रुघनने थुरा नगरी । आविग्रह शा वास्ते थयो. त्यारें देशभुषण कहे । ग्या के, आ शत्रुघननो जीव थुरा नगरीमां अने वार उत्प थईने ते एक धे साधुनी सेवा करनारो श्रीधर ना नो ह्मण रूपवान थयो. ते कोईएक समयें रस्ता । जतां राजानी स्त्री ललिताए तेने जोयो, तेणे का भोगनी इच्छाथी पोतानी पासें लावी लीधो. एटलामां तिहां राजा पण आव्यो. त्यारें ललिता बा री थई गई. ते जोईने राजाए पुकार करी के, आ चोर छे ढे एने पकडो. ते सांभलीने राजाना माणसो तिहां आव्यां, तेने राजाए हुकूम करयाथी तेउ ते ह्मण शुल उपर लेई गया. ते वखतें कोई एक कल्याण ना ना निए आ साधुनी सेवा कर ारो बे

एम जाणीने तथा राजाने समजावीने तेने मूकाव्यो. तिहांथी छूटीने तणे दिक्षा लीधी पछी तप करीने ते स्वर्ग मां गयो. तिहांथी आवीने मथुरा नगरीमां चंद्रप्रभ राजाने अचलनामनो अति प्रिय पुत्र थयो तेना भानुप्रभादिक ओरमान भाइउए तेने राज्य न मिलवानी इर्षाथी मारवाना उपायो करया ते वातनी प्रधानने खबर पड्याथी तणे एने कही दीधी ते जाणीने अचल तिहांथी नाशी गयो. ते वनमां फिरतो फिरतो तेना पगमां कांटो लाग्याथी रडवा लाग्यो. ते रस्तामां एक श्रावस्ती (सावत्थी) नगरीमां रहेवावालो तथा पिताए कहाडी मूकेलो, अंक नामनो पुरुष तणे पोताना माथा उपरनो लाकडानो भार उतारीने तेना पगमांथी कांटो कहाड्यो कांटो निकल्याथी ते राजा ते अंकने कहेवा लाग्यो के ते घणु सारू कर्यु जे वखतें मथुरा नगरीमां अचल राजा थयो एवु तु सांभले ते वखते तिहां आवजे, तु माहरो मोटो उपकारी छे. एम कहीने अचल कौशंबी नगरीमां गयो. तिहां सिंहगुरु नामना आचार्यनी पासे धनुष्यनो अभ्यास करनारा इंद्रदत्त राजाने जोयो. अचले पण पोतानुं धनुष्यत्व बताव्यु तेथी राजी थइने इंद्रदत्त राजाए पृथ्वी सहित पोतानी कन्या तेने आपी, पछी ते अचल बलवान थइने तेणे अंगादिक देशो जीत्या.

कोई एक समये मथुरा नगरीमां

ताना भाईनने साथें युद्ध करीने भानुप्रभादिक ते आठे जणाने बांधी लाव्यो. त्यारें तेनो पिता जे चंद्र प्रभ, तेणे पुत्रोने मूकाववाने अर्थें अचलनी पासें पोतानो मंत्री मोकल्यो. तेने अचले पोतानो सव व्रतांत कही संभलाव्यो. मंत्रीए जईने चंद्रप्रभ राजाने कह्यो. यद्यपि ते पोतानो न्हानो पुत्र हतो तथापि नगरीमां लावीने चंद्रप्रभ राजाए तेने राज्य उपर बेसाडयो. अने बीजा आठ पुत्रोने कहाडी मूक्या. तेमने पण बोलावीने आठे भाईतने अदृष्ट सेवको करया. कोई एक समयें नाटक घरमां ते अंक नामना पुरुषने अचले जोयो. तेने द्वारपालना हातें बोलावी लीधो, तेनी उपर राजी थइने अचले तेनी जन्मभुमि सावथी नगरीनुं राज्य तेने आप्युं. पछी ते बेऊं मिलीने राज्य करवा लाग्या. पछी ते बेऊंए एक समुद्राचार्यनी पासें दीक्षा लीधी. कालें करी मरीने ते बेऊं ब्रह्मदेवलोकमां देव थया. अचलनो जीव तिहांथी चवीने आ ताहरो न्हानो भाइ शत्रुघ्न थयो. ते पूर्व जन्मना मोह वडे मथुरा नगरीना राज्यनी तेणे इछा थइ. अने ते अंकनो जीव आवीने कृतांतवदन आ ताहरो सेनानी थयो. एवा समयें प्रभापुर नगरनो राजा श्रीनंद तेनी स्त्री धारणीना कूखे सुरनंदन, श्रीनंदन, श्रीतिलक, सर्वसुंदर, जयंत, अमर अने जयमित्र ए सात पुत्रोनुं क्रमेकरी जन्म थयुं. कोई एक

एम जाणीने तथा राजाने समजावीने तेने मूकाव्यो तिहांथी छुटीने तेणे दिक्षा लीधी. पछी तप करीने ते स्वर्ग मा गयो तिहांथी आवीने मथुरा नगरीमा चंद्रप्रभ राजा ने अचलनामनो अति प्रिय पुत्र थयो तेना भानुप्रभादिक ओरमान भाइओए तेने राज्य न मिलवानी इर्षाथी मारवाना उपायो करया ते वातनी प्रधानने खबर पड्याथी तेणे एने कही दीधी. ते जाणीने अचल तिहांथी नाशी गयो. ते वनमा फिरतो फिरतो तेना पगमा कांटा लाग्याथी रडवा लाग्यो. ते रस्तामा एक श्रावस्ती (सावत्थी) नगरीमा रहेवावालो तथा पिताए कहाडी मूकेलो, अक नामनो पुरुष तेणे पोताना माथा उपरनो लाकडानो भार उतारीने तेना पगमाथी कांटो कहाड्यो. कांटो निकल्याथी ते राजा ते अकने कहेवा लाग्यो के ते घणु सारू कर्यु जे वखतें मथुरा नगरीमा अचल राजा थयो एवु तु सांभले ते वखते तिहां आवजे. तु माहरो मोटो उपकारी छे एम कहीने अचल कोशंबी नगरीमा गयो. तिहां सिंहगुरु नामना आचार्यनी पासे धनुष्यनो अभ्यास करनारा इंद्रदत्त राजाने जोयो. अचले पण पोतानु धनुष्यत्व बताव्यु तेथी राजी थइने इंद्रदत्त राजाए पृथ्वी सहित पोतानी कन्या तेने आपी, पछी ते अचल बलवान थइने तेणे अंगादिक देशो जीत्या

कोई एक समये मथुरा नगरीमा आवीने तथा पो

ताना भाईनी साथें युद्ध करीने भानुप्रभादिक ते आठे जणाने बांधी लाव्यो. त्यारें तेनो पिता जे चंद्र प्रभ, तेणे पुत्रोने मूकाववाने अर्थें अचलनी पासें पोतानो मंत्री मोकल्यो. तेने अचले पोतानो सव व्रतांत कही संभलाव्यो. मंत्रीए जईने चंद्रप्रभ राजाने कह्यो. यद्यपि ते पोतानो न्हानो पुत्र हतो तथापि नगरीमां लावीने चंद्रप्रभ राजाए तेने राज्य उपर वेसाडयो. अने बीजा आठ पुत्रोने कहाडी मूक्या. तेमने पाछा बोलावीने आठे भाईउने अदृष्ट सेवको करया. कोई एक समयें नाटक घरमां ते अंक नामना पुरुषने अचले जोयो. तेने द्वारपालना हातें बोलावी लीधो, तेनी उपर राजी थइने अचले तेनी जन्मभूमि सावत्थी नगरीनुं राज्य तेने आप्युं. पछी ते बेऊं मिलीने राज्य करवा लाग्या. पछी ते बेऊंए एक समुद्राचार्यनी पासें दीक्षा लीधी. कालें करी मरीने ते बेऊं ब्रह्मदेवलोकमां देव थया. अचलनो जीव तिहांथी चवीने आ ताहरो न्हानो भाइ शत्रुघ्न थयो. ते पूर्व जन्मना मोह वडे मथुरा नगरीना राज्यनी तेणे इछा थइ. अने ते अंकनो जीव आवीने कृतांतवदन आ ताहरो सेनानी थयो. एवा समयें प्रभापुर नगरनो राजा श्रीनंद तेनी स्त्री धारणीनां कूखे सुरनंदन, श्रीनंदन, श्रीतिलक, सर्वसुंदर, जयंत, अमर अने जयमित्र ए सात पुत्रोनुं क्रमेकरी जन्म थयुं. कोई एक

समयें श्रीनंदे एक महिनाना पुत्रने राज्य उपर वेसा डीने पोते प्रितिकर गुरुनी पासे वीजा पुत्रो सहित दिक्षा लीधी. केटलाएक काल पछी श्रीनद मोक्षे गयो. अने सुरनदनादिक पुत्रो तपनी शक्तिथी जघाचारण लब्धि पाम्या. ते महर्षि कोई एक समये मथुरा नगरीमा गया. ते वखते वरपाकाल आव्या थी ते सर्व पर्वतनी गुफामा रह्या. तिहां सर्वकाल पष्टा ष्टमादिक तप करवा लाग्या, पछी दूर देशमां जईने तेमणे पारणा करया. फिरी मथुरा नगरीनी पासे पर्वतनी गुफामा आवी रह्या तेमना सामर्थ्य वडे चमरेंद्रे उत्पन्न करेली व्याधीनो नाश थयो. कोई एक समये पारणा करवा सारू अयोध्या नगरीमा तेओ आव्या अने वहोरवा सारू अर्हदत्त नामना शेठना घर गया. त्योनी अवज्ञा पूर्वक वदना करीने ए कोण छे एवो ते विचार करवा लाग्यो. आ साधुनो वेप धारण करनारा वरपाकालमा आव्या. तेथी ए आ हींना नही माटे एउने पुछुं के ए पाखमीउनी साथें बोलु नही एवु ते चिंतन करतो छता तेनी स्त्रीए तेउने अन्न वहोराव्युं नही पछी ते महर्पि द्युति नामना आचार्यनी वस्तीमा गया. द्युतिए अभ्युत्थान देइने योग्यता सहित नमस्कार करयो, ए समय विना विहार करनारा छे, तेथी तिहाना बीजा साधुए वदना करी नही द्युतिए तेने आसन आप्या पछी

तेउए पारणा कर्यां. पछी मथुरा नगरीथी आव्या ने फिरी तिहां जईशुं, एम कहीने आकाश मार्गे उडीने पोताना ठिकाणे गया. द्युतिए जंघाचारण मुनिना गुण वखाण्या, ते सांभलीने जेउए मान्य कर्युं न ही ते साधु पश्चाताप पाम्या ते सांभलीने अर्हद्दत्त श्रावके धोखो कर्यो, पछी ते कार्तिक मासना उ-ज्यारा पक्षमां मथुरा नगरीमां आवीने तिहां चैत्यनी पूजा करी सप्त मुनिने वंदना करी, अने पोते करे ली तकशीरनी माफी मांगी.

शत्रुघ्ने ए वात सांभलीने तथा ते सप्त मुनिउ-ना प्रभावथी माहरो देश रोगथी मूकायो एम जाणी ने, कार्तिक मासमां ते नगरीमां आव्यो. तिहां जई सप्त मुनिउने नमस्कार करीने केहेवा लाग्यो के, मा हरा घरनुं भोजन करो, त्यारें तेउए कह्युं के साधुए राजाना घरनुं अन्न लेवुं नही. त्यारें फिरी शत्रुघ्न बोल्यो के तुमे मारी उपर उपकार करनारा छो, मा हरा मुलकमां देवताउए करेलो रोग नाश थयो, माटे लोकोनी उपर कृपा करवा सारूं केटलाएक दिवस अ ठे रहो. तुमारुं वरतवुं बीजानी उपर उपकार करना रूं छे. एवुं तेनुं बोलवुं सांभलीने तेउ केहेवा लाग्या के हमणां अमे तीर्थ यात्रा करवा सारूं विहार कर नारा छैयें. मुनिए एकज ठिकाणे कायम रेहेवुं नही, माटे तुं आ नगरीमां सर्वना घरमां अरिहंतनी प्रति

माऊ कराव, एटले कदी पण रोग उत्पन्न थनार न
ही, एम कहीने ते साते मुनिउ आकाश वाटे बीजे
ठेकाणे गया पछी तेमणे कह्या प्रमाणे शत्रुघ्ने नगर
तनी प्रतिमाउ करावी तेमज ते सात मुनिउनी रत्नोनी
प्रतिमा करावीने मथुरानी चारे दिशा तरफ पधरावी
वैताढ्य पर्वत उपर दक्षिण दिशामा रत्नपुर नगर
नो राजा रत्नरथ थयो, तेनी चद्रमुखी नामनी स्त्री
ना कूखे मनोरमा नामनी कन्या थई ते रूपमा पण
मनोरमा हती. ते ज्यारे युवान अवस्थामा आवी-
त्यारें राजा विचार करवा लाग्यो के आ कन्या कोण
ने देवी! एटलामा नारद आवीने केहेवा लाग्यो के
आ कन्या लक्ष्मणने देवा योग्य छे, एवु सानलीने
गोत्रना वैरे करी तेना पुत्र चिडाया, ने पोताना
सेवकोने कहेवा लाग्या के आ नारदने लाकडा वती
मारो एवी रजा दीधी ते मारवाने उठवा लाग्या,
एटलामा नारदे जाणीने तिहाथी नाशी गयो, ते प
क्षीनी परे उडीने लक्ष्मणनी पासें आव्यो, तेणे क
न्यानी तसवीर कहाडी वतावी. अने पोतानी वात पण
कही सनलावी, तेनु रूप जोईने तेनी उपर लक्ष्मणनु म
न थयु पछी केटलाएक विद्याधरोने साथें लईने राम अने
लक्ष्मण ए बेऊ भाई तिहा आव्या रत्नरथनी साथें
युद्ध करीने तेने लक्ष्मणे जीत्यो त्यारे तेणे राम-
नें श्रीदामा नामनी कन्या आपी, तथा लक्ष्मणने

मनोरमा कन्या आपी. तेवार पछी वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण दिशाने जीतीने राघव अयोध्यामां आव्या अने प्रथमनी परें राज्यनुं पालन करवा लाग्या. लक्ष्मणने सोल हजारने आठसो स्त्रीयो थइ, तेनमां विशल्या, रूपवती. वनमाला, कल्याणमालिका, रत्न-मालिका, जीतपद्मा, अजयवती, मनोरमा, ए आठ स्त्रीयो मुख्य हती, अने सर्व मिलीने अढीसो पुत्र हता; तेमांना मुख्य आठ स्त्रीयोना पुत्रना नाम ए प्रमाणे. विशल्याना कूखें श्रीधर, रूपवतीना कूखें पृथ्वीतिलक, वनमालाने अरजुन, जीतपद्माने श्रीकेशी कल्याणमालिकाने मंगल, मनोरमाने सुपार्श्व कीर्ति, रत्नमालिकाने विमल, तथा अजयवतीने सत्यकीर्ति. ए नामना आठ पुत्र थया तथा सीता, प्रभावती. रतनिला, अने श्रीदामा, ए नामनी चार स्त्रीयो रामनी थइ.

कोइएक समयें सीता ऋतुनो स्नान करेली हतां तेणे पाछली रात्रें एक स्वप्न जोयुं तेमां बे शरभ विमानथी पडीने पोताना मुखमां पेठा एवुं दीठुं. पछी ते स्वप्न सीतायें रामने कह्युं. रामे कह्युं के तने बे वीर पुत्र थशे, पण विमानमांथी बे शरभ पड्या तेथी माहारा मनने आनंद थतो नथी. त्यारें सीता बोली के हे प्रभो! ताहरा प्रभावथी अने धर्मना प्रभावथी सर्व शुभ भावी थशे. ते दिवसथी सीतायें गर्भ धारण कर्यो. तेथी ते रामने विशेष प्रिय थई. ते जोईने तेनी कप-

टी शोक्यो द्वेषथी सीताने पूछवा लागी के रावणनु रूप केवु हतु? ते अमने बतावे अमने जोवानी इच्छा छे त्यारे सीता बोली के तेना सर्व अंग मे जोया नही, मात्र पग जोया छे, माटे तेनु रूप हु केम लखी शकु फरी ते कहेवा लागी के पगनो आकार बतावो, केमके तेने जोवाने अमने कौतुक जेवु लागे छे सीता प्रकृतिए सरल होवाथी तेणे रावणना चरणोनु चित्र कहाडयु एटलामा ओचित तिहा राम आव्या तेने ते स्त्रीयो केहेवा लागी के ताहारी प्रिय आ सीता हजी सुधी रावणने याद करया करे छे तेनो दाखलो सीताए पोते लखेला रावणना पग तुमे जोवो, बीजी तो तुमने खबर रामनो स्वभाव अतिगंभिर होवाथी तेमनुं केहेवु मनमा न आणीने सीतानी उपर प्रथमनी परे प्रेम राख्यो त्यारे तेणे पोतानी दासीयोना मुखे सीताना उपर आरोप करेलो दोष लोकोने केहेवा लागी ते वात कोईएक वखते रामना काने पडी ते मनमा न लावता सीताने राम केहेवा लाग्या के हे प्रिय स्त्री आ गर्भना योगे तारू शरीर सुकाई गयु छे, तने आनंद करवा सारू हमणा वसंतऋतु रूप लक्ष्मी आवीने क्रिडा करवानी सूचना करे छे अने गर्भवाली स्त्रीना मनोरथे करी बकुल नामना वृक्षने फूलो आव्या छे, माटे आ समये क्रिडा करवा सारू आपण महेंद्र उद्यानमां जईयें त्यारे

सीता बोली के माहरो मनोरथ देवतानी पूजा करवानो थयो छे: तेने उद्यानमांना सुगंधी फूलो वडे पूरो करो. एवुं सांभलीने तेज वखतें देवोनी पूजा करावीने तथा सीताने साथें लेइने राम महेंद्रोद्यानमां आव्या. तिहां नगरीना लोको वसंतना उत्सव करी रह्या छे ते जोवा लाग्या. एटलामां सीतानी जिमणी आंख फिरकवा लागी, तेथी तेना मनमां शंका आवी. त्यारें ते वात रामने कही. रामे सांभलीने कह्युं के ए चिन्ह सारूं नही. सीता बोली मारा राक्षसद्वीपना वासथी शुं विधाता राजी थयो नही के? हे प्राणपति राम, ताहरा वियोगना दुःखथी बीजुं अधिक दुःख देवानी विधाताने इछा छे के शुं? आ निमित्त अन्यथा थनार नथी. त्यारें राम कहेछे के हे देवी तुं खेद कर नही, जे थवानुं हशे ते थशे, सुख अने दुःख ए कर्मना आधीन छे, माटे जरूर भोगववा जोइयें. हिवे घर जई देवनी पूजा कर, अने सुपात्रने दान आप. कह्युं छे के "दुःखना वखतें धर्मनी शरण छे" पछी घर जइ मोटा भावथी अरिहंतनी पूजा करीने तेणे सारा पात्रने उत्तम प्रकारना दान दीधां.

कोईएक समयें विजय, सुरदेव, मधुमान, पिंगल, शुलंधर, काल, क्षेम अने काश्यप ए आठ अधिकारीयो आवी रामने नमस्कार करीने उभारह्या, परंतु तेनाथी रामनी सामें कांइ पण बोलायुं नही, केम-

कै तेओथी राज्य तेज सहन थयु नहीं त्यारे तेने राम कहेवा लाग्या के हे अधिकारी पुरुषो तुमे एका त हित रहेनारा छो तेथी हु तुमने अभय आपुछु जे तुमारा मनमा होय ते माहरी पासे कहो एवु सांभ- ळीने तथा समय जाणीने तेऽमानो विजय नामनो अधिकारी हात जोडीने कहेवा लाग्यो आजे अमा रे विज्ञापना करवानी जरूर पडी छे, तेम नकरवाथी अमे तुमारा अपराधी ठरीएछैये, माटे दु सह छता केहेवु पडेछे, तुमारी प्राणप्रिय पत्नि सीतानी उपर लोको मोहोटो दुर्घट अपवाद राखे छे तेनो आप बु द्धिमान पुरुषने विचार करी लेवो, जो ग्रहण करवा यो ग्य होय तो ठीकज छे, नहीतर तेनो त्याग करवो हे प्रभो रावणे जानकीने हरण करीने तेने एकलीज ते लेइ गयो तेना घरे ते घणा दिवस रही, राजीखुशी थी इतराजीथी, अथवा बलात्कारे स्त्री लपट जे राव ण तेणे निश्चये करी सीताने दूपित करी छे अने स र्व लोक पण एम कहे छे तेमज अमे पण कहीए छै ये. हे रघुत्तम एवो युक्तायुक्त जे प्रवाद (अपवाद) ते तुमने सहन करवा योग्य नथी. हे देव ए प्रवाद ना सहनथी पोताना कुलनी परे जन्मथी मेलवेली जे कीर्ति तेने मलीन करो नही एवु सांभलीने त- था सीताना अपवादनो निश्चय करीने दु खे करी पी

ડાણો થકો રામ મુકાટે બેશી રહ્યો. કહ્યું છે કે " એ-
કાએકી પ્રેમનો ત્યાગ થતો નથી. "

પછી ધૈર્ય ધારણ કરીને તેમને રામ કહેવા લાગ્યા
કે, તુમે સારી વિનંતી કરી. કહ્યું છે કે, " ભક્ત પુ-
રુષ ક્યાંએ ઉપેક્ષા કરનારા નહી. " એક સ્ત્રીને માટે
હું અપયશ સહન કરનાર નહી, એવી પ્રતિજ્ઞા કરીને
રામે તેમને જવાનો આજ્ઞા કરી. પછી રાત્રના સમયે
છાની રીતે ઘરથી બાહાર નિકલીને રામ ગામમાં ફિર
વા લાગ્યા. રસ્તામાં ઠેકાણે ઠેકાણે લોકોની વાણી
સાંભલી. તે એવી રીતે— રાવણ સીતાને લેઈ ગયા
પછી સીતા તેના ઘરે ઘણા દહાડા રહી. તેને ફિરી
રામ લેઈ આવ્યો, અને તેને તે હજી સુધી પતિવ્રતા
માની રહ્યો છે રાવણ સીતાની ઉપર આશક્ત થઈ તે
ને લેઈ ગયોછતાં શું તેનો તેણે ઉપભોગ લીધો નહી
હોય? તેનો હજી રામને વિચાર થતો નહી. એમ કહ્યું
છે કે, " અનુરાગી પુરુષો દોષ જોતા નહી. " એવી
રીતે લોકોપવાદ સાંભલીને રામ પાછો પોતાના ઘરે
આવ્યો. ફિરી લોકોપવાદ સાંભલવા સારૂ પોતાના
સેવકોને છાની રીતે મોકલ્યા. પછી રામ પોતાના મ-
નમાં વિચાર કરવા લાગ્યા કે, જેના સારૂ ભયંકર
રાક્ષસોના કુલનો મેં નાશ કર્યો. તેની ઉપર આ
કલંક કેવો? સીતા મહાસતી છે, તે હું પાકી રીતે જા
ણું છું. અને તે રાવણ સ્ત્રી લંપટ હતો, તેથી આ અપ

नाद थाय छे माहरूकुल कलंक रहित छे, तेनी उपर आ कलंक चड्यु हिवे राम शु करशे? एटलामां त सेवकोए लोकोपवाद सांभलीने राम अने सुग्रीव आदिकनी पासे बेठेला लक्ष्मणने आवी कह्यु त्यारे लक्ष्मण क्रोधायमान थइने कहेवा लाग्यो के, आ पतिव्रता सीतानी जे कोइ निंदा करे छ, तेनो हु काल छु एवु सांभलीने तेने राम कहेवा लाग्या के, प्रथम महत्तरोए मने कह्यु आ सेवकोए पण कह्यु, तथा मे पोते पण लोकना मुखथी बोलवु सांभल्यु तेज आ लोको सांभलीने ताहरी सामे आवी बोल्या माटे में सीतानो स्वीकार करयो, तेमज तेनो त्याग करयाथी आपणा उपर लोको अपवाद राखनार नथी एवु रामनु बोलवु सांभलीने तेने लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के, लोकोनी वाणी उपर विश्वास राखीने सीतानो त्याग करवो योग्य नथी लोको गमे तेम बोलनारा छे लोकनो मुख कोण बांधी शके जो पण पोताना राज्यमा रहे छे, तो पण राजाना उपर दोष राखवाने पाछा हठना नथी परतु राजा तेमने शिक्षा देतो नथी, अने तेमनी अपेक्षा करे छे, फिरी राम बोल्या ए साची वात छे लोको हमेश एवाज छे पण यशस्वी पुरुषे लोक विरोध कर्मनु त्याग करवु कह्यो छे एम कहीने रामे कृतांतवदन नामना सेनानीने आज्ञा करीने कह्यु के, जो पण आ सीता गर्भवती छे, तथापि

एने हरेक ठेकाणे वनमां जई मूकी आव. एवुं रामनुं बोलवुं थया पछी तेना चरणमां लक्ष्मण माथुं राखीने तथा नेत्रोमां पाणी आणीने कहेवा लाग्यो पतिव्रता जे आ सीता तेनो त्याग करावो योग्य नही. त्यारें रामे कह्युं के, हिवे ताहरे बोलवानुं कांई काम नथी. त्यारें लक्ष्मण नीचे मुख करीने रडतो थको घेरे गयो. रामे कृतांतवदनने कह्युं के. समेताशिखर यात्राना मिषथी सीताने वनमां लेईजा, तेने एवोज मनोरथ थयो छे. त्यारें कृतांतवदन सीतानी पासें जई रामनी आज्ञा कहीने तथा तेने रथमां बेसाडी चालतो थयो जतां वाटमां अपशुकन थया छतां सीता दूर गई.

कृतांतवदन सीताने लेईने, गंगासागर उतरीने तथा महाभयंकर वनमां जईने, कांइ विचार करतो बेठो. तेना नेत्रमां पाणी आव्यो छे. एम जोईने सीता बोलवा लागी. तुं शोकवाननी परें दुःखी थइ बेसवानुं कारण शुं छे ? त्यारें कृतांतवदन मोटा संकटथी कहेवा लाग्यो के, जे बोलवाने योग्य नही. ते हुं केम बोलुं ! हुं रामनो सेवक छुं तेनी आज्ञा मने जरूर सांभलवी जोइए. हे अनाथ सीता, तुमे राक्षसना घरमां रह्यां, तेथी ते लोकोपवाद आव्यो, तेना भयथी रामे तुमने आ भयंकर वनमां मूकी. जे वखतें सेवकोए तुमारा अपवादनु रामने कह्युं ते सांभलीने तेज वखतें रामे तुमारो त्याग करवानो विचार कर्यो. त्या

रें लक्ष्मण लोकोना उपर क्रोधायमान थइने तेणे ग
मनु निवारण कर्यु परतु रामे तेनो निषेध कर्यो
तेथी ते रडतो रडतो घरमा गयो पछी तुमने आही
मूकवाने मने मोकल्यो हे देवी हु मोटो पापी छु
जिनवरोए करी नरेलु आ वन ते केवल मृत्युनु घरज
छे एमा हु तुमने मूकी गया पछी पोताना प्रनाव-
थी तुमे जीवता रहेशो एवु सान्नलताज सीता मूर्छि-
त थईने रथमाथी पृथ्वी उपर पडी. तेने मरी गई
जाणीने ते सेनानी (सेनापती) मनमा कहेवा लाग्यो
के मने मोटु पाप थयु. एम कहीने ते रूवा लाग्यो
एटलामा वनवायुना योगे सीता सावध थई फिरी
मूर्छा खाईने पडी एम करता छता केटलाएक वखत प
छी शुद्धीमा आवीने कहेवा लागी के आहीथी अयो
ध्या केटली दूर छे? अथवा राम किहा छे? त्यारे सेना
नी बोल्यो अयोध्या आहीथी दूर छे? पण हिवे तु
मने पुछीने शु करवु छे? तथा आ नयकर आज्ञावा
लो जे राम, तेनु नाम लेइने पण तुमने शु करवानु
छे? एवु तेनु बोलवु सान्नलीने राम नक्त ते सी
ता फिरी कहेवा लागी के, हे सेनानी मारी सर्व खब
र रामने जइ कहेजे अने तेने मारा तरफनी विन-
ती करजे के, ज्यारें तुमे लोकना अपवादथी नयने
पाम्या त्यारें माहरी परिक्षा लेवाने शु हरकत हती.
सशय आवे तेवारे लोको दिव्यादिक (सोगन वगैरे)

वडे खातरी करी लेहे. मंदभाग्य जे हुं ते तो पोता
ना कर्मना अनुसारे सुख अथवा दुःखने भोगवीश.
परंतु हे नाथ, तें आ योग्य कर्युं नही. ताहरा विचार
ने अने कुलने आ मोटो दुषण छे. हे स्वामि तें दु
र्जनोनी वाणीथी जेम मने मूकी दीधी, तेम मिथ्या
दृष्टि लोकोनी वाणीथी जिन धर्मनो विचार कर्यो न
ही. एम कही मूर्छा खाईने पृथ्वी उपर पडी. फिरी
उठीने कहेवा लागी के, मारा शिवाय राम केम जीव
शे? हा! हा! हुं नष्ट थई. रामने कल्याण कहेजे. तेमज
लक्ष्मणने मारो आशिरवाद कहेजे, ताहरो रस्तो
कल्याणकारक थाउ, हे वत्स, तुं रामनी पासें जा.
त्यारें ते सेनानी मनमां कहेवा लाग्यो के, एवो-
विपरीत बुद्धिवालो पति छतां, सीता आ प्रकारनी
महा पतिव्रता छे. एवो विचार करीने ते सेनानीए फि
री सीताने नमस्कार कर्यो. अने सीताने ते वनमां
मूकी दीधी, पछी ते महा संकटथी पाछो फिर्यो.

इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचिते श्री रामलक्ष्म
ण चरित्रे सीता वनवास गमनं अष्टमो खंड समाप्तः

॥ श्री राम लक्ष्मण चरित्रकथा नवमो खंड प्रारंभः ॥



पछी सीता पूर्व कर्मना दुःख वडे दुषित थइने पो
ताना आत्मानी निंदा करती थकी वनमां भयने पा-

मीने आम तेम फिरवा लागी. वारवार रडे ने पगले पगले पडे एवी रीते भमता तेने एक मोटु सैन्य दी ठामा आव्युं तेने जोइने मनमा कांइ पण भय न राखता नवकार मन्त्रनो जाप करती ते तिहाज उभी रही, मनमा विचार करे छे के आ वनमा भय राखी ने शु करवानु छे? एवा समये मरवु अने जीववु एं बेउ सरखा छे, एवी रीते शोकमा विचार करती तेने जोइने सैनीक भयने पामीने कहेवा लाग्या के आ दिव्यरूप धारण करीने पृथ्वि उपर कोण उभी छे? (एटलामा तेनु रुदन सांभलीने सैन्यनो स्वामी बोल्यो) ए कोइ गर्भिणी छे अने महा दुखरूप समुद्रमा बुडेली छे एम बोलीने ते कृपालु राजा सीतानी पासे आव्यो तेने जोइने सीता भयनेमारे पोताना अंग उपरना अलकारो कहाडीने तेनी आगल नाख्या. त्यारें तेने राजा कहेवा लाग्यो के, बाई तु भय नही राख, आ ताहारा जे भुषण छे, ते ताहरा अंगमा घाल तु कोण छे? अहीं तने कोणे नाखी? ते अत्यत निर्दय छे, सर्व वृतात मने तु कहे, लिगारे मनमा शका कर नही ताहारू दु ख जोइने ताहराथी मने वधारे दु ख थाय छे. एवु ते राजा बोले छे तेटलामां राजानो मंत्री सीताने कहेवा लाग्यो के, पुडरीकपुरना राजा गजवाहननी स्त्री बधुदेवीना कुखे जन्मेलो आ वज्रजघ नामनो राजा महा पराक्रमी तथा अरिहतनो भक्त

छे. परनारीनो सहोदर भाई छे. हमणां हाथीने पकडवा सारूं इहां आव्यो हतो, ते काम करीने फिरी घरें जाय छे. ते तारा दुःखने जोइने पोते महा दुखीत थयो थको इहां आव्यो. तेने तूं पोतानुं दुःख कहे. एवुं ते मंत्रीनुं बोलवुं सांभलीने तेणे पोतानो संपूर्ण वृतांत तेने कह्यो. अने रडवा लागी. तेने जोइने ते कृपालु राजा तथा मंत्री पण रडवा लाग्या. पछी ते राजा सीताने केहेवा लाग्यो के तुं मारी धर्मनी बेन छे, एक धर्ममां रेहेवावाला सर्व लोक परस्पर बंधु होय छे, माटे मने भामंडलना जेवो भाई जाणीने मारा घेर चाल. माहारे तिहां स्त्रीउने रहेवाने पतिग्रह शिवाय बीजी बंधुग्रह नामनी रहेवानी जगा छे. रामे तने लोकना अपवादथी मूकी तेथी तेना उपर कांइ दोष नथी. ते पण पश्चातोप करीने ताहरी परें दुःख भोगवतो हशे, एवुं मने जाणयामां आवे छे. अने विरहथी आतुर थयो थको चकवा पक्षीनी परें तारो शोध करतो हशे.

एवी रीते ते बोली रह्यां पछी सीताए तेना भाषणनो स्वीकार कर्यो. त्यारें राजाए तेने पालखीमां बेसाडीने मिथिला नगरीनी परे ते पुंमरिक नगरीमां तेडी आव्यो. तिहां तेने रहेवाने एक मेहेल कहाडी आप्युं. तेमां सीता रहीने रात्रंदिवस धर्म ध्यान करवा लागी.

अहीं रामनो सेनानी सीताने वनमां मूकीने पा छो

अयोध्या नगरी प्रत्ये गयो रामनी पासे जई तेने नमस्कार करीने बोलवा लाग्यो के जानकीने मे सिंहनाद नामना वनमा जई मूकी, त्यारें ते वारवार मूर्छित अने सावधं थई. एवी रीतें फिरी फिरी रडीने महा शोक करवा लागी फिरी मूर्छा खाई सावध थईने तुमने आवी खवर कही छे. नीतिशास्त्रमा स्मृतिमा, तथा देशमा एक पक्षे कहेलो दोष साम्भलीने बीजा पक्षने शिक्षा करवानुं क्याए आचार नथी. तु सर्व काल सर्व काम विचार करीने करनारो छता आ काम करता ते काई पण विचार कर्यो नही एमा ताहारो दोष नथी पण मारा भाग्यना दोषथी एम थयु तु सदा निर्दोषज छे, हु निर्दोष छता दुष्ट लोकोना बोलवाथी जेम ते मने मूकी दीधी तेम मिथ्यादृष्टी लोकोना बोलवाथी जैनधर्म मूकजे नही, एम कहीने सीता मूर्छित थई फिरी उठी सावध थईने बोली के मारा विना राम केम जीवतो रहेशे? हु सर्व रीते खराब थई, एवो वारवार तेणे खेद कर्यो

एवा ते सेनानीना वचनो साम्भलीने राम मूर्छा खाइ पृथ्वि उपर पडया, तेवोज लक्ष्मणे आवीने तेनी उपर चदननु पाणी छांटयु त्यारें केटलाएक वखत पछी सावध थइने एवी रीतें विलाप करवा लाग्या के, ते महा सती सीता किहा छे! दुष्ट लोकोना वचनोथी तेने मे मूकी दीधी, ते फिरी माहरी नजरे केम पडशे!

एवी रीते रामने विलाप करतां जोईने लक्ष्मण बो-
ल्यो के, हे स्वामि हजी सुधी ते सीता पोताना प्र-
भावथी वनमां जीवती हशे. हे प्रभो तुमे पोते तिहां
जईने तथा तेनो शोध करीने ज्याहां लगण ते तारा वि
रहे करी मरण पामी नही तिहां लगण तेने पाछी
अहीं लावो. एवुं लक्ष्मणनुं बोलवुं सांभलीने ते सेना
नी तथा बीजा विद्याधरोए सहित आकाश मार्गें ते महा
भयंकर वनमां राम आव्या. दरेक ठेकाणे, दरेक पा-
णीना स्थाकने दरेक पर्वत उपर तथा दरेक झाडोमां
रामे जानकीनो शोध कर्यो, परंतु तेनो किहां पत्तो
मिल्यो नही. त्यारें मनमां विचार करवा लाग्या के
कोइ वाघे, के कोइ सिंहे अथवा कोइ जनावरे सीता
ने भक्षण करी एम जाणीने अत्यंत दुःखी थयां थ
कां सीताना [illegible] लवानी आशा मूकीने पाछो फिरी रा
म पोताना नगरमां आव्या. तिहां गामना लोकोए
सीताना गुण ग्रहण करीने वारंवार रामनी पूजा की
धी. पछी रामे सीताना मृतकार्य कर्या, अने जिहां
तिहां सीतामय जोवा लाग्यो, सीता विना सर्व शु
न्य देखावा लाग्युं. रा ना हृदयमां, नजरनी सामें त
था वाणी [illegible] सर्व काल सीताज आववा लागी, तथा
पि तेने क्यारें पण सीतानी खबर मिली नही.

अहिं वज्रजंघ राजाने घरे जानकीने अनंगलवण
अने मदनांकुश नामना जोडला बे पुत्रो थया. वज्र-

जघे तेना जन्मनो महोत्सव करयो, तेथी पोताना पुत्र लाभ करता राजाने वधारे आनद थयो धाईना हातथी लालन पालन थईने ते वेऊ अश्विनी कुमारनी परे क्रमे करी मोठा थया ते महानुज हाथीना वालकनी परे शिक्षा करवा लायक तथा राजाना नेत्रने आनददायक वेऊ कलाए शिखवाने योग्य थया एवा समये कोईएक अणव्रत धारण करनारो विद्या, वल तथा ऋद्धिए करी सपन्न अने कलामा कुशल, आकाशमा फिरनारो एक सिद्धार्थ नामनो मुनि मेरू पर्वतनी उपर त्रिकाल चैत्योनी यात्राए करतो करतो भिक्षाने अर्थे जानकीना घरें आव्यो त्यारे सीताए अन्न पानादिके करी तेने भोजन कराव्यु. पछी ते मुनिने सीताए रस्ताना विहारनी खबर पूछी. त्यारे तेणे कह्यु के सुखे करी विहार थयुं, मुनिए पण पुत्रना जन्म सुधी सीताने वृतात पूछ्यो त्यारे तेणे मूलथी थयेली सर्व वात ते मुनिने कही सभलावी. ते साभलीने अष्टाग निमितज्ञ, सिद्धार्थ अने करुणा निधि एवो ते मुनि तेने केहवा लाग्यो के हे सीता, तु व्यर्थ खेद शा सारू करे छे? जेना आ लवण अने अकुश ए बे पुत्र छे, ते बेऊ निर्दोष लक्षणवाला साक्षात राम अने लक्ष्मण जेवाज छे, ए ताहरा मनोरथ थोडाज दिवसमा पूर्ण करशे.

एवी रीते तेणे सीतानु आश्वासन करयु, त्यारे

सीताए तेनी प्रार्थना करीने पोताना बेऊं पुत्रने अ ध्यापन शिखाववा सारूं तेने पोताना घरे राखी ली धो. तेणे सीताना पुत्रोने सारा जाणीने तेउने सर्व कलाए शिखावी. पछी ते युद्धमां देवोने पण दुर्जय थया, अने सर्व कलाओमां निपूण थया. अनेकरी यौव न अवस्थामां आवीने नुतन काल वसंतना परें बेऊं साथें संचार करवा लाग्या. त्यारें वज्रजंघ रा जानी स्त्री लक्ष्मीने कूखें जन्मेली शशिचुला नामनी कन्या अने बीजी बत्रीस कन्याने ते राजाए अलंग लग्न पणे परणावी दीधी. पछी अंकुशना वास्ते पृथ्विपुर नगरना राजा पृथुनी स्त्री अमृतवतीना कुखें जन्मेली क नकमालिका नामनी कन्या ते राजानी पासें वज्रजंघे मांगी. तेवारे पृथु राजाए कीधुं के जेना वंशनी खबर नही तेने मारी कन्या केम आपुं? तेनुं एवुं बोलवुं सां भलीने तेने वज्रजंघ राजाए कह्युं के, तुं माहरी सा थें युद्ध करवाने उभो रहे, एम कहीने तेनी साथें यु द्ध करवा लाग्यो. तेनो पक्षपाती जे व्याघ्ररथ राजा तेने युद्धमां बांधी लाव्यो. तेवारे पृथु राजाए पोता नी साह्यतां करवा सारूं पोताना मित्र पोतनपतिने तेणे बोलाव्यो. कह्युं छे के " आपत्तिना वखतें मित्र नुं स्मरण थाय छे. " तेमज वज्रजंघे पण सेवक ने मोकलीने पोताना पुत्रने बोलाव्यो. त्यारें लवणाश्र ने अंकुशने पाछा राख्यां तो पण तेउ संग्राममां आ

ज्या बीजे दिवसे बेऊ सैन्यो विच्चे युद्ध चाल्युं. तेमां अतिप्रबल शत्रुना सैन्ये वज्रजघना सैन्यनो भंग करयो त्यारे पोताना मामाना सैन्यनो नाश थयो एम जोईने लवणांकुश क्रोधमां आव्या थका निरंकुश हाथीनी परे शत्रुना सैन्यनो नाश करवाने दोड्या ते वखते जेम वरषाकालना नदी प्रवाहनो वेग तीरना वृक्षोथी सहन थतो नथी, ते प्रमाणे महापराक्रमी ते बेऊ भाईनो वेग शत्रुथी सहन थयो नहीं सैन्य सहित पृथुराजानो भंग थयो ते वखतें ते रामना पुत्र तेने कहेवा लाग्या के, अमे अपरिज्ञात (न जाणेला) वशना छैये अने तुमे परिज्ञात (जाणेला) वशना छता युद्धमांथी केम नाशी गया ?

एवां त्योना वचनो सांभलीने पृथुराजा बोल्यो, तुमारा आ पराक्रमथी अमे वश जाण्यो वज्रजघ राजाए अंकुशने माटे माहरी कन्या मागी ते माहरा हितना अर्थे छे केमके एवो वर बीजो कोण मिलनार

एम विनय सहित बोलीने तेज वखतें प्रथम मागेली कनकमालिका कन्या तेणे अंकुशने दीधी. अने कन्याने वर अंकुश जोईने एवी इच्छाथी सर्व राजानी साभे पृथुराजाए वज्रजघनी साथे मित्रता करी त्यार पछी केटलाएक दिवश वज्रजघ डेरा करीने तिहां रह्यो कोईएक समये नारद मुनि आव्या तेनो राजाए सारी रीते आदर सत्कार करयो,नारद आसन उपर

बेठा पछी तेने सर्वे राजानी सामें वज्रजंघ कहेवा लाग्यो, हे नारद आ पृथु राजा पोतानी कन्या अंकुशने देनार छे, तेथी ए अमारो संबंधी थयो, तेने लवणांकुशनो वंश कहे. पोताना जमाइना वंशनी खबर पड्याथी ए खुशी थशे. एवुं सांभलीने नारद हसीने कहेवा लाग्योके एनो वंश कोण जाणतो नथी! मूल पुरुष भगवान श्री ऋषभदेवजीनो ए वंश छे. एना वंशमा भरतादिक चक्रवर्ति राजा थया छे. अने हाल पण राम अने लक्ष्मण जे एमना मावीत्रो छे, तेने कोण नथी उलखतो. ए बालको गर्भमां छतां लोकोना अपवादना भयथी रामे जानकीने वनमां मूकी हती. एवुं नारदना मुखथी सांभलीने अंकुश हास्य करीने बोल्यो. हे ब्राह्मण रामे भयंकर वनमां जानकीने मूकी ए सारूं कर्युं नही. अपवाद मिटाडवाना बीजा घणा उपायो हता. पोते विद्वान छतां आ तेणे शुं कर्युं? एवी रीते अंकुश बोले छे, तेटलामां लवण पण बोली उठ्यो. हे नारद मांहरो पिता पोताना परिवार तथा लक्ष्मण सहित ज्याहां रहे छे, ते नगरी आंहिथी केटली दूर छे? ते सांभली नारद बोल्यो, महा कीर्तिमान तारा पितानी रहेवानी नगरी आंहिथी १६० योजन दूर छे. एवी रीते नारदना वाक्यो सांभलीने. विनय सहित वज्रजंघ राजानी पासे

जईने लवण कहेवा लाग्यो के जे राम तथा लक्ष्मण वगेरे छे त्योने जोवानी अमारी इछा छे

त्यारे ते राजाए त गचनोने मान्य करीने मोटा आनंदथी कनकमालिकानी साथे अंकुशनो विवाह कर्यु. पछी वज्रजंघ तथा पृथुराजा सहित तिहाथी प्रयाण करीने अनेक देशोनु उलथल करता थका, एक लोक नामना नगर प्रत्ये आव्या तिहाना धैर्यवान महा पराक्रमी तथा अभिमानी कुबेरकांत राजाने जीत्यो तिहाथी निकलीने लंपाक देशनो एक कर्ण नामना राजाने जीत्यो. तिहाथी विजयस्थलने विषे एक भ्रातृशित नामना राजाने जीत्यो. त्यार पछी गंगा उतरीने कैलास पर्वतनी उत्तर दिशामा आव्या तिहानंदनचारु नामना देशनो जय कर्यो पछी रूप, कुंतल, कालांबु, नंदिनंदन, सिंहल, शलभ अनल, शुल, अने भुतांव, इत्यादिक राजाओने जीतीने सिंधुनी उत्तर दिशा तरफ आव्या तिहा आर्य अनार्यादिक अनेक राजा ओने जीतीने तमनी साथे पाछा फिरीने ते लवणांकुश पुंडरिकपुर नगर प्रत्ये आव्या तेने जोईने लोको कहेवा लाग्या के, अहो आ वज्रजंघ धन्य छे के जेना वेनता पुत्रो एवा पराक्रमी छे पछी ते राजा सहित घरे गया तिहा ते जगतने पवित्र करनारा बे भाईओए जानकीने नमस्कार कर्यो त्यारे सीताए तेमनु मस्तक चुंबन कर्यु, अने प्रेमना आसु आणी बोलवा लागी

के, तुमे राम तथा लक्ष्मणनां जेवा थाओ. एवो सी ताए तेमने आशिरवाद आप्यो, त्यार पछी तेउ पो ताना मामा वज्रजंघने बेऊं माई कहेवा लाग्या के, प्र थम अयोध्या तरफ जवानुं अमे पुठयांथी तिहां जवानुं तुमे कबुल कर्युं हतुं. माटे अमने तिहां जवानी रजा आपो. अने लंपाक, कालांबु, कुंतल, शलभ, अनल अने शुल. इत्यादिक राजाउने साथे चालवानी आ ज्ञा करो. प्रयाण भेरी वजडावो. चारे दिशाने सैन्ये करी अछादन करो. जेणे अमारी माताने मूकी दी- धी छे, तेनो पराक्रम जोइयें तो खरो. एवुं पुत्रनुं बोल वुं सांभलीने रोदन करीने सीता कहेवा लागी, हे बा लको हमणां कर्म करी तुमाने शी अनर्थनी इछा थ इ छे? जेणे त्रिलोक कंटक रावणने मारयो. ते तुमा रा वीर भावीज देवोथी पण जीताय नही. तो तुमे शा हिसाबमां. तुमने जोवानी इछा होयतो नम्रपणा थी सुखे तिहां जाउ. तुमे बालक छो माटे, पूज्य पुरु षने ठकाणे विनय करवुं योग्य छे. एवुं सीतानुं बोल वुं सांभलीने बेऊं भाइ फिरी सीताने कहे छे, हे मा- ता, तमे मूकीने शत्रुपद पामनारा पिता विषे विनय शो करवो तिहां जइने अमे तारा पुत्र छीयें, एम के- म बोलीयें! माटे पोते जइने तेने लज्जा न करनारा अने जनकने आनंद करनारा वचनो बोलीशुं. केमके ते वोने युद्धमां बोलाव्याथी बेऊं कुलने यशकारक छे,

एवी रीते बोलीने तथा सीताने रुती मूकीने ते मोटा आनदे कर्या सैन्य सहित रामनी नगरी प्रत्ये जवा निकल्या. मारगमा चालता कुहाडा अने कुदा लीए करी दस हजार पुरुपो झाडोने तोडी जमीन सरखी करता थका क्रमे करी तिहा जई सैन्य सहित रामनी नगरीनी चारे दिशा घेरी लीधी. एवा महाप राक्रमी वेऊ भाई युद्द करवाना हेतुथी अयोध्या न गरीनी पासे जइने रह्या. नगरी वाहेर सैन्य घणु आ व्यु, एवु साभलीने राम अने लक्ष्मण विस्मय ने पाम्या.

लक्ष्मण बोल्यो रामना पराक्रमरूप जे अग्नी तेमा आ पतगनी परे मरवाने कोण आव्यो छे ?

पछी ते शत्रुरूप अध कारने सूर्यना जेवो राम, सु ग्रीवादिक तथा लक्ष्मणने साथे लेइने युद्द करवा चा ल्या अहिं नारदना मुखथी सीतानु वर्तमान साभ- लीने मोटी त्वराथी भामडल राजा पुडरीकपुरमा सी तानी पासे आव्यो तेने जोइने सीता रडती थकी वोली, हे भाइ! रामे मने मूकी दीधी, ते याद करीने मारो त्याग सहन न करनारा तारा भाणेजा रामनी साथे युद्द करवाने गया छे माटे रामे उतावलो थइने मा- रो त्याग कर्यो, तेमज पुत्रनो वध न करे तो सारू माटे ज्याहा सुधी ए पोताना पुत्र छे एम न जाणीने रामे तेमने मार्या नथी तेटलामा आपण तिहा जइ ए तो सारू एम कहीने ते सैन्यमा आव्या त्यारे लव

णांकुशे सीताने नमस्कार करयो. तेने सीता कहे छे. हे पुत्रो, आ तुमारो मामो छे. एने नमस्कार करो. एवुं सांभलीने तेमणे भामंडल राजाने पण नमस्कार कर्यो. तेणे तेमनुं मस्तक चुंबन करीने तेमने पोताना खोलामां बेसाड्या. तेवारें भामंडल हरषित थइ कहेवा लाग्यो. माहरी बेन प्रथम वीरपत्नी हती, ते आ वखतें वीर माता थई. तुमे वीर पुत्र पोते मोटा मानी छो. तथापि पिता अने काकानी साथें युद्ध करवुं योग्य नथी, जेना युद्धमां महामल्ल जे रावण, ते पण समर्थ थयो नही. तेमनी साथें मात्र भुजाना बलवडे तुमे केम युद्धनो आरंभ करयो. त्यारें तेवो कहेवा लाग्या के हे मामा, स्नेहना योगथी एटलो भय घणो छे. अमारी माता जे तुमारी बेन तेणे पण अमने कह्युं के. " तुमारा पितानी सामें कोइ पण मल्ल नथी " ते अमे जाणीए छैयें .पण युद्ध मूकीने तेउनेज लज्जा केम उपजावीयें.

एम ते बोलतां छतां परस्पर सैन्योनुं युद्ध चालु थयुं. तेवारें" सुग्रीवादिक विद्याधरो एमना सैन्यने मारशे" एवा हेतुथी भामंडल संग्राममां आव्यो. एटलामां ते बे कुमारो पण युद्ध करवाने ऊठ्या. तेमनी सामें सुग्रीवादिक विद्याधरो निशंक युद्ध करतां छतां तिहां भामंडलने आवीने पूछवा लाग्या के, ए कोण छे? त्यारें तेणे कह्युं के ए रामना पुत्र छे. एवुं सांभलीने सीता

नी पासे जई तेने नमस्कार करीने तेनी साथे भूमी उपर बेठा. आहि एक घडीमा लवणाकुशे रामना सैन्यनो भाग कहाडी नाख्यो, वनमाना सिंहनी परे ते रणमा जिहा जिहा फिरवा लाग्या तिहा तिहा रथी, सादी, निपादी, हाथमा आयुधो लेईने रह्या नही त्यारे पोतानु सैन्य नाश थयु एम जाणीने राम लक्ष्मण युद्धमा आव्या. तिहा ते बालकोने जोइने परस्पर बोलवा लाग्या

ए बालक एहवा शत्रु कोण छे? एमने जोईने मन पाछु हठे छे एमनाथी युद्ध करवु नही अने एमने आलिंगन करवु एवो भाव थाय छे एवो राम लक्ष्मण विचार करे छे तेटलामा ते बे भाई विनय पुर्वक राम लक्ष्मण प्रतें कहेवा लाग्या सर्व जगतने जीतनारा रावणने पण जीतनारा जे तुमे, तेमनी साथे वीर युद्धनी श्रद्धा करनारा अमे तुमने घणा काले जोया हे महा भाग्यो, रावणना युद्धमा तुमारी रणश्रद्धा पूर्ण थई नथी ते अमे पूरी करवाने आव्या छैये तेमज तुमे अमारी इछा पूर्ण करवानी अमे आशा राखीये छैये.

एवु भाषण थया पछी राम लक्ष्मण अने लवणाकुश एमणे पोत पोताना धनुष्योना टणत्कार कर्या पछी कृतांतवदन सारथीए रामनो रथ अने वज्रजंघ राजाए अनंगलवणना रथ ए बेऊ सामें कर्या तेमज लक्ष्मणनो सारथी विराध तथा अंकुशनो सारथी पृ

थु, ए बेऊं पोत पोताना रथो सामें कर्या. पछी ते सारथीए चार दिशा तरफ फिरवा लाग्या. तेमां बेस नारा योद्धाउ परस्परनी उपर शस्त्रनो वरसात करवा लाग्या. लवणांकुश ज्ञाती संबंध जाणीने सापेक्ष युद्ध करवा लाग्या. अने राम लक्ष्मण अज्ञाने करीने नि-रपेक्ष युद्ध करवा लाग्या. एवी रीते नाना प्रकारना आयुधोथी युद्ध करीने कृतांतवदनने राम कहेवा ला ग्या के शत्रुनी सामें रथ लेई जा एटलामां शुं फिरें छे? त्यारें सारथी बोल्यो के ए योद्धाए सर्व अंग उप र बाणो मार्याथी आ घोडा घणा व्याकुल थई गया छे, चाबुकने पण मानता नही. शस्त्र तथा अस्त्रे करी मार खाएला मारा रथ जर जर थया छे. आ मारी भुजा शत्रुना बाणोना मारथी थर थर कंपवा लागी छे. तेथी चाबुक लेवाने समर्थ थती नथी. एवुं सार थीनुं भाषण सांभली राम कहेवा लाग्या के माहरूं ध नुष्य पण चित्रस्थितनी परें शिथिल थई गयुं छे. आ वज्रावर्त्त धनुष्य, कार्य करवाने तत्पर थतुं नथी. आ मुशलरत्न शत्रु निर्दलन विषे अक्षम थई गयुं छे. ह मणां एने धान्य खांडवानी लायकी थई छे. आ हल दुष्ट गजने अंकुशना जेवो हतो, ते आ समयें भुमी खोदवाने योग्य छे. सर्व काल यक्षे करी रक्षण थये लां तथा शत्रुनो क्षय करनारा जे आ माहरा शस्त्रो अने अस्त्रो तेनी एवी अवस्था केम थई!

एवी रीते जेम रामना शस्त्र व्यर्थ थई गया तेम ज मदनांकुशनी सामे युद्ध करनारा लक्ष्मणना हथीयारो पण नकामा थया एटलामा अंकुशे लक्ष्मणना हृदयमा एक बाणनो प्रहार कर्यो तेणे करी ते मुर्छित थईने रथनी उपर पड्यो त्यारे विराधे रथने अयोध्या तरफ फेरव्यो एटलामा सावध थई लक्ष्मण बोल्यो के हे विराध, आ ते नवीन शु काम कर्यु! रामनो भाई अने दशरथनो पुत्र जे हु, तेने ए अयोग्य छे माटे जिहा आपणो शत्रु छे तिहा जलदी रथने लेई जा आ चक्र वडे तेनु माथु हु कापीश

एवु सांभलीने विराध अंकुशनी पासे रथ लेई गयो, त्यारे उभो रहे! उभो रहे! एम बोलीने तथा चक्रने फिरावीने महा क्रोधे करी लक्ष्मणे ते अंकुश उपर नाख्यु त्यारे अंकुशे बीजा अनेक शस्त्रो नाख्या तेमज लवणे पण चक्र तोडवा सारू घणा हथीयारो नाख्या परतु ते कोईने न मानता मोटा वेगथी आवी अंकुशने प्रदक्षिणा करीने जेम मालामा पक्षी आवी बेसे, तेम ते पाछु लक्ष्मणना हाथमा आव्यु त्यारे तेणे फिरी नाख्यु, ते वखते पण जेम हाथी पोतानी रहेवानी हस्तिशालामा आवे तेम तेने प्रदक्षिणा करीने फिरी तेना हाथमा आव्यु, त्यारे राम तथा लक्ष्मण चिंतातुर थईने विचार करवा लाग्या के आ भरतक्षेत्रने विशे बलदेव वासुदेव एज बे पुरुषो छे,

अमे नथी. एटलामां सिद्धार्थी सहित नारदमुनि त्यांहा आवीने चिंतामां बेठेला राम लक्ष्मणने कहेवा लाग्या जे हर्पना ठेकाणे आ शोक केवो? पुत्रना हाते पराजय थएलो लोकोना वंशने प्रकाश करनारो थतो नथी के? ए लवणांकुश सीताना उदरथी जन्मेलाछे, अने ताह रा पुत्रोछे, आ युद्धना मिशे करी तने मिलवा आव्याछे, ए शत्रुउ नथी.तेनी निशानी आ चक्र तेने मार वाने समर्थ न थतां व्यर्थ गयुं, ए जाणी लेवो.

पछी सीताना त्यागथी पुत्रनो साथे युद्ध थवा सुधी सर्व वृतांत तेने नारद कही संभालाव्यो ते साम्भ लीने राम महा शोके करी दुःखीत थयो थको मूर्छाने पाम्यो. तेनी उपर चंदननुं पाणी छांट्या पछी सावध थईने लक्ष्मण सहित आखोमां आंसु लावीने पुत्रनो वात्सल्य करवा सारूं लवणांकुशनी पासें गया-त्यारें तेउए रथोमांथी उतरीने राम लक्ष्मणना पग उपर माथा राख्यां, राम तेमने पोतानी खोलामांलेई ने तथा मस्तक चुंबन करीने शोकना स्नेहथी मोटेथी रूवा लाग्या, पछी लक्ष्मणे तेउने रामना खोलामांथी पोताना खोलामां लेई मस्तक चुंबन करीने ते नुं अलिंगन कर्युं. त्यारें तेउए पितानी परें तेने नमस्कार कर्यो, पछी तेमने शत्रु ने पण अलिंगन कर्युं. त्यारें विवाहमां मिलेलानी परें बेऊ सैन्योना राजाओ आनंद पाम्या, पोताना पुत्रोनुं पराक्रम, अने ते

मने पितानो समागम जोईने सीता मनमा राजी थई थकी विमानमा वेशीने पुन्डरीक पुरमा गई, राम तथा लक्ष्मण पोताना जेवा पराक्रमवाला लवणाकुशने जोईने, आनदवान थया. पोताना स्वामीना हर्षथी सर्व भूचर अने खेचर लोको राजी थया, भामडलना कहेवाथी वज्रजघ राजाए राम लक्ष्मणने सेवकनी परें नमस्कार करयो, त्यारें तेने राम कहेवा लाग्या, हे वज्रजघ राजा तु पण मने भामन्डलनी परे छे, आ पुत्रने ते मोठा करीने त्योने अमारी पासे लेई आव्योमाटे तु धन्य छे

एम बोलीने राम लक्ष्मण पुत्रो सहित पुष्पक विमानमा वेशोने नगरीमा आव्या, त्यारे नगरना लोको उचु माथु करीने तेने जोवा लाग्या, अने रामना पुत्रोनी स्तुति करवा लाग्या, एवी रीते राम पोताने घरे आव्या. तिहा पुत्र तथा लक्ष्मण सहित विमानमांथो उतरीने मोठा हर्ष करीने रामे उत्सव कराव्यो पछी लक्ष्मण, सुग्रीव, बिभीपण, हनुमान अने अगदादिक एकटेकाणे मिलीने विनती करवा लाग्या

हे राम तुमारा शिवाय अने आ पुत्रो शिवाय परदेशमा जानकी मोठा दु खमा रहीछे, जो आज्ञा आपो तो तेने आज आंहीं बोलावी लावियें, पति अने पुत्रो पासें न होवाथी ते मरण पामशे, ते साभली राम किंचीत विचार करीने बोल्या बलवान विस्तरनारा खोटा अपवादथी मे जानकीने केम कहाडी मू

की? सीता सती छे ए हुं पाकुं जाणुं छुं. अने ते पण पोताने पवित्र माने छे. माटे दिव्य(सोगन वगैरे) देवाने अगर ग्रहण करवाने अमे बेउंने नय नथी. तेथी लोकोनी सामें जानकीए तेम करवुं, पछी हुं तेनी साथें सुखेथी ग्रहवाश करीश, एवुं रामनुं कहेवुं सांजलीने लक्ष्मण बोल्यो. आप बोल्या ते खरूं छे. एमां कोईथी पण कांई कहेवाय नही. पछी नगरीना बाहेर मोटा मंडपो तेणे करया. तिहां मोठी मोठी बेठको करावी तेना उपर राजाउ, पुरना लोको, प्रधानो, बिनीपण अने सुग्रीव प्रमुख घणा खेचर बेठा. पछी रामनी आज्ञाथी सुग्रीव पोते पुंडरिकपुरमां सीतानी पासें गयो, तेने नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो. हे जानकी तुमारा सारूं रामे मने आंहि मोकल्यो छे. माटे आ पुष्पकविमानमां बेशीने रामनी पासें चालो. त्यारें सीता बोली हजी सुधी म्हारो त्याग करीने वनमां मूकी देवानुं दुःखहुं विसरयुं नथी. एवो दुःख देवाने कठोर हृदयनो जे राम तेनी पासें फिरी हुं केम चालु? एवुं सीतानुं बोलवुं सांजलीने सुग्रीव नमस्कार करीने कहेवा लाग्यो हे देवी, तुमे क्रोधायमान थाउ नही. तुमारी शुद्धी सारूं पुरना लोको तथा राजाउ वगेरे सहित राम बाहर मंचक उपर बेठा छे.

एवुं तेनुं बोलवुं सांजलीने शुद्धिनी इछावाली ते सीता, विमानमां बेशीने अयोध्यामां आवी. तिहां म

हेंद्रोद्यानमां आवीने विमानमाथी उतरी त्यारे लक्ष्मण पासे आवी अर्घादिकथी पूजा करीने राजाउ सहित सीताने तेणे नमस्कार कर्यो पछी लक्ष्मण सामे वेशीने कहेवा लाग्यो के, हे देवी तुमे नगरीमा आवीने तेने (नगरीने) अने घरने पवित्र करो त्यारे सीता कहे छे के शुद्धि थया पछी आ नगरीमा अथवा घरमा प्रवेश करीश ते शिवाय करनार नही एवी सीतानी प्रतिज्ञा सांजलीने ते सर्व राजाउए रामने कह्यु के, सीताए एवो जवाव दीधो त्यारे राम सीतानी पासे आवीने, नीती सहित वोले छे हे सीता तु रावणना घरे रहीने तेनी साथे उपजोग न कर्या विशे सर्व लोकोनी सामे शुद्धि करवाने अर्थे सोग न कर. त्यारे सीता हशीने वोली जे तुमारा शिवाय वीजो कोइ पण विद्वान नथी केमके, माहारो दोप वरावर न जाणीने मने वनमा कहाडी मूकवारूप दड पहेला करीने पछी परीक्षा लेवो छो के ? तुमे मोटा निपूण छो तथापि जेम तुमे कहेशो तेम करवाने हु तइयार छु कहो तो हु दिव्य पचक कवुल करू छु कहो तो खूब सिलकेला अग्नीमा हु प्रवेश करू, लोखन्ना चावल जक्षण करू, काटामा वेशीने तोळाऊ, तापेलो शिसो पीऊ, अने कहो तो लोखडनी वरछी जीजथी उपाडु. ए पाचमाथी जे तुमने गमे ते करवाने कहो (एटलामा आकाशमा सिद्धार्थ नामनो निमित्तज्ञ, नारद

सहित स्त्रीउ अने लोको कोलाहल शब्द करीने क हेवा लाग्या.) जो! जो! राघव आ सीता निश्चयें क रीं सती, सती, महासती छे. एने विषे कोइ विकल्प करवा योग्य नथी, एहवुं सांभलीने राम बोल्या. हे स र्वे लोको, तुमने कांइपण र्यादा नथी. प्रथम तुमेज दो प राखीने सीता दुषित करी. अने हमणां कहोछो के एनामां कांईपण दोष नथी. हिवे पछी फिरी बीजुं ज. कांई बोलशो. प्रथम ए दोषवाणी केम थई हती? अने हमणां आ दोष रहित सती केम थई ? तेमज फिरीथी दोष राखवाने तुमने लिगारे वार लागनारा नथी. माटे तुमोने खातरी आववा सारूं सीताने दै- दीप्यमान अग्नीमां प्रवेश करवुं योग्य .

एम कहीने त्रणसे हाथ लांबो तथा त्रण पुरुष ऊ ना रहे एवो एक खाडो रामे खोदाव्यो. तेमां चंदन- ना लाकडा खडक्यां. एवा समयें वैताढ्य पर्वतनी उ त्तर दिशा तरफ रहेवावालो हरीविक्रम राजानो एक जयभुषण नामनो पुत्र हतो. तेनी आठसे स्त्रीउ हती, कोईएक समयें तेनी स्त्री किरमंडल मामाना पुत्रनी साथें रममाण थई. तेनी खबर पडयांथी तेणे तेने घर मांथी कहाडी मूकी. अने तेज वखतें पोते दिक्षा ली धी. तेनी ते स्त्री काल करी गया पछी विद्युतदंष्टरा नामनी राक्षसी थई. अने ते जयभुषण अयोध्यानी सीममा आवीने कायोत्सर्ग ध्याने रह्यो. तेने ते राक्ष

सीए घणो उपद्रव करयो ते वखतें तेने केवलज्ञान उपन्यु तेनो उत्साह करवा सारू तिहा इद्रादिक देवो आव्या ते सीतानु कर्म जोईने ते देवो इद्रने कहेवा लाग्या लोकोना मिथ्यापवादे सीता अग्नीमा प्रवेश करेछे एवु सानलीने सीतानी साह्यता करवा सारू पोताना सेनानीने तेणे आज्ञा करी अने पोते ते मुनिना केवलज्ञाननो महोत्सव करयो एटलामा आही रामनी आज्ञाथी ते चदनना लाकडाथी भरेला खाडामा चाकर लोकोए अग्नी सिलगाव्यो. ते ज्यारे खुब सिलग्यो अने तेनो तेज आखोथी जोवाय नही एवो जाज्वल्य थयो, त्यारें तेने जोईने राम मनमा चिंतन करवा लाग्या के, अहो! मारू निर्दयपणु अत्यत प्रगट थयु आ सीता नक्की माहा सती छे, अने जरूर आ अग्नीमा पेसशे. दैवनी परें दिव्यनी पण अवलीगत छे मारी साथे ए वनवासमा चाली त्याहा तेने रावणे हरण करी फिरी माहरा कृत्यथी आ वनमा गई अने आ कृत्य पण माहरा हाते थाय ऐवी रीते राम मनमा विचार करे छे, एटलामा सीता अग्नीना पासे आवी अने सर्वज्ञ भगवानने नमस्कार करीने पोताना मुखे करी कहेवा लागी हे लोकपाल सहित लोको तमे सर्वे सानलो, जो में माहरा पती राम विना बीजा कोईनी अभिलाषा करी होय तो आ अग्नी मने बालो अने जो तेम न होय तो जलनी परें सुखेस्पर्श रूप थाउ.

एम कहीने नवकार मंत्रनुं स्मरण करीने सीताए ते अग्नीमां कुदको मार्यो, तेमे पेसतांज अग्नी शांत थई गयो. अने ते खाडो पाणीथी भराईने कुवाना जेवो थई गयो. तेनी उपर कमला वस्थित लक्ष्मीनी परें पोताना पतिव्रतापणाना प्रभावथी ते जलमां जेमनी तेम रही. ते जलमां क्यांक हुंकार शब्द, क्यांक गुल गुल, क्यांक भेरीना जेवो, क्यांक पट पट थाय, क्यांक दिलि दिलि सांभल्यामां आवे, क्यांक खल खल अवाज, अने क्यांक आवर्त. एवी रीते थवा लाग्युं. अने ते पाणी समुद्रना पाणीना जेवुं देखवा लाग्युं, समुद्रनी भरतीनी परें कुवामांथी पाणी वधीने तेणे मोटा मोटा मंचक बुडाववानो आरंभ कर्यो. तेना भयथी विद्याधरो आकाशमां ऊडी गया. अने भुचर लोक. "हे महासती सीता आमरु रक्षण कर. एवो आक्रोश करवा लाग्या.त्यारें सीता बाहार आवीने ते पाणीने पोताना हातथी पाछुं फेरव्युं. तेना प्रभावथी ते पाणी फिरी कुवामां समाई गयुं.पछी ते वापी, उत्पल, कुमुद, पद्म, अने पुंडरिक, इत्यादिके करी शोभवा लाग्यो. सुगंधीना लोभथी जेना उपर भमरा गुंजारव करी रह्या छे, हंसादिक पक्षिओ वडे आनंद दायक लागे छे; मोटामोटा छे जेमां तीर गोमणीनीज जेने पायरीया छे, रत्न पाषाणना जेना किनारा. एवी ते मनोरमा वाय थई. आकाशमां सी

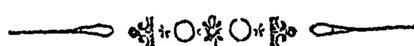
ताना आचरणनी स्तुति करीने नारदादि मुनीउ ना
चवा लाग्या. आ यशस्कर रामनी स्त्री केटली शील
वाली छे शु एनु शील एवा लोकोना शब्दोथी आका
श सहित पृथ्वी नराई गई मातानो प्रनाव जोई,
लवणाकुश राजी थईने हसना जेवा तेनी पासे आव्या
जानकीए तेमना मस्तक चुबन कर्या, नदीना बेऊ
तटो उपर उनेला हसोनी परे सीतानी आस पास
ते शोनवा लाग्या पछी लक्ष्मण शत्रुघ्न, नामडल, विनी
पण अने सुग्रीवादिक आवीने तेने नमस्कार कर्यो राम
पण त्याहा आवी पश्चाताप पामी, सीताने कहेवा लाग्या

हे देवी, स्वनावे असत्य दोपनो आरोप करनारा
ने ए पुरवाशी लोक तेमना छदना अनुरोध बल
थी तने मे मूकी तेनी तु क्षमा कर मे घोर वनमा
नाखी परतु त्याहा पोताना प्रनावे करी तु जीवती र
ही ते पण एक दिव्यज समजवु तथापि मे ते जा-
ण्यु नही इत्यादिक मारा अपराधनी क्षमा करीने
पोताना घरे चाल अने प्रथमनी परे मारी साथे सु
खोपनोग नोगव एवु सानलीने सीता कहेवा लागी, हे
प्राणनाथ, तुमारो दोप नथी. अने लोकोनो दोप न-
थी अने बीजा कारणोनो पण नथी दोप फक्त मारा
पूर्व कर्मनो छे एवा दु ख करनारा जे कर्म तेणे करी
हु खीन्न थई त्योने कापवा सारू हु दिक्षा लेऊ छु, हिवे
मने ससारमा रहीने सुखनोग नोगवानी इच्छा नथी

एम कहीने जानकीए पोताना हातथी माथा उपरना केश उखेडी नाख्या, ते जेम जीनेश्वर इंद्रने आपे तेम तेणे रामने आप्या. एम जोईने राम तत्काल मूर्छा खाई पृथ्वी उपर पड्यां. ते सावध थवानी आगमज सीता जयभुषण मुनिनी पासें गई. त्यारें ते केवलीए जानकीने विधिए करी दिक्षा देईने सुप्रभा नामनी साध्वीना परिवारमां तेने भलावी, तेनी साथें विचरती थकी निरतीचार व्रत पालवा लागी.

इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचिते श्री राम लक्ष्मण चरित्रे. सीताशुद्धी तथा दीक्षा ग्रहणोनाम नवमो खंड समाप्तः

अथ श्री राम लक्ष्मण चरित्र कथा दशमो खंडप्रारंभः



पछी रामना अंग उपर चंदननुं पाणी छांट्याथी ते सावध थईने कहेवा लाग्या के, ते सीता देवी किहां छे? हे भुचर, हे खेचर, तुमे जो मारवा लायक न होत तो लुंचितकेशा (बाल विनानी) जे माहरी प्रिया ते मने बतावो. हे वत्स, हे लक्ष्मण, भातो, भातो, धनुष्य, धनुष्य, हुं दुःखित छतां ए सर्व उदाशीन बेठाछे एम कहीने रामे हातमां धनुष्य लीधुं. एटलामां लक्ष्मण आवीने कहे छे, हे हे आर्य, ए शुं? ए लोको ताहारा सेवक छे. तुं न्यायवान छतां लोकोना अपवादथी तें सीतानो

त्याग कर्यो तेम ते सीता ए पण स्वार्थने अर्थ आ संसारना भयथी तेणे सर्व मूकी दीधु तेणे आपणी सामें केशलुंचन करीने जयभुषण मुनिना पासे दीक्षा लीधी ते मुनिने आ वखतेंज केवलज्ञान उत्पन्न थयु छे तेना ज्ञाननो महोत्सव अवश्य कर्तव्य छे त्यांहा दिक्षा धारण करनारी सती मार्गनी परे मुक्ति मार्ग बतावनारी स्वामिनी सीता पण छे एवु तेनु बोलवु सांभलीने रामना चित्तने काइक शांती थएथी कहे छे माहरी स्त्री सीता ते केवली मुनिनी पासे दिक्षा लीधी ते घणु उत्तम कर्यु एम कहीने परिवार सहित राम जयभुषण मुनि पासे जईने तथा वंदना करीने देशना सांभलवा लाग्या हे प्रभो, हु आत्माने जाणतो नथी माटे भव्य छु के अभव्य छु? ते मने कहो त्यारे ते केवली बोल्या हे राम तु केवल भव्यज छे, ते तो रह्यु, पण आ ज जन्ममा केवल ज्ञानने पामीने तु मोक्षने पामीश त्यारे तेने राम कहेवा लाग्या के, दीक्षा लीधा पछी मोक्ष मिलवाने खोटी नथी, अने सर्व त्यागेथी दिक्षा लेवाय छे, पण आ लक्ष्मणनो त्याग थवु मुशकेल छे केवली कहे हजी तने बलदेव संपत्ति भोगववी जोईए छे, ते भोगवी सर्व संग मूकी, दिक्षा लईने मोक्षने पामीश त्यारे विभीषण नमस्कार करीने ते मुनिने पुछे छे किसा पूर्व कर्मे रावणे सीतानु हरण कर्यु, अने क्या कर्मे

लक्ष्मणे युद्धमां तेने मार्यो, सुग्रीव, नामंडल, लवणांकुश. अने हुं ए सर्व रामना अत्यंत नक्त क्यां करमे थया? एवुं सांनलीने ते मुनी तेने केहे छे.

दक्षिणार्ध नरत क्षेत्रमांना क्षेमपुर नामना नगरमां एक नयदत्त नामनो वाणीयो हतो. तेनी सुनंदा नामनी स्त्रीना कुखें धनदत्त अने वसुदत्त नामना बे पुत्रो थया. तेनो मित्र एक याज्ञवलक्य नामनो ब्राह्मण हतो. तेज नगरमां सागरदत्त नामनो बीजो एक वाणीयो हतो. तेने गुणधर नामनो पुत्र हतो. अने एक गुणवती नामनी कन्या हती. ते कन्या सागरदत्ते नयदत्तना पुत्र धनदत्तने दीधी. अने तेनी रत्नप्रना नामनी माताए द्रव्यना लोनथी त्याहांना एक श्रीकांत नामना शेठने छानी रीते दीधी. ए वातनी याज्ञवलक्यने खबर पडी. तेणे जई पोताना मित्र धनदत्त तथा वसुदत्तने कह्युं. वसुदत्ते रात्रें जईने श्रीकांतने मारी नाख्यो. तेम न श्रीकांते खड्ग वडे तेने मारी नाख्यो. पछी ते बेऊं विंध्याटवीमां मृग थया. अने गुणवती पण परण्या विना मरीने तेज आटवीमां मृगी थई. तेने माटे तेओ लडीने मरी गया. त्यार पछी परस्पर वैर करी ते बेऊं अनेक नवमां नटक्या.

अहिं धनदत्त नाईना मरवाथी दुःखी थइने रात्रना फिरतो छतां तेने नूख लागी. तेवामां कोइ साधुने तेणे जोया. तेनी पासें तेणे खावाने मांग्युं. त्यारें

तेमना एक मुनिए तेने कह्युं के, साधुओ तो दिवसना पण अन्न पानादिक राखता नथी, तेम छता तने रात्रना भोजन करवानी केम इच्छा थई ? एवा अंधकारमा अन्न कोण जूवे छे ? ए प्रमाणे तेने बोध करीने तद्रूपि अमृत तेना कानमा रेड्युं. काले करी ते मरीने सौधर्म देवलोकमा देव थयो केटलाएक काले त्याहांथी आवीने एक महापुर नगरमा मेरूनंदन नामना श्रावकनी स्त्री धारिणीना कूखे पद्मरुचि नामनो पुत्र थयो कोईएक समये ते घोडा उपर चढीने पोतानी इच्छाथी गोकुल प्रत्ये चाल्यो त्यारे रस्तामा मरतो पडेलो बैलने तेणे जोयो तेनी दया आव्याथी नीचे उतरीने तेनी पासे आव्यो अने तेना कानमा पंचपरमेष्टीनो नमस्काररूप मंत्र कह्यो ते मूवा पछी ते मंत्रना प्रभावे करीने तेज नगरमा छत्रछाया नामना राजानी स्त्री श्रीदत्तानी कूखे वृषभध्वज नामनो पुत्र थयो ते मोटो थई पोतानी इच्छाथी फिरतो छता कोईएक समये पेहेला बैलोना ठेकाणा पासे आव्यो पूर्वजन्मना दरशनथी तेने जातिस्मरण ज्ञान थयु त्यारे त्याहां एक देरासर करावीने तेनी एक भित उपर मरवा टेकेला वृद्ध बैलनो चित्र कराव्यो तेमना कानमा नवकार मंत्र कहेवा वालो पुरुप, तेमनी सामे जिनेंद्र सहित कहाम्युं त्याहा पेहेरो राखीने तेमने कह्युं के, आ चित्रने जे यथार्थपणे जोसे ते पुरुपनी वात आ

वीने तेम मने कहेजो. एम कहीने ते पोताने घरे गयो.

कोईएक समयें त्यांहां चैत्य वंदन करवा सारूं पद्मरुचि नामनो शेठ आव्यो. तेणे अरिहंतने नमस्कार करीने भीत उपरना चित्र जोयां. त्यारें आ सर्व माराज छे एम ते विस्मय थयो थको बोल्यो. ते जोईने रक्षकोए ते वात राजाने जई कही. त्यारें ते वृषभध्वज तिहां आव्यो. अने तेने पुछवा लाग्यो के, आ चित्रोनो वृत्तांत तुं शुं जाणे छे? त्यारें तेणे कह्युं के, पूर्वें मूवेला जे आ बैल तेमने में नवकार मंत्र आप्यो छे, ते जाणनारा पुरुष आंहि माहरूं पण चित्र कहाड्युं छे. एवुं तेनुं बोलवुं सांभलीने तेने नमस्कार करी वृषभध्वज कहेवा लाग्यो के, जे आ वृद्ध बैल छे, ते हुं छुं. ते नवकार मंत्रना प्रभावथी राजपुत्र थयो. ते तिर्यंच योनीमां तें कृपालु थइने मने नवकार मंत्र आप्यो, नहीतर फिरी मने तेवीज योनी मिलत. माटे तुं सर्वथा माहरो गुरू, स्वामी, तथा देव छे. आ राज्य पण मने तारा प्रभावथी मिल्युं छे. माटे तुं ले. अने तेनो उपभोग भोगव एम बोलीने पद्मरुचि सहित वृषभध्वज, श्रावक व्रत पालन करी विहार करवा लाग्या. एवी रीते घणा काल गया पछी, काले करीने ईशान देवलोकमां ते बेउं महर्द्धीक देव थया. तेमांनो पद्मरुचि तिहांथी आवीने मेरुनी पश्चीम दिशामां वैताढ्य पर्वत उपर नंद्यावर्त नगरमां नंदी-

श्वर राजानी स्त्री कनकमालीनी कूखे नयनानंद नाम नो पुत्र थयो ते घणा काल सुधी राज्य करी दिक्षा लेइने महेंद्र देवलोकमा देव थयो त्याहाथी आवीने पूर्व महाविदेह क्षेत्रमा क्षेमा नगरीना विपुलवाहन राजानी स्त्री पद्मावतीने कूखे श्रीचंद नामनो पुत्र थयो. ते घणा काल राज्य नोगवीने एक सुमालगुप्त नाम ना मुनिनी पासे दिक्षा लेइ काल करी गया पछी ब्रह्मदेवलोकनो इंद्र थयो काले करी तिहाथी आवीने आ तु पद्म नामनो राजा राम बलवान थयो

वृषनध्वजनो जीव आ सुग्रीव थयो श्रीकांतनो जीव नव भ्रमण करीने मृणालकंद पट्टनमा वज्रजंबु नामना राजानी स्त्री हेमवतीना कूखे शंनु नामनो पुत्र थयो वसुदत्तनो जीव नमता फिरीने शंनु राजाना उपाध्याय विजयनी स्त्री रत्नचूडाना कूखे श्रीनूती नाम नो पुत्र थयो ते गुणवती पण नवभ्रमण करीने श्रीनूतिनी स्त्री शास्वतीना कूखे वेगवती नामनी कन्या थई ते युवान अवस्थामा आव्याथी कोई एक समये, जनोए करीने वंदना करवा योग्य एक प्रतिमास्थ सुदरशन नामना साधुने जोईने तेनी मस्करी करती बोली के, अहो आ साधु आज नजरे पड्यो प्रथम तो स्त्रीओनी साथे क्रीडा करतो हतो ते स्त्रीओ एणे बीजे ठेकाणे मोकली दीधी एवाने लोको केम वंदना करे छे? एवु सानलीने ते मुनि उपरथी लोकोनो नाव

थयो. पछी तेना उपर दोषारोप करीने लोकोए तेनुं साधुपणुं नाश करवानो आरंभ कर्यो, त्यारें ते मुनि कहेवा लाग्यो के, ज्याहां लगण मारो कलंक गयो नहीं त्याहां लगण हुं पारणुं करनार नहीं. एवो तेणे नियम कर्यो. पछी देवताना क्रोधे करी वेगवतीना मुख उपर सोजा चडी. त्यारें साधुनो तिरस्कार कर्यो एम जाणीने तेना पिताए तेनो घणो अपमान कर्यो पछी ते रोगें करी तथा पिताना भयथी सुदरशन मुनिनी सामें लोकोना देखतां मोटा अवाजे बोलवा लागी के, तुमे सर्वथा निरदोष छो. में तुमारा उपर खोटो आरोप कर्यो. हे क्षमानिधी, माहरा अपराधनी क्षमा करो. एवुं सांभलीने लोकोए फिरी ते मुनिनी पूजा करी. ते दिवशथी ते वेगवती रोग रहित थई थकी श्रावीका थई. ते महारूपवती हती तेथी शंभु राजाए तेनी मांगणी करी, त्यारें तेनो पिता श्रीभुति कहेवा लाग्यो के, मिथ्या दृष्टि पुरुषने हुं मारी कन्या देनार नहीं. पछी शंभुए श्रीभुतिने मारीने बलें करी तेनी कन्यानो उपभोग लीधो. त्यारें तेणे तेने श्राप दीधो के, जन्मांतरे ताहरा वधने अर्थें हुं उत्पन्न थईश. शंभुए तेने मूकया पछी तेणे हरिकांता नामनी साधवीनी पासें दिक्षा लीधी. पछी कालें करी मरीने ब्रह्मदेवलोकमां गई. तिहांथी आवीने शंभुनो जीव रावणना मृत्युने माटे पूर्व निदानना बलथी जनकनी कन्या

आ सीता थई पूर्वे नवमा सुदरशन मुनि उपर ए
णे मिथ्यादोष राख्यो हतो, तेथी आहि एनी उपर
लोकोए मुकेला दोषरूप मिथ्या कलंक लाग्यो, शत्रुनो
जीव पण भवमा फिरीने कुशध्वज ब्राह्मणनी स्त्री सा
वित्रीना कूखे प्रभास नामनो पुत्र थयो, कोईएक सम
ये विजयसेन मुनिनी पासें दिक्षा लेईने ते उत्तम तप
करवा लाग्यो, कोई एक वखते समेतशिखरनी यात्रा
करवा सारू जतो विद्याधरोनो स्वामी कनकप्रभ ते
ने इद्रना जेवो श्रीमान जोईने "आ तपे करी एवो
सपत्तिमान हु थईश "एवो नियाणो कर्यो, पछी मर
ण पामीने त्रीजा देवलोकमा ते देव थयो, तिहाथी आ
वीने कनकप्रभनी बराबर समृद्धीना नियानाथी ते ताह
रो भाई रावण थयो, धनदत्त वसुदत्तनो मित्र याज्ञव
लक्य ब्राह्मण घणा काल भव फिरीने तु बिभीषण थयो.

ते श्रीभुति काल करी स्वर्गमा जई, तिहाथी आवी
ने सुप्रतिष्ट नगरमा पुनर्वसु नामनो विद्याधर थयो,
कोई एक समये तेणे कामे करी पीडित थईने पुन्डरी
कविजय नामना नगरमा त्रिभुवनानद चक्रीनी अनग
सुदरी नामनी कन्यानु हरणकर्यु, तेना शोधने ते च
क्रीए मोकलेला विद्याधरोनी सामे युद्ध करतो छता
ते अनगसुदरी विमानमाथी निकलीने एक निकुजमा
(जिहा झाडी घणी होय ते ठेकाणे) पडी, ते मिलवाने
पुनर्वसु नियाणो बाधीने दीक्षा लेई स्वर्गमा गयो

त्याहांथी आवीने आ लक्ष्मण थयो. अने ते अनंगसुंद रीए वनमां रहीने उत्तम प्रकारनो तप करयो. कोई एक समयें तेने अजगर गली गयो. ते समाधिमां म रण पाम्या पछी त्रीजा देवलोकमां देवी थई. तिहांथी आवीने आ लक्ष्मणनी स्त्री विशल्या थइ. गुणवती नो भाई जे गुणधर ते भवमां फिरीने कुंडलमंडित राजपुत्र थयो. ते श्रावकपणुं पालीने मूवा पछी सीता नो भाई भामंडल थयो. कालिंदी नगरीमां वामदेव ना ना ब्राह्मणनी स्त्री श्यामलाने कूखें वसुनंद अने सु नंदन नामना बे पुत्रो थया. कोई एक समयें तेने घ रे मासना उपवास करनारा मुनि पारणा करवा सारूं आव्या. तेने भक्तिए करी तेणे भोजन कराव्युं. तेथी मूवा पछी दानधर्में करी उत्तर कुरुने विषे ते युगलीया (जोडला) थया. तेथी काल करी गया पछी सौधर्म देव लोकमां देव थया. तिहांथी आवीने कालिंदी नगरी मां रतिवदन राजानी स्त्री सुदर्शनाना कूखें प्रियंकर, शुभंकर ए नामना बे पुत्र थया. त्यांहां घणा काल रा ज्य करीने दीक्षा लेई मरण पाम्या पछी ग्रैवेयक देव लोकमां देव थया. तिहांथी आवीने आ लवणांकुश थया. तेमनी पूर्व जन्मनी माता सुदर्शना घणा काल भव फि रीने रामना पुत्रने विद्या शिखावनारो आ सिद्धार्थ थयो.

एवां मुनिना वचनो सांभलीने घणा लोको संवेग ने पाम्या. ते वखतें रामना सेनानी कृतांतवदने ते सा

धुनी पासें दीक्षा लीधी त्यारे राम उठी जयभुषण
ने नमस्कार करीने सीतानी पासे जइ मनमा चिंतन
करवा लाग्या आ कोमळ फूलोना जेवी सुकमार अ
गवाली राजपुत्री माहरी प्रिया सीता शीतोष्णकलेश
केम सहन करशे! आ संयम रूपी भार हृदयें करी
उपाडवाने महा कठण हता तेने आ केम उपाडी स
कशे? अथवा जेना शीलनो नाश करवाने रावण प
ण समर्थ थयो नही, ते आ संयम रूप प्रतिज्ञा पा-
ळवाने जरूर समर्थ थशे. एवो विचार करीने रामे ग
दगद कंठ थइने सीतानी वंदना करी, तेमज लक्ष्म
ण वगैरे बीजा राजाउए पण वंदना करी. पछी परि
वार सहित राम पाछा अयोध्यामा आव्या. आंहि सी
ता अने कृतांतवदन ए बेउ जणा उत्तम तप करवा
लाग्या तेमा कृतांतवदन घणा दिवश तप करीने ब्र
ह्मदेवलोकमा गयो अने सीता साठ वर्ष सुधी अनेक प्र
कारना तप करीने शेवट बावीश दिवश पादपों अ-
ने वायुनु भक्षण करीने मूवा पछी तेनो जीव अ
च्युत देवलोकनो इंद्र थयो

वैताढ्य पर्वत उपर कांचनपुर नामना नगरमा ए
क कनकरथ नामनो विद्याधर राजा थयो तेनी कन्या
उ मंदाकिनी अने चंद्रमुखीना स्वयंवरमा पुत्रो सहि
त राम तथा लक्ष्मणादिक राजाउने तेणे बोलाव्या
से सर्व त्याहा जइ बेठा हता मंदाकिनीए पोतानी

इछाथी अनंगलवणना गलामां वरमाला घाली. अने चंद्रमुखीए अंकुशना गलामां घाली. ते जोईने लक्ष्मणना अढीसो पुत्रो श्रीधरादिक क्रोधमां आवीने उठ्या. तेमनो अभिप्राय जाणीने तेमने लवणांकुश कहेवा लाग्या. एमनी साथें कोण युद्ध करशे? एभाईउ होवाथी मारवा योग्य नथी. जेम राम अने लक्ष्मणमां भेद नही, तेमज तेमना पुत्रोमां भेद न होवो जोईए. एवी रीतें पोताना दूतना मुखथी लवणांकुशे तेमने कहेवराव्युं. ते सांभली लज्जायमान थईने पोताना खोटा कर्मनी निंदा करवा लाग्या. अने तेना योगे तेज वखतें संवेगने पाम्या, त्यारें पितानी आज्ञा लेई महाबल नामना मुनिनी पासें जईने दीक्षा लीधी, पछी लवणांकुश विहार करतां थका लक्ष्मण अने राम सहित फिरी अयोध्यामां आव्या.

कोईएक समयें भामंडल पोताना नगरना महेलना चवुतरा उपर बेशीने मनमां चिंतन करवा लाग्यो के, आ सर्व पृथ्वी पोताना स्वाधीन करीने, अकुंठित आज्ञाए करी एक छत्री करीने अने अंते दीक्षा लेईने माहरो मनोरथ पूर्ण करीश, एवा विचारमां बेठो वे एटलामां अौचित आकाशमांथी तेना उपर वीजली पडी तेथी ते मरीने उत्तरकुरूमां युगलीया पणे थयो.

आंही हनुमान कोईएक वखतें चैत्र मासमां चैत्य वंदन करवा सारूं मेरूपर्वत उपर जईने पाछो आवतां

सूर्य आथमी गयो, तेने जोईने कहेवा लाग्यो के, जे वा रीते ए आथमी गयो तेमज फिरी उगमशे, ए द्द ष्टाते सर्व पदार्थोने उदय अने अस्त छे, माटे कोई वस्तु स्थिर नथी. तेथी एने धि कार छे. एवो विचार करी पोताना नगरमां आव्यो, पछी पोताना पुत्रने राज्य उपर बेसाडी, अने पोते एक धर्मरत्नाचार्यना पासे जई दीक्षा लीधी तेनी पाछल तेनी सातसोने पचास स्त्रीउए पण एक लक्ष्मीवती नामनी आर्यांनी पासे दीक्षा लीधी त्यार पछी ते श्रीशैल्य हनुमान प्रथमथीज ध्यान रूप अग्निथी सर्व कर्मोने बालीने शैलेशी पाम्यो अथवा मोक्ष पदने पाम्यो

हनुमाने दीक्षा लीधी ते सांभलीने राम मनमां विचार करवा लाग्या के, आ जगतना नाना प्रकारना भोग सुख मूकीने हनुमाने दुःखकारक दीक्षा केम लीधी? एवी रामनी चिंता सौधर्म देवलोकना इंद्रे अवधी ज्ञानथी जाणीने ते पोतानी सभामां आव्यो अने कहेवा लाग्यो के, अहो! कर्मनी गति विषम छे आ राम चरमशरीरी छता ते धर्मने पोते हसे छे अने आ विषय जनित्र सुखोनी प्रसमाकरे छे पण एनु कारण ए छे के, राम लक्ष्मण विच्चे परस्पर प्रीति वधारे होवाथी ते भव सुखनु कारण छे ते सांभलीने त्याहाथी कौतुके करी बे देव तेमना स्नेहनी परीक्षा करवा सारू अयोध्यामां आव्या तेउए अंत पुरमां

सर्व राजस्त्रीयो करुणास्वरें करी खेद करे छे, एवी री
ते माया वडे लक्ष्मणने बताव्युं. हा राम! हा राम!
हा पद्मनयन! हा पद्मबंधु! हे जगतने नय देखा
डनारा, तने आ अवसर विना मृत्यु केम आव्यो! ए
म रडती थकी छाती कुटी रही छे, माथाना केश जे-
ना छूटी पड्या छे.एवी अवस्थामां पोताना स्त्रीयोने
जोईने खिन्न थई लक्ष्मण कहेवा लाग्यो के, जीवित-
नो पण जीवित, जे माहरो नाई राम ते शुं मूवो
के!अरेरे!!! दुष्ट यमे आ शुं कर्युं! एम बोलतो छतां
ते लक्ष्मणनो वाणी सहित जीव निकली गयो. क-
ह्युं छे के " कर्मोना विपाक दुरति क्रम छे. " लक्ष्म
ण सिंहासन उपर सोनाना स्थंजने टेकीने बेठो. त्या
रें आंखो मिचाईने चित्रना जेवी अवस्था थइ ग
इ. एम जोइने लक्ष्मण मूवो एम जाणी ते देवताउ
अति चिंतातुर थइने परस्पर बोलवा लाग्या. आ
आपणे शुं कर्युं? सर्व विश्वनो आधार जे आ पुरु
ष तेने आपणे मार्यो के शुं? एवी रीते पोतानी निं
दा करीने पोताना लोक प्रत्यें गया. लक्ष्मण मू
वो एम जाणीने त्याहां अंतःपुरनी स्त्रीयो आवी. त्यों
परिवार सहित रुनवा लागी, ते सांनलीने त्याहां राम
आवीने कहेवा लाग्या के, आ अमंगलनो केवो आ
रंन कर्यो छे! आ हुं पण जीवतो छुं, अने आ मारो
नाई पण जीवतोज छे. कोई व्याधी एने पीडा करे छे.

तेने दूर करनारी घणी ओषधी छे. एम कहीने तेणे वैद्य अने ज्योतिषीओने बोलाव्या, तेमना हाथे घणा मंत्र तथा तंत्र वगैरे कराव्या परंतु ते सर्व व्यर्थ गया एम जाणी ने राम मूरछाने पाम्या. फिरी सावध थइने मोटा विलाप करवा लाग्या तेमज बिभीषण, सुग्रीव, अने शत्रुघ्नादि आंखोमा पाणी आणीने हा! अमे सर्व खरान थया! एम कहीने रडवा लाग्या कौशल्यादिक माताओ अने स्त्रीओ आंखोमा आंसु आणीने करुणास्वर वडे रडवा लागी, अने वारवार मूर्छा खाइने जमीन उपर पडवा लागी, नगरमा घरोमा तथा दरेक बाजारमा ज्याहां त्याहां हाहा कार थई रह्यो ते वखतें लवणांकुश, रामने नमस्कार करीने कहेवा लाग्या के, हे राम, आ लक्ष्मणनो मृत्यु जोईने आज अमे संसारथी डरी गया केम के सर्वने अकस्मात मृत्यु आवे छे ते माटे सर्व लोकोए प्रथमथीज परलोकना साधन विषे तत्पर रहेवु तेथी हिवे अमने दिक्षा लेवानी आज्ञा आपो. आ लक्ष्मण मुवेला घरमा हिवे पछी अमने रहेवा योग्य नथी एम कही रामने नमस्कार करीने एक अमृतघोष नामना मुनिनी पासे तेमणे जइ दिक्षा लीधी पछी ते क्रमे करीने मोक्ष पाम्या

पछी राम भाईना दुःखथी अने पुत्रोना वियोगथी वारवार मूर्छा पामीने आ प्रमाणे बोलवा लाग्या हे भाई, मे ताहरो काई अपमान करवाथी आ

अकस्मात तें मौंन धारण कर्युं छे के? तुं एवी रीते थयो. पुत्रोए मने मूकी दीधो. कह्युं छ के" पुरुषो मां शेकडो छिद्रो. जोईने भुतो प्रवेश करे छे. " एवी रीते उन्मत्तनी परें बोलनारो जे राम ते जोईने बिभी पणादिको पासें आवीने गद गद वाणीथी बोलवा लाग्या. हे प्रभो! तुं धीर पुरुषोमां धीर छे? वीरोमां वीर छे, तेम छतां आ लज्जाकारक अधैर्यनो अंगीकार केम करे छे? आ समयें तो लोक प्रसिद्ध अंगसंस्कार सहित लक्ष्मणना औध्र्वदेहिक कर्तव्य छे. ते सांभलीने राम क्रोधमां आवीने बोल्या. माहरो भाई जीवतो छे. हे दुष्ट आ तुमें शुं बोलो छो, बंधु सहित तुमारूज अग्निमां दाहपूर्वक मृत्युकार्य करो, माहरो भाई तो मोटा आयुष्यवालो छे. एम कहीने हे बंधु जलदी बोल! जलदी बोल! हे वत्स लक्ष्मण! आंहीं दुर्जनोनो प्रवेश छे. माटे शा सारूं मने घणुं दुःख दे छ. अथवा आ खलोनी सामें तने कोप करवुं योग्य नथी. एम कही लक्ष्मणने उपाडी खांदा उपर लईने बीजे ठेकाणे गयो. तेने स्नान करवाना घरमां लेई जईने त्याहां लक्ष्मणने स्नान कराव्युं. तेना शरीरने चंदनादिके करी लेपन कर्युं. कदाचित्त उत्तम अन्न पात्रमां भरीने पोते तेनी आगल आवी राख्यां. फिरी तेने पोताना खोलामां लेईने तेनुं मस्तक चुंबन करवा लाग्या. क्यारेक पलंग उपर सुवरावीने छेहडा

वी मूके क्यारेक पोते तेनी सामे बोलीने पोतेज पोताने उत्तर वाळे क्यारेक पोते चाकर थईने तेना पग मशळे इत्यादिक नाना प्रकारनी चेष्टा स्नेहे करी राम करवा लाग्या बीजा सर्व काम नुली गया एवी रीते ठ महिना निकळी गया त्यारे रामने उन्मत्त थएलो जोईने इन्द्रजीतना अने सुंदना पुत्रो तथा बीजा शत्रुउ तेने मारवा साख आव्या ते जेम पर्वतनी गुफामा सिंह सुतेलो वता तेने पारधी घेरी ले, तेम तेना सैन्ये जेमा उन्मत्त राम शोकमा बेठेलो ठे, ए अयोध्या नगरीने घेरी लीधो राम पण लक्ष्मणने खोलामा लइने अकाळे सवर्तमेघनी परे वज्रावर्त धनुष्यनो टणकार कस्यो ते वखते आसनना कंपथी महेन्द्र देवलोकथी देवो सहित जटायु पूर्वनवना मित्र नावथी रामनी पासे आव्यो त्यारें तेने जोईने इन्द्रजीतना पुत्र कहेवा लाग्या के, हजी सुधी रामना पक्षमा देव ठे, अने आगळ अमने मारनारो बिनीषण बे, तेथी नय अने लाजना मार्या सवेगने पाम्या पठी अतीवेग मुनिनी पासे जइने त्योए दीक्षा लीधी पठी रामने बोध करवा साख जाटायुए एक सुकेला झाडने वारवार पाणी रेड्यु तथा नाटा उपर सुकेलु खातर नाखीने तेनी उपर कमळना बीज वाव्या मुवेला बैलने नागरने जोडीने अकाळे धान्य पोखवा लाग्यो घाणीमा रेती नाखीने तेमाथी तेल निक

लवा सारू तेने पीलवा लाग्यो. इत्यादिक तेणे घणा उलटा कारयो रामनी सामें करयां. ते जोइने तेने राम कहेवा लाग्या के, आ सुका झाडने फोकट शा सारूं पाणी रेडे छे? फल तो दूर रह्यां, पण मुशलने कोइ ठेकाणे फूलो आवे छे के? नाटा उपर कमल रोपवाथी शुं ते उगशे के? जल विनाना ठेकाणे मुवेला थी बीज पोखाय के? तेमज रेतीमां तेल निकलवानो कांइ पण संभव न छतां ते व्यर्थ शा सारूं पीले छे? हे मूरख, तने उपायनी खबर नथी. माटे आ तारी सर्व मेहेनत व्यर्थ छे, त्यारें जटायु हशीने बोल्यो. एवी तने खबर छतां हे प्रभो, आ आज्ञानना चिन्हरूप मुडदाने खंदा उपर लेईने शा सारूं फिरे छे? एवुं तेनुं बोलवुं सांभली लक्ष्मणने आलिंगन करीने फिरी कहेवा लाग्या, आ शुं तुं अमंगल बोले छे? तुं मारी सामेंथी दूर जा. एवी रीते जटायुनी साथें राम बोलतां छतां अवधि ज्ञानी कृतांतवदन देव रामने बोध करवा सारूं त्याहां आव्यो. ते पोताना खंदा उपर स्त्रीनुं मुरूदु लेईने रामनी सामें फिरवा लाग्यो. ते जोईने तेने राम कहेवा लाग्या के, तुं कोई गांडो छे के? आ मूवेली स्त्री खंदा उपर उपाडीने शा सारू फिरे छे? कृतांत बोल्यो तुं आ शुं अमंगल बोले छे? आ मारी प्राणप्रिया स्त्री छे. तें पोते आ मुडदाने केम उचक्युं छे. माहरा खंदा उपरनी स्त्रीने तुं मूवेली जाणतो छतां पोताना खं

दा उपरना मडदाने शा माटे जाणतो नथी? पछी ते तेणे बतावेला हेतुथी राम राघव थईने मनमा चिंतन करवा लाग्या के, आ माहरो भाई खचित जीवतो नथी त्यारे ते बेउ देव रामने कहेवा लाग्या के, अमे कृतांतवदन तथा जटायु ए बेउ पूर्व भवना तुमारा सेवको छैये एम कहीने पोताने ठेकाणे गया तेवोज रामे पोताना भाईनु मृतकार्य कर्यु, पछी पोते दिक्षा लेवानी इछा करीने शत्रुघ्नने राज्य ग्रहण करवानी आज्ञा करी त्यारे तेणे कह्यु के, हु पण तुमारा चरणोनी पासे रहीश, एम कही भवथी उपराम थई शत्रुघ्ने राज्य मूकी दीधु पछी लवणना पुत्र अनंग देवने रामे राज्य उपर बेसाड्यो, पोते चोथा पुरुपार्थ (मोक्ष) ने माटे अर्हद्दास नामना श्रावके कहेला मुनिसुव्रत स्वामिना वंशमा थयेला सुव्रत नामना महा मुनिनी पासे गया त्याहा शत्रुघ्न, सुग्रीव, बिभीषण, विराध, वगैरे बीजा केटलाएक राजाउ सहित रामे दीक्षा लीधी, एवी रीते रामचंद्र निकल्या पछी पोताना वैभवोनो त्याग करीने सोला हजार राजाउ तेनी पाछल निकल्या तेमज सात्रीस हजार अंतपुरनी स्त्रीउ दीक्षा लेईने श्रीमती साध्वीनी पासे रही, पछी साठ वर्ष सुधी गुरुनी पासें रही, अनेक अभिग्रहो विषे तत्पर थई, पूर्वांग सुत्र भावित थईने ते राजऋषी अनेक तपाचरण करवा लाग्या. पछी विहार कर

वा सारूं गुरुनी आज्ञा लइने एकाएकी राम वनमां गया. तिहां ध्यान करवा बेठा बतां रामने रात्रना अवधि ज्ञान उत्पन्न थयुं. त्यारें चौद लोक हातमां बे एम जोवा लाग्या. अने कहेवा लाग्या के, त देवो थकी हुं खराब थयो. केमके लक्ष्मण समाई गयो. पबी राम मनमां चिंतन करीने हुं पूर्व जन्ममां धनदत्त हतो अने लक्ष्मण वसुदत्त हतो ते न वमां ते कृतकृत्य थइने मूवाथी आ जन्ममां वसुदत्त नो जीव लक्ष्मण थयो. तेमां बालपणामां एना सो वर्ष व्यर्थ गया. मांडलीकपणामां त्रणसे वर्षो गया. दिगविजय करवामां चालीश गया, इगियार हजार पांच शा अने साठ वर्षो राज्य करवामां गया. ए प्रमाणे बारे हजार वर्ष वीती गया. ते माटे ते अविरक्तनुं आयुष्य व्यर्थ थयुं. एमां देवोनो दोष नथी, पण ए पूर्व कर्मनो विपाक बे एवो विचार करीने पोताना कर्मोने कापवाने अधिक मेहेनत करतां थकां राम समाधीमां बेशी गया, पबी बे दिवस उपवास करीने पारणुं करवा सारूं स्यंदनस्थव नगरमां गया, ते वखतें जेम चंद्र पृथ्वी उपर आवे एवी रीते नगरना लोको रामने जोइने तेनी सामें गया, तिहांनी स्त्रीउ पोते पोताना घरना दरवाजामां तेने भिक्षा देवा सारूं नाना प्रकारना भोजनोए करी भरेला पात्र लेइने राजी थई, ते लोकोना हर्षथी सर्व गाममां मोटी भीड

थवा लागी, हाथीउर थानला उखेडी नाख्यां घोडा ओ उचा कान करीने उभा रह्या,त्याहाना लोको धर्मथा ला न होवाथी तेओनो आहार न लेता राम त्याहाना रा जाने घरे गया, त्यारें ते प्रतिनंद राजाए तेने दोष रहित भीक्षा दीधी. रामे विधीए करी भोजन कस्युं त्यारे देवोए वसुधारादिक पंच धारानी वृष्टी करी, प छी राम फिरी वनमा आव्या, फिरी राज्यनो क्षोभ न थाय अने एवी गर्दी न थाय एवी बुद्धिथी तेणे निग्र ह कर्यो के, आ वनमाज भिक्षाना वखतें भोजन मिल्युं तोज पोरणु करवुं, नहीतर एम ज रहेवं पछी पो ताना शरीरमा निरपेक्ष थईने ते समाधीमा वेशी गया

कोई एक दिवसे प्रतिनंद राजा अश्वक्रीडा कर वा सारू घोडा उपर बेशीने नगरथी बाहार निकल्यो ते घोडो तेना हातमा न रहीने राजाने ते वनमा ला वीने एक नंदनपुण्याख्य सरोवरमाना खीचडमा जई पड्यो तेनी पाछळ तेनुं सैन्य पण त्याहां आवीने ते घोडाने चोखलमाथी कहाडीने तिहाज डेरामा बांध्यो. राजाए स्नान करीने परिवार सहित त्याहा भोजन क र्यो ते वखते राम ध्यान मूकीने पारणु करवानी इ छाथी त्याहा आव्या तेने जोईने राजा उठ्यो अने पा छळ चोखुं रहेलुं जे अन्न पानादिक ते राजाए रामने आप्युं तिहा रामे पारणु कर्या पछी आकाशमाथी रत्नोनो वरसात थयो पछी ते रामनी देशना साम

लीने प्रतिनंदादिक सर्व द्वादश व्रत धारी श्रावको थया. ते दिवशथी वनदेवताए करी पूजाणो थको राम तेज अरण्यमां घणा दिवश रह्या. पछी संसारने त्रणसीला नी परें समजी राम एक महिने, बे महिने, त्रण महिने तथा चार महिने पारणं करवा लाग्या. क्यारेक पर्यंक उपर बेशीने ध्यान करे, ने क्यारेक उंचा हात करी रहे, क्यारेक अंगुठा उपर अने क्यारेक पार्श्व भागे ए प्रकारे नाना प्रकारना आसनो करीने रामे अति कठिण तप कर्यो. ते कोइएक समयें फिरतां फिरतां लक्ष्मणे विद्याधरोनी सामें उपाडेली कोटीशीला नामनी शिलानी पासें आव्या. ते उपर बेशीने क्षप श्रेणीनुं आश्रयण कर्युं. रात्रना काउसग्गपणे रहीने शुकलध्यान करवा लाग्या. ते वखतें सीतेंद्रे ते अवधि ज्ञान वडे जाणी लीधुं. तेथी आ राम संसारी थशे तो फिरी एनी साथें हुं रहीश. माटे अनुकूल उपसर्ग वडे एने जो हुं उपद्रव करूं तो आ माहरो सुहृदय देव थाय. एवुं चिंतन करीने, सीतेंद्र रामनी पासें आव्यो. तेणे एक वसंत ऋतुए करी शोभायमान एवुं उद्यान त्यांहां कर्युं. तेमां कोकिला शब्दो करवा लागी. मलयानिल नामनो पवन चालवा लाग्यो. फूलोनी सुंगधीथी हरषीत भमराउ गुंजारव करवा लाग्या. आम्र, चंपक, किंकिल, पाटल, अने बकुलादिक वृक्षोने कामना नवीन अस्त्रोरूप फूलो ला

ग्या तेना सीतेंद्र सीतानु रूप लइने तेमज पोतानी साथे बीजी स्त्रीओ उत्पन्न करीने रामने ते कहेवा लागी हे प्रिय जे सीता ते हु पोते आहीं आवी छु. ते वखते तने अनुरक्त मुकीने में दिक्षा लीधा पण मने पश्चाताप थया, अने आ विद्यावरी कुमारीओए पण माहरी प्रार्थना करी के, हे सीता ताहरा पति जे राम, ते अमने पति करी आप एटले अमारी उपर कृपा कर अने तु पण दिक्षा मुकीने रामनी स्त्री था. ते माटे हे राम, आ विद्याधरी स्त्रीओने अंगीकार कर अने हु पण ताहरी साथे रममाण थइश एवी रीते ते सीतेंद्र बोले छे एटलामा ते खेचर स्त्रीयो कामने उत्पन्न करनारु गायन करवा लागी तो पण ते सीतेंद्रना वचनोथी, तेमज ते गायनथी, तथा ते वसंतथी राम लिगारेक ध्यानथी डग्या नहीं, पछी माघना शुक्ल पक्षनी द्वादशीनी रात्रना चोथा प्रहरे रामने केवलज्ञान थयु, त्यारे तेना केवल ज्ञाननो महोत्सव सीतेंद्र सहित देवोए कर्यो. ते वखत दिव्य कमल उपर बेठेला तथा दिव्य चामर वडे वीराजित, दिव्य धारण करनारा रामऋषीए त्याहा धर्म देशना दीधी ते देशनामा सीतेंद्रे क्षमापना करी नमस्कार करीने लक्ष्मण अने रावणनी गती पुछी, त्यारे तेणे राम कहेवा लाग्या, आ वखते चोथा नरकमा शंबुक सहित रावण छे अने लक्ष्मणनो जीव देवकुरूप्रदेशमा वाला-

जीनो अवतार थयो छे. कह्युं छेके, देह धारीने गति कर्माधीन छे.

ते नरक भोगवीने रावण अने शंबुक पूर्व महावीदेहक्षेत्रने भुषणजेवी विजयावती नामनी नगरीमां सुनंदनी स्त्री रोहिणीना जीनदास अने सुदरशन नामना बे पुत्र थशे. ते निरंतर जीन धर्मने पालशे. त्याहांथी मरीने सौधर्म देवलोकमां देव थशे. त्याहांथी आवीने विजया नगरीमां ते फिरी श्रावक थशे. त्याहांथी मूवा पछी देवलोकमां जशे. त्याहांथी आवी विजयपुरीमां कुमारावर्त राजानी स्त्री श्रीलक्ष्मीना कूखे अयकांत तथा अयप्रभ ए नामना बे पुत्र थशे. ते भवमां जिनभाषीत संयमपालन करीने मूवा पछी लांतक देवलोकमां देव थशे. ते वखतें तुं अच्युत देव लोकथी नीकलीने आ भरत क्षेत्रमां सर्व रत्नमति नामनो चक्रवर्ती राजा थईश. त्याहांथी ते बेऊ आवीने इंद्रायुध अने मेघरथ नामना ताहरा पुत्र थशे. पछी तुं दिक्षा लेईने काल करी वैजयंत देवलोकमां जईश. अने रावणनो जीव जे इंद्रायुध ते त्रण भव भमीने तीर्थंकर गोत्र कर्म उत्पन्न करशे. ने तेनो जीव तीर्थनाथ थशे त्यारें तुं वैजयंत देवलोकथी आवीने तेनो गणधर थईश. पछी तुं अने ते मोक्ष प्रते जशो, अने ताहरो पुत्र मेघरथ ते शुभ गति पामशे, त्यार पछी ते पुष्कर द्वीपमां रत्नचित्रा

नगरीने विषे चक्रवर्ती राजा थशे, ते संपत्ति भोगवीने दिक्षा लेशे पछी क्रमेकरी तीर्थंकर थईने मोक्षने पामशे

एवा राम केवलीना वचनो सांभलीने पूर्वना सब धथी ज्याहा शंबुक अने रावणनरकमा दुःखी पड्या हता तिहा सीतेंद्रगयो तिहाना रक्षको असुरलोकोए तेने अग्नी कुंडमा नाख्या तेमा ज्यारे ते बलवा लाग्या, त्यारे मोटेथी पुकारो करवा लाग्या पछी ते नेत्याहाथी कहाडीने तापेला तेलनाकुंडमानाख्या त्या हा तेना शरीरो गलीगया पछी, तापेला लोढा उपर नाख्या त्याहा तडतड शब्दकरी फूटवालाग्या इत्या दिक दुःखो जोईने सीतेंद्रे ते असुरने कहेवा लाग्यो के, तुमे एने जानता नथीके ए श्रेष्ठ पुरुष छे तुमे आ हीथी दूर थावो अने एने मूकी देवो एवीरीते धमकावी ने शंबुक अने रावणने ते सीतेंद्र कहेवा लाग्योके पूर्व कर्मना प्रभावथी आ नरकमा तमे आव्या छो. तेने बोध थवासारू राम मुनिए कहेलो वृत्तांत सर्व राव ण अने शंबकने कह्यो ते सांभलीने त्यो कहेवा लाग्या के, हे कृपानिधी ते घणु सारू कर्यु ताहरा उपदेशथी अमने दुःखोनी विस्मृति थई पूर्व जन्मा र्जित कर्मे करी, घणा दिवश नरकवास थयो ते दुःख कोण दूर करनार छे? एवा तेमना वाक्यो सांभलीने सीतेंद्रने करुणा आव्याथी कहेछे के, आ नरकथी

तुमने हुं देवलोकमां लेईं जईश, एम कहीने ते बेऊं ने हातमां पकड्या, त्यारें पारानी परें हातमांथी ते निचे पडी गया, त्यारें फिरी हातेथी उपाड्या, फिरी पड्या ए प्रमाणे त्रण चार वखत थया पछी, ते सीतेंद्रने कहेवा लाग्या के, ताहरा उपाडवाथी अमने घणुं दुःख थाय छे, माटे अमने आंहीज मूकीने तुं ताहरा स्वर्गमां जा, एवुं तेमनुं बोलवुं सांभलीने ते बेऊं त्यांहांज मूकीने तथा रामने नमस्कार करीने तीर्थ यात्रा करतो करतो ते लक्ष्मणने जोवा सारूं नंदीश्वर द्वीपमां गयो. जतां देव कुरू प्रदेशमां भामंडल राजानो जीव जोईने प्रथमना स्नेह वडे तेने उत्तम बोध करतो थको सीतेंद्र देवलोक प्रत्यें गयो. रामने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी पच्चीस वर्ष पृथ्वी उपर विहार करी भाविक लोकोने बोध करी तथा पच्चास हजार वर्ष आयुष्यने उलंघन करीने सैलेषी विधीयेथी रामचंद्र राजऋषी सुखानंद शाश्वत प्रत्यें प्राप्त थया.

इति आचार्य श्री हेमचंद्र सूरी विरचित्ते श्री राम लक्ष्मण चरित्रे श्री राम दिक्षाग्रहण तथा निर्वाण गमन वर्णनो नाम दशमस्कंद संपूर्ण.

इति रामायण ग्रंथ समाप्त.

जैनधर्म सबधी छापेला पुस्तकोनु सूचीपत्र

१ श्री जैन धम ग्यान प्रदिपक पुस्तक किमत १॥ रुपया
२ श्री विवध रतन प्रकाश पुस्तक किमत १२ आणे
३ हसराज वछराजका रास किमत ५ आणे
४ अननाको तथा राणी पद्मावतीरो रास कि०८१ आणे
५ सतधारी राजा हरीचद्रकी चोपाइ किमत ४ आणे
६ धन्ना सालभद्र शेठकी चोपाई किमत ४ आणे
७ मेणरह्यानी चोपाइ किमत ३ आणे
८ मगळ कळसकी चोपाइ किमत ४ आणे
९ देवकी राणीको रास (छ भाइनो रास) किमत ४ आणे
१०लिलावती राणीकी चोपाइ किमत ४ आणे
११अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किमत ४ आणे
१२चदन मलीयागीरीकी चोपाइ किमत ४ आणे
१३परदेशी राजाको रास किमत ४ आणे
१४चद्रराजाको रास किमत १ रुपया
१५पडित देवचद्रजीमहाराजकृत चोवीसी किमत ¹॥ आणा
१६पडित आनदघनजी महाराजकृत चोवीसी किमत १॥ आणा
१७मानतुग मानवतीकोरास किमत ८६ आणे
१८महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किमत ४ आणे
१९कामद कठीयाराकी चोपाई सर्म धन रास किमत ८३ आणे
२०स्तवन सजाय सग्रह ज्ञान दाय प्रत्यक भाग किमत ८४ आणे
२१श्री जैन गहूली सग्रह किमत ८-॥ आणे
२२रत्नपाल शाहको रास किमत ८२ आणे
२३श्री जैन छद सग्रह किमत ८-। आणे
२४श्रीपाळ राजाकोरास चार खडको किमत १० आणे
२५स्नात्र पुजा तथा वीसथानकनी पुजा किमत ४ आणे
२६जैन धर्म सिद्धात सार पुस्तक किमत १। रुपया
२७श्री जैन लावणीसग्रह किमत ८-॥ आणे
२८चोवीसीका दरसण कपडाका कवहरवाली पोथी किमत ६ आणे
२९अनुपूर्वीकी पोथी कपडाका कवहर किमत १ आणा
३०सिद्धचक भगवानको पाटो रगीत मंडल युक्त किमत २ आणे